मुनिश्री अन्तकीर्ति दिगम्बर जैनग्रथमालाका तृतीय पुष्प।

श्रीवीतरागाय नमः।

प्रमेयरत्नमाला।

अर्थात्

श्री माणिक्यनन्दि प्रणीत परीक्षामुख सूत्रकी श्रीमदनन्तवीर्य

सूरिकृत संस्कृत टीकाकी

जयपुरनिवासी पंडितप्रवर जयचन्द्रजीकृत

भाषा वचनिका।



प्रकाशक—

मुनि अनंतकीर्तिग्रन्थमाला समिति।

प्रथमावृत्ति]

प्रकाशक—
राजमल वडजात्या मंत्री,
मुनि अनत कीर्तिग्रथमाला
कालबादेवी रोड बम्बई ।



मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रेस, ४३४,
ठाकुरद्वार, बम्बई ।

श्री वीतरागायनम.

नियमावली।

मुनि श्री अनन्तकीर्ति ग्रंथमाला।

१ यह ग्रन्थमाला श्री अनन्तकीर्ति मुनिकी स्मृतिमें स्थापित हुई है जो दक्षिण कनडाके निवासी दिगम्बर साधु चारित्रके तत्व ज्ञानपूर्वक पालनेवाले थे और जिनका देहत्याग श्री गो० दि० जैन सिद्धान्त विद्यालय मुरैना (गवालियर) हुआ था।

२ इस ग्रन्थमाला द्वारा दिगम्बर जैन संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थ भाषाटीका सहित तथा भाषाके ग्रन्थ प्रबंधकारिणी कमेटीकी सम्मतिसे प्रकाशित होंगे।

३ इस ग्रन्थमालामें जितने ग्रन्थ प्रकाशित होंगे उनका मूल्य लागत मात्र रक्खा जायगा लागतमें ग्रन्थ सम्पादन कराई संशोधन कराई छपाई जिल्द बंधाई आदिके सिवाय आफिस खर्च भाडा और कमीशन भी सामिल समझा जायगा।

४ जो कोई इस ग्रन्थमालामें रु १००) व अधिक एकदम प्रदान करेंगे उनको ग्रन्थमालाके सब ग्रन्थ विनान्योछावरके भेट किये जायगे यदि कोई धर्मात्मा किसी ग्रन्थकी तैयारी कराईमें जो खर्च परे वह सब देवेंगे तो ग्रन्थके साथ उनका जीवन चरित्र तथा फोटो भी उनकी इच्छानुसार प्रकाशित किया जायगा यदि कमती सहायता देंगे तो उनका नाम अवश्य सहायकोंमें प्रगट किया जायगा इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित सब ग्रन्थ भारतके प्रान्तीय सरकारी पुस्तकालयोंमें व म्यूजियमोंकी लायब्रेरियोंमें व प्रसिद्ध २ विद्वानों व त्यागियोंको भेटस्वरूप भेजे जायगे जिन विद्वानोंकी संख्या २५ से अधिक न होगी।

५ परदेशकी भी प्रसिद्ध लायब्रेरियों व विद्वानोंको भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मंत्री भेट स्वरूपमें भेज सकेंगे जिनकी संख्या २५ से अधिक न होगी।

६ इस ग्रन्थमालाका सर्व कार्य एक प्रबंधकारिणी सभा करेगी जिसके सभासद ११ व कोरम ५ का रहेगा इनमें एक सभापति एक कोषाध्यक्ष एक मंत्री तथा एक उपमंत्री रहेंगे।

७ इस कमेटीके प्रस्ताव मंत्री यथा संभव प्रत्यक्ष व परोक्ष रूपसे स्वीकृत करावेंगे।

८ इस ग्रन्थमालाके वार्षिक खर्चका बजट बन जायगा उससे अधिक केवल १००) मंत्री सभापतिकी सम्मतिसे खर्च कर सकेंगे।

९ इस ग्रन्थमालाका वर्ष वीर सम्वत्से प्रारम्भ होगा तथा दिवाली तककी रिपोर्ट व हिसाब आडीटरका जचा हुवा मुद्रित कराके प्रति वर्ष प्रगट किया जायगा।

१० इस नियमावलीमें नियम न १-२-३ के सिवाय शेषके परिवर्तनादि पर विचार करते समय कमसे कम ९ महाशयोंकी उपस्थिति आवश्यक होगी।



श्री दि० जैन मुनि अनंतकीर्तिग्रंथमालाके मुख्यसहायक महाशय ।

२२०२) सेठ गुरुमुखरायजी सुखानदजी बम्बई

  ११०१) मुनिमहाराजके आहार दान समय

  ११०१) यात्रार्थ आये हुए दिल्लीके सघके समय

११०१) से हुकमचदजी जगाधरमलजी दिल्ली

११०१) से उम्मेदसिंहजी मुसद्दीलालजी-अमृतसर

५०१) श्री जैनग्रथरत्नाकरकार्यालय-बम्बई

४११) श्री धर्मपत्नी लाला रायबहादुर हजारीलालजी-दानापुर

२५१) से नाथारगजी वाले बम्बई

२०१) से चुन्नीलाल हेमचदजी बम्बई

१०१) साहु सुमतिप्रसादजी-नजीबाबाद

१०१) लाला जुगलकिशोरजी-हिसार

१०१) श्री जैनधर्मवर्धिनी सभा बम्बई ।

१०१) राजमलजी बडजात्या बम्बई ।

१०१) से. बैजनाथजी सरावगी हाथरस ।

१०१) से कस्तूरचद बेचरदासजी बम्बई ।

१०१) लाला जैनेन्द्रकिशोरजी ।

ठि—उत्तमचद भरोसालाल-आगरा ।

भूमिका।

ग्रंथपरिचय।

श्रीमत्सकलतार्किकचक्रचूडामणिमाणिक्यनंदिजी आचार्यका **परीक्षामुख** ग्रंथ सूत्र रूपसे समुपलब्ध है। जो कि यह सूत्र ग्रंथ यथा नाम तथा गुणकी कहावतको चरितार्थ कर रहा है क्योंकि परीक्ष्य पदार्थोंकी परीक्षाका यह मुख्य कारण है। अथवा जिनके द्वारा हेयोपादेयारूप समस्त पदार्थोंकी परीक्षा होती है उन प्रमाण लक्षण फल वगैर का स्वरूप दिखानेके लिये यह ग्रंथ दर्पणके समान है। इसी विषयको स्पष्ट करनेके लिये खुद ग्रंथकर्ता ही इस ग्रंथकी प्रशस्तिमें इस प्रकार लिखते हैं।

> परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयो
> संविदे मादृशोबाल. परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥ १ ॥

तथा यह ग्रंथ समस्त न्याय वचनका सारभुत अमृत है क्योंकि इसकी श्रानी (मुक्ताविले) का सारभूत न्यायका सूत्र ग्रंथ ऐसा कोई भी अभी तक देखनेमें नहीं आया है। वास्तविक दृष्टिसे विचार किया जाय तो यह अन्य न्याय शास्त्रोंकी पूंजी है। क्योंकि इसकी उत्पत्ति श्री १००८ भगवान् जिनेन्द्रदेव तथा उनकी शिष्य परंपराके प्रशिष्य तार्किक सिद्धान्त प्रधान श्रीमत् अकलंकदेवजीके वचन रूप समद्रसे सुधा सदृश हुई है।

इस विषयमें श्री अनंतवीर्यजी महाराज इस प्रकार लिखते हैं

> अकलंकवचोम्भोधेरुद्दध्रे येन धीमता।
> न्यायविद्यामृतं तस्मै नमो माणिक्यनन्दने ॥ २ ॥

इस ग्रंथके ऊपर श्रीप्रभाचंद्राचार्यजीकी बड़ी प्रमेय कमलमार्तंड, और छोटी श्रीअनंतवीर्यजीकृत प्रमेयरत्नमाला टीका है। प्रभाचंद्राचार्यजी तथा उनके ग्रंथका अनंतवीर्यजीने बड़ेही महत्वसूचक शब्दोंसे स्तुतिरूप गान किया है और इस प्रमेय रत्नमालाकी रचना प्रमेय कमल मार्तंडके आधारपर सारवचनोंमें हुई है इस विषयको दिखाते हुए ग्रंथकारने अपनेमें कृतज्ञता तथा लघुताके साथ अपने ग्रंथमें प्रमाणीकता सूचित की है जैसे कि—

प्रभेन्दु वचनोदारचंद्रिकाप्रसरे सति
मादृशा क्व नु गण्यन्ते ज्योतिरिंगणसन्निभा ॥ १ ॥
तथापि तद् वचो पूर्वरचना रुचिर सताम्।
चेतोहर भृत यद्वद्वद्या नवघटे जलम् ॥ २ ॥

इस कथनसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि इस ग्रथके पठन तथा मननरूप अवलवनसे प्रमेय कमलमार्तंड, तथा प्रमेय कुमुदचद्रोदय सरीखे शास्त्रसमुद्रमें प्रवेश कर समस्त न्याय विषयमें पारगत हो सकता है। अर्थात् न्याय विषयमें प्रवेश करनेके लिये यह ग्रथ मुखद्वारही सिर्फ नहीं है किंतु इसके पढनेसे जितनी विद्वत्ता तथा जानकारी होनी चाहिये उससे कई अशमें अधिक यह ग्रथ जानकारी तथा विद्वत्ताका विशेष साधन है।

अन्यधर्ममें कारिकावलीकी टीका एक मुक्तावली है और वह उस मतके विशेष शास्त्रोंमें प्रवेश करानेके लिये मुखद्वार माना जाता है। परतु प्रमेय रत्नमालामें इससे भी अधिक यह विलक्षणता है कि यह स्वमत परमतसवधी समस्त विशेष शास्त्रोंमें प्रवेशमार्ग प्राप्त करानेके अलावा कुछ विशेष विद्वत्ता व दक्षताको भी हासिल करा सकती है। क्योंकि इसका मूल पाया जो परीक्षामुख है वह उस शैलीसे सूत्रित किया गया है कि जिसमें प्राय सर्वही विषय परमत निराकरणके साथ स्वमतकी स्थापनास्वरूप हैं जैसे दृष्टान्तमें '**स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान प्रमाणम्**, इस सूत्रमें प्रमाणका लक्षण जो ज्ञान कहा है वह साथहीमें ऐसे विशेषणसे विशिष्ट है कि जिस विशेषणमें अन्य मतावलवियोंद्वारा माने गये प्रमाणके लक्षण हैं उन सबका उसमें खडन विशेष है इसी शैली पर इस समस्त ग्रथकी रचना है। और उसका विशेष खुलासा स्वरूप यह प्रमेयरत्नमाला टीका है वह योग्य दक्षतापूर्वक विद्वत्ता तथा समस्त दर्शन प्रवेशिताका मुख्य कारण है। क्योंकि इस ग्रथके विना उच्च कोटिके प्रमेयकमल मार्तण्डादि ग्रथोंमें प्रवेश होना अति दु स्सह है इसी हेतुसे दयाशील श्रीमदनत वीर्याचार्यजीनें शांतिषेण नामके किसी शिष्यके लिये वैजेयके पुत्र हीरपके आग्रहसे इसका निर्माण किया—इस विषयको ग्रथमें स्वत आपनेही प्रदर्शित किया है,

वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधतः।
शान्तिषेणार्थमारब्धा परीक्षामुखपञ्चिका।

१ ऐसीही प्रख्याति कारिकावली मुक्तावलीके विषयमें भी है।

इस ग्रंथका दूसरा नाम **परीक्षामुखपंचिका** भी है। पदोंके जुदे २ कर अर्थ करनेको पंचिका कहते हैं क्योंकि कहा भी है **पंचिका पदभंजिका** इसी अर्थको पंडित जयचंद्रजी छाबड़ाने भी कहा है 'सूत्रनिके पद न्यारे करि तिनका न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ताकू पंचिका कहिये है' इत्यादि। इस टीकामें विशेषताके साथ अर्थकी एसीही रचना है इस लिये इसका—परीक्षामुख पंचिका नाम भी वास्तविक है। इस टीकाका प्रमेय रत्नमाला जो नाम है वह यथा नाम तथा गुणसे खाली नहीं है। क्योंकि रत्नचीज जिस तरह स्वपरप्रकाशक होती है उसी तरह प्रत्यक्ष परोक्षादि रूप अनेक प्रकारके प्रमाण स्वरूप प्रमेयकी माला अर्थात् पंक्ति स्वरूप यह ग्रंथ है।

तथा इस नामसे यह सूचित किया है कि भाग्यशालियोंके हृदयको यह भूषित करनेवाली है और भाग्यहीनोंको दुर्लभ है। जैसे रत्नमाला भाग्यशालियोंको ही प्राप्त होकर उनके हृदयको भूषित करती है भाग्यहीनोंको उसकी प्राप्ति होना ही दुर्लभ है इसी प्रकार भाग्यशील विशिष्ट क्षयोपशमके धारक ही इसको धारण कर सकते हैं भाग्यहीन मंदक्षयोपशमी इसको धारण नहीं कर सकते, इसी अर्थको श्री वीरनंदिस्वामिजीनें भी सूचित किया है।

गुणान्विता निर्मलवृत्तमौक्तिका
नरोत्तमैः कंठविभूषिणीकृता।
न हारयष्टिः परमेव दुर्लभा
समंतभद्रादिभवा च भारती॥ १॥

यह ग्रंथ भी परीक्षामुख सूत्र ग्रंथके समान छह समुद्देशोंमें विभक्त है उनमेंसे छहोंके ही नाम विषय प्रतिपादनकी अपेक्षासे रखे गये हैं। वे इस प्रकार हैं। प्रमाण स्वरूप समुद्देश १ प्रत्यक्षसमुद्देश २ परोक्षसमुद्देश ३ विषय समुद्देश ४ फलसमुद्देश ५ आभास समुद्देश। ६। इन छहों समुद्देशोंमेंसे प्रत्येक २ समुद्देशमें क्या २ विषय है यह यद्यपि इन समुद्देशोंके नामसे ही प्रतीत होता है तथापि इनमें विशेष २ विषय कोन २ सें है इस बातकी बहुत आवश्यकता है। इसी हेतुसे मैंने पाठकोंके संतोषके लिये कुछ विषयसूचि और सूत्र सूची बनाकर ग्रंथके साथ लगादी है उससे इस ग्रंथके पाठक ग्रंथका कुछ ज्ञान तथा महत्व समझ सकेंगे।

इस ग्रंथकी देशभाषा वचनिकामें टीका श्रीमत् पंडित जयचंद्रजी छाबड़ाने की है जिसमें सूत्र तथा प्रमेय रत्नमालाके पदार्थ तथा भावार्थ बहुतही मनोज्ञता

१ जैन धर्ममें ज्ञानको स्वपरप्रकाशत्व माना है।

तथा विद्वत्तासे लिखे गये हैं कि जिसके पठनेसे सामान्यबुद्धि भी प्रमेय रत्नमाला सरीखे पदार्थोंको बखूबी समझ सकता है तथा कहीं कहीं विशेष स्पष्टी करनके लिये प्रथमें कुछ २ विशेष विषय भी सगठित किये गये हैं। वे इस ग्रंथके स्वाध्याय करनेवालोंको स्वत ही प्रतीत हो सकते हैं।

ग्रन्थकर्ताओका परिचय।

माणिक्यनदिजी।

मूल सूत्र ग्रथ (परीक्षामुख) के कर्ता श्रीमन्माणिक्यनन्दीजी एक बडेही प्रतिभाशाली विद्वान् हुए हैं क्योंकि उनने समस्त न्याय समुद्रको मथन कर यह अमृत सरीखा ग्रंथराज बनाया है। इस ग्रथके सिवाय इनका कोई दूसरा ग्रथ अभीतक देखनेमे नहीं आया है तथा इस विषयमें इनके पीछेके किसी भी आचार्यने ऐसा उल्लेख किया हो ऐसा भी देखनेमें अभीतक नहीं आया। और अपने विषयकी इस ग्रथमे भी आपने कुछ भी प्रशस्ति नहीं दी है इससे हम निश्चित रूपसे आपके विषयमें कुछ भी लिख नहीं सकते तथापि इतना निश्चय हो जाता है कि ये या तो अकलक देवके समयके तथा उनके कुछ पीछेके और प्रभाचद्रजीके कुछ समय पहलेके तथा उनकेही समयके विद्वान् हैं। क्योंकि प्रभाचद्राचार्यजीने प्रमेय कमल मार्तंडकी प्रशस्तिमें—उनको गुरु शब्दसे स्मरण किया है। और गुरु शब्दके ऊपर जो टिप्पणी दीहै उसमें 'स्वस्य' लिखा है इससे स्पष्ट हो जाता है कि ये आचार्य प्रभाचद्राचार्यजीके गुरु थे। फिर अखीरके पद्यमें अपनेको इस प्रकार लिखते हैं।

श्रीपद्मनदिसैद्धान्तशिष्योऽनेकगुणालय·
प्रभाचद्रश्चिरजीयाद्रत्ननन्दिपदे रत· ॥ १ ॥

इस पद्यमे-पद्मनदि आचार्यका सिद्धान्तविषयका शिष्य और-माणिक्यनदिके चरणोंमें रत ऐसे दो विशेषण दिये हैं। उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सिद्धान्त विषयके सिवाय अन्य विषयके गुरु प्रभाचद्रजीके माणिक्य नदिजीही थे। इससे यह निश्चय हो जाता है कि श्रीमाणिक्यनदीजी तथा प्रभाचद्रजीका समय एकही है।

परंतु वशीधरजी शास्त्रीने प्रमेयकमल मार्तंडके उपोद्घातमें माणिक्यनदिजीके परीक्षामुखसूत्र बननेका समय विक्रमसवत् ५६९ दिया है और प्रभाचद्रजीका

---

१ निर्णय-सागर प्रेसकी छपी हुई प्रतिमें।

१०६० से ११९५ तक विक्रम संवत् दिया है और **विद्याभूषण तथा ए. एम्.** आदि पदधारक **श्रीसतीशचंद्रजीने** अकलंक स्वामीजीको ईसवी ८ वीं शताब्दीके विद्वान् स्वीकृत किया है।

प्रभाचंद्रजीने प्रमेयकमल मार्तंडकी समाप्ति भोजदेवराज्यके समयमें की तथा अपनेको धारा नगरीका निवासी लिखा है। परंतु कई भोजराज्योंके होनेसे प्रभाचंद्रजीका समय भोजराज्यपरही निर्भरित नहीं रह सकता है। परंतु प्रमेयकमल मार्तंडके अंतिम पद्यसे यह अवश्यही निश्चय हो सकता है–अकलंक देवके–पीछे या अकलंक देवके समयमें। ये दोनों (माणिक्यनंदि-प्रभाचंद्र) आचार्य एकही समयके हैं। इस विषयके विशेष विचारमें हम विद्वानोंके ऊपरही निर्भरित हैं।

अनंतवीर्याचार्य

इन आचार्यके विषयमें हम कुछ भी नहीं लिख सकते क्योंकि इनका जो प्रमेय रत्नमाला नामक ग्रंथ है उसकी प्रशस्तिमें आपने अपने ग्रंथ निर्माणका समय तथा निवास वगैर का कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। तथा आपके समयादिके विषयमें हमें अन्यत्र भी इस समय तक कुछ भी विषय उपलब्ध नहीं हुआ है इस लिये इनके विषयमें मैं इस समय विशेष परिचय देनेके लिये असमर्थ हूं। सामान्य परिचयमें भी सिर्फ इतनाही है कि ये आचार्य उच्च कोटिके विद्वान् थे इस विषयका ज्ञान आपके प्रमेयरत्नमाला नामक ग्रंथके अवलोकनसे ही हो जाता है। आपने अपनी जो प्रशस्ति दी है वह अर्थसहित इस ग्रंथके अंतमें लगी हुई है उससे पाठकोंको इनके विषयमें जितना ज्ञान हो सकेगा बस उतनाही ज्ञान हमको है। ग्रंथोंके विषयमें भी इस समय आपका एक प्रमेय रत्नमालाही ग्रंथ उपलब्ध है जो कि मुद्रित हो चुका है।

पं जयचंद्रजी छावडा

ढुंढाहरदेशके विशाल जयपुर नगरमें पं जयचंद्रजी छावडाका जन्म तथा निवासस्थान था। आप विक्रम उन्नीसवीं १९०० शताब्दिके एक गण्य तथा मान्य विद्वान् थे। आपके ग्रंथोंका अनुवाद पढनेसे मालूम होता है कि आप न्याय अध्यात्म साहित्य वगैर सर्वही विषयके अच्छे विद्वान तथा परोपकारी और उद्यमशील पुरुष थे। इस शताब्दीके विद्वानोंमेंसे पं टोडरमलजीके समान आपही गणना योग्य तथा माननीय व्यक्ति हो सकते हैं। आपनें १३ तेरह ग्रंथोंपर

भाषा वचनिकायें लिखी हैं। इन सब वचनिका ग्रंथोंकी श्लोकसंख्याका प्रमाण ६० हजारके करीब है। वे १३ ग्रन्थ विक्रम सम्वत्‌के साथ नीचे लिखे प्रमाण हैं।

१ सर्वार्थसिद्धि	१८६१ वि	
२ प्रमेयरत्नमाला (न्याय)	१८६३ ,,	
३ द्रव्यसंग्रह वचनिका	१८६३ ,,	
४ आत्मख्यातिसमयसार	१८६४ ,,	
५ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा	१८६६ ,,	
६ अष्टपाहुड़	१८६७	यह इस ग्रंथमालामें जल्दी निकलनेवाला है।
७ ज्ञानार्णव	१८६९	
८ भक्तामरस्तोत्र	१८७०	
९ आप्तमीमांसा (देवागमन्याय)	१८८६	यह ग्रंथ इस ग्रंथमालामें तैयार हो चुका है,
१० सामायिकपाठ		समय लिखा नहीं
११ पत्रपरीक्षा (न्याय)		
१२ मतसमुच्चय (न्याय)		
१३ चंद्रप्रभद्वितीयसर्गका न्यायभाग,		समय मालूम नहीं.

ये सर्व ग्रंथ बड़ेही कठिन गंभीराशयके हैं तथा बड़ेही महत्वके संस्कृत प्राकृत भाषाके हैं। इनमेंसे पांच ग्रंथ तो केवल न्यायके हैं और सभी ग्रंथ उच्च कोटिके तात्विक विषयके हैं तथा धर्ममें दृढ़ता और भक्ति पैदा करनेवाले हैं। आप देशभाषाके पद्य रचना करनेमें भी सिद्ध हस्त थे आपने फुटकर विनतियां वगैर लिखी हैं उनकी श्लोक संख्या ११०० के करीब होगी तथा द्रव्य संग्रहको भी अपने पद्यमें लिखा है। आपकी १८७० की लिखी हुई एक पद्यात्मक चिट्ठी वृन्दावन विलासमें प्रकाशित हो चुकी है। इन सबसे यह निश्चित होता है कि आप गद्य पद्य बनानेमें बहुतही सिद्ध हस्त थे। तथा संस्कृत और प्राकृतमें आपका ज्ञान खूबही बड़ा चढ़ा था इस विषयका ज्ञान आपके ग्रंथोंका अवलोकन करनेसे सभीको हो सकता है।

तथा चार प्रकारके कवियोंमेसे आपमें गमकंकवि शक्ति भी श्रेष्ठ थी क्योंकि आपने **नतामर**—इत्यादि प्रमेयरत्नमालाके प्रथम श्लोकके अर्थको '**मोक्षमार्गस्य-नेतारं**' इत्यादि श्लोकके भावमे प्रदर्शित कर बडेही महत्व भरे पांडित्यको प्रदर्शित किया है। इससे आपने यह दर्शित कर दिया है कि जिस प्रकार तत्वार्थ मोक्ष शास्त्रके ऊपर सर्वार्थ सिद्धि छोटी तथा गभीराशयवाली टीका है उसी प्रकार इस न्यायकी पूजी स्वरूप—**परीक्षामुखसूत्र** पर यह प्रमेय रत्नमाला टीका है। क्योंकि (मोक्षमार्गस्य नेतार–) यह श्लोक सर्वार्थ सिद्धिका मगलाचरण माना जाता है। तथा सूत्र ग्रथके ऊपर छोटी और गभीराशयकी सर्वार्थ सिद्धि टीका है उसी प्रकार इस ग्रन्थमे भी यह सर्व समानता मौजूद है इत्यादि। आपने अपनी सर्वही टीकाओमे ग्रथोंके आशयको कहीं २ बढाकर भी बहुत खूब सूरतीके साथ समझाया है।

जैसे कि इस प्रमेय रत्नमालाहीमें—विशेष लिखिये है इस प्रकारसे ग्रंथके विषयको समझानमें विशेष खूबी की है उसी प्रकार सर्व ही (अपने टीका किये हुए) ग्रथोंको समझानेमें बहुतही मनोज्ञ शैली व शक्तिको भरकस रूपसे काममें लाये है सर्वार्थसिद्धि तथा आप्त मीमासा वगैर ग्रथोंमें आपने मूल ग्रथके आशयको अच्छी तरह समझानेके हेतुसे उनके बडे २ टीकाग्रथ राजवार्तिक श्लोकवार्तिक अष्ट सहस्री वगैर को भी देशभाषामें उद्धृत करके ग्रथोंके आशयको बहुतही भव्य बना दिया है। इस प्रकारके आपके प्रयत्नसे सामान्य भाषा जाननेवाले भी इन बडे ग्रथोंके अभिप्रायोंको समझ सकते है। आपकी इन सर्व कृतियोंसे मालूम होता है कि आप बडेही परोपकारी महात्मापुरुष थे। तथा प्राय सर्वही बडे २ न्याय अध्यात्म आदि ग्रथोंके मर्मज्ञ रूपसे जानकार थे। अर्थात् आप सर्वांगसुन्दर एक अद्वितीय विद्वान थे तथापि आपने अपनी लघुताही दिखाई है जैसा कि प्रमेयरत्नमालाके अतमें आपने अपने विषयमे लिखी है।

बालबुद्धिलखि संतजन हसैं न कोप कराय
इहैरीति पंडितगहै धर्मबुद्धि इमभाय ॥

इस परसे यह पता चलता है कि आप पूर्ण विद्वान् होकर भी अहकार रहित थे। अहकारताका अभाव विद्वत्तामे सोनेको सुगधिकी कहावतको चरितार्थ करता है।

---

१ कविके गूढ तथा गभीर आशयको स्पष्ट करनेवाला गमक कवि होता है।

विद्वान होकर जो अहंकार रहित होगा वही अपने वचनादि प्रयत्नों द्वारा प्राणियोंका उपकार कर सकता है तथा वही प्रमाणताका पात्र हो सकता है। खंडेलवाल जातिभूषण—पं जयचंदजी छाबडामें ये सर्व गुण मौजूद थे इसी कारण इनकी समाजमें विशेष प्रतिष्ठा रही तथा आगे भी कायम रहेगी।

उक्त पंडितजीके विषयमें जो कुछ हमने लिखा है वह बहुत ही थोडा संक्षेपतासे लिखा है यदि विशेष लिखते तो एक ग्रंथका ग्रंथही बन जाता। पंडितजीने अपने थोडेसे जीवन कालमें इतने टीका तथा विनतीस्वरूप ग्रंथोंका निर्माण कर अपनी बुद्धिकी बहुत ही विचक्षण विलक्षणताका परिचय दिया है। हमने सुना है कि उक्त पंडितजी साहेबने इन ग्रंथोंके अलावा अन्य भी कई ग्रंथोंपर टीका की है। यदि यह बात सर्वांग सत्य है तो कहना पड़ेगा कि पंडितजीमें कोई विलक्षण शक्ति थी। पाठकगण पंडितजीके विषयमें विशेष जाननेकी इच्छा रखते हों तो उनके निर्माण ग्रंथोंमें उनके हाथकी लिखी हुई प्रशस्तिसे अपनी इच्छाकी पूर्ण पूर्ति करें।

विनीत

रामप्रसाद जैन-बम्बई।

विषय सूची।

प्रथम समुद्देश ?

द्वितीय समुद्देश २

तृतीय समुद्देश.

चतुर्थ समुद्देश.

पंचम समुद्देश.

छठ्ठा समुद्देश.

इति।

तृतीयसमुद्देश.

चतुर्थसमुद्देश

पंचम समुद्देश.

छठा समुद्देश

परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः
संविदे मादृशोबाल' परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥ १ ॥

इति

निवेदन

इस ग्रंथका संशोधन श्रीयुत पंडित पन्नालालजी सोनी तथा मैंने किया है संभव है कि अज्ञान वश इसमें बहुतसी त्रुटियां रह गई होंगी तथा मैंने जो यह भूमिका और विषय सूची तथा सूत्र सूची लिखी है वहां भी प्रमाद हुआ हो होगा उसका खयाल न कर पाठकगण हमें अनुगृहीत करेंगे।

निवेदक—

रामप्रसाद जैन, बम्बई।



स्वर्गीय पंडित जयचंदजी विरचित

हिन्दी प्रमेयरत्नमाला ।

दोहा ।

श्रीमत वीरजिनेश रवि तम अज्ञान नशाय ।
शिवपथ वरतायो जगति वंदौं मैं तसु पाय ॥ १ ॥
माणिकनंदिमुनीशकृत ग्रंथ परीक्षाद्वार ।
करू वचनिका तासकी लघुटीका अनुसार ॥ २ ॥

ऐसैं मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा करी । अब परीक्षामुखनाम संस्कृतसूत्रबंध माणिक्यनंदिआचार्यकृत ग्रंथ है ताकी बडी टीका तो प्रमेयकमलमार्त्तंड-नाम है सो प्रभाचन्द्र आचार्यकृत है, तामैं तौ विशेष करि वर्णन है । बहुरि छोटी टीका प्रमेयरत्नमाला है सो लघु अनन्तवीर्य आचार्यकृत है ताकै अनुसार मैं देशभाषामय वचनिका लिखू हू । तामैं बुद्धिकी मंदतातैं तथा प्रमादतैं कहू हीनाधिक अर्थ लिख्या होय तौ पंडितजन हास्य मत करियो, मूलग्रंथ देखि शुद्ध करलीजियो ।

इहां कोई कहै जो प्रमाणके प्रकरण तौ संस्कृतवचनरूपही चाहिये, देशभाषामय वचनतैं हीनाधिक कहना बणै तौ विपर्यय होनेतैं बड़ा दोष लागै । ताका समाधान—जो यह तौ सत्य है देशभाषाके वचन अपभ्रंश बहुत हैं तहां अर्थ विपर्ययरूपभी भासै परन्तु कालदोषतैं संस्कृतके पढनेवाले विरले हैं, अर केई है ते भी गुरुसंप्रदायके विच्छेद

होनेतैं अर्थ यथार्थ न समझैं हैं तातैं सस्कृतका भावार्थ समझनेंकू देश-भाषा करिये हैं । अर जे विशेष पडित है ते मूलग्रथ तथा सस्कृतटीकातैं समझैंहींगे । जैनमतमै प्रमाणनयरूप स्याद्वाद न्यायके ग्रथ वहुत हैं तिनिके अर्थ समझनेंकू यह प्रकरण बड़ा उपकारी है तातैं याका भावार्थ देश-भाषामयभी लिखिये है । अर जे जिनमतकी आज्ञा मानैं हैं तिनिकैं अर्थका विपर्ययभी न होयगा जेता यथार्थ समझैंगे तेता तौ यथार्थ रहैहीगा अर कहीं अन्यथा होयगा तौ विशेष बुद्धिवान पडितनिका सयोग भये यथार्थ होयगा, जैनमतके श्रद्धानवाले पुरुष हठग्राही नाहीं होहै तातै देशभाषा करनेमैं दोष न लागैगा ऐसैं जानना ।

तहा प्रथमही याका सवध ऐसा—जो पहले श्री अकलकदेव आचार्य भये, ते कैसे भये, अपनी निर्दोष ज्ञान अरु सयमरूप सपदा ताकरि प्रत्येकबुद्ध श्रुतकेवली सूत्रकार आदि वडे ऋषीश्वर तिनिकी महिमाकू आप लेते भये, वहुरि कल्याणरूप भये । बहुरि समस्त तार्किकनिका समूह तिनिविषै जे वड़े तार्किक तेई भये चूड़ामणि तिनिकी किरण सारिखी नमनक्रिया ताकरि मिली है चरणनिके नखनिकी किरण जिनिकी । भावार्थ—बडे वडे तार्किक जे तर्कशास्त्रके वेत्ता ते जिनिके चरण सेवैं है । बहुरि कविता करना, टीका करना, वाद जीतना, वक्तापणा करना, यहु च्यारि प्रकार पडितपणा तिसके जाननेके इच्छुक तृषातुर ग्रहण करनेके इच्छुक जे विनयकरि नम्रीभूत शिष्यजन तिनिसहित किया आप अनुभव जिनूनैं ऐसे भये, तिनिनैं तर्क ग्रथनिके सात प्रकरण रचे । बृहत्त्रय, लघुत्रय, चूर्णिका । ते अतिकठिन जिनिमै मन्दबुद्धि प्रवेश न करि सकै, तातैं तिनिमैं मन्दबुद्धीहूनिका प्रवेश होनेके अर्थि तिनिहीका अर्थ लेकरि धारा नगरीकैविषैं श्रीमाणिक्यनदिआचार्य तिनिनै यह परीक्षामुख नाम प्रकरण रच्या । तिसका विवरण करनेंके

इच्छुक जे लघु अनंतवीर्य आचार्य ते तिसकी आदि विषै नास्तिकताका परिहार, शिष्टाचारपालन, पुण्यकी प्राप्ति, निर्विघ्न शास्त्रकी समाप्ति आदि फलकू चाहते संते श्लोक कहैं हैं,—

नतामरशिरोरत्नप्रभाप्रोतनखत्विषे ।
नमो जिनाय दुर्वारमारवीरमदच्छिदे ॥ १ ॥

याका अर्थ—टीकाकार कहै हैं जो जिन कहिये कर्मशत्रुके जीतने हारे जे अरहंत परमेष्ठी तिनि सर्वनिके अर्थि हमारा नमस्कार होहु। कैसे है जिन—नमे जे देवनिके मस्तक तिनिके मुकुटनिके मणिनिकी प्रभा तिसनिषैं पोई है मिली है चरणके नखनिकी किरण जिनिकी। भावार्थ—अरहंत परमेष्ठीकू च्यारि प्रकारके देव नमस्कार करै है। बहुरि कैसे हैं कठिन है निवारन जाका ऐसा जो कामरूप सुभट ताका मदके छेदन हारे हैं। इस श्लोकमैं मारवीरमदच्छिदे ऐसा विशेषण जिनका है ताका ऐसाभी अर्थ है,—मा कहिये लक्ष्मी ताहि राति कहिए दे ताकू मार कहिए, सो इस मार शब्दके अर्थ तै मोक्षमार्गके दाता भये। बहुरि वीर शब्दकरि वि कहिए विशेष करि ईर कहिए समस्त पदार्थनिकू जाननहारे हैं ऐसैं सर्वज्ञ भये। बहुरि मदच्छित् कहिए मानकषायके छेदनहारे हैं, ऐसै मद ऐसा उपलक्षणपदतै सर्व रागादिकका नाश करन हारे भये ऐसैं " मोक्षमार्गस्य नेतारं " इत्यादि सूत्रकी टीका विषैं कहे जे आप्तके तीनू विशेषण ते सिद्ध भये। बहुरि अन्य प्रकार कहै हैं,—मा कहिये प्रमेयका प्रमाणरूप जाननहारा केवलज्ञान सोई भया रवि कहिये सूर्य, बहुरि इरा कहिये वाणी दिव्यध्वनि, ये दोऊ कैसे ? दुर्वार कहिये खोटे हेतु दृष्टांतनिकरि निवारन जिनका न होय ऐसे जाके होय सो दुर्वारमारवीर कहिये। बहुरि मद कहने तैं सर्व रागादिक लेने तिनकौं छेदै सो मदच्छित्

कहिये । ऐसैं भी ते आप्तके तीनू विशेषण भये ऐसा जानना । ऐसैं मगलकै अर्थि नमस्कार कीया । तहा मगल दोय प्रकार हैं—एक मुख्यमगल, दूजा अमुख्य मगल । तहा मुख्यमगल तौ जिनेन्द्रके गुणनिका स्तोत्र करना है अरु अमुख्यमगल लौकिक है तहा दधि अक्षत आदि है । सो इहा मुख्यमगल जिनेंद्रके गुणनिका स्तोत्र है सो ही किया है ।

आगैं इस ग्रथके कर्त्ताकू टीकाकार नमस्कार करै है,—

अकलंकवचोऽम्भोधेरुद्दध्रे येन धीमता ।
न्यायविद्यामृतं तस्मै नमो माणिक्यनन्दिने ॥ २ ॥

याका अर्थ—तिस माणिक्यनदिनाम आचार्यकै अर्थि हमारा नमस्कार होहु—जा बुद्धिवाननैं अकलक कहिये कर्मकलककरि रहित श्रीवर्द्धमानस्वामी अथवा अकलकनामा आचार्य तिनिके वचन अथवा अकलक कहिये निर्दोष सर्वज्ञकी दिव्यध्वनि सोही भया समुद्र तातैं न्यायविद्यारूप जो अमृत सो मथिकरि काढ्या—प्रगट कीया ऐसे हैं । इहा लौकिक कथा है जो नारायण समुद्र मथिकरि चौदह रत्न काढे तिनिमैं अमृतभी है सो प्रसिद्ध अपेक्षा अलकाररूप वचन है ।

आगैं इस ग्रथकी बडी टीका 'प्रमेयकमलमार्तण्ड' है ताका कर्त्ता प्रभाचन्द्र आचार्य है ताकी महिमा दोय श्लोकमै करै है,—

प्रभेन्दुवचनोदारचन्द्रिकाप्रसरे सति ।
मादृशाः क्व नु गण्यते ज्योतिरिंगणसन्निभा ॥३॥
तथापि तद्वचोऽपूर्वरचनारुचिर सताम् ।
चेतोहरं भृतं यद्वन्नद्या नवघटे जलम् ॥ ४ ॥

इनिका अर्थ—प्रभाचन्द्रनाम आचार्यके वचनरूप उदार चादणीका फैलना होतैं हम सारिखे आग्यानामा कीटजीवतुल्य कौन गणनामैं गणिये तोऊ हम इस ग्रथकी टीका करै हैं सो जैसैं नदीका जल

नवीन घटविषैं किछू घालिये सोहू शीतल होय पीवनेंवाले पुरुपनिके चित्तकू प्रिय लागै तैसैं तिस प्रभाचद्रके वचनही अपूर्व रचना कहिये तिनिकू नई रचनारूप किये सते सुदर सत्पुरुषनिके चित्तकू हरनहारे होयगे ।

आगैं यह टीका जिस निमित्ततैं त्रणी है सो सबध कहै हैं,—

> वैजेयप्रियपुत्रस्य हीरपस्योपरोधत ।
> शातिषेणार्थमारब्धा परीक्षामुखपचिका ॥ ५ ॥

याका अर्थ—वैजेयका प्यारा पुत्र जो हीरपनामा ताकी प्रार्थनातैं शातिषेणनामा कोई शिष्य हैं ताके पढनेके अर्थि यह परीक्षामुखनामा ग्रथकी पचिका आरमी है ।

इहा "परीक्षामुख" ऐसा नामका अर्थ ऐसा, जो परीक्षानाम विचारका है जो वस्तु ऐसैं है कि नाही है कि अन्यप्रकार है ऐसा विचारकू कहिए सो इहा प्रमाणका लक्षण आदिकी परीक्षा करिये हैं इस द्वारतैं सर्वही वस्तुकी परीक्षा होय है तातैं परीक्षामुख है । बहुरि ताकी टीकाकू पचिका कही सो सूत्रनिके पद न्यारे करि तिनिका न्यारा न्यारा अर्थ कहिये ताकू पचिका कहिए है, सो इस टीकामैं सूत्रनिका भिन्न भिन्न पदनिका अर्थ करियेगा तातैं पचिका नाम है । याका दूजा नाम प्रमेयरत्नमालाभी है ।

आगैं मूलग्रथका आदि सूत्रकी सूचनिका कहै है,—

श्रीमत् कहिये पूर्वापरविरोधरहितपणा सो ही जो श्री लक्ष्मी ताकरि सहित ऐसा जो न्याय सो ही भया समुद्र जामैं अगणित प्रमेय वस्तु-रूप रत्न भरे सो ही है सार जामैं ऐसा न्यायरूप समुद्र ताके अवगाहन करनेकू अव्युत्पन्न जे न्यायशास्त्रके अभ्यासरहित पुरुप ते असमर्थ है, ऐसा विचारि श्रीमाणिक्यनन्दिनाम आचार्य तिनिके अवगाहनेंकू जिहा-

जसारिखा यहु परीक्षामुखनाम प्रकरण रचै है । इहा न्याय ऐसा शब्द है सो 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'इण् गतौ' धातुकै घञ्प्रत्यय करण अर्थमें जोड्या है तातै ऐसा अर्थ होय है—जो कोई प्रकार नियमकरि प्रमेय-पदार्थका स्वरूप जाकरि जाणिये सो न्याय है । अथवा नयप्रमाणरूप युक्ति ताका कहनेहारा होय ताकू भी न्याय कहिये । बहुरि याका श्रीमान् विशेषण किया ताका यहु अर्थ—जो निर्वाधपणा होय सो श्री, अथवा श्रद्धान आदि गुणका उपजावना है लक्षण जाका ऐसी श्रीकरि युक्त होय सो श्रीमान् । बहुरि याकू समुद्र कह्या सो रूप-कालंकार करि कह्या सो याका विशेषण किया जो अमेयप्रमेयरत्नसार है । सो अमेय कहिये मिथ्यादृष्टीनिकरि जाननेमैं न आवै अथवा गणनारहित अनंतानंत ऐसै जे प्रमेय कहिये प्रमाणकरि जिनिकू जानिये ऐसे जीव आदिपदार्थ वस्तु है । बहुरि रत्ननिविषै सार होय सो रत्नसार कहिये, ऐसै अमेय प्रमेय है रत्न सार जामैं ऐसैं बहुव्रीहि समास है । बहुरि अमेय प्रमेय जे रत्न तिनिकरि सार है—उत्कृष्ट है ऐसा न्यायरूप समुद्र है ऐसै तत्पुरुष समास है। ऐसै इस परीक्षामुख प्रकरणके संबंध, अभिधेय, शक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन इनि तीनूनिकौं जाने विना परीक्षावान पुरुष-निकी प्रवृत्ति या विषैं होय नाहीं, इस हेतुतैं तिनि तीनूनिका अनुवाद कहिये पूर्वाचार्यनि करि कह्या होय तिस अनुसार कहना सो है पुरस्सर कहिये मुख्य जामैं । बहुरि वस्तु जाका कथन कीजिये सो ऐसा इहा वस्तुशब्दकरि प्रमाण अर प्रमाणाभास लेना ताका निर्देश कहिये स्वरूप कहना तिस विषै पर कहिये उत्कृष्ट—तत्पर ऐसा प्रतिज्ञाका श्लोक कहै है ।

भावार्थ—इस ग्रंथका आदिका श्लोक है तामैं अभिधेय संबंध शक्या-नुष्ठानइष्टप्रयोजन इन तीनूकौ जनाय अर प्रमाण अर प्रमाणाभासका लक्षण जो पूर्वाचार्यनिकरि कह्या है तिनिका अनुसार ले कहनेकी प्रतिज्ञा करै है,—

प्रमाणादर्थससिद्धिस्तदाभासाद्विपर्ययः ।
इति वक्ष्ये तयोर्लक्ष्म सिद्धमल्पं लघीयसः ॥ १ ॥

याका अर्थ——प्रमाणतै अर्थकी ससिद्धि होय है, बहुरि प्रमाणाभासतैं अर्थकी संसिद्धि नाहीं होय है—विपर्यय होय है। या हेतुतैं मै ग्रथकर्त्ता हू सो तिस प्रमाणका अरु प्रमाणाभासका लक्षण कहूंगा ।

टीका——अह कहिये मैं ग्रथकर्त्ता माणिक्यनदिआचार्य हू सो तल्लक्ष्म कहिये प्रमाण अर तदाभास इनि दोऊनिका लक्षण है ताहि वक्ष्ये कहिये कहूगा। सिद्ध कहिये पूर्वाचार्यनिकरि प्रसिद्ध किया सो ही। बहुरि कैसा ? अल्प कहिये थोरे अक्षरनिकरि कहनें योग्य अरु अर्थतै महान्। बहुरि कौनकू विचारि करि कहूगा ? अतिशय करि लघु जे शिष्यजन तिनिकू विचारि करि। इहा लघुपणा बुद्धिकृत ग्रहण करना, शरीरपरिमाणकृत न लेणा, जातैं छोटे शरीरवालेहू बडे बुद्धिवान होय है, बहुरि अवस्थाकृत भी न लेणा जातै छोटी अवस्थावालेभी केई बडे बुद्धिवान होय है, तातैं जिनिमैं बुद्धि थोडी होय ते इहा लघुशब्दकरि ग्रहण करनें। इहा लक्षणका तौ स्वरूप ऐसा जानना——जो बहुत वस्तु एकठी मिलिरही होय तिनिमैंसू जुदी करनेंका जो किछु वस्तुमैं प्रसिद्ध चिह्न होय सो लक्षण होय। बहुरि सिद्ध विशेपणतैं अपनीही रुचि करि नाही कीया पूर्नें कह्या तिसही अर्थरूप है ऐसा जनाया है। बहुरि अल्प कहनेंतै यामै थोरे अक्षरनिमै ही अर्थ बहुत है ऐसें याका निष्प्रयोजनपना निषेध्या है। यह प्रमाण तदाभासका लक्षण कौंन हेतुतैं कहिये है जातैं अर्थ जो जाननें योग्य वस्तु ताकी ससिद्धि कहिये प्राप्ति होना अथवा जानना ये दोऊ प्रमाणतै होय हैं यातैं। बहुरि केवल प्रमाणतै अर्थकी संसिद्धि होय है, ऐसाही नाहीं है प्रमाणाभासतै अर्थससिद्धिका अभावभी होय है यातैं दोऊहीका लक्षण कहना। बहुरि इति

शब्द है सो हेतु अर्थमें है अर याका समुदायार्थ उपरि कह्या सो जानना।

इहां तर्क,—जो अभिधेय, संबंध, शक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन इन तीननि करि सहित शास्त्र होय हैं । तहां इस प्रकरणका जहां ताईं अभिधेय अरु संबंध ये दोऊ न कहिये तहां ताईं याका उपादेयपणा न होय—यहु ग्रहण करनें योग्य न होय। इहां उदाहरण—जैसें काहूनें कह्या जो यह बंध्याका पुत्र जाय है, आकाशके फूलनिका जाकै मस्तक सेहुरा है, मरीचिका—भाडलीमें स्नान करि जाय हैं, सुसाके सींगका धनुष धारे है, ऐसे कहनेमें किछू वस्तु नाहीं अवस्तु कहे तातैं यामें अभिधेय—अर्थ नाहीं। बहुरि काहूनें कह्या—दश दाडिम हैं, छह पूवा है, चरबी है, छेलीका चामड़ा है, मासका पिंड है अथवा अहो देखो यह गेरू है स्पष्ट किया ताका पिता शीला होय गया ऐसे वचन कहे तिनिमैं काहूका संबंध न मिल्या—प्रलापमात्र भये । ऐसें शास्त्रमें अभिधेय सम्बन्धरहित वचन होयतौ परीक्षावान आदरै नाहीं । बहुरि तैसें ही जो अशक्यानुष्ठानइष्टप्रयोजन होय जाका ग्रहण करना कठिन होय अरु अपनें इष्ट होय तौ जैसे सर्पका मणि सर्वज्वर—रोगका हरनहारा है ऐसे कहनेमें रोगका हरणा तौ इष्ट है परन्तु तिसका ग्रहण करना कठिन है ऐसे वचनकूं परीक्षावान आदरै नाहीं । तैसेंही शक्यानुष्ठान अनिष्टप्रयोजन होय, जैसें काहूनै कह्या माताका विवाह करना, तौ याका करना तौ सुगम है परन्तु यह इष्ट नाहीं सो ऐसे वचन भी परीक्षावान आदरै नाहीं । तातैं ये तीनूं ही या शास्त्रके कहे चाहिए ॥

ताका समाधान,—आचार्य कहै है जो यहु सत्य है । या प्रकरणके अभिधेय प्रमाण अरु प्रमाणभास हैं ते तौ इस श्लोकमें प्रमाण तदाभास पदका ग्रहणतै कहे ही, जातैं इस प्रकरणकरि प्रमाण प्रमाणाभासकाही

कथन करिये है। बहुरि सबध है सो अर्थका सामर्थ्यहीतैं आया जातै या प्रकरणकै अरु प्रमाण प्रमाणाभासरूप अभिधेयकै वाच्यवाचक है लक्षण-जाका ऐसा सबध प्रतीतिमैं आवैही है। बहुरि प्रयोजन शक्यानुष्ठानरूप अरु इष्टरूप है सोभी आदि श्लोककरिही लखिये है, जातै प्रयोजन दोय प्रकार है एक साक्षात्, दूजा परपरा। तहा इस श्लोकमैं 'वक्ष्ये' ऐसा पद है सो या पदकरि साक्षात् प्रयोजन कहिये है जातैं सशय विपर्ययरहित शास्त्रका ज्ञान होनेतैं शिष्यजन देखि लैंगे, शिष्यजननिहीकू विचारि करि कहनेंकी प्रतिज्ञा करी है सो यही साक्षात् प्रयोजन है, बहुरि परप-राप्रयोजन अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति है सो आदि श्लोकमैं 'अर्थससिद्धि' ऐसा पद है ताकरि कह्या, जातें शास्त्रके ज्ञानकै अनतर अर्थका ज्ञान तथा प्राप्ति होयगी ऐसैं जानना।

फेरि तर्क,—जो समस्त विघ्नके नाशकै अर्थि इष्टदेवताका नमस्कार शास्त्रकी आदि विषैं चाहिये सो इस प्रकरणके कर्त्तानैं न किया सो कहा कारण ?

ताका समाधान,—आचार्य कहै है जो ऐसै न कहना, जातैं नम-स्कार मन अरु कायकरि भी सभवै है तातै ऐसै जानू मन करि अरु कायकरि शास्त्रके प्रारभ करतै कर लिया होयगा। बहुरि वचनकरि नमस्कारभी इस आदि वाक्यकरि जानना, जातै केई वाक्य ऐसे हैं जिनका दोय आदि अर्थभी देखिये है, जैसै काहूनें कह्या 'श्वेतो धावति' ऐसे वाक्यके दोय अर्थ होय हैं, एक तौ ऐसा जो 'श्वा' कहिये कूकरा (कुत्ता) सो 'इत' कहिये या तरफ 'धावति' कहिये दौडै है। बहुरि दूजा अर्थ— जो श्वेत कहिये धोला गुणयुक्त कोई दौडै है। ऐसे दोय अर्थकी प्रती-ति है। तहा आदिके वाक्यकै विषैं नमस्काररूप अर्थभी है, सोही कहिये हैं,—तहा अर्थ कहिये हेयोपादेयरूप वस्तु ताकी ससिद्धि कहिये यथार्थ-

ज्ञान सो प्रमाणतैं होय है, तहां मा कहिये लक्ष्मी अन्तरग तौ अनतचतुष्टयरूप अर बाह्य समवसरणादिकरूप, बहुरि आण कहिये शब्द इनि दोऊनिका द्वन्द्वसमासतैं माण ऐसा भया, बहुरि उपसर्ग जोड्या तत्र प्रमाण भया सो इस उपसर्गके योगतै ऐसा अर्थ भया जो ऐसी प्रकृष्ट उत्कृष्ट लक्ष्मी हरि–हर–ब्रह्मा आदिकू लौकिकदेव मानै है तिनिकै नाहीं । बहुरि ऐसी दिव्यध्वनि वाणी प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणतै विरोधरहित अन्यकै नाही, ऐसा प्रमाणनाम भगवान अरहतकाही भया ऐसैं असाधारण गुण दिखावना—कहना है सो भगवानका स्तवनही है तातैं अर्थकी ससिद्धिकू अवश्य कारणभूत जो प्रमाण कहिये भगवान अर्हन्त तातै तौ अर्थकी ससिद्धि सम्यग्ज्ञान होय है । बहुरि प्रमाणाभास जे हरिहरादिक तिनितै अर्थकी ससिद्धिका अभाव—मिथ्याज्ञान होय है । इस हेतुतै इस प्रकरणतै तिनि प्रमाण प्रमाणाभासका लक्षण कहूगा । ऐसै कह्या तैसा आगै सूत्र कहियेगा । जो "सामग्रीविशेष" इत्यादिक तिनिमैं सर्वज्ञ असर्वज्ञका निश्चय करियेगा । ऐसैं अरहतका सत्यार्थस्वरूप कहना सो मगलरूप भया, अन्यका निषेव सो अमगलका निषेध है ऐसा जानना ।

आगैं अब कहनेकू प्रारभ किया जो प्रमाणतत्व ताविषैं अन्यवादीनिकै च्यारि विप्रतिपत्ति है । स्वरूपविप्रतिपत्ति १ सख्या विप्रतिपत्ति २ विषयविप्रतिपत्ति ३ फलविप्रतिपत्ति ४ ऐसैं च्यारि । तिनिमैं प्रथमही स्वरूपकी विप्रतिपत्तिका निराकरणकै अर्थि सूत्र कहै है । इहा विप्रतिपत्ति नाम अन्यथा जाननेंका है सो प्रमाणका स्वरूप अन्यवादी अन्यप्रकार कहै है सो बाधासहित है, सत्यार्थ नाहीं, ऐसा इस सूत्रतैं सिद्ध होय है,—

स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम् ॥ १ ॥

याका अर्थ---स्व कहिये आप आत्मा अपूर्वार्थ कहिये पहिले जाकी प्रमाणता न भई ऐसा अन्य वस्तु इनि दोऊनिनिर्विषै व्यवसायात्मक कहिये व्यापारकरि निश्चय करने स्वरूप जो ज्ञान सो प्रमाण है। इहां प्रमाण शब्दकी निरुक्ति ऐसी,---'प्र' कहिये प्रकर्षरूप संशय, विपर्यय, अनध्यवसायकरि रहित होय करि 'मीयते' कहिये वस्तुस्वरूपकूं जानिये जा करि सो प्रमाण हैं, ऐसैं करणसाधनरूप निरुक्ति है, सो ऐसा ज्ञान विशेषणकरि तौ जे अज्ञानरूप सन्निकर्ष आदिकूं प्रमाण मानैं हैं तिनिका निराकरण भया। तहां लघु नैयायिकमतवाले तौ इन्द्रियकै अर पदार्थकै संबंध होना ऐसा जो सन्निकर्ष ताकूं प्रमाण मानै है, अर बडे पुराणे नैयायिक ते कर्त्ता कर्म आदि कारकनिका सकलपणाकूं प्रमाण मानैं हैं। बहुरि सांख्यमतवाले इन्द्रियनिकी प्रवृत्तिहीकूं प्रमाण मानैं हैं। बहुरि प्राभाकर जे मीमांसकमतके भेदवाले अज्ञानरूप जो ज्ञाता का व्यापार ताकूं प्रमाण मानै है तिनिका निषेध ज्ञान कहनेंतै भया। बहुरि बौद्धमती प्रमाण ज्ञान--हीकूं कहे हैं परन्तु प्रमाणका भेद जो प्रत्यक्ष ताके च्यारि भेद करै हैं। स्वसंवेदनप्रत्यक्ष १ इन्द्रियप्रत्यक्ष २ मानसप्रत्यक्ष ३ योगिप्रत्यक्ष ४ ऐसैं यहू च्यारूही प्रकारका प्रत्यक्ष निर्विकल्प--व्यापार करि रहित मानैं है तिनिके निराकरणकै अर्थि व्यवसायपदका ग्रहण है। जो व्यापाररूप सविकल्प होय---निश्चय करनेंवाला होय सो प्रमाण है। बहुरि अर्थपदका ग्रहणतैं जे बाह्य पदार्थका लोप करनेवाले विज्ञानाद्वैतवादी बौद्धमती तथा ब्रह्माद्वैतवादी वेदान्तमती तथा दीखती वस्तुका लोप करनेंवाले शून्यएकान्तवादी तिनिका निराकरण है। बौद्धमतीके च्यारि भेद है तहां माध्यमिक तो सर्वशून्य मानै है, बहुरि योगाचार बाह्यपदार्थकूं शून्य मानैं है ज्ञानकूं अद्वैत मानैं है, बहुरि सौत्रांतिक अनुमानका विषय अनुमेयकूं अवस्तु मानै है, बहुरि वैभाषिकभी सर्व वस्तुकूं शून्य

मानैं है । बहुरि अर्थका अपूर्व विशेषण है सो गृहीतग्राही पहले ग्रहण किया—जान्या ताहीकूं ग्रहण करै—जानै ऐसा जो धारावाही ज्ञान ताकै प्रमाणताका निषेधकै अर्थि है, धारावाहीज्ञान प्रमाणका फलरूप प्रमिति है करणस्वरूप प्रमाण नाही । बहुरि स्वपदका ग्रहणतैं ज्ञानकूं परोक्षही मानैं ऐसे मीमासकमती तथा ज्ञान स्वसंवेदनस्वरूप नाही परहीकूं जानै है—आपकूं आप जानै नाही ऐसे माननेवाले सांख्यमती तथा ज्ञान है सो दूसरे ज्ञान करि जानिये है आपकूं आपही जानै नाही ऐसै माननेवाले योगमती नैयायिक इनिका निषेध है, ज्ञान स्वपरप्रकाशक है। ऐसैं अव्याप्ति अतिव्याप्ति असंभव ऐसे तीन लक्षणके दोष हैं तिनितै रहित भले प्रकार ठहरया निश्चय भया प्रमाणका लक्षण है। ऐसैं यहु सूत्र है सो प्रमाणभूत है । तहा अनुमानप्रमाणका प्रयोगस्वरूप या सूत्रकू दिखाइए है,—तहा प्रमाण तौ इहा धर्मी है ता विषैं यह लक्षण कह्या सो साध्य है, बहुरि प्रमाण जो धर्मी सो ही इहा हेतु कहना ।

इहा प्रश्न,—जो प्रमाण शब्दकै तौ प्रथमा विभक्ति है अर हेतु विषैं पंचमी होय है सो प्रमाण शब्द हेतु कैसैं ?

ताका समाधान,—जो कोई जायगा प्रथमा विभक्ति अंतपदभी हेतुस्वरूप होय है, जैसै कह्या है 'प्रत्यक्ष विशद ज्ञान' इहा साध्य साधनका प्रयोग करिये तब प्रथमाभी हेतुरूप है, इस सूत्रका प्रयोग ऐसैं किया है, "प्रमाण है सो स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान है, काहे तैं जातैं प्रमाणपना याहीकै है, तातैं जो स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान नाहीं सो प्रमाण नाहीं जैसे संशयादिक स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक नाहीं ते प्रमाणभी नाहीं तथा घट आदि जडपदार्थ ते भी ऐसे नाही ते प्रमाण नाहीं, बहुरि प्रमाण है सो ऐसा है, तातै स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान है सो ही प्रमाण

है ।" ऐसैं अनुमानके पच अवयवरूप यह सूत्र है । धर्मी अर साध्य दोऊ स्वरूप पक्ष कहिये ताका वचन सो प्रतिज्ञा है, साधनका वचन सो हेतु है, व्याप्तिकू लार लगाय दृष्टातका वचन सो उदाहरण है, दृष्टातकू अरु पक्षकू समान कहना हेतुको सकोचना सो उपनय, साध्यका नियम कहना सो निगमन, ऐसें इनि पाचनिका स्वरूप आगै सूत्रकार कहसी । ऐसें सूत्र है सो प्रमाणभूत है आप्तका यह वचन है तातै तौ आगमप्रमाणरूप होहै, वहुरि अनुमानके अवयवरूप होहै । बहुरि सूत्रका ऐसा भी स्वरूप कह्या है,—जामें अक्षर अल्प होय, वहुरि जामैं सदेह न उपजै, वहुरि सारर(स)हित होय नि सार नाहीं होय, वहुरि जामैं निर्णय गूढ होय, अर्थ गभीर होय, बहुरि शब्द अर्थ जामैं निर्दोष होय, वहुरि हेतु-सहित होय, वहुरि सत्यार्थ होय ऐसा होय सो सूत्र है, सो इस प्रकरणके सर्वसूत्रनिका ऐसा स्वरूप जानना। इहा प्रमाणकूही हेतु कह्या सो असिद्ध नाही है जातैं सर्वही प्रमाणका स्वरूप कहनेवालेनिकै प्रमाणसामान्यविषै विप्रतिपत्तिका अभाव है, प्रमाणसामान्य प्रसिद्ध है जो ऐसे नाही मानिये तौ अपना इष्टतत्वकू साधना परका इष्टतत्वकू दूषण देना न होय प्रमाण विना काहेतैं साधै काहेतै दूषै ।

इहा तर्क,—जो धर्मीहीकू हेतु कहे प्रतिज्ञाका एकदेश भया सो असिद्धनामा हेत्वाभास भया ।

ताका समाधान,—जो ऐसै नाही, प्रमाणका विशेषकू धर्मीकरि अर प्रमाण सामान्यकू हेतु कहे तिनिकै दोष नाही आवै है इसही वचनतैं या हेतुकू अपक्षधर्म कहै सो भी नाही है जातै सामान्य है सो समस्त विशेषनिमै व्यापक होय है सो पक्षका धर्मही है । वहुरि हेतुकै पक्षका धर्मपणाका वलकरि साध्य प्रति गमकपणा नाही है साध्य विना न होना इस वलतै ही साध्य प्रति गमकपणा है सो यहु साध्यान्यथानुपपत्ति कहिये;

सो इहा प्रमाणनामा हेतुकै स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञाननामा साध्यतैं नियम करि पाइए है सो विपक्ष जो संशयादिक तिनिविषैं यह साध्यान्यथानुपपत्ति नाहीं है सोही बाधक प्रमाण है ताके बलतैं निश्चयस्वरूप है। इसही कथनतैं इस हेतुकै विरुद्धपणा 'बहुरि अनैकान्तिकपणा भी निराकरण भया ऐसा जानना जातैं विरुद्ध हेतुकै अरु व्यभिचारी हेतुकै अविनाभावका नियमका निश्चय सो ही है लक्षण जाका ऐसी व्याप्तिका अयोग है यातैं प्रमाणत्वनामा हेतु ते यथोक्त साध्यकी सिद्धि होयही है, यह केवलव्यतिरेकी हेतु है तातैं साध्य प्रति गमकही है। जैसैं ऐसे हेतु और भी कहे हैं,—जीविता शरीर आत्मासहित है, जातैं प्राणादिसहितपणा है, जो आत्मासहित नाहीं होय सो प्राणादिसहित नाही होय—श्वासोच्छ्वासादिक्रिया जामैं नाहीं होय जैसैं मृतकशरीर, ऐसैं प्राणादिमत् पणा हेतु केवलव्यतिरेकी है याका अन्वयव्याप्तिरूप दृष्टांत नाही तातैं केवलव्यतिरेकी कहिये, तैसैं प्रमाणत्वनामा हेतु भी केवलव्यतिरेकी जानना, याकाभी अन्वयव्याप्तिरूप दृष्टांत नाही है।

इहा पहले कह्या था जो प्रमाण संशयादिरहित वस्तुकूं जानै है संशयादिकका स्वरूप न कह्या सो ऐसै है—जो दोय पक्षमैं ज्ञान समान होय—निर्णय न होय सकै, जैसै स्थाणु था ता विषै अंधकारादिके निमित्ततैं संशय उपज्या 'जो यह स्थाणुहै कि पुरुष है' ऐसै दोऊ पक्षमें निश्चय न भया, जो कहा है सो तौ संशय है। बहुरि 'दोऊ पक्षमैं एकका अन्यथाका निश्चय होना सो विपर्यय है' जैसैं स्थाणु था ता विषैं ऐसा निश्चय भया जो यह पुरुषही है, ऐसा विपर्यय है। बहुरि अनध्यवसाय—जामैं चलते तृणादिका स्पर्श भया तहा ऐसा 'ज्ञान जो कछु है' ऐसैं जामैं संशय भी नाही अन्यथा निश्चय भी नाही यथार्थ निश्चय भी नाही सो अनध्यवसाय है।

बहुरि अव्याप्त अतिव्याप्त असभवि ये तीन लक्षणाभास कहे। तिनिका स्वरूप ऐसा—जो लक्ष्य काहू वस्तुकू स्थापि ताका लक्षण करिये सो जो लक्षण लक्ष्यके सर्वविशेषभेदनिमै न व्यापै कोईमैं होय कोई विशेषमै न होय सो लक्षण अव्याप्तस्वरूप है। बहुरि जो लक्षण लक्ष्य स्थाप्या तामै भी होय अरु जो लक्ष्य नाही तामे भी होय सो अतिव्याप्त है। बहुरि जो लक्ष्य स्थाप्या तामैं नाहीं सभवै सो असभवि है। सो इहा प्रमाण तौ लक्ष्य है अर स्वापूर्वार्थव्यवसायात्मक ज्ञान लक्षण है, सो ज्ञान ऐसा कहनेमे तौ सम्यग्ज्ञानके पाच भेद है ते परोक्ष प्रत्यक्ष प्रमाणके भेद है तिनिमै सर्वमैं पाइए है तातैं अव्याप्त लक्षण नाही। बहुरि व्यवसायात्मकविशेषणतैं सशयादिक अप्रमाण ज्ञान हैं तिनिमे व्यवसाय कहिये यथार्थ निश्चयस्वरूपपणा नाही तातैं तिनिमैं व्यापै नाही तातै अतिव्याप्त नाही। बहुरि स्वविशेषणतै असभव दोष भी नाही है जो आपकू न जानै सो परकू भी न जानैं ऐसा असभवदोष यामैं नाही। ऐसे त्रिदोपरहित लक्षण जानना। जो लक्ष्य अप्रसिद्ध होय ताका प्रसिद्ध चिह्न होय सो लक्षण होय है ॥ १ ॥

आगै अब अपना कह्या जो प्रमाणका लक्षण ताका ज्ञान ऐसा विशेपण किया, ताकू समर्थनरूप दृढ करते सते आचार्य सूत्र कहैं हैं,—

हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थं हि प्रमाणं ततो ज्ञानमेव तत् ॥ २ ॥

याका अर्थ—हि कहिये जातैं हितकी प्राप्ति अहितका परिहार विषै समर्थ प्रमाण है तातैं ऐसा ज्ञानही है। अज्ञानरूप सन्निकर्षादिकविषै यह सामर्थ्य नाही। तहा हित तौ सुख है जातै सर्व प्राणी सुखहीकू चाहैं हैं, बहुरि सुखका कारण है सो भी हित ही है। बहुरि

अहित दुःख है जातै सर्व प्राणी दु खकू दूरि किया चाहैं हैं बहुरि दु खका कारण है सो भी अहित ही है इहा दोऊनिका द्वद्वसमास है। बहुरि प्राप्ति अरु परिहारका द्वद्वसमास करणा ताकू यथासख्य लगावना, तब हितकी प्राप्ति अहितका परिहार ऐसा भया । इनि दोऊविर्षे समर्थ कहिये करनेंकी शक्तियुक्त ऐसा । बहुरि 'हि' शब्द हेतु अर्थमै है तातै ऐसा अर्थ भया जो हिताहितकी प्राप्ति परिहार विषे समर्थ है सो ही प्रमाण है । तातै प्रमाणपणा करि मान्या जो वस्तु सो ज्ञानही होने योग्य है । अज्ञानरूप जे अन्यमतीनिकरि मानैं सन्निकर्ष आदि प्रमाण ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारविषैं समर्थ नाही तातै ते प्रमाण नाही । या सूत्रका अनुमान प्रयोग ऐसैं करना,— 'प्रमाण ज्ञान ही है,' यह तौ धर्मी अर साध्यके वचनरूप प्रतिज्ञा भई, बहुरि 'हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थपणातै' यह साधनका वचनरूप हेतु भया, बहुरि 'जो ज्ञान है सोही ऐसा है अन्य ऐसा नाही जैसै घट आदि जडपदार्थ' यह व्यतिरेकव्याप्तिरूप दृष्टातका वचन सो उदाहरण भया, बहुरि 'ऐसा यह प्रमाण है' यह उपनय भया, बहुरि 'तातै हिताहितप्राप्ति-परिहारविषै समर्थ जो प्रमाण सो ज्ञान ही है' यहु निगमन भया। ऐसैं पाच अवयरूप अनुमानका प्रयोग या सूत्रका होय है । इहा हेतु, असिद्ध नाही है जातै परीक्षावान पुरुष है ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारकै अर्थिही प्रमाणकू विचारै हैं, निष्प्रयोजन व्यसनमात्रही प्रमाणकी कथनी नाही करैं है। ऐसै सर्वही प्रमाणके कहनेंवाले मानै है॥२॥

आगैं बौद्धमती कहैं है जो सन्निकर्षादिक अज्ञानरूप ही प्रमाणकू मानैं है तिनिके निराकरणकै अर्थि ज्ञानहीकै प्रमाणपणा कह्या सो तौ होहु याकू हम नाही निषेधै हैं, बहुरि तुम व्यवसायात्मक ज्ञानका विशेषण किया सो या विषै हम युक्ति नाही देखैं है जो यह तुम कैसै

कहो हो ? हमारे तौ अनुमान प्रमाणकै तौ व्यवसायात्मकपणाकरि प्रमाणपणाका अगीकार है, बहुरि प्रत्यक्षप्रमाणकै तो निर्विकल्पणा होतै ही सत्यार्थपणातैं प्रमाणपणा वणै है, ऐसै बौद्ध कहै ताके समाधानकै अर्थि सूत्र कहैं है,—

तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत् ॥३॥

याका अर्थ—तत् कहिये प्रमाणस्वरूप कह्या जो ज्ञान सो निश्चयात्मक कहिये निश्चयस्वरूप है, काहे तैं ? जातैं समारोप कहिये संशयादिक तिनितैं विरुद्ध है यथार्थ है, जैसैं अनुमान है तैसैं। इहा याका प्रयोग ऐसैं—तत् कहिये सो प्रमाणपणाकरि मान्या वस्तु यहु तौ धर्मी भया, बहुरि यहु निश्चयात्मक कहिये व्यवसायस्वरूप है यहु साध्य है, दोऊ मिल्या हुवा पक्ष है, याका वचनकूं प्रतिज्ञा कहिये। बहुरि समारोपविरुद्धपणातैं यह हेतु है, इहा समारोप नाम संशयादिकका है। बहुरि अनुमानवत् यहु दृष्टांतका वचन सो उदाहरण है। इहा यहु अभिप्राय है जो संशय विपर्यय अनध्यवसाय स्वभाव जो समारोप जिसका विरोधी जो वस्तुका ग्रहण कहिये जानना सो है लक्षण जाका ऐसा व्यवसायस्वरूपपणाकूं होतैं ही अविसंवादी पणा कहिये बाधारहित सत्यार्थपणा सो वणै है, बहुरि जो अविसंवादी पणा है सो ही प्रमाणपणा है। ऐसैं बौद्धमतीनैं मान्या जो च्यारि प्रकारका प्रत्यक्षप्रमाण ताकै प्रमाणपणाकूं अगीकार करनेका इच्छुक है तौ समारोपका विरोधी जो ग्रहण—जानना सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चयात्मक ज्ञानकूं ही प्रमाण मानना योग्य है।

इहा बौद्धमती कहै है जो समारोपका विरोधी अरु व्यवसायात्मक ये दोऊ रूप तौ एक ज्ञानहीकै भये तहा साध्यसाधनभाव एक ज्ञानहीकै

अहित दु·ख है जातै सर्व प्राणी दु खकू दूरि किया चाहैं हैं वहुरि दु खका कारण है सो भी अहित ही है इहा दोऊनिका द्वद्वसमास है। वहुरि प्राप्ति अरु परिहारका द्वद्वसमास करणा ताकू यथासख्य लगावना, तव हितकी प्राप्ति अहितका परिहार ऐसा भया । इनि दोऊविपैं समर्थ कहिये करनेंकी शक्तियुक्त ऐसा । वहुरि 'हि' शब्द हेतु अर्थमै है तातै ऐसा अर्थ भया जो हिताहितकी प्राप्ति परिहार विपैं समर्थ है सो ही प्रमाण है। तातैं प्रमाणपणा करि मान्या जो वस्तु सो ज्ञानही होने योग्य है। अज्ञानरूप जे अन्यमतीनिकरि मानै सन्निकर्ष आदि प्रमाण ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारविपैं समर्थ नाही तातै ते प्रमाण नाही। या सूत्रका अनुमान प्रयोग ऐसै करना,— 'प्रमाण ज्ञान ही है,' यह तौ धर्मी अर साध्यके वचनरूप प्रतिज्ञा भई, वहुरि 'हिताहितप्राप्तिपरिहारसमर्थपणातै' यह साधनका वचनरूप हेतु भया, वहुरि 'जो ज्ञान है सोही ऐसा है अन्य ऐसा नाही जैसैं घट आदि जडपदार्थ' यह व्यतिरेकव्याप्तिरूप दृष्टातका वचन सो उदाहरण भया, वहुरि 'ऐसा यह प्रमाण है' यह उपनय भया, वहुरि 'तातै हिताहितप्राप्ति-परिहारविपै समर्थ जो प्रमाण सो ज्ञान ही है' यहु निगमन भया। ऐसैं पांच अवयरूप अनुमानका प्रयोग या सूत्रका होय है । इहा हेतु, असिद्ध नाही है जातै परीक्षावान पुरुप है ते हितकी प्राप्ति अहितका परिहारकै अर्थिही प्रमाणकू विचारैं हैं, निष्प्रयोजन व्यसनमात्रही प्रमाणकी कथनी नाही करैं है। ऐसैं सर्वही प्रमाणके कहनेंवाले मानैं है॥२॥

आगैं वौद्धमती कहै है जो सन्निकर्षादिक अज्ञानरूप ही प्रमाणकू मानै है तिनिके निराकरणकै अर्थि ज्ञानहीकै प्रमाणपणा कह्या सो तौ होहु याकू हम नाही निपेधै है, वहुरि तुम व्यवसायात्मक ज्ञानका विशेपण किया सो या विपैं हम युक्ति नाही देखे है जो यह तुम कैसै

कहौ हो ? हमारै तौ अनुमान प्रमाणकै तौ व्यवसायात्मकपणाकरि प्रमाणपणाका अगीकार है, बहुरि प्रत्यक्षप्रमाणके तो निर्विकल्पणा होतैं ही सत्यार्थपणातैं प्रमाणपणा वणै है, ऐसै बौद्ध कहे ताके समाधानकै अर्थि सूत्र कहैं है,—

तन्निश्चयात्मकं समारोपविरुद्धत्वादनुमानवत् ॥३॥

याका अर्थ—तत् कहिये प्रमाणस्वरूप कह्या जो ज्ञान सो निश्चयात्मक कहिये निश्चयस्वरूप है, काहे तै ? जातैं समारोप कहिये सशयादिक तिनितैं विरुद्ध है यथार्थ हैं, जैसै अनुमान है तैसैं। इहा याका प्रयोग ऐसैं—तत् कहिये सो प्रमाणपणाकरि मान्या वस्तु यह तौ धर्मी भया, बहुरि यहु निश्चयात्मक कहिये व्यवसायस्वरूप है यहु साध्य है, दोऊ मिल्या हुवा पक्ष है, याका वचनकूं प्रतिज्ञा कहिये। बहुरि समारोपविरुद्धपणातैं यह हेतु है, इहा समारोप नाम सशयादिकका है। बहुरि अनुमानवत् यहु दृष्टांतका वचन सो उदाहरण है। इहा यहु अभिप्राय है जो सशय विपर्यय अनध्यवसाय स्वभाव जो समारोप जिसका विरोधी जो वस्तुका ग्रहण कहिये जानना सो है लक्षण जाका ऐसा व्यवसायस्वरूपपणाकूं होतैं ही अविसवादी पणा कहिये बाधारहित सत्यार्थपणा सो वणै है, बहुरि जो अविसवादी पणा है सो ही प्रमाणपणा है। ऐसैं बौद्धमतीनैं मान्या जो च्यारि प्रकारका प्रत्यक्षप्रमाण ताकै प्रमाणपणाकूं अगीकार करनेंका इच्छुक है तौ समारोपका विरोधी जो ग्रहण—जानना सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चयात्मक ज्ञानकूं ही प्रमाण मानना योग्य है।

इहा बौद्धमती कहै है जो समारोपका विरोधी अरु व्यवसायात्मक ये दोऊ रूप तौ एक ज्ञानहीके भये तहा साध्यसाधनभाव एक ज्ञानहीकै

कैसैं वर्णै ? ताकू आचार्य कहै है—ऐसैं न मानना जातैं इनि दोऊ-निकै ज्ञानस्वभावकरि अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक जो धर्म तिनिका आधारपणा करि भेदभी वर्णै है, जैसैं शीसू नामा वृक्ष है ताकै शीसूपणाकै वृक्षपणातैं अभेद होतैं भी व्याप्यव्यापक धर्मके आधारपणाकरि भेद वर्णै है। भावार्थ—व्यापककै तौ व्याप्य बहुत है बहुरि व्याप्यकै सो व्यापक एक ही है, तहा व्यापककू तौ गम्यसज्ञा कही है अर व्याप्यकू गमकसज्ञा कही है, सो इहा व्यवसायस्वरूप ज्ञान तौ व्यापक है जातैं यथार्थनिश्चयात्मक जो प्रमाण ताविषैं भी वर्त्तै है अर अन्यथानिश्चयात्मक जो विपर्यय ज्ञान तामैं भी वर्त्तै है। बहुरि समारोपका विरोधीपणा है सो यथार्थनिश्चयात्मक ज्ञान विषैं ही प्रवर्त्तै है, विपर्ययविषैं नाही है तातैं भेद है, जैसैं वृक्षपणा तौ सर्व वृक्षनिमैं वर्त्तै है सो व्यापक है बहुरि शीसूपणा शीसू वृक्षविषै ही वर्त्तै है तातैं व्याप्य है, तातैं शीसूपणा तौ वृक्षविषैं गमक भया अर वृक्षपणा शीसूकै गम्य भया, ऐसा जनना तातैं साध्यसाधनभाव वर्णै है। बौद्धमती प्रत्यक्ष प्रमाणाका लक्षण कल्पनारहित अभ्रात ऐसा कहै है, ताकू अविसवादस्वरूप कहै हैं, अर्थक्रियाहीतैं कहैं हैं, वस्तुका प्राप्त करनेवाला कहैं है, याहीकू वस्तुका प्रवर्त्तक कहैं है, अपनें विषयका दिखावनेवाला कहैं है, वस्तुविषैं निश्चय उपजावनहारा कहैं हैं सो ऐसा तौ व्यवसायात्मक विशेषण किये ही वर्णैगा। बहुरि अनुमानकू बौद्धमती सविकल्प सामान्यमात्रविषयस्वरूप कहैं हैं ताकू इहा दृष्टात कीया है जो जैसैं अनुमानकू निश्चयस्वरूप सविकल्प मानैं है तैसैं प्रत्यक्षकू भी मानों, सर्वथा निर्विकल्पकै प्रमाणपणा वर्णै नाही। बहुरि इहा समारोपका विरोधी कह्या सो विरोध तीनप्रकार होय है, एक तौ सहानवस्थानलक्षण, जहा दोऊ विरोधी एकठे रहैं नाही जैसैं प्रकाश अरु अधकार। बहुरि दूजा परस्परपरिहारलक्षण, जैसैं

एकठे तो रहै परन्तु स्वरूप मिलै नाही जैसै रूपगुण अर रसगुण, एक वस्तुमैं रहै स्वरूप जुदा जुदा है ही। तीसरा वध्यघातकलक्षण, परस्पर घातकरै जैसै सर्पकै अरु न्योलाकै वैर होय । सो इहा समारोपकै अरु यथार्थनिश्चयात्मककै सहानवस्थानलक्षण विरोध है, यथार्थ निश्चय होय तहा समारोप सशय विपर्यय अनध्यवसाय रहै नाही ॥ ३ ॥

आगैं अत्र प्रमाणका लक्षणमै अपूर्व विशेषणसहित अर्थका ग्रहण है ताकू समर्थन करि दृढ करता सता—तिसकू स्पष्ट करता सता सूत्र कहै है,—

अनिश्चितोऽपूर्वार्थः ॥ ४ ॥

याका अर्थ—जाका पूर्व निश्चय न भया होय ऐसा वस्तु अपूर्वार्थ है। तहा जो अन्य प्रमाणकरि सशयादिकका व्यवच्छेद करि निश्चय न किया ऐसा जो अर्थ कहिये वस्तु सो अपूर्वार्थ है। ऐसा कहनें करि ईहा ज्ञानका विषय वस्तुकू पहिले अवग्रहादिक करि ग्रहण किया ताकै गृहीतग्राहीपणा होतैं भी पूर्वार्थपणा नाही है, जातैं ईहादिक ज्ञानका विषयभूत वस्तु अवग्रहके ग्रहे पीछैं जो अवान्तरविशेष कहिये अन्याविशेष सो अवग्रहादिकरि निश्चय नाही होय है तातैं पूर्वार्थ नाही है, अपूर्वार्थ ही है ॥ ४ ॥

आगैं कहै हैं, जो अपूर्वार्थ कह्या सो याही प्रकार है कि कोई अन्य भी प्रकार है ऐसैं पूछैं सूत्र कहै हैं,—

दृष्टोऽपि समारोपात्तादृक् ॥ ५ ॥

याका अर्थ—जो वस्तु पूर्वं देख्या होय—प्रमाणतैं निश्चय किया होय पीछैं ताविषैं सशयादिक जो समारोप सो होय जाय तौ वस्तु 'तादृक्' कहिये विना निश्चय कीया समान है—अपूर्वार्थ है। तहा 'दृष्टोऽपि'

कहिये अन्य प्रमाणकरि ग्रह्या होय तौ भी तादृक् कहिये अपूर्वार्थ ही है। इहा ऐसा अर्थ भया जो अनिश्चित ऐसैं पूर्वैं कह्या सो ही केवल अपूर्वार्थ नाही है, देखे विपैं भी सशयादिक होय जाय सो भी अपूर्वार्थ है। इहा ऐसा अर्थ है जो अन्यप्रमाणकरि पहली ग्रह्या था सो घूघला आकारपणा करि निर्णय न होय सकै सो भी वस्तु अपूर्व है जातै तिसविपैं प्रवर्त्या जो समारोप कहिये सशयादिक तिनिका व्यवच्छेद नाही है ॥ ५ ॥

आगै जे ज्ञानकू स्वप्रकाशक नाही मानै हैं ते कहै है जो विज्ञानकै अपूर्वार्थ व्यवसायात्मकपणा तौ होहु परन्तु स्वव्यवसाय तौ हम नाही जानै है, ऐसै कहै ताकू उत्तरका सूत्र कहै है,—

स्वोन्मुखतया प्रतिभासनं स्वस्य व्यवसायः ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अपने सन्मुखपणा करि अपना प्रतिभासना सो अपनां व्यवसाय है। अपनें स्वोन्मुखपणा सो तौ 'स्वोन्मुखता' कहिये ऐसैं अपना अनुभव ताकरि प्रतिभासना प्रतीति होना सो 'स्वस्य व्यवसाय' कहिये। तहा मैं मेरै ताई जानू हू ऐसी प्रतीति जाननीं ॥६॥

इहा दृष्टान्तका सूत्र कहै हैं,—

अर्थस्येव तदुन्मुखतया ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जैसै अर्थ कहिये अन्यपदार्थ ताकै सन्मुख होय ताकू जानै है तैसै ही आपके सन्मुख होय अपनीं तरफ देखै तब आपकू जानैं। इहा 'तत्' शब्द करि तौ अर्थका ग्रहण करना जैसैं अर्थकै सन्मुखपणा करि प्रतिभासना होय तब अर्थका निश्चय होय है तैसैं अपनें सन्मुखपणा करि अपना प्रतिभासना होय तब अपना निश्चय होय है ॥ ७ ॥

आगैं इहा उल्लेख करै है,–(दृष्टान्त दार्ष्टान्तिकका उदाहरणकू उल्लेख कहिये),—

घटमहमात्मना वेद्मि ॥ ८ ॥

याका अर्थ—मैं आपही करि घट है ताहि जानू हू। इहा 'अह' ऐसा तौ कर्त्ता है, 'घट' कर्म है, 'आत्मना' करण है, 'वेद्मि' ऐसी क्रिया है। सो जैसैं आप आपकरि घट वस्तुकू जानैं है तैसैं आप आपकरि आपकू भी जानैं है ऐसा जानना ॥ ८ ॥

आगैं इहा नैयायिक तौ कहै है,–ज्ञान है सो अन्यपदार्थकू ही निश्चय करै है—कर्महीकू जानैं है आपकू नाही जानैं है, आप करण है तथा आत्मा जो कर्त्ता है ताकू भी नाही जानै है तथा फलरूप क्रिया है ताकू भी नाही जानै है। इहा जैनमत अपेक्षा अज्ञानका नाश होना ज्ञेयोपादेयका जानना तथा वीतरागतारूप होना ऐसा प्रमाणका फल जानना। बहुरि मीमासकनिमै भट्टमतवाले कहै है—जो कर्त्ता अरु कर्मकू ही ज्ञान जानै है, आप करण है सो आपकू आप नाही जानै है अर क्रियारूप फलकू भी नाही जानै है। बहुरि मीमासकमतमैं ही जैमिनीय मत है ते कहै है कर्त्ता कर्म क्रियाकू ज्ञान जानै है अरु आप करण है सो आपकू आप नाही जानैं है। बहुरि मीमासकमतमै ही प्रभाकरका मत है सो कहै है—कर्म क्रियाहीकू ज्ञान जाने है आत्मा कर्त्ताकू अर आप करणकू नाही जानैं है। सो ये सर्वही मत प्रतीतिबाधित हैं ऐसा दिखावता सता सूत्र कहै है,—

कर्मवत्कर्तृकरणक्रियाप्रतीतेः ॥ ९ ॥

याका अर्थ—ज्ञानविषै जैसै कर्मकी प्रतीति है तैसै ही कर्त्ता, करण, क्रियाकी प्रतीति है ऐसैं पूर्वसूत्रका हेतुरूप यहु सूत्र है, तातैं पचमी

विभक्ति अन्तमैं है। तहा ज्ञानका विषयभूत वस्तु है सो तौ कर्म कहिये है, जातै कर्मका स्वरूप ऐसा है जो क्रियाकै व्याप्य होय—प्राप्त होने योग्य होय तथा रचनें योग्य होय तथा विकार करनें योग्य होय सो इहा ज्ञप्तिक्रियाकै व्याप्य ज्ञानका विषय वस्तु ही है। बहुरि कर्मवत् कह्या सो यह उपमा अलकाररूप दृष्टान्तका वचन भया। बहुरि कर्त्ता आत्मा है। बहुरि करण प्रमाणरूप ज्ञान है। बहुरि क्रिया प्रमिति है। तिनिका द्वद्व समास करि प्रतीति शब्दतै षष्ठीतत्पुरुष समास करना, ताकै अतविषैं हेतु अर्थ मैं पचमी विभक्ति करनी। इहा वृत्तिमैं 'का' ऐसी पचमीकी सज्ञा है सो जैनेन्द्रव्याकरण अपेक्षा है। ऐसै पहले सूत्र कह्या तामैं अनुभवका उल्लेख है ता विषैं यथा अनुक्रम सबध करणा तब ऐसा अर्थ होय है—जो ज्ञान जैसै अपना विषयभूत वस्तु जो कर्म ताकी प्रतीति करै है तैसै ही कर्त्ता आत्माकी तथा करणरूप आपकी तथा क्रियाकी प्रतीति करै है यातै जैसै घटकू मै आप करि जानू हू ऐसी प्रतीति करै है तैसै ही कर्त्ता करण क्रिया विषै भी मैं इनिकू जानू हू ऐसी प्रतीति करै है यामैं बाधा नाहीं है, अनुभवसिद्ध है। इहा ऐसा जानना जो एक ही ज्ञानमै कर्त्ता आदि अनेक कारक अवस्था भेद विवक्षा करि सभवै है तातैं जैनमत स्याद्वाद है तामैं अपेक्षातै विरोध नाहीं है, सर्वथा एकातीनिकै विरोध आवै है ॥ ९ ॥

आगैं कोई कहै जो यह कर्त्ता आदिकी प्रतीति कही सो तौ शब्दका उच्चारमात्र ही है वस्तुका स्वरूपका बलतैं तौ नाहीं उपजी, कहनें मात्र है, वस्तुस्वरूप ऐसै नाहीं, ऐसा प्रश्न होतैं सूत्र कहै है,—

शब्दानुच्चारणेऽपि स्वस्यानुभवनमर्थवत् ॥१०॥

याका अर्थ—यह कर्त्ता आदिकी प्रतीति ज्ञाने कै होय है सो शब्दका उच्चार विना भी होय है ऐसैं आपका अनुभव आपकै है जैसैं

अन्य अर्थका अनुभवन है तैसैं ही आपका है । तहा जैसै घट आदिक शब्द है तिनिका उच्चार किया विना भी घट आदि वस्तुका ज्ञानविषैं तदाकार अनुभव होय है तैसैं ही 'मैं हू मैं हू' ऐसा जो अन्तरङ्गके विषैं सन्मुख होतै आपका तदाकारपणा करि प्रतिभास होय है सो शब्दके उच्चार किये विना ही आपकरि अनुभव कीजिये है ॥ १० ॥

आगैं इस ही अर्थकू युक्तिपूर्वक अन्यवादीका उपहाससहित वचन जैसै होय तैसै सूत्र कहैं हैं,—

को वा तत्प्रतिभासिनमर्थमध्यक्षमिच्छँस्तदेव तथा नेच्छेत् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—तिस ज्ञान करि प्रतिभास्या जो अर्थ कहिये वस्तु ताकू प्रत्यक्ष इष्ट करता सता पुरुष ऐसा कौन है जो तिस ज्ञानहीकू प्रत्यक्ष इष्ट न करै, इष्ट करै ही । इहा 'को वा' ऐसा कहनें तैं लौकिक जन तथा परीक्षक जन सर्व ही लेणें । बहुरि 'तत्प्रतिभासिन' कहिये तिस ज्ञानकरि प्रतिभासनेंका जाका स्वभाव होय सो लीजिये । ऐसा जो प्रत्यक्ष विषयरूप वस्तु ताकू प्रत्यक्ष इष्ट करता पुरुष सो ऐसा कौन है जो 'तदेव' कहिये सो ही ज्ञान ताहि 'तथा' कहिये प्रत्यक्षपणाकरि नाही इष्ट करै 'अपि तु' कहिये निश्चयतैं इष्ट करै ही करै। जातैं विषयी जो ज्ञान ताका प्रत्यक्षपणा धर्म है सो उपचार करि ताके विषयभूत पदार्थकू प्रत्यक्ष कहिये है, मुख्य तौ प्रत्यक्षपणा ज्ञानका धर्म है । इहां ऐसा जानना—जो मुख्यका अभाव होतैं बहुरि प्रयोजन अरु निमित्त होतैं उपचार प्रवर्त्तै है सो इहा अर्थकै तौ प्रत्यक्षपणा मुख्य नाही है अरु प्रत्यक्षपणा मुख्य धर्म ज्ञानका है सो ताके विषयभूत अर्थ विषैं प्रत्यक्षपणाका उपचार है सो प्रयोजन तौ इहा व्यवहारका प्रवर्त्तना है अरु निमित्त इहा ज्ञानकै अरु वस्तुकै विषयविषयीभाव सबन्ध है सो है,

ऐसा जानना। जो ऐसै न मानिये तौ अप्रामाणिकपणा कहिये अपरीक्षकपणाका प्रसग आवै है ॥ ११ ॥

आगै इहा इसका उदाहरण कहै है,—

प्रदीपवत् ॥ १२ ॥

याका अर्थ—जैसैं दीपककैं प्रत्यक्षता अर प्रकाशता विना तिसकरि भासे जे घटादिक पदार्थ तिनिकै प्रकाशता प्रत्यक्षता न वणै तैसैं प्रमाणस्वरूप ज्ञानकै भी जो प्रत्यक्षता न होय तौ तिसकरि प्रतिभास्या अर्थकै भी प्रत्यक्षता न वणै। इहा तात्पर्य कहै है—ताका प्रयोग—ज्ञान है सो अपनें प्रतिभास करनै विपै आपतैं अन्य जो समानजातीय अन्य अर्थ तिसकी अपेक्षा न चाहै है यह तौ धर्मिसाध्यका समुदायरूप पक्षका वचन सो प्रतिज्ञा है। प्रत्यक्ष पदार्थका गुण होतैं अदृष्ट जो शक्ति ताकी व्यक्तिरूप अनुयायिकरणपणातैं यहु हेतु है। बहुरि प्रदीपभासुराकारवत् यह उदाहरण है। इहा भावार्थ ऐसा—जो ज्ञान अपने जाननें विपैं अन्यज्ञानकी अपेक्षा न करै है आप ही आपकू जानैं है जातै ज्ञान आत्मा ही का गुण है सो जाननेकी शक्तिकी व्यक्तिरूप करण अवस्थाकू प्राप्त होय है। आपकी प्रमिति प्रति आपही करण है जैसै दीपककी प्रकाशरूप लोय है सो आपके प्रकाशनेमें अन्य लोयकी अपेक्षा नाही करै है, आप ही आपकू प्रकाशै है, ऐसै जानना ॥१२॥

आगैं कोई आशका करै है जो प्रमाणका लक्षण कह्या सो ऐसा तौ होहु तथापि इस प्रमाणकी प्रमाणता 'स्वत' कहिये आपहीतै होय है कि 'परत' कहिये अन्यतैं होय है? जो स्वत ही कहौगे तौ अविप्रतिपत्ति होयगी आप अन्यथा भी ग्रहण करै ताका निपेध काहेतैं होयगा? बहुरि परतैं कहौगे तौ अनवस्थानामा दूपण आवैगा जातैं

प्रमाणकी प्रमाणता अन्यतैं होय तब तिस अन्यकी प्रमाणता काहेतैं होय ? बहुरि तिसकी भी अन्यतैं कहिये तौ कहू ठहरना नाही तब अनवस्था भई। ऐसै दोऊ आगकाका निराकरणकरि अपना मत स्थापते सते सूत्र कहै है। इहा ऐसा भावार्थ—जो मीमासकमती तौ प्रमाणका प्रमाणपणा स्वत. कहैं हैं अप्रमाणपणा परत कहै हैं। बहुरि साख्यमती प्रमाणपणा तो परत अप्रमाणपणा स्वत कहै है। बहुरि नैयायिकमती दोऊ ही परत होय है ऐसें कहैं है। ऐसें बहुत वादीनिकरि अन्य अन्य प्रकार कहनेंतै सशय उपजे है तातैं कथचित् स्वत कथचित् परत ऐसैं स्याद्वादतै यथार्थसिद्धि होय है ऐसैं सूत्र कहैं हैं,—

तत्प्रामाण्यं स्वतः परतश्च ॥ १३ ॥

याका अर्थ—तिस प्रमाणका प्रामाण्य कहिये प्रमाणपणा कथचित् आपहीतैं होय है कथचित् परतै होय है। तहा सूत्रनिके सप्रदायमैं ऐसी परिभाषा है—जो वाक्य कहिये सूत्र हैं ते सोपस्कार कहिये अन्यपदनिका अध्याहार—मेलना सहित होय हैं, सो इहा ऐसी प्राप्ति करणीं, जो अभ्यासदशा विषैं तौ प्रमाणका प्रमाणपणा आपहीतै होय है, बहुरि अनभ्यासदशा विषैं परतै होय है। ऐसें कहनेंतैं दोऊ एकान्तका निराकरण भया। इहा कथचित् अनभ्यास दशा विषै परतै प्रमाणपणा कहनेंमै अनवस्था जैसैं एकान्त कहनेंमै आवै है तैसे समान नाही आवै है जातैं अभ्यस्तविषयस्वरूप जो अन्यज्ञान ताकरि आप हीतैं प्रमाणपणा होय है ताकरि अनवस्थाका परिहार होय है ऐसा अगीकार हमनैं किया है। अथवा प्रमाणका प्रमाणपणा उत्पत्तिविषैं तौ परतैं ही हो है जातैं विशिष्ट नवीन कार्यका होना विशिष्ट नवीन कारणतैं ही होय है। बहुरि विषयका जाननेंरूप तथा विषयविषैं प्रवर्त्तनेंरूप जो प्रमाणका कार्य ता विषैं अभ्यासदशामैं तौ आपहीतैं प्रमाणता

है, बहुरि अनभ्यासदशाविषै परतैं प्रमाणता होय है, ऐसा निश्चय है। इहा अभ्यासदशा तौ सो कहिये जहा वारवार ग्रहण होय अनभ्यास जो प्रथम ही ग्रहण होय सो कहिये। जैसै जा गावमै आप वसै ताका सरोवरका जल आपकै अभ्यासमैं आप रह्या होय तहा तिसका जलका प्रमाणपणा तथा जलज्ञानका प्रमाणपणा आपकै आपहीतैं होय है ताकी प्रमणता करनेंमैं अन्य प्रमाणादिकका सहाय चाहै नाही तिस सरोवरकै समीप जातैं ही स्नान करना, जल भरना, पीवना आदि कार्य नि शकपणैं करै है सो इहा तौ अभ्यासदशाविषैं स्वत प्रामाण्य भया। बहुरि सो ही पुरुष अन्यग्रामादिक जाय तहा मार्गमैं दूरितैं जलका निवास देखै तहा अपनें ज्ञानकी तथा जिस जलरूप विषयकी प्रमाणता आई नाहीं, विचारने लगा यह जल है कि भाटली है ? कि काश फूलि रह्या है ? कि मोंकू अन्यथा दीखै है ? ऐसा सशय उपज्या तहा जे जलकी प्रमाणता करनेके कारण पूर्वे अभ्यासमै थे, जो जहा अन्य लोक जल भरि ल्यावते होय तथा जल भरते होय तथा घट आदि जलके पात्र जहां दीखते होय तथा कमलनिकी सुगध आवती होय मींडके बोलते होय इत्यादि कारणनितैं तिस जलकी प्रमाणता आवै तहा अनभ्यासदशाविषैं परतैं प्रमाणपणा कहिये । बहुरि उत्पत्तिमै परहीतै कह्या सो अन्तरग तौ ऐसा ही ज्ञानावरणका क्षयोपशम अर बाह्य पापकर्म आदि दोषरहित अपना ज्ञान होय। बहुरि ज्ञानके कारण जे इन्द्रियादिक ते निर्दोष निर्मलता आदि गुणकरि युक्त होय तब नवीन प्रमाणतारूप कार्य उपजै, जातै विशिष्ट कार्य होय जो विशिष्ट कारणतै ही होय। बहुरि विषयका जाननेंरूप क्रिया है लक्षण जाका अर विषयविषैं प्रवृत्ति होना है लक्षण जाका ऐसा जो प्रमाणका कार्य ताविषैं अभ्यासदशाविषै तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतै होय है अर अनभ्यासदशाविषै परतैं होय है, ऐसा निश्चय कीजिये है।

इहा मीमासकमती कहै है,—जो प्रमाणपणाकी उत्पत्तिविषै विज्ञानके कारण जे निर्दोष नेत्र आदिक तिनितैं भिन्न अन्य कारणकी अपेक्षापणा है सो असिद्ध है—अन्यकारण नाहीं है तातै प्रमाणका प्रमाणपणा तिस प्रमाणहीतै होय है जातैं तिस प्रमाणतैं अन्य वस्तुका ही अभाव है, अर जो कहोगे अन्यकारण नेत्रादिककै निर्मलपणा आदि गुण है ते है तौ यह कहना वचनमात्र है—वस्तुभूत नाहीं, जातै विधिकी मुख्यताकरि अथवा कार्यकी मुख्यताकरि गुणनिकी प्रतीति नाहीं है प्रमाण सिवाय गुण न्यारे किछू भासते नाही प्रत्यक्ष करि तौ किछू गुण प्रमाणतैं न्यारे दीखै नाही जाते प्रत्यक्ष तौ इन्द्रियनिकरि जानना है सो इन्द्रियनिकी प्रवृत्ति अतीन्द्रियनिवै होय नाही इन्द्रियनितै किछू न्यारे हीं गुण दीखै नाही। बहुरि अनुमानकरि किछू गुणनिका लिंग दीखै नाही, ताकरि अनुमान कीजिये, इन्द्रियनिकरि लिंग ग्रहण होय तब अनुमान होय है अर लिंगका भी लिंग अनुमानकरि ग्रहण करना कहिये तो अनवस्था आवै है तातैं प्रमाणतै न्यारे गुण प्रमाणसिद्ध नाही। बहुरि प्रमाणकी अप्रमाणता तौ आपहीतैं होय है अर प्रमाणता परहीतैं होय ऐसा विपर्यय भी कह्या न जाय, जातैं पक्षधर्म, सपक्षे सत्व, विपक्षाद्व्यावृत्ति इनि तीनरूप सहित जो लिंग तिसहीतैं केवल अनुमान प्रमाणकै प्रमाणपणा उपजता देखिये है। अन्वय व्यतिरेक करि ऐसैं ही उत्पति दीखै है अन्य प्रकार तौ नाही। बहुरि ऐसैं ही प्रत्यक्षविषै भी लगावणा जो निर्लेप नेत्रादिकरि ही प्रमाणपणा उपजै है अन्यप्रकार नाही। तैसैं हीं आगमविषै भी लगावणा जो आप्तका कह्यापणा आगममैं गुण होतै आगमका प्रमाणपणा तिस गुणतै नाही है, तिस आगमविषैं गुणनितैं दोषनिका अभाव है अर दोषनिके अभावतैं संशय—विपर्ययस्वरूप जो अप्रमाण-

पणा ताका अभाव होतैं स्वाभाविक प्रमाणपणा निर्दोष आप ही तिष्ठे है तातै यह ठहरी जो प्रमाणपणा उत्पत्तिविषैं अन्यसामग्रीकी अपेक्षा नाही करै है। बहुरि विषयका जाननेकी क्रियारूप जो अपना कार्य ताविषै अपने जाननेकी भी अपेक्षा न करै है। जो प्रमाण आप आपकू जानै तब अन्यविषयकू जाणै ऐसी अपेक्षा नाही चाहै है, जातैं आपका प्रमाणपणा जानें विना ही ज्ञानकै विषयके जाननेंकी क्रियारूप कार्य देखिये है। बहुरि कहोगे जो जाननक्रियामात्र तौ प्रमाणका कार्य नाही जातै जाननक्रियामात्र तौ मिथ्याज्ञानविषै भी पाइए है। जाननक्रियाका विशेष है सो तौ पहली प्रमाणकी प्रमाणता ग्रहण होय तब उपजै सो ऐसा कहना भी बालकका विलास है विना समझ्या कहना है जातै प्रमाणका प्रमाणपणा ग्रहणके उत्तरकालमै उत्पत्ति अवस्थातैं जानन-क्रियाका विशेष कछू भासै नाही, जैसा जानना प्रमाणपणा ग्रहण होतैं होय है तैसाही विना ग्रहण किये होय है जाका प्रमाणपणा ग्रहण किया जो यह मेरा ज्ञान प्रमाण है तिसतै भी विषयके जाननेमै तौ किछू विशेष भासता नाही, निर्विशेष विषयकी उपलब्धि है। बहुरि कहोगे जो जाननेंमात्रका तौ सीपकै विषै रूपेका ज्ञान भया तामैं भी सद्भाव है सो याकै भी प्रमाणका कार्यपणाका प्रसग आवै है। तौ ऐसैं तौ जब होय जो वस्तुविषैं अन्यथापणाकी प्रतीति अर अपनें कारणकरि उपज्या दोषका ज्ञान इनि दोऊनिकरि निराकरण न कीजिये सो इहां सींपविषै रूपाका ज्ञान होय तौ ताका निराकरण होय है जो यह रूपा नाही सींप है। बहुरि नेत्रनिमै दोष है तातैं रूपा दीखै है ऐसैं तिस-ज्ञानका बाधक है तातैं तिसकै प्रमाणपणाका प्रसग नाही आवै है। तातैं जिस वस्तुविषै प्रमाणका कारणका तौ दोषका ज्ञान अर बाधककी प्रतीति न होय तहां प्रमाणका प्रमाणपणा आपहीतैं होय है।

बहुरि ऐसे अप्रमाणपणाविषै नाही है अप्रमाणपणा परतै ही होय है, जातैं विज्ञानके कारणतै भिन्न जो दोषस्वभावरूप सामग्री ताकी अपेक्षा सहितकरि अप्रमाणपणा उपजै है। बहुरि अप्रमाणताकी निवृत्तिस्वरूप जो अप्रमाणका कार्य ताविषै अपना अप्रमाणतारूप स्वरूपका ग्रहणकी सापेक्षा है ही सो जैतैं अपनी अप्रमाणताकू न जाणै तेतैं अपना अन्यथापणारूप जो विषय तातै पुरुषकू नहीं निवृत्तिरूप करै है, अप्रमाणताकू जाणै तबही विषयका अन्यथापणा जाणि छोडै, ऐसै मीमासक स्वत प्रमाणकी पक्षकू दृढ किया ।

अब याका निराकरण आचार्य करै है,—जो यह मीमासकनै कह्या सो सर्वही बडे अज्ञानरूप अन्धकारका विलास है, सो ही कहिये है— प्रथम तौ प्रामाण्यकी उत्पत्तिविषै अन्य सामग्रीकी अपेक्षापणा असिद्ध कह्या सो असिद्ध नाही है, आगमके आप्तका कह्यापणारूप जो गुण ताका सनिधान होतैं सतैं ही आप्तप्रणीत वचन विषै प्रमाणता देखिये है, जातैं जिसके अभावतै तौ अनुत्पत्ति अर जिसके सद्भावतै उत्पत्ति होय सो तिसका कारण होय है ऐसा लोकमैं प्रसिद्ध है सो आगमकी प्रमाणता सत्यार्थ आप्त होतैं होय है न होतै नाही होय है, सो जो मीमासकनै कह्या जो विधिकी मुख्यताकरि तथा कार्यकी मुख्यताकरि गुणनिकी प्रतीति नाहीं है, तहा प्रथम तौ आप्तके कहे शब्दविषै गुणनिकी प्रतीति नाही है ऐसा कहना अयुक्त है जातै ऐसैं होय तौ आप्तके कहेपणेंकी हानिका प्रसग आवै है, अनाप्तका वचनके समान ठहरै है, अर जो कहै नेत्र आदिकै विषै गुणनिकी अप्रतीति है तौ सो भी अयुक्त है, नेत्रनिके निर्मलपणा आदि गुण है ते स्त्री बालक गुवाल सर्वकै प्रसिद्ध हैं—सर्व जानै है, जो ये नेत्र निर्मल हैं ये निर्मल नाही है । बहुरि जो कहै निर्मलपणा तौ नेत्रका स्वरूप ही है गुण नाही है-

है जैसै प्रत्यक्ष देख्या जल होय तैसै यह्न है ऐसैं अनुमानज्ञानतैं तथ
जलकी अर्थक्रियाका ज्ञानतैं पहले जलका ज्ञान हुवा था तैसी ही ताक
प्रमाणता कहिये यथार्थपणा सो बहुतकालपर्यन्त कल्पिये ही है जा
पहले अनुमानप्रमाणकै स्वत सिद्ध प्रामाण्य भया तिसतै इस जलज्ञा
नकै प्रमाणता भई तातै पहले अनभ्यस्तमैं परतैं प्रमाणता कहिये
बहुरि मीमासकनैं कह्या था जो प्रामाण्यके ग्रहणके उत्तरकालमैं उत्पत्ति
अवस्थातैं जाननेंमैं किछू विशेष नाही भासै है जो प्रमाण उपजतै जैस
था जैसा ही पीछैं है। ताका उत्तर,—जो अभ्यस्तविषयविषै विशेष
भासता कहै तौ यह तौ हम भी मानै है जातैं तहा पहले नि.सन्दे
विषयका जाननेंका विशेषका अगीकार है। बहुरि अनभ्यस्तविषयनि
कहै तौ जाननेंमैं विशेष है ही, प्रामाण्य ग्रहणके उत्तरकालमैं विषयक
अवधारण कहिये नियमरूप स्वभाव लिये प्रतिभास भया, यह ही विशेष
प्रतिभास भया। बहुरि मीमासक कहै है—जो प्रामाण्यकै अरु जान
नक्रियाकै तौ अभेदभाव है इनिमै पहली पीछैं होना कैसैं बणैं ? ताकू
कहिये है,—जो ऐसै नाही है जातै सर्व ही जाननेंकी क्रिया प्रमाणस्व-
रूप नाही है अर प्रामाण्य है सो जाननक्रियास्वरूप है ही, तातैं कथ-
चित् भेद भया, तातै दोष नाही। बहुरि मीमासकनैं कह्या जो बाधक
अर कारण दोषका ज्ञान इनि दोऊनिकरि प्रमाण्यका निराकरण होय
है सो यह कहना भी निष्फल है जातै अप्रामाण्यविषैं भी ऐसैं कह्या
जाय है, सो ही कहिये है—पहले तौ ज्ञान अप्रमाणरूप ही उपजै है
पीछैं बाधारहित ज्ञान अर गुणका ज्ञान होय ताकै उत्तरकालविषैं तिस
अप्रमाणरूप ज्ञानका निराकरण होय है। तातै यह निश्चय भया जो
प्रामाण्य अथवा अप्रामाण्य अपने कार्यविषैं कोई जायगा आभ्यासकी
अपेक्षा स्वतैं होय है कोई जायगा अनभ्यासकी अपेक्षा परतैं होय
है सो ऐसै ही निर्णय करना योग्य है।

ऐसै बौद्धमती तौ प्रमाणकी प्रमाणता आपहीतैं मानैं है, अर नैयायिक परतैं ही मानैं हैं, अर मीमासक उत्पति अर ज्ञप्तिविषैं प्रमाणता दोऊ आपहीतै अर अप्रमाणता परहीतैं मानै है, अर साख्यमती प्रमाणता तौ परतै मानै है अप्रमाणता आपहीतै मानै हैं तिनि सर्वनिका निराकरण स्याद्वादतै होय है।

आगैं इहा टीकाकारकृत श्लोक है,—

देवस्य सम्मतमपास्तसमस्तदोष
वीक्ष्य प्रपञ्चरुचिर रचित समस्य।
माणिक्यनन्दिविभुना शिशुबोधहेतो-
र्मानस्वरूपममुना स्फुटमभ्यधायि ॥ १ ॥

याका अर्थ—' देवस्य ' कहिये अकलङ्कदेवनामा आचार्य ताका समस्तदोषरहित विस्तारकरि सुन्दर भलै प्रकार मान्या ऐसा जो न्यायशास्त्रमै प्रमाणका स्वरूप ताहि विचारिकरि माणिक्यनदिनामा जे समर्थ आचार्य तिनिनै इस परीक्षामुखशास्त्रविषै सक्षेपकरि रच्या जो प्रमाणका स्वरूप तिसकू बालक जे अल्पज्ञानी तिनकै ज्ञान करनैं आर्थि मैं अनन्तवीर्य आचार्य प्रगटकरि कह्या है ॥ १३ ॥

छप्पय।

आप जानि परवस्तु अपूरवका निश्चय कर
करणरूप जो ज्ञान ताहि भाष्या प्रमाण वर।
उपजै परतैं आनकूं गहै अभ्यासै
विन अभ्यास सहाय्य आनका लिये प्रकासै ॥
अकलकदेव जैसैं कह्या माणिकनंदि विचारि उर।
भाष्यो स्वरूप संक्षेप यह ग्रन्थ परीक्षाद्वार धुर ॥

इति परीक्षामुखकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषै
प्रमाणका स्वरूपका उद्देश समाप्त भया।

द्वितीय-समुद्देश।



(२)

आगै प्रमाणका स्वरूपकी विप्रतिपत्ति दूरि करि अब सख्याकी विप्रतिपत्ति निराकरण करता सता आचार्य सकल प्रमाणके भेदनिकी रचनाका सग्रह जामैं पाइये अर प्रमाणकी सख्या जामै पाइये ऐसा सूत्र कहै हैं,—

तद्द्वेधा ॥ १ ॥

याका अर्थ—सो प्रमाण दोय प्रकार है। इहा तत्शब्दकरि तौ प्रमाणका परामर्श करना। सो ही प्रमाण पहले स्वरूपकरि निश्चय किया सो दोय प्रकार है। इहा एवकार अवधारण अर्थमें लेना जो सक्षेपकरि प्रमाणकी सख्या दोय है एक तीन आदि नाही है। यामैं प्रमाणके जे ते भेद हैं तिनि सर्वका अन्तर्भाव है ॥ १ ॥

आगैं जो प्रमाणकी सख्या दोय भेदरूप कही सो दोयपणा प्रत्यक्ष अनुमान भेदकरि भी सभवै है ताकी आशका दूरि करनेकू प्रमाणके जे समस्त भेद तिनिका सग्रह करनेवाली ऐसी सख्याकू प्रगट करै है—

प्रत्यक्षेतरभेदात् ॥ २ ॥

याका अर्थ—पहले सूत्रमै कही जो प्रमाणकी दोय सख्या सो प्रत्यक्ष अर परोक्ष ऐसै दोय भेदतैं है। तहा प्रत्यक्षका लक्षण आगै कहसी तिसतैं इतर कहिये अन्य परोक्ष ऐसैं दोय भेदतैं प्रमाणकी सख्या दोयरूप है। अन्यमतीनिकरि कल्पित जो प्रमाणकी एक दोय तीन च्यारि पाच छह प्रकार सख्या ताका नियमविषैं समस्त प्रमाणके भेदनिका अन्तर्भाव किया न जाय है सो ही कहिये है,—प्रथम तौ

चार्वाक मतवाला एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही मानै है ताविषैं अनुमानका अन्तर्भाव होय सकै नाही है जातैं अनुमानतैं प्रत्यक्ष विलक्षणस्वरूप है, तिनि दोऊनिकै सामग्री अर स्वरूप भेदरूप हैं—न्यारे न्यारे हैं।

इहां चार्वाक कहै है,—प्रमाण तो एक प्रत्यक्ष ही है दूजा अनुमानादिकरूप परोक्षप्रमाण कहो है सो परोक्षप्रमाण नाही है जातैं परोक्षप्रमाणमैं विसवाद है—बाधा आवै है। सो दिखावै है,—देखो, अनुमान प्रमाणका स्वरूप ऐसा कह्या है जो निश्चित अविनाभावस्वरूप जो हेतु तातैं लिंगी जो साध्य ताकै विषै जो ज्ञान सो अनुमान है, ऐसा अनुमानप्रमाण माननेवालाका मत है। तहां लिंग दोय प्रकार, तामैं एक स्वभावलिंग तानिषैं बहुल अन्यथापणा देखिये है। सो ही कहिये है,—कषायला रसकरि सहित जे आमला ते इस देशकालसंबंधी देखिये हैं ते देशान्तर कालान्तर तथा अन्य द्रव्यका संबंध होतैं अन्यप्रकार भी देखिये है तातैं जो स्वभाव हेतुकरि अनुमान कीजिये है तौ तामैं व्यभिचार आवै ऐसा अनुमान कीजिये जो आमला होय है ते कषायला होय हैं तौ कोई देशकालमैं अन्य द्रव्यके संबंधते रस अन्यप्रकार होय तब अनुमानमैं व्यभिचार आवै। अथवा कोई देशमैं आम्रवृक्ष है कोई देशमै लता—आकार आम्र है अथवा कोई देशमैं शीसू लताकूं कहै हैं, तहां कोई ऐसा अनुमान करै जो यह वृक्ष है जातैं शीसू है तौ जिस देशमैं लताकूं शीसू कहै है तातैं व्यभिचार भया। ऐसैं ही कार्यलिंग मानिये तामैं भी व्यभिचार है जैसैं धूमतैं अग्निका अनुमान कीजिये है सो धूम इन्द्रजालके घडेमैं अग्नि विना देखिये है तथा बमीमैं धूम अग्नि विना नीसरती देखिये है तातैं अग्निका अनुमान व्यभिचारी होय है। तातैं एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है, याहीकै अविसवादकपणा है—निर्बाध सत्यपणा है।

ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कह्या सो वाल कहिये अज्ञानी ताका विलास सारिखा भासै है जातै जो वार्त्ता कही सो उपपत्तितै शून्य है—वणती न कही। सो ही कहिये हैं,—इहा दोय पक्ष पूछिये जो परोक्षकै प्रमाणपणा निपेधै है सो याके उत्पत्तिके कारणके अभावतै निपेधै है कि आल्वनके अभावतै निपेधै है । तहा प्रथम तौ पहला पक्ष जो उत्पादक कारणका अभाव सो तौ नाही वणै है जातैं याका उत्पादक कारण सुनिश्चित भई जो साध्यतै अन्यथा अनुत्पत्ति ताका नियमका निश्चय सो है लक्षण जाका ऐसा जो साधन कहिये हेतु ताका सद्भाव है। बहुरि दूजा उत्तरपक्ष जो आलवनका अभाव सो भी नाही है जातैं याका आलवन जो अग्नि आदिक सो समस्त जे विचार करनेंविषैं चतुर है चित्त जिनिका तिनिकै सदाकाल प्रतीतिमैं आवै है, अग्निकू आलव्यकरि अनुमान उपजै सो आलवनका अभाव कैसे कहिये। अर जो स्वभावहेतुकै व्यभिचारकी सभावना कही सो भी अयोग्य है जातै स्वभावमात्र ही हेतु नाही होय है, जो व्याप्यरूप स्वभाव होय सो व्यापक प्रति गमक होय है सो ही हेतु होय यातैं व्याप्यकै व्यापकतै व्यभिचार नाही है, जो व्यभिचार होय तौ वह व्याप्य ही न कहिये। इहा अन्य विशेप कहैं हैं,—जो ऐसैं अनुमानकू व्यभिचारी कहकरि उत्थापन करनेंवाला जो चार्वाक ताकै प्रत्यक्ष प्रमाण भी नाही ठहरैगा, तहा भी अविसवादपणा अर मुख्यपणा ये दोऊ ही अनुमान विना निश्चय नाही होगा जातैं प्रमाणपणाकै अर अविसवादकपणाकै तथा मुख्यपणाकै अविनाभावीपणा है सो अनुमान मान्या विना कैसैं निश्चय होय, प्रमाणका सत्यार्थपणा तौ अनुमान ही करै है। बहुरि जो कार्यनामा हेतुकै भी व्यभिचार वताय अन्यथाका सभावन किया सो भी विना विचारया किया, नीकैं विचारया परीक्षारूप किया कार्य सो

कारणतैं नाही व्यभिचरे है—कारणकूं साधै ही है। जैसा धूम अग्निका कार्य पर्वतके तट आदिविषैं अतिसघन धवलपणा करि फैलता पाइये है तैसा इंद्रजालके घडा आदिविषैं नाही देखिये है। बहुरि जो कह्या वबी-विषै अग्नि विना धूमका सद्भाव है सो हम पूछैं हैं तहां यहु वबी अग्नि-स्वभाव है कि अनग्निस्वभाव है? जो अग्निस्वभाव है तौ अग्नि ही है तिसतै भया धूमकै अन्यथाभाव कैसैं कल्पिये, अर जो अग्निस्वभाव नाही है तौ तिसतैं भया धूम ही नाही तब तहां विना अग्नि भया धूम कैसैं कहिये—अग्नितैं व्यभिचार कैसैं मानिये। सो ही कह्या है इहां श्लोक 'उक्तं च' है, ताका अर्थ—जो शक्रमूर्द्धा कहिये वबी सो जो अग्नि-स्वभाव है तौ अग्नि ही है अर अग्निस्वभाव नाही है तौ तहां धूम कैसैं होय।

बहुरि विशेष कहै है,—जो चार्वाक प्रत्यक्ष एक प्रमाण मानैं है सो परशिष्यकूं प्रत्यक्ष प्रमाण कैसैं कहैगा परपुरुषका आत्मा तौ प्रत्यक्ष ही करि ग्रहण करिवेकूं असमर्थ है, अर कहैगा जो वचन आदि कार्यके देखनेतै परके बुद्धि आदि जानिये है तौ कार्यतें कारणका अनुमान आया ही, अनुमानका निषेध कैसैं करै है। बहुरि जो कहै, लोकव्य-वहारकी अपेक्षा अनुमान मानिये ही है परलोक आदिकके सद्भावविषैं ही अनुमानका निषेध कीजिये है जातैं परलोकका अभाव है। ताकूं कहिये,—जो परलोकका अभाव कैसैं मानै है जो कहैगा मेरैं परलोककी

---

१ अग्निस्वभावः शक्रस्य मूर्द्धा चेदग्निरेव सः।
अथानग्निस्वभावोऽसौ धूमस्तत्र कथं भवेत्॥ १॥

लिखित वचनिका प्रतिमें यह श्लोक नहीं लिखा है। संस्कृत प्रतिमे 'उक्तं च' कहकर दिया है सो वहासे लेकर लिखा है। —सम्पादक।

उपलब्धि नाहीं—मोकू दीखै नाहीं तातैं अभाव मानू हू तौ अनुपलब्धि-नामा लिंगकरि उपज्या अनुमान एक और आया, निषेध तौ न भया।

बहुरि प्रत्यक्षका प्रमाणपणा भी स्वभावहेतुतैं उपजी जो अनुमिति जाकू अनुमान भी कहिये तिस विना न वर्णैगा सो यह पहले कह आये है यातै अब काहेकू कहैं। इस अनुमानका समर्थन बौद्धमतका आचार्य धर्मकीर्तिनैं किया है, ताका श्लोक[1] है ताका अर्थ,—प्रत्यक्ष प्रमाण सिवाय अन्य प्रमाणका सद्भाव तीन हेतुतैं होय है,—प्रथम तौ प्रमाण अर अप्रमाण सामान्यका ठहरना प्रत्यक्ष सिवाय अन्य प्रमाण विना होय नाहीं प्रत्यक्षमैं विपर्यय ही ग्रहण भया होय ताका निषेधकू अन्य प्रमाण चाहिये। दूसरैं अन्यकी बुद्धिका जाणपणा प्रत्यक्षतैं नाहीं तातै अन्य प्रमाण चाहिये जाकरि अन्यकी बुद्धिका ज्ञान होय, सो वचन आदि कार्यनितै अनुमान होय है। तीसरा परलोक आदि अदृष्ट वस्तुका निषेध करनेंकू अन्य प्रमाण चाहिये। ऐसै सौगत जो बौद्धमती है सो चार्वाक एक प्रत्यक्ष प्रमाण मानै ताकै दूजा अनुमान प्रमाणका सद्भाव दिखाय अर आपका स्थापनेंकू अनुमानका समर्थन करि कहै हैं, जो प्रत्यक्ष अर अनुमान ये दोय प्रमाण हैं।

तहा आचार्य कहैं हैं,—ऐसैं दोय प्रमाण मानता जो बौद्ध सो भी युक्तवादी नाही है जातैं स्मृतिनामा प्रमाण विसवादरहित निर्बाध है ताका सद्भाव है। याकू विसवादरहित कह करि प्रमाण न मानिये तौ देनें लेनें आदिका व्यवहारका लोपकी प्राप्ति आवै है, पहले काहूकौ धन सौप्या पीछै ताकू यादि करै मागे। बहुरि जाकू सौंप्या ताकू यादि

1 यदप्युक्त धर्मकीर्तिना,—
प्रमाणेतरसामान्यस्थितेरन्यधियो गते।
प्रमाणान्तरसद्भाव प्रतिषेधाच्च कस्यचित्॥ इति

करि कहै इसकू मैं धन सौंप्या था सो यह प्रत्यभिज्ञान होय तब सौंप्या धन मागै हैं सो स्मृतिकू प्रमाणभूत न मानिये तौ देनें लेनेंका व्यवहार नाहीं होय। बहुरि वह कहै जो स्मृति तौ अनुभवन किये वस्तुविषै होय है सो जिसकाल स्मृति होय तिस काल अनुभूयमान जो वस्तु जाविषैं स्मृति भई सो वस्तु विद्यमान नाहीं तातै विषयरहित जो स्मृति सो तौ प्रमाणभूत नाही। ताकू कहियें—जो ऐसैं नाही, जो तिस काल विषय विद्यमान नाहीं है तोऊ अनुभवन किया था जो वस्तु तिसका आलम्बनतैं स्मृति भई तातै निरालम्ब नाही. निराल्व तौ जब होय जो अकस्मात् विना अनुभूत वस्तुविषै स्मृति होय सो ऐसैं होय नाही। अर ऐसैं अनुभूत वस्तुविषैं स्मृति होते भी निरालम्बन कहिये अर अप्रमाण कहिये तौ प्रत्यक्षकै भी अनुभूत वस्तुविषै अप्रमाणपणा ठहरै। बौद्धमती प्रत्यक्षकू अतीतपदार्थविषयरूप कहै है तातैं स्मृति अतीतानुभूतार्थ विषयतैं अप्रमाण कहैगा तौ प्रत्यक्ष भी ऐसा न ठहरैगा ऐसैं कह्या है। अथवा अनुमानकरि पहिले अग्निका निश्चय भया पीछैं ताविषैं प्रत्यक्ष प्रवर्त्त्या सो ऐसा प्रत्यक्ष भी अप्रमाण ठहरैगा। अर अपना जो विषय है ताका प्रतिभासना प्रमाण कहिये तौ अपना विषयका प्रतिभासना तो स्मरणविषैं भी है ही याकू अप्रमाण कैसैं कहिये।

बहुरि विशेष कहै हैं,—जो स्मृतिकू अप्रमाण कहिये तौ अनुमानके प्रमाणपणाकी वार्त्ता भी कहना दुर्लभ होय है जातैं स्मृतिकरि व्याप्तिकू याद किये अनुमान होय है, विना स्मृति व्याप्तिका स्मरण नाही तब अनुमानका उत्थान काहेतें होय। तातै यह कहना जो स्मृतिकै प्रमाणता है जातैं अनुमानकै प्रमाणपणाकी याहीतैं प्राप्ति है यहु न होय तौ अनुमानकै प्रमाणपणाकी प्राप्ति नाही है। ऐसे यहु स्मृति सो बौद्धमतीकै मान्या जो प्रत्यक्ष अनुमानरूप प्रमाणकै दोयप-

णाकी सख्याका नियम ताहि बिगाडै है—निषेधै है तातैं हमारी चिंता-करि कहा साध्य है।

तैसे ही प्रत्यभिज्ञान प्रमाण है सो भी बौद्धकी दोयपणाकी सख्याका नियमका निराकरण करै है। तिस प्रत्यभिज्ञानाका भी प्रत्यक्ष अनुमानविषै अतर्भाव न होय है। इहा बौद्धमती तर्क करै है,—जो प्रत्यभिज्ञानविषै 'तत्' कहिये सो है ऐसा तौ स्मरण भया अर 'इद' कहिये यहु है ऐसा प्रत्यक्ष भया ऐसैं ये दोय ज्ञान भये इनितै न्यारा तीसरा तौ ज्ञान भया नाही ताकू हम प्रत्यभिज्ञान मानै अर न्यारा प्रमाण कहैं यातैं तिस प्रत्यभिज्ञानकरि प्रमाणकी सख्याका निषेध कैसै होय? ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहना भी युक्त नाही जातैं प्रत्यभिज्ञानका विषयरूप जो पूर्वापरका जोडरूप वस्तुभूत अर्थ ताकू स्मृति अरु प्रत्यक्ष ये दोऊ ही ग्रहण करनेकू समर्थ नाही है, पहली अर पिछली दोऊ अवस्थाविषैं वर्त्तनेंवाला जो एक द्रव्य सो प्रत्यभिज्ञानका विषय है। यहु स्मरणकरि ग्रहणमैं आवै नाही जातै स्मरणका तौ पूर्व अनुभवन जाका भया सो ही विषय है। बहुरि प्रत्यक्षकरि भी ग्रहणमैं आवै नाही जातैं प्रत्यक्षका विषय तौ वर्त्तमान अवस्था ही है। बहुरि बौद्धनैं कह्या जो स्मरण अर प्रत्यक्षतै न्यारा तौ प्रत्यभिज्ञान नाही सो यह कहना भी अयुक्त है। पूर्वोत्तरअवस्थानिषैं अभेदका ग्रहण करनेंवाला तीसरा प्रत्यभिज्ञान प्रतिभासमै आवै है। स्मृति प्रत्यक्षमैं कोई एककै तौ पूर्वोत्तर अवस्थानिषैं व्यापक जो अभेद ताका ग्रहणस्वरूपपणा नाही है जातै इनि दोउनिके विषय न्यारे न्यारे हैं। बहुरि यहु प्रत्यभिज्ञान प्रत्यक्षविषैं अन्तर्भाव होय नाही तथा अनुमानविषैं अन्तर्भाव होय नाही जातैं प्रत्यक्ष तौ वर्त्तमान निकटवर्त्ती वस्तुकू ग्रहण करै है याका यह ही विषय है अर अनुमान है सो

अविनाभूत जो लिंग ताकरि समाश्रित जो वस्तु ताकूं ग्रहण करै है याका यहु विषय है, पूर्व-उत्तर पर्यायव्यापी जो एकपणा सो प्रत्यक्ष अनुमानका विषय नाही। बहुरि प्रत्यभिज्ञान है सो स्मरणविषै भी अन्तर्भूत नाही ँय है जातै पूर्व—उत्तरका एकपणा स्मरणका भी विषय नाही है। बहुरि इहा कोई कहै जो सस्कार अर स्मरणका सहायकरि ये इंद्रिय हैं ते ही प्रत्यभिज्ञानकूं उपजावैं हैं सो जो इन्द्रियतैं उपजै सो प्रत्यक्ष ही है तातैं प्रत्यभिज्ञान न्यारा प्रमाण नाही? ताकूं आचार्य कहै है,—जो ऐसी कहनेवाला तौ अतिमूर्ख ही है जातैं अपने विषयकूं मुख्यकरि प्रवर्त्तता जो इन्द्रिय ताकैं सैकडा सहकारी सहाय मिलै तोऊ अन्यके विषयविषैं प्रवर्त्तनेरूप जो अतिशय ताका अयोग है, इन्द्रिय अपने अपनें विषै ही प्रवर्त्तें हैं। अर यह अतीत वर्त्तमान अवस्थाविषै व्यापी जो एक द्रव्य सो इन्द्रियनिका विषय नाही, अन्य ही है। इन्द्रियनिका विषय तौ रूप ही है ये तावन्मात्र ही विषयविषै चरितार्थ है। बहुरि अदृष्ट जो पुण्यपापकर्म तिसके सहकारीपणाकी अपेक्षा स्वरूप होयकरि भी इन्द्रिय इस पूर्वापर अवस्थाका एकत्वविषै नाही प्रवर्त्तैं हैं तहा भी पूर्वोक्त दोष ही आवै है, सहकारीके बलतै इन्द्रिय अपनें विषय सिवाय प्रवर्त्तै नाही।

बहुरि विशेष कहै है,—जो अदृष्ट कहिये पूर्वकृत कर्म अर धारणाज्ञानरूप सस्कार आदिकी अपेक्षातैं प्रत्यक्षकै एकत्व विषयविषै प्रवर्तना कह्या तौ ऐसैं प्रवर्तना आत्माहीकै विस एकत्वका विज्ञान क्यों न कल्पिये जातैं देखिये है जो स्वप्न सारस्वत चाण्डालिक आदि विद्याके सस्कारतै आत्माकै विशिष्ट ज्ञानकी उत्पत्ति होय है। तहा अतीत अनागत वर्तमानके लाभ अलाभकी सूचना जातैं होय सो स्वप्नविद्या है। बहुरि अन्यतैं ऐसा न बणै ऐसा वादीपणा कवीश्वरपणा आदिकी कर-

णहारी सारस्वत विद्या है। बहुरि नष्ट मुष्टि आदिकी सूचना जातै होय सो चाण्डलिक विद्या है। इहा बहुरि नैयायिकमती तर्क करै है,—जो अजन आदिके सस्कारतैं नेत्रकै भी ऐसा अतिशय देखिये है? ताका समाधान,—आचार्य कहै है, ऐसैं नाहीं है जातै नेत्रके अतिशय होय है सो अपनें विषयविषैं ही होय है अपना विषयकूं नाहीं उलघै है, ऐसा तो नाहीं जो अजनके सस्कारतैं नेत्र अपना विषय सिवाय जो रस गध तिनिकौ जाणै, सो ही कह्या है, 'उक्त च' श्लोक है ताका अर्थ,—जहा अतिशय देखिये है सो अपनें विषयकूं उलघिकरि नाही होय है श्रोत्रकी प्रवृत्तितै रूपविषै तौ अतिशय होय नाहीं जो होय तौ दूरवर्त्ती तथा सूक्ष्मवस्तुके देखनेविषै नेत्रकै अतिशय होय।

इहा नैयायिक फेरि कहै है,—जो यह श्लोक तौ सर्वज्ञके निषेधकै अर्थि मीमासकनै कह्या है इहा तुमनै कह्या सो मिलै नाहीं यह दृष्टान्त विषम है? ताका सामाधान,—इहा दृष्टान्त इन्द्रियनिकै अन्यके विषयविषैं प्रवर्तनेंका अतिशयका अभावमात्र दिखावनेकी समानतामात्र कह्या है तातै वर्णे है, दृष्टान्तका सर्वही धर्म तौ दार्ष्टान्तविषै होय नाही जो सर्व ही धर्म मिलै तौ दृष्टान्त नाही दार्ष्टान्त ही होय है। तातैं यह निश्चय भया जो प्रत्यक्ष अनुमानतैं न्यारा ही प्रत्यभिज्ञान वस्तुभूत है जातै इसकी सामग्री अर स्वरूप दोऊ ही भेदरूप न्यारे ही है। बहुरि यह प्रत्यभिज्ञान अप्रमाण नाही है जातैं इस प्रत्यभिज्ञानतै अर्थकूं जाणकरि तिस विषैं प्रवर्तनेंवालाकै अर्थक्रियामै विसवाद नाही है, जैसैं प्रत्यक्षकरि विषयविषै प्रवर्तनेंवालेकै विसवाद नाही तैसैं इहा भी

१ तथा चोक्तम्,—

यत्राऽप्यतिशयो दृष्टः स स्वार्थानतिलघनात्।
दूरसूक्ष्मादिदृष्टौ स्यान्न रूपे श्रोत्रवृत्तितः॥ १॥

नाही। बहुरि इस प्रत्यभिज्ञानका विषय पूर्वोत्तर अवस्थाका एकपणा है ताका लोप कीजिये तौ बंध मोक्ष आदिकी व्यवस्था बहुरि अनुमान प्रमाणकी व्यवस्था न ठहरै जातें एकत्व विना बंध्या सो ही छूट्या ऐसैं न ठहरै, तथा अनुमानका साधन जो लिंग ताका संबंधका ग्रहण एकत्वा विना कैसैं होय बहुरि या प्रत्यभिज्ञानका विषयविषै बाधक प्रमाण भी नाहीं है, जो बाधक होय तौ प्रमाणपणा न मानिये जातैं प्रत्यक्षकै अर अनुमानके तिस प्रत्यभिज्ञानके विषयविषै प्रवृत्ति ही नाही बाधक कैसैं होय, अर प्रवृत्ति होय तो तिसका साधक ही होय बाधक तौ न होय। तहा बहुत कहनेंकरि पूरी पडो, प्रत्यभिज्ञान प्रमाण न्यारा ही है।

बहुरि तैसैं ही बौद्धकी प्रमाणसंख्याका विरोधी बाधारहित तर्क-नामा प्रमाण आवै ही है सो यह तर्कनामा प्रमाण प्रत्यक्षविषै अन्तर्भूत नाही होय है जातैं साध्यक अर साधनकै जो व्याप्यव्यापकभाव है ताका समस्तपणा करि सर्वक्षेत्रकालका ग्रहण तर्कका विषय है, सो प्रत्यक्षका विषय नाहीं है, यह इन्द्रियप्रत्यक्ष है सो सर्वदेशकालसंबंधी जे व्यापार हैं तिनिकू करनेंकू समर्थ नाही जातैं यह प्रत्यक्ष प्रमाण विचार-रहित है अर इन्द्रियनिके समीपवर्ती पदार्थ याका विषय है। बहुरि तर्कके विषयकू अनुमान भी ग्रहण करनेंकू समर्थ नाही है जातैं याका भी जिस देश आदिमैं तिष्ठता पदार्थ है सो ही विषय है, व्याप्ति सर्व देशकालसंबंधी है सो अनुमानका विषय नाही। बहुरि जो व्याप्तिकू अनुमानका विषय मानै तो तहा दोय पक्ष पूछिये,—जो व्याप्तिकू ग्रहण करै सो अनुमान तिस व्याप्तिसू सिद्ध भया सो ही है कि अन्य अनु-मान है? जो कहैगा तिसव्याप्तिसू सिद्ध भया सो ही है ता तहा इतरेतराश्रयनामा दूषण आवैगा जातैं पहले व्याप्तिग्रहण होय तब पीछैं

अनुमान सिद्ध होय, बहुरि अनुमान सिद्ध भये पीछैं व्याप्तिग्रहण होय ऐसे दौपतैं दोऊकी सिद्धि नाही है । बहुरि कहे जो अन्य अनुमानतैं अविनाभावस्वरूप व्याप्ति ग्रहण होय है तौ अनवस्थानामा दूषणरूपी बघेरी तिसपक्षकू भखि जाय है जातैं अनुमान तौ व्याप्तिके ग्रहण विना होय नाही अरु व्याप्ति अन्य अनुमानकरि ग्रहण होय तौ तिस अनुमानकी व्याप्ति अन्य अनुमानकरि होय ऐसै कहू ठहरै नाही तब अनवस्था दूषण आवै । तातैं अनुमानका विषय व्याप्ति नाही सिद्ध होय है।

बहुरि सांख्यमती आदिकरि कल्प्या जो आगम उपमान अर्थापत्ति अभावप्रमाण तिनिकरि भी समस्तपणाकरि अविनाभावस्वरूप व्याप्तिका ग्रहण नाही है जाते तिनि प्रमाणनिकै अपने अपने विषयका ग्राहकपणा है तातैं व्याप्ति तिनिका विषय नाही । बहुरि सांख्यमती आदि तिनि प्रमाणनिका व्याप्ति विषय मानैं भी नाही है । तहा आगमका विषय तौ वस्तुका संकेतकरि ग्रहण करना है । अर उपमानका विषय सादृश्यभाव है । अर्थापत्तिका विषय अर्थका अन्यथा न होना है, एक वस्तुकी सामर्थ्यतै अन्य अर्थ आय पडै सो अर्थापत्ति है । बहुरि अभावका विषय अभाव ही है । इनिका विषय व्याप्ति नाही ।

इहा बौद्धमती फेरि कहै है,—जो प्रत्यक्षकै पीछै विकल्प होय है—विचार होय है तातैं साध्यसाधनभावका ज्ञान समस्तपणाकरि होय है तातैं तिस व्याप्तिके ग्रहणकै अर्थि अन्य प्रमाण नाही हेरना । ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहनेवाला भी युक्तवादी नाही, जातैं इहा ताकू दोय पक्ष पूछिये—जो तिस विकल्पकै प्रत्यक्षकरि ग्रहे विषयका व्यवस्थापकपना है कि प्रत्यक्ष करि ग्रह्या नाही ऐसे विषयका व्यवस्थापकपना है ? जो कहैगा प्रत्यक्षकरि ग्रहे विषयकू ही थापै है तौ दर्शनस्वरूप प्रत्यक्षकी ज्यों ताकै पीछै भया निर्णयकै भी नियतविषयपणा ही ठहर्या

व्याप्ति तौ ताका विषय न ठहरैगा। बहुरि कहैगा जो प्रत्यक्षकरि नाहीं ग्रह्या विषयकू यापै है तौ यामैं भी दोय पक्ष है,—प्रत्यक्षकै पीछैं भया विकल्प ज्ञान है सो प्रमाण है कि अप्रमाण है ? जो कहैगा प्रमाण है तौ प्रत्यक्ष अनुमान सिवाय तीसरा प्रमाण आया जातै दोऊ प्रमाणमैं याका अन्तर्भाव नाहीं होय है। बहुरि कहैगा अप्रमाण है तौ तिसतैं अनुमानकी व्यवस्था न ठहरैगी जातैं व्याप्तिके ज्ञानकू अप्रमाण मानें तिसपूर्वक अनुमान भी प्रमाण न ठहरैगा जातैं सन्दिग्ध आदि जो लिंग तातै उपज्या अनुमानकै प्रमाणताका प्रसग आवैगा। तातैं व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क सो विचारसहित विसंवादरहित प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान दोय प्रमाणतै न्यारा ही मानना योग्य है। यातै बौद्धकरि मान्या जो प्रमाणकै दोयकी संख्याका नियम सो नाही है।

याही कथनकरि अनुपलभ कहिये जाका सद्भाव ग्रहण नाही तिसतै बहुरि कारणका अर व्यापकका अनुपलभतैं कार्यकारणभाव अर व्याप्य-व्यापकभावका ज्ञान होय है यह ही व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा कहना भी निराकरण किया, जातैं अनुपलभ तौ प्रत्यक्षका विशेष है अर कारण आदिका अनुपलभ है सो लिंग है सो लिंगकरि उपज्या अनुमान है है यातै प्रत्यक्ष अनुमानकरि व्याप्तिग्रहणमैं पहले दोप दिखाये ते ही जाननें। इस ही कथनकरि प्रत्यक्षका फल जो ऊहापोह—जो पहले तर्क उपजै जो यह कैसैं है पीछैं ताका निराकरणकरै ऐसा विकल्प-ज्ञान ताकरि व्याप्तिका ज्ञान है ऐसा वैशेषिकमती माने है ताका भी निराकरण किया जातै प्रत्यक्षका फलकू प्रत्यक्ष अथवा अनुमान कहै तौ ते तौ व्याप्तिकू विषय करे नाहीं अर तिनितैं अन्य कहै तौ न्यारा प्रमाण ठहरया ही। बहुरि कहै जो व्याप्तिका जाननेंरूप विकल्प तौ प्रमाण ठहरै नाही तौ यह कहना भी युक्त नाही जातै फल है तोऊ यातैं

अनुमान होय है सो अनुमान याका फल है ताका कारणपणाकी अपेक्षा याकै भी प्रमाणपणा युक्त है यामैं विरोध नाही जैसैं इन्द्रियकै अर अर्थकै जुडनेरूप सन्निकर्ष होय ताका फल जो विशेषणका ज्ञान ताकै विशेष्यका ज्ञानस्वरूप जो फल ताकी अपेक्षाकरि प्रमाणपणा मानिये है तैसैं यहु भी मानना । यातैं वैशेषिककरि मान्या जो ऊहापोह विकल्प ताहीकै प्रमाणान्तरपणा आवै है, प्रमाणपणाकूं उलघि नाही वर्त्तै है।

याही कथनकरि तीन च्यारि पाच छह प्रमाणकी सख्या कहनेवाले जे साख्य अर अक्षपाद कहिये नैयायिक अर प्रभाकर जैमिनीय मीमासक ते अपनें अपने प्रमाणकी सख्याकै थापनेंकू समर्थ नाही है ऐसैं कह्या जो न्याय तिसकरि स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क इनि तीन प्रमाणनिकै तिनि साख्यमती आदिनिकरि माने प्रमाणकी सख्याका विपक्षपणा है, स्मृत्यादि तिनिके प्रमाणकी सख्याकू निराकरण करैं हैं ॥ २ ॥

आगै प्रथम प्रमाणका भेद जो प्रत्यक्ष ताके निरूपण करनेंकू सूत्र कहै है,—

विशद प्रत्यक्षम् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—विशद कहिये स्पष्ट जो ज्ञान सो प्रत्यक्ष प्रमाण है । इहा ज्ञानकी तौ अनुवृत्ति करनीं, अर प्रत्यक्ष है सो तौ धर्मी है अर विशद ज्ञानस्वरूप साध्य है अर प्रत्यक्षपणा हेतु करना । सो ही प्रयोग कहिये है,—प्रत्यक्ष है सो विशद ज्ञानस्वरूप ही है जातैं प्रत्यक्ष है, जो विशद ज्ञानस्वरूप नाही सो प्रत्यक्ष नाही जैसैं परोक्ष, इहा विवादमैं आया प्रत्यक्ष है तातैं विशद ज्ञानस्वरूप ही है, ऐसैं अनुमानके पाच अवयवरूप प्रयोग या सूत्रका है । इहा कोई कहै जो यह प्रत्यक्षपणा हेतु किया सो सूत्रमैं तौ एक धर्मीहीका शब्द प्रत्यक्ष ऐसा था तिसहीकूं हेतु किया सो पक्षका वचनरूप जो प्रतिज्ञा ताका अर्थका एकदेशकूं

हेतु त्रि ...
जो प्रति ...
धर्मका ...
कहना अयुक्त है जातै इहा
... है तातैं प्रतीत्यन्तर नाही,
... नाही जो पहिले अनुमान
... इहा अग्नि वस्तु है ताकूं
... जाननेमैं दोप नाही जातै
... पै प्रतीति सो प्रतीत्य-
... भई सो अपने विपय-
... पयनिर्वैं भई इनिकै पर-
... णा केवल एतावन्मात्र
... तिभासना है। वस्तुका
... निनिकरि वस्तुका सर्वस्व

... प्रत्यक्ष, दूजा साव्यव-
... रि पहले साव्यवहारिक
... सके भेदनिका सूत्र कहैं

... सांव्यवहारि ... ॥

... कारण ... अ
... यक्ष है
... ज्ञान
... है

भये तब हेतुका उदय नाही होय है। अर कहै ऐसे हेतुकै विपक्षविर्षे बाधकप्रमाणका अभाव है अर पक्षमै व्यापकपणा है तातै दोप नाही अन्यथानुपपणा है तौ हमारा भी हेतु ऐसा ही है, याकै वाकै समानता भई तब दोप काहेका है ॥ ३ ॥

आगै प्रत्यक्ष विशद ज्ञानकू कह्या सो विशदपणाका स्वरूप कहै है,—

प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेपवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम् ॥ ४ ॥

याका अर्थ—जो अन्यप्रतीति बीचिमै न आवै आप ही जानै अर विपयकू विशेपनिसहितपणाकरि जानै सो विशदपणा है। तहा एक प्रतितितैं दूसरी अन्य प्रतीति होय सो प्रतीत्यतर कहिये तिसकरि जाकै अव्यवधान होय—बीचिमैं अन्यप्रतीति न आवै, तिस अव्यवधानकरि जो प्रतिभासना सो वैशद्य कहिये। इहा जो अवायज्ञानकै अवग्रह ईहा प्रतीतिकरि व्यवधान है, अवायकै पहली अवग्रह ईहाकी प्रतीति होह है तौऊ तिस अवायज्ञानकै परोक्षपणा नाही है जातैं इहा विपय जो पदार्थ अर विपयी जो विपयका जाननेवाला ज्ञान ताकै भेदकरि प्रतीति नाही है। जहा विपयविपयीकै भेद होतै व्यवधान होय तहा परोक्षपणा होय है। इहा जो अवग्रहका विपय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, ईहाका विपय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, अवायका विपय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, परतु ये सारे प्रत्यक्ष ही है अर इनिका विपय प्रत्यक्ष ही है, प्रतीत्यन्तर न कहिये। यातैं ऐसा नाही जो जो जाका विपय है ताकी प्रतीति पहले अन्यकी प्रतीति बीचिमै आवै, तब होय। बहुरि कोई कहै जो ऐसैं है तौ पहिले अग्निका अनुमान भया होय पीछैं सो ही पुरुप अग्निकू देखै तब अग्निका देखनाकै परोक्ष-

पणा आवै है । ताकूं कहिये—जो यह कहना अयुक्त है जातैं इहां देखना प्रत्यक्ष है भिन्न विषयपणाका अभाव है तातैं प्रतीत्यन्तर नाही, देखनेतै प्रतीति भई है सो ही प्रत्यक्ष है ऐसैं नाही जो पहिलै अनुमान प्रतीति भई तिसतैं प्रत्यक्षकी प्रतीति भई। इहां अग्नि वस्तु है ताकूं अनेक प्रमाण करि अपनें अपनें विषयसारू जाननेमैं दोष नाही जातै विसदृश सामग्री करि उपजै जो भिन्न विषयविषैं प्रतीति सो प्रतीत्यन्तर कहिये है तातैं पहले अनुमानकी प्रतीति भई सो अपने विषयविषैं भई अर प्रत्यक्ष प्रतीति भई सो अपने विषयविषैं भई इनिकै परस्पर कार्यकारणभाव नाही है। वहुरि विशदपणा केवल एतावन्मात्र ही नाही है यामै विशेषनिसहितपणा करि भी प्रतिभासना है। वस्तुका आकार वर्ण रस गंध स्पर्श आदिकै जे विशेष तिनिकरि वस्तुका सर्वस्व देखना सो वैशद्य है ॥ ४ ॥

आगै सो प्रत्यक्ष दोय प्रकार है एक मुख्य प्रत्यक्ष, दूजा साव्यवहारिक प्रत्यक्ष, सो आचार्य दोऊनिकूं मनमैं धारि पहले साव्यवहारिक प्रत्यक्षकी उत्पत्ति करनेवाली सामग्री अर तिसके भेदनिका सूत्र कहैं हैं,—

इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकं ॥ ५ ॥

याका अर्थ—इन्द्रिय अर मन है कारण जाकूं ऐसा जो एकदेश विशद ज्ञान सो साव्यवहारिक प्रत्यक्ष है। इहां विशद अर ज्ञानकी अनुवृत्ति लेणीं। यातै देशतैं विशद ज्ञान होय सो साव्यवहारिक प्रत्यक्ष प्रमाण है ऐसा अर्थ भया। तहां 'स' कहिये समीचीन—भला प्रवृत्ति-निवृत्तिरूप जो व्यवहार सो सव्यवहार है तिसविषैं होय सो साव्यवहारिक कहिये। वहुरि कैसा है? इन्द्रिय कहिये नेत्र आदिक अर अ-

भये तब हेतुका उदय नाही होय है। अर कहै ऐसे हेतुकै विपक्षविषै बाधकप्रमाणका अभाव है अर पक्षमै व्यापकपणा है तातैं दोप नाही अन्वयवान्‌पणा है तौ हमारा भी हेतु ऐसा ही है, याकै वाकै समानता भई तब दोप काहेका है ॥ ३ ॥

आगै प्रत्यक्ष विशद ज्ञानकू कह्या सो विशदपणाका स्वरूप कहै है,—

प्रतीत्यन्तराव्यवधानेन विशेषवत्तया वा प्रतिभासनं वैशद्यम् ॥ ४ ॥

याका अर्थ—जो अन्यप्रतीति बीचिमै न आवै आप ही जानैं अर विषयकू विशेषनिसहितपणाकरि जानै सो विशदपणा है। तहा एक प्रतितितै दूसरी अन्य प्रतीति होय सो प्रतीत्यतर कहिये तिसकरि जाकै अव्यवधान होय—बीचिमैं अन्यप्रतीति न आवे, तिस अव्यवधानकरि जो प्रतिभासना सो वैशद्य कहिये। इहा जो अवायज्ञानकै अवग्रह ईहा प्रतीतिकरि व्यवधान है, अवायकै पहली अवग्रह ईहाकी प्रतीति होह है तौऊ तिस अवायज्ञानकै परोक्षपणा नाही है जातैं इहा विषय जो पदार्थ अर विषयी जो विषयका जाननेवाला ज्ञान ताके भेदकरि प्रतीति नाही है। जहा विषयविषयीके भेद होतै व्यवधान होय तहा परोक्षपणा होय है। इहा जो अवग्रहका विषय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, ईहाका विषय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है, अवायका विषय है ताकी तिस ही करि प्रतीति है परतु ये सारे प्रत्यक्ष ही है अर इनिका विषय प्रत्यक्ष ही है, प्रतीत्यन्तर न कहिये। यातै ऐसा नाही जो जो जाका विषय है ताकी प्रतीति पहलै अन्यकी प्रतीति बीचिमैं आवै तब होय। बहुरि कोई कहै जो ऐसैं है तौ पहिलै अग्निका अनुमान भया होय पीछैं सो ही पुरुष अग्निकू देखै तब अग्निका देखनाकै परोक्ष-

पणा आवै है? ताकूं कहिये—जो यह कहना अयुक्त है जातैं इहा देखना प्रत्यक्ष है भिन्न विषयपणाका अभाव है तातैं प्रतीत्यन्तर नाही, देखनेतैं प्रतीति भई है सो ही प्रत्यक्ष है ऐसैं नाही जो पहिले अनुमान प्रतीति भई तिसतैं प्रत्यक्षकी प्रतीति भई। इहा अग्नि वस्तु है ताकूं अनेक प्रमाण करि अपनें अपनें विषयसारू जाननेमैं दोष नाही जातै विसदृश सामग्री करि उपजै जो भिन्न विषयनिविषैं प्रतीति सो प्रतीत्यन्तर कहिये है तातैं पहले अनुमानकी प्रतीति भई सो अपने विषयविषैं भई अर प्रत्यक्ष प्रतीति भई सो अपने विषयनिविषैं भई इनिकै परस्पर कार्यकारणभाव नाही है। बहुरि विशदपणा केवल एतावन्मात्र ही नाही है यामैं विशेषनिसहितपणा करि भी प्रतिभासना है। वस्तुका आकार वर्ण रस गध स्पर्श आदिके जे विशेष तिनिकरि वस्तुका सर्वस्व देखना सो वैशद्य है ॥ ४ ॥

आगैं सो प्रत्यक्ष दोय प्रकार है एक मुख्य प्रत्यक्ष, दूजा साव्यवहारिक प्रत्यक्ष, सो आचार्य दोऊनिकूं मनमै धारि पहले साव्यवहारिक प्रत्यक्षकी उत्पत्ति करनेवाली सामग्री अर तिसके भेदनिका सूत्र कहैं हैं,—

इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकं ॥ ५ ॥

याका अर्थ—इन्द्रिय अर मन है कारण जाकूं ऐसा जो एकदेश विशद ज्ञान सो साव्यवहारिक प्रत्यक्ष है। इहा विशद अर ज्ञानकी अनुवृत्ति लेणीं। यातैं देशतै विशद ज्ञान होय सो साव्यवहारिक प्रत्यक्ष प्रमाण है ऐसा अर्थ भया। तहा 'स' कहिये समीचीन—भला प्रवृत्तिनिवृत्तिरूप जो व्यवहार सो सव्यवहार है तिसविषैं होय सो साव्यवहारिक कहिये। बहुरि कैसा है? इन्द्रिय कहिये नेत्र आदिक अर अ-

निन्द्रिय कहिये मन ये दोऊ है निमित्त कहिये कारण जाकू । सो इन्द्रिय मन समस्त भी कारण हैं अर व्यस्त कहिये न्यारे न्यारे भी कारण है । तहा इन्द्रियनिके प्रधानपणातैं मनके सहायतैं उपजै सो तौ इन्द्रिय प्रत्यक्ष है, बहुरि कर्मके क्षयोपशमतै विशुद्धि होय ताकी अपेक्षासहित जो मन तिसहीतै उपजै सो अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष है । तहा इन्द्रिय प्रत्यक्ष है सो अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणाभेदतै च्यार प्रकार है सो भी बहु, अबहु, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, अक्षिप्र, अनिसृत, निसृत, अनुक्त, उक्त, ध्रुव, अध्रुव, इनि बारह विषयनिके भेदनिकरि अडतालीस भेद होय हैं, ते पाचू इन्द्रिय प्रति होय हैं सो दोयसै चालीस होय। ऐसै ही मनके प्रत्यक्षके अडतालीस मिलाये दोयसै अठ्यासी भेद होय हैं, सो ये तौ अर्थकी अपेक्षा भये । बहुरि व्यजन विषयका अवग्रह ही होय है सो मन अर नेत्र द्वारै नाही होय तातैं च्यार इन्द्रियनिके द्वारै बहु आदि बारह विषयका अवग्रह होय ताके अडतालीस भेद होय । सर्व भेले किये इन्द्रिय अनिन्द्रिय प्रत्यक्षके तीनसै छत्तीस भेद होय हैं ।

इहा प्रश्न—जो स्वसवेदननाम प्रत्यक्ष अन्य है सो क्यों न कह्या? ताका समाधान—ऐसैं न कहना जातैं सो सवेदन सुख ज्ञान आदिका अनुभवनस्वरूप है सो मानसप्रत्यक्षमै आय गया अर इन्द्रियज्ञानका स्वरूपका सवेदन सो इन्द्रियप्रत्यक्षमैं आय गया । जो ऐसैं न मानिये तौ तिस ज्ञानकै अपने स्वरूपका निश्चय करनेंका अयोग आवै है । बहुरि स्मरण आदिका स्वरूपका सवेदन है सो मानसप्रत्यक्ष ही है अन्य नाही है सो स्वसवेदन प्रत्यक्ष कहिये ही है, परन्तु जुदा भेद नाही ॥५॥

आगै नैयायिक कहै है—जो प्रत्यक्षका उत्पादक कारण कहता जो ग्रंथकार इन्द्रियादिकनू कारण कहै तैसैं ही अर्थ अर आलोकनू कारण

क्यों नाही कहे । अर्थ कहिये वस्तु ताकरि भी ज्ञान उपजै है अर आलोक कहिये प्रकाशकरि भी ज्ञान उपजै है इनिकू विना कहे कारणनिका सकलपणाका संग्रह न भया तब शिष्यजनकै भ्रम ही रहेगा जातैं कारण एते हैं ऐसा निश्चय न होयगा। जो परम करुणावान भगवान हे तिनकै शिष्यजनकै भ्रम होय ऐसी चेष्टा न होय है ऐसी आशंका नैयायिककी दूरि करनेंकूं सूत्र कहैं हैं,—

नार्थालोकौ कारणं परिच्छेद्यत्वात्तमोवत् ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अर्थ कहिये वस्तु अर आलोक कहिये प्रकाश ये दोऊ ही सांव्यवहारिक प्रत्यक्षकू कारण नाही हैं जातै ये परिच्छेद्य कहिये जाननें योग्य ज्ञेय हैं। जैसे अंधकार ज्ञेय है तैसे ही ये हैं। याका अर्थ सुगम है तातैं टीकाकार टीका न करी है।

इहां बौद्धमती तर्क करे है—जो बाह्य आलोकका अभाव सो ही अंधकार है इसतैं न्यारा किछू अन्धकार वस्तु है नाही तातैं सूत्रमैं अन्धकारका दृष्टान्त साधनविकल है—यामैं साधन नाही ? ताकू आचार्य कहैं हैं,—जो ऐसैं नाही है जो ऐसैं होय तौ बाह्यप्रकाशकू भी ऐसैं कहिये, जो अंधकारका अभाव सो ही प्रकाश, इस सिवाय अन्य किछू वस्तु नाही। ऐसैं तौ तेजवान पदार्थ हैं तिनिका असंभव आवै है। सो याका विस्तारकरि निरूपण प्रमेयकमलमार्त्तण्ड याकी बडी टीका ताका नाम याका अलंकार हे तामैं प्रतिपादन किया है सो जानना॥६॥

आगैं इस सूत्रके साध्यकू साधनेंविषैं अन्यहेतु कहै है,—

तदन्वयव्यतिरेकानुविधानाभावाच्च केशोण्डुकज्ञानवन्नक्तंचरज्ञानवच्च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—अर्थ अर आलोककै सांव्यवहारिकप्रत्यक्षकै कारणपणाका अन्वय व्यतिरेकका अनुविधानका अभाव है। ऐसा नियम नाही

जो अर्थ आलोक होतैं तौ ज्ञान उपजै अर नाही होतै न उपजै जैसैं केशनिका गुच्छाका ज्ञान होय है। काहूकै माछरनिका समूह मस्तकपरि उडै था सो काहूकू केशनिका झूमका दीख्या ऐसैं तौ अर्थ ज्ञानका कारण नाही है अर अधकारमै विलाव आदिकू दीखै हैं तातैं प्रकाश ज्ञानका कारण नाही। इहा कारणकार्यकै व्याप्तिका प्रयोग करै है—जो जाकै अन्वय-व्यतिरेकका जोड न करैं सो तिसका कार्य नाही जैसैं केशनिका झूमकाका ज्ञान, सो ज्ञान अर्थका अन्वय व्यतिरेकपणा नाही करै है अर्थ तौ माछरनिका समूह था अर ज्ञान केशनिका झूमकाका भया। तैसै ही आलोक जो प्रकाश है, तहा यह विशेष है जो नक्तचरका दृष्टान्त है ते नक्तचर विलाव आदि हैं तिनिकू अधारेमै दीखै है जो प्रकाश ही ज्ञानका कारण होय तौ तिनिकू अधकारमैं ज्ञान कैसै होय॥ ७॥

इहा बौद्धमती तर्क करै है,—जो विज्ञान है सो अर्थ करि उपजै अर्थकै आकार होय सो अर्थका ग्राहक होय, ज्ञानकी अर्थतैं उत्पत्ति न मानिये तौ विषय प्रति नियमका अयोग ठहरै—घटके ज्ञानका घट ही विषय ऐसा नियम न ठहरे। वहुरि अर्थतैं उपजना है सो आलोक जो प्रकाश तामै अविशिष्ट है तातैं 'ताद्रूप्य' कहिये तदाकार होना तिससहित ही जो 'तदुत्पत्ति' कहिये अर्थतैं ज्ञानका उपजना ताकै विषय प्रति नियमरूप हेतुपणा है। ज्ञान ज्ञेयका भिन्न काल है तौऊ ग्राह्य ग्राहकभावका अविरोध है, तैसै ही हमारे कह्या है, इहा श्लोक है ताका अर्थ—कोई पूछे जो जाका भिन्नकाल होय सो ग्राह्य कैसैं होय तौ ताकू कहै है—जे युक्तिके जाननेवाले हैं ते ऐसैं कहै है—

१ तथा चाक्तम्—
भिन्नकाल कथ ग्राह्यमिति चेद् ग्राह्यता विदु।
हेतुत्वमेव युक्तिज्ञास्तदाकारार्पणक्षमम्॥ १॥

यहु जो हेतुपणा है—अर्थकै ज्ञानकी उत्पत्तिका कारणपणा है सो ही ग्राह्यपणा है, कैसा है यह हेतुपणा ? अर्थके आकारकू ज्ञानमे अर्पण करनेविषै समर्थ है। भावार्थ—जो अर्थकै ज्ञानका उपजावणापणा है सो ही तिस अर्थके आकार होना ज्ञानकै करै है ऐसी बौद्धकै आशका होतैं सूत्र कहै है,—

अतज्जन्यमपि तत्प्रकाशकं प्रदीपवत् ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जो ज्ञान अर्थकरि न उपजै है तौऊ अर्थका प्रकाशक है जैसैं दीपक घट आदि अर्थतैं उपज्या नाहीं तौऊ तिनिका प्रकाशक है तैसैं जानना। तहा अर्थकरि जन्य नाही है तौऊ ताका प्रकाशक है ऐसा अर्थ भया सो इहां 'अतज्जन्य' ऐसा शब्द है सो उपलक्षणरूप है ताकरि अतदाकार कहिये अर्थाकार न होय तौऊ ताका प्रकाशक है ऐसा भी ग्रहण करना। बहुरि दोऊ ही अर्थमैं प्रदीपका दृष्टान्त है जैसैं दीपककै घटादिककरि जन्यपणा नाही तथा तिनिकै आकारपणा होय नाही तौऊ तिनिकू प्रकाशै है तैसैं ज्ञानकै भी है ऐसा अर्थ भया ॥ ८ ॥

इहा बौद्ध कहै है—जो अर्थतैं तौ उपज्या नाही अर अर्थकै आकर न भया ऐसे ज्ञानकै अर्थका साक्षात्कारीपणा कहोगे तौ नियमरूप दिशा देश कालवर्त्ती जे पदार्थ तिनिका प्रकाश प्रति नियमका अभाव होनेंतैं सर्व ही विज्ञान अप्रतिनियत विषय कहिये न्यारे न्यारे नियमरूप विषय जाका होय ऐसा न ठहरैगा ऐसी बौद्धकी आशंका होतैं सूत्र कहै है,—

स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति ॥ ९ ॥

याका अर्थ—अपना आवरण जो ज्ञानावरण वीर्यान्तराय कर्म ताका क्षयोपशम सो है लक्षण जाका ऐसी जो योग्यता ताकरि प्रति-

है जो ज्ञेय होय सो कारण होय तौ ऐसैं कहे केशनिका झूमका अ
करि व्यभिचार होय है सो पूर्वै कह्या ही था काहूके मस्तक परि म
उडै थे सो काहूकू केशनिका झूमका दीख्या सो ते माछर ज्ञानके क
न भये ॥ १० ॥

आगै अब अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष जो मुख्य प्रत्यक्ष ताहि कहै है;—

**सामग्रीविशेषविश्लेषिताखिलावरणमतीन्द्रियम
षतो मुख्यम् ॥ ११ ॥**

याका अर्थ—सामग्री जो द्रव्य–क्षेत्र–काल–भावलक्षण त
विशेष जो सर्वकी पूर्णता–एकता मिलना ताकरि दूरि भये है अरि
कहिये समस्त आवरण जाके ऐसा, बहुरि अतीन्द्रिय कहिये इन्द्रियनि
उलघि वर्त्तै, बहुरि अशेपत कहिये समस्तपणाकरि विशद कहिये स
ऐसा ज्ञान मुख्य प्रत्यक्ष है ॥ ११ ॥

इहा कोई पूछे समस्तपणाकरि विशदपणाविपै कहा कारण है? त
कहिये–ज्ञानका प्रतिबध जो कर्म ताका अभाव कारण है हम ऐसैं
हैं। फेरि पूछे तहा भी कहा कारण है? ताकू कहिये अतीन्द्रियपण
अर अनावरणपणा है ऐसैं कहैं है फेरि पूछै यह भी काहेतै है? ता
समाधानकू सूत्र कहै है,—

सावरणत्वे करणजन्यत्वे च प्रतिबंधसंभवात् ॥१

याका अर्थ—जो ज्ञानकै आवरणसहितपणा होय अर इद्रियजन
पणा होय तौ प्रतिबध सभवै तातै निरावरण अतीन्द्रिय होय सो
मुख्य प्रत्यक्ष है। इहा कोई कहै कि अवधि मन पर्यय ज्ञानका
सूत्रकरि ग्रहण न भया तातै यहु लक्षण अव्यापक है? ताकू आच
कहै है—ऐसैं न कहना तिनि दोऊनिकै भी अपने विषयनिवैं समस
पणाकरि विशदपणा आदि धर्म सभवै है। बहुरि ऐसै मति–श्रुतज्ञान

अपने विषयविषैं भी विशदपणा नाही है ऐसैं अतिव्याप्ति दूषणका भी परिहार है सो यह अतीन्द्रिय अवधि, मन.पर्यय, केवलके भेदतै तीन प्रकार मुख्य प्रत्यक्ष है जातै ये आत्माके सन्निधिमात्रकी अपेक्षातैं उपजै हैं, अन्य इन्द्रिय आदिकी अपेक्षा इनिकै नाही है।

इहा मीमासकमती भट्टमताका आशय ले कहै हैं,—जो समस्त विषयविषै विशदका अवभासनेवाला ज्ञानकै अर तिस ज्ञानसहित पुरुषकै प्रत्यक्ष आदि पाच प्रमाणका विषयपणाका अभावपणाकरि अभाव प्रमाण सो ही भया विषमसर्प ताकरि नष्ट भई है सत्ता जाकी तिसपणातैं कौनकै मुख्य प्रत्यक्ष होय है। भावार्थ—सर्वका जाननेवाला ज्ञान अर सर्वज्ञ ये पाचू ही प्रमाणका विषय नाही—अभाव प्रमाणका विषय है तातैं अभाव ही सिद्ध होय है। सो ही कहै है,—प्रथम तौ प्रत्यक्ष प्रमाण है ताका सर्वज्ञ विषय नाही, जातै प्रत्यक्षकै तौ रूपादिक नियमरूप जे विषय तिनिविषैं प्रवर्त्तनपणा है इन्द्रिय प्रत्यक्ष जो विषय सबधरूप होय अर वर्त्तमान होय ताही विषय (विषैं) प्रवर्त्तै है सो समस्तका ज्ञाता सर्वज्ञ इन्द्रियनितैं सबद्ध नाही वर्त्तमान नाही। बहुरि अनुमानतैं भी ताकी सिद्धि नाही है, जातै ग्रहण किया है सबध जानैं ऐसा पुरुषकै वस्तुका एकदेश देखनेतै दूरवर्त्ती वस्तुविषैं बुद्धि होय है सो सर्वज्ञका सद्भावतै अविनाभावी कार्यलिंग तथा स्वभावलिंग हम नाही देखैं हैं जातैं अनुमान करैं, जातैं सर्वज्ञके जानें पहली तिसका स्वभाव अर तिसका कार्य जो तिसके सद्भावतैं अविनाभावीका निश्चय करनेका असमर्थपणा है। बहुरि आगमप्रमाणकरि भी ताकी सिद्धि नाही है। इहा दोय पक्ष—आगम नित्यरूप तिसके सद्भावकू जनावै है कि अनित्य आगम जनावै है ? तहा नित्य आगम तौ ताका सद्भाव नाही जनावै है जातैं नित्य तौ अर्थवादरूप है प्रयोजनमात्रकू कहै है।

अप्रत्ययपणा कैसैं है ? ताका समाधानकू प्रयोग करै है,—दोष
आवरण कोई पुरुष विषैं मूलतैं नाश होय है जातैं इनकी हानि वध
वधती देखिये है सो जाकी वधती हानि है सो कोई विषैं मूलतै सम
भी नाश होय है, जैसै अग्निके पुटका पाकतैं दूर भये हैं कीट
कालिमा आदि अतरग वहिरग दोऊ मल जाके ऐसैं सुवर्ण शुद्ध
है तैसैं ही वधती वधती हानिरूप दोप अर आवरण हैं, ऐसा प्रयो
जानना। वहुरि विवादमैं आया जो ज्ञान ताके आवरण कैसैं सिद्ध
जातैं प्रतिषेध है सो विधिपूर्वक है ? इहा कहिये है—विवादमै आ
जो ज्ञान सो आवरणसहित है जातै अपने विषयकू अविशदपणाक
जनावनहारा है जैसैं रज करि तथा धूम बरफ आदि करि पदार्थ अत
होय है आच्छादित होय है तैसैं है। वहुरि कोई कहै आत्मा तौ अमूर्ती
है सो अमूर्तपणातैं आवरणका अयोग्य है ? सो ऐसैं नाही है, चैतन्यकी श
अमूर्तीक है तौऊ मदिरा तथा माचणा कोदू आदि करि याकै आवर
होय है। कोई कहै मदिरादिकरि तौ इन्द्रियकै आवरण है तौ ऐसैं
नाही है जातैं इन्द्रिय तौ अचेतन है सो आवरण भये भी अनावरण
समान ही है वहुरि स्मरण आदिका प्रतिबधका अयोग होय, मतवाला
स्मरण नाही है जो इन्द्रियहीकै आवरण होय तौ मदोन्मत्तकै स्मर
कैसैं न होय। वहुरि मनकै भी आवरण न कहिये जातैं आत्मा वि
अन्य मनका निषेध आगैं करैंगे तातैं अमूर्तिककै आवरणका अभ
नाही है। तातैं तद्ग्रहण स्वभावपणा होतैं प्रक्षीणप्रतिवध प्रत्ययप
हेतु है सो असिद्ध नाही है। वहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाही है जा
विपरीत जो विपक्ष आत्माकै सूक्ष्मादिग्रहण स्वभावका अभा
ताविषैं निश्चयस्वरूप जो अविनाभाव ताका अभाव है। वहु
यह हेतु अनैकान्तिक भी नाही है जातैं एकदेशकरि तथा सा

स्यकरि विपक्षके विषै वृत्तिका अभाव है। बहुरि कालात्ययापदिष्ट भी नाही है जातैं यातैं विपरीत अर्थका स्थापनेवाला प्रत्यक्षप्रमाण तथा आगमप्रमाणका अभाव है। बहुरि सत्प्रतिपक्ष भी यह हेतु नाही है जातैं इसका प्रतिपक्षसाधनेका हेतुका अभाव है।

इहा मीमासक कहै है—जो याका प्रतिपक्षका साधनका अनुमान यह है ताका प्रयोग–विवादमैं आया जो पुरुष सो सर्वज्ञ नाही है जातै वक्ता है, पुरुष है, हास्तदिकसहित है ऐसैं तीन हेतुतै पुरुष सर्वज्ञ नाही जैसैं हरेक गैलै चालता पुरुष सर्वज्ञ नाही तैसैं? ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहना सुन्दर नाही जातैं वक्तापणा आदि तीन हेतु कहे ते समीचीन भले हेतु नाही। इहा तीन पक्ष पूछिये, जो वक्तापणा कह्या सो प्रत्यक्ष–अनुमानतैं विरुद्ध अर्थका वक्तापणा कह्या कि अविरुद्ध अर्थका वक्तापणा कह्या कि वक्तपणा सामान्य कह्या? इनि तीन सिवाय चौथी गति नाही हैं। तहा प्रथमपक्ष तौ न वणै हैं याकै तौ सिद्धसाध्यपणाका प्रसग है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतै विरुद्ध अर्थ कहै सो सर्वज्ञ काहेका? बहुरि दूसरा पक्ष कह्या सो यह विरुद्ध है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थ कहै सो ऐसा वक्तापणा तौ ज्ञानके अतिशयविना न बणैं जामै ज्ञान बहुत होय सो ही वक्ता सत्यवादी होय। बहुरि वक्तापणा सामान्य है सो भी विपक्षतैं अविरुद्ध है। तातैं प्रकरणगोचर जो साध्य असर्वज्ञपणा ताकू साधनैंविषैं समर्थ नाहीं। ज्ञानकी बधवारी होतै वक्तापणाकी हानि दीखै नाही, उलटा ज्ञानकी बधवारीवाळाकै वचनकी प्रवृत्तिकी बधवारीका सभव है। इस ही कथनकरि पुरुपपणा हेतु भी निराकरण किया। पुरुपपणा होतैं जो रागादिदोपदूपत होय तौ सिद्ध साध्यता ही है ताकै सर्वज्ञपणाका अभाव सिद्ध ही है अर रागादि दोपकरि दूषित नाही होय तौ हेतु विरुद्ध है, वीतराग विज्ञान आदि गुणनिकरि युक्त

-धप्रत्ययपणा कैसै है ? ताका समाधानकू प्रयोग करै है,—दोप अर आवरण कोई पुरुप विपैं मूलतैं नाश होय है जातैं इनकी हानि वधती बधती देखिये है सो जाकी वधती हानि है सो कोई विपैं मूलतैं समस्त भी नाश होय है, जैसै अग्निके पुटका पाकतैं दूर भये है कीट अर कालिमा आदि अतरग बहिरग दोऊ मल जाकै ऐसै सुवर्ण शुद्ध होय है तैसैं ही वधती बधती हानिरूप दोप अर आवरण हैं, ऐसा प्रयोग जानना। वहुरि विवादमैं आया जो ज्ञान ताकै आवरण कैसैं सिद्ध है जातै प्रतिपेध है सो विधिपूर्वक है ? इहा कहिये है—विवादमैं आया जो ज्ञान सो आवरणसहित है जातै अपने विपयकू अविशदपणाकरि जनावनहारा है जैसै रज करि तथा धूम बरफ आदि करि पदार्थ अतरित होय है आच्छादित होय है तैसै है। वहुरि कोई कहै आत्मा तौ अमूर्तीक है सो अमूर्तपणातैं आवरणका अयोग्य है ? सो ऐसैं नाही है, चैतन्यकी शक्ति अमूर्तीक है तौऊ मदिरा तथा माचणा कोदू आदि करि याकै आवरण होय है। कोई कहै मदिरादिकरि तौ इन्द्रियकै आवरण है तौ ऐसैं भी नाही है जातैं इन्द्रिय तौ अचेतन है सो आवरण भये भी अनावरणा समान ही है वहुरि स्मरण आदिका प्रतिवधका अयोग होय, मतवालाकै स्मरण नाही है जो इद्रियहीकै आवरण होय तौ मदोन्मत्तकै स्मरण कैसैं न होय। वहुरि मनकै भी आवरण न कहिये जातैं आत्मा विना अन्य मनका निपेध आगै करैंगे तातैं अमूर्तिककै आवरणका अभाव नाही है। तातै तद्ग्रहण स्वभावपणा होतैं प्रक्षीणप्रतिवध प्रत्ययपणा हेतु है सो असिद्ध नाही है। वहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाही है जातैं विपरीत जो विपक्ष आत्माकै सूक्ष्मादिग्रहण स्वभावका अभाव ताविपैं निश्चयस्वरूप जो अविनाभाव ताका अभाव है। वहुरि यह हेतु अनैकान्तिक भी नाही है जातैं एकदेशकरि तथा साम-

स्यकरि विपक्षकै विषै वृत्तिका अभाव है। बहुरि कालात्ययापदिष्ट भी नाही है जातैं यातैं विपरीत अर्थका स्थापनेवाला प्रत्यक्षप्रमाण तथा आगमप्रमाणका अभाव है। बहुरि सत्प्रतिपक्ष भी यह हैतु नाही है जाते इसका प्रतिपक्षसाधनेका हेतुका अभाव हैं।

इहा मीमासक कहै है—जो याका प्रतिपक्षका साधनका अनुमान यह है ताका प्रयोग–विवादमैं आया जो पुरुष सो सर्वज्ञ नाही है जातैं वक्ता है, पुरुष है, हास्तदिकसहित है ऐसै तीन हेतुतैं पुरुष सर्वज्ञ नाही जैसैं हरेक गैलै चाल्ता पुरुष सर्वज्ञ नाही तैसैं? ताका समाधान आचार्य करै है,— जो यह कहना सुन्दर नाही जाते वक्तापणा आदि तीन हेतु कहे ते समीचीन भले हेतु नाही। इहा तीन पक्ष पूछिये, जो वक्तापणा कह्या सो प्रत्यक्ष–अनुमानतै निरुद्ध अर्थका वक्तापणा कह्या कि अविरुद्ध अर्थका वक्तापणा कह्या कि वक्तपणा सामान्य कह्या? इनि तीन सिवाय चौथी गति नाही है। तहा प्रथमपक्ष तौ न बणै हैं याकै तौ सिद्धसाध्यपणाका प्रसग हे जातैं प्रत्यक्ष अनुमानतै विरुद्ध अर्थ कहै सो सर्वज्ञ काहेका? बहुरि दूसरा पक्ष कह्या सो यह विरुद्ध है जातै प्रत्यक्ष अनुमानतैं विरुद्ध अर्थ कहै सो ऐसा वक्तापणा तौ ज्ञानके अतिशयविना न बणैं जामैं ज्ञान बहुत होय सो ही वक्ता सत्यवादी होय। बहुरि वक्तापणा सामान्य है सो भी निपक्षतैं अविरुद्ध है। तातैं प्रकरणगोचर जो साध्य असर्वज्ञपणा ताकू साधनेंविषै समर्थ नाही। ज्ञानकी बधवारी होतै वक्तापणाकी हानि दीखै नाही, उलटा ज्ञानकी बधवारीवालाकै वचनकी प्रवृत्तिकी बधवारीका सभव है। इस ही कथनकरि पुरुषपणा हेतु भी निराकरण किया। पुरुषपणा होतै जो रागदिदोषदूषत होय तौ सिद्ध साध्य ही है ताकै सर्वज्ञपणाका अभाव सिद्ध ही है अर रागादि दोषनि दूषित नाही होय तौ हेतु विरुद्ध है, वीतराग–विज्ञान आदि गुणनिकरि युक्त

पुरुषपणाका सर्वज्ञ विना अयोग है। वहुरि पुरुषपणा सामान्य है सो सन्दिग्धविपक्षव्यावृत्तिक है असर्वज्ञपणाका विपक्ष सर्वज्ञपणा सो कोई पुरुषमै होय भी तातै विपक्षतै व्यावृत्ति सदेहरूप है। ऐसैं सकल पदार्थका साक्षात्कारीपणा कोई पुरुषकै सिद्ध होय है इस अनुमानतै यातैं पाच प्रमाणका विषय सर्वज्ञ नाही ऐसैं कहना अयुक्त है।

बहुरि असर्वज्ञवादी कहै है—जो इस अनुमानविषैं सामान्य सर्वज्ञपणा सिद्ध भया सो यह सर्वज्ञपणा अरहतकै है कि अन्यकै है? जो कहोगे अन्य जे बुद्ध आदि तिनिकै है तौ अरहतके वाक्य अप्रमाण ठहरैंगे। बहुरि कहोगे अरहतकै है तौ आगम करि सामर्थ्यकरि अथवा स्वशक्ति कहिये अविनाभावी लिंगपणा ताकरि अथवा ताका दृष्टान्तका अनुग्रह करि तिस हेतुतै अरहतकौ सर्वज्ञ जाननेका असमर्थपणा है जातैं हेतुकै अन्यपक्ष जो बुद्धादिक तिनिविषैं भी समानवृत्ति है, जैसै हेतुतैं अरहतकै साधिये तैसै ही बुद्ध आदिकै भी सिद्ध होयगा। ऐसैं असर्वज्ञवादी मीमासक आदिक कहैं। सो यह कहना भी तिनिकै अपनें घातकै अर्थि कृत्य कहिये करतूति तथा शस्त्रविशेष तथा मारीका उठावना है-जातै ऐसै पूछना है सो तौ सर्वज्ञसामान्यका माननेंपूर्वक है। सो सर्वज्ञ सामान्य मान्या तब अपनी पक्षका घात भया। अर जो सर्वज्ञसामान्य न मानिये तौ काहूहीकै सर्वज्ञपणा नाही है ऐसैं ही कहना। वहुरि प्रसिद्ध अनुमानविषैं भी इस दोषका सभवकरि जातिनामा दूषणरूप उत्तर होय है, सो ही कहिये है,—जैसैं काहूनैं अनुमान किया जो शब्द नित्य है जातै प्रत्यभिज्ञानकरि जान्या जाय है, ऐसैं कहनेंतैं जातिवादी कहै है—शब्दकू व्यापकरूप नित्य साधिये है कि अव्यापकरूप नित्य साधिये है? जो अव्यापकरूप नित्य मानिये है तौ व्यापकपणा करि मान्या जो शब्द सो किछू भी अर्थकू पुष्ट नाही करै है

व्यापक मानना निरर्थक ठहरया, मीमासक शब्दकू व्यापक मानैं है। बहुरि व्यापकरूप शब्द नित्य साधिये तौ आगमकरि अथवा सामर्थ्यकरि अथवा अपनी शक्तिकरि तथा दृष्टान्तके अनुग्रहकरि व्यापकपणा नाही निश्चय होय है जातै अव्यापक नित्यपक्षविषै भी याकी समानवृत्ति है, तातै जाति–उत्तर होय है। दोऊ पक्षविषैं प्रश्न उत्तर समान होय जाय तहां जातिनामा दूषण होय है। ऐसैं पूर्वं सर्वज्ञका साधनरूप हेतु कह्या सो निर्दोष है तातैं सर्वज्ञ सिद्ध होय है। बहुरि जो अभावप्रमाणकरि सर्वज्ञकी सत्ता ग्रासीभूत करी कही सो भी अयुक्त है—तिस सर्वज्ञका ग्राहक अनुमानप्रमाणका सद्भाव होतैं पाच प्रमाणका अभाव है मूल जाका ऐसा जो अभाव प्रमाण ताकी उत्पत्तिकी सामग्रीका अयोग है जातैं हे मीमासक! तेरे ही मतमे ऐसा कह्या है ताका श्लोक है, ताका अर्थ—वस्तुका सद्भावकू ग्रहण करि बहुरि ताका प्रतियोगीकू यादि करि इन्द्रियनिकी अपेक्षारहित मनसम्बन्धी नास्तिताका ज्ञान उपजै है अन्यप्रकार नाही उपजै है। ऐसै होतैं तीनकाल तीन लोकस्वरूप जो वस्तु ताका सद्भावका ग्रहणविषैं कोई काल कोई क्षेत्रविषैं ग्रहण किया जो सर्वज्ञ ताका स्मरण होते कोई क्षेत्र कालविषैं ताकी नास्तिताका ज्ञानरूप अभावप्रमाण युक्त होय है, अन्यप्रकार नाही है। सो कोई छद्मस्थ असर्वज्ञजनकै तीन जगत तीनकालका ज्ञान नाही बणै है तातैं सर्वज्ञ अतीन्द्रियका ज्ञान न होय है, यह सर्वज्ञपणा चैतन्यका धर्म है तातैं अतीन्द्रिय है सो भी असर्वज्ञ जनका विषय नाही ऐसैं होतैं अभावप्रमाण कैसै उदयकू प्राप्त होय। असर्वज्ञ पुरुषकै तिस सर्वज्ञके अभावकी उपजावनेकी सामग्रीका सम्भवका अभाव है। बहुरि

---

१ गृहीत्वा वस्तुसद्भावं स्मृत्वा च प्रतियोगिनम्।
मानस नास्तिताज्ञान जायतेऽक्षानपेक्षया ॥१॥

जो असर्वज्ञकै सर्वकाल सर्वक्षेत्रका ज्ञान मानि सर्वज्ञके अभावका उपजनेंकी सामग्री मानिये तौ ऐसै जाननेंवालाहीकै सर्वज्ञपणा ठहरया । बहुरि कहै—जो इस क्षेत्र कालमैं सर्वज्ञका अभाव साधिये है तौ युक्त नाही यामैं सिद्धसाध्यपणाका प्रसग आवै है कोई क्षेत्र कालकी अपेक्षा सर्वज्ञका अभाव सिद्ध ही है, सिद्धकू कहा साधिये । तातैं मुख्य अतीन्द्रियज्ञान समस्तपणाकरि विशद ऐसा सिद्ध भया।

बहुरि सर्वज्ञका ज्ञान अतीन्द्रिय है तातै अपवित्रका देखना तिसका रसका आस्वादन करना ऐसा दोप भी निराकरण भया, अशुच्यादिकका देखना रसका आस्वाद करना दोप तौ इन्द्रियज्ञान अपेक्षा कह्या है, वीतरागकै यह दोप नाही ।

बहुरि पूछै है—जो अतीन्द्रियज्ञानकै विशदपणा कैसैं है, हम तौ नेत्रादिकतै स्पष्ट ज्ञान होता जानैं हैं । ताका समाधान,—जैसैं साचा स्वप्नका ज्ञानकै तथा भावनाका ज्ञानकै विशदपणा है तैसैं इन्द्रियनि विना भी विशदपणा जानना, जातैं देखिये है—भावनाके बलतैं दूरदेश अन्यदेशवर्त्ती वस्तुकौं विशद जानिये है, जैसैं कह्या है ताका श्लोक है, ताका अर्थ,—काहू कामीजनकू बदीखानेमैं दीया सो कहै है,—देखो ! यह गुप्त आछाद्या जुड्या जो बदीखानाका घर तहा ऐसा अधकार जो सूईके अग्रभागकरि भी भेद्या न जाय तहा मेरे नेत्र मींचिकरि मैं बैठा तौऊ तिस स्त्रीका मुख मोकू प्रगट दीखै है । ऐसा काहू कामीका वचन है सो ऐसे बहुत उदाहरण हैं। इन्द्रियनिके सबध विना केवल मनकै ही द्वारा विशद—स्पष्ट प्रतिभास होय है, ऐसैं मीमासककू तौ उत्तर दिया ।

१ पिहिते कारागारे तमसि च सूचीमुखाग्रदुर्भेद्ये ।
मयि च निर्मीलितनयने तथापि कान्तानन व्यक्तम् ॥१॥

अत्र इहा नैयायिक बोलै है,—जो सर्वज्ञपणाकी तौ सिद्धि भई परतु आवरणके अभावतैं सर्वज्ञपणा है यह नाही बणैं है, शरीर इन्द्रिय लोक आदि ये कार्य है तिनिके निमित्तपणाकरि सर्वज्ञकी सिद्धि होय है। बहुरि इहा शरीर आदि कार्यनिका होना बुद्धिवान पुरुषकरि किये होय है सो असिद्ध नाही है जातैं अनुमान प्रमाण आदिकतैं इह नीकैं प्रसिद्ध होय है, सो ही कहिये है, ताका प्रयोग करै है—नाही निश्चयमैं आये–विवादमैं आये जे पृथिवी पर्वत वृक्ष शरीर आदिक सो कोई बुद्धिवान पुरुषके रचे हे तिस हेतुक है जातैं ये कार्यरूप हैं कार्य होय सो किया विना होय नाही। बहुरि इनिका उपादान अचेतन है। बहुरि इनिका संनिवेश कहिये आकारादिकी रचना सो भलै प्रकार है ऐसे आकारादिक बुद्धिमान पुरुष विना होय नाही जैसें वस्त्र आदिका बनावनेवाला कारीगर तिनिकी यथास्थान रचना बनावै तैसैं ये भी काहूनैं बनाये हैं। बहुरि आगम भी तिस सर्वज्ञका प्रतिपादक सुनिये है, सो वेदका वचन है—'विश्वतश्चक्षु' कहिये सर्व तरफ जाके नेत्र हैं—समस्तकू देखै है, 'उत विश्वतो मुख' कहिये सर्व तरफ जाका मुख है, बहुरि 'विश्वतो बाहु' कहिये सर्व तरफ जाका भुजानिका व्यापार है, 'उत विश्वत पात्' कहिये सर्व तरफ जाके पग हैं—सर्व व्यापक है, बहुरि 'सवाहुभ्या धमति' कहिये पुण्य पापतैं सर्वकू जोडै है—सर्व प्राणीनिकैं पुण्य पापका सयोग करै है, ऐसा 'सपतत्रै द्यावा-भूमी जनयन् देव एक'[१], कहिये एक देव ईश्वर है सो पृथिवी आकाशकू परमाणूनिकरि उपजावता सता वर्तै है। बहुरि व्यासका वचन ऐसा

१–विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वत पात्
सम्बाहुभ्या धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एक ॥

है,—ताका[1] श्लोक है ताका अर्थ,—यह जतु कहिये जीव सो अज्ञानी है आप ही आपके सुख दु ख करिवेकू असमर्थ है यातैं ईश्वरका प्रेरया हुआ स्वर्ग तथा नरककू गमन करै है। बहुरि ऐसैं भी न कहना जो अचेतन जे परमाणु आदि कारण तिनिहीकरि कार्यकी निष्पत्ति होय है तातैं बुद्धिमान कारणका अनर्थकपणा है जातैं अचेतनकै कार्यकी उत्पत्तिविपै आपहीतैं व्यापार करनेका अयोग है—जड आप ही कार्य करि सकै नाही, जैसै कोलीकै राछ वेम तुरी अर ततु इनितै आपहीतैं वस्त्र बणैं नाही कोली पुरुप व्यापार करै तब बणै। बहुरि ऐसैं चेतनकै भी अन्यचेतनपूर्वक कार्य करना नाही है जातैं यामैं अनवस्था आवै। ईश्वर है सो सकल पुरुपनितै बडा है समर्थ है अतिशयकी हदकू प्राप्त है, सर्वज्ञबीज कहिये जगत्‌का कारण सर्वज्ञ सो ही बीज है। बहुरि क्लेश कर्म विपाक आशय इनिकरि अपरामृष्ट है—रहित है। बहुरि अनादिभूत अविनाशी ज्ञानका सभव जाकै है, ऐसैं ही पंतजलिनै कह्या है—क्लेश कहिये अविद्या १ अस्मिता १ रागद्वेष १ अभिनिवेश १, तहा अविद्या तौ विपरीत जानना सो है, बहुरि अस्मिता कहिये अहकार, रागद्वेप कहिये सुख–दु ख तथा ताके साधनविपै प्रीति–अप्रीति, अभिनिवेश कहिये अपना ईश्वरपणाका भगका भय, ये तौ क्लेशके विशेप। बहुरि कर्म कहिये धर्म–अधर्मके साधन यज्ञ अर ब्रह्महत्यादिक। बहुरि विपाक कहिये जाति आयु भोग, तहा जाति देव मनुष्य आदि-

१–अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मन सुखदु खयो।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा॥१॥

२—यदाह पतञ्जलि,—
क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट पुरुप सर्वज्ञ
स पूर्वेपामपि गुरु कालेनाविच्छेदादिति।

पणा, आयु कहिये आयुर्बल, सुख दु खका भोगना सो भोग ये विपाकके विशेष। बहुरि आशय कहिये निवृत्ति ताईं जो भाव लाग्या रहै सो ऐसे भावनिकरि सर्वज्ञ पुरुष स्पर्शित नाही है। सो सर्व ही विषै गुरु है बडा है कालकरि जाका विच्छेद नाही है, ऐसै पतंजलिके वचन हैं। बहुरि अवधूत जो सन्यासीनिका आचार्य ताके ऐसे वचन हैं, श्लोकका अर्थ,—हे भगवन्! एते विशेषण तेरे ही है, प्रथम तौ जो काहूकरि हत्या न जाय ऐसा ऐश्वर्य तेरै ही है, बहुरि स्वभावहीतैं विरागता तेरै ही है, बहुरि स्वभावतै उपजी तृप्तिता तेरै ही है, बहुरि इन्द्रियनिका वश करना तेरै ही है, बहुरि अत्यन्तसुख तेरै ही है, बहुरि आवरणरहित शक्ति तेरै ही है, बहुरि सर्वविषयका जाननहारा ज्ञान तेरै ही है ऐसा अवधूतका वचन है। ऐसैं ईश्वर सर्वतैं बडा है तातै कार्यके करनेंमैं अनवस्था नाही है। बहुरि तहा ईश्वरकी सिद्धिकू कार्यत्वनामा हेतु है सो असिद्ध नाही है, अवयवसहितपणाकरि कार्यत्वकी सिद्धि है जो अवयवनिकरि सहित होय सो कार्य है सो किया ही होय। बहुरि यह हेतु विरुद्ध भी नाही है जातै याकी विपक्ष जो विना किया होना तानिर्वै वृत्तिका अभाव है। बहुरि अनैकान्तिक भी नाही है विपक्ष जे परमाणु आदि तिनि विषैं याकी अप्रवृत्ति है, परमाणु आप कार्य नाही। बहुरि प्रकरणसम भी नाही है जातै प्रतिपक्षकी सिद्धिका कारण जो अन्य हेतु ताका अभाव है।

२—ऐश्वर्यमप्रतिहत सहजो विराग-
स्तृप्तिर्निसर्गजनिता वशितेन्द्रियेषु।
आत्यन्तिक सुखमनावरणा च शक्ति-
र्ज्ञान च सर्वविषय भगवस्तवैव॥
इत्यवधूतवचनाच।

बहुरि इहा कोई कहै—याका प्रतिपक्षका साधन हेतु है, ताका प्रयोग —तनु आदि बुद्धिमान हेतुक नाही है जातै देख्या है कर्त्ता जाका ऐसा जो प्रासाद आदिक तिनितैं यह तनु आदि विलक्षण हैं, प्रासाद आदि सारिखे नाही, जैसै आकाश आदिक है, ऐसैं याका प्रतिपक्षका हेतु है तनु आदिककै अकर्त्ताकू साधै हैं, तातैं कार्यत्व हेतु प्रकरणसम है। ताकू नैयायिक कहै है—यह कहना अयुक्त है जातैं इस हेतुकै असिद्धपणा है, सनिवेशविशिष्टपणाकरि प्रासादादिकतै समानजातीयपणाकरि शरीरादिकका उपलभ है जैसै प्रासादादिकका आकार रचनाविशेष है तैसे ही शरीरादिकका आकार ऐसा ही रचना विशेष है। बहुरि कहोगे जैसा प्रासादादिकविषै सनिवेशविशेष देखिये है तैसा तनुशरीर आदि विषै नाही तौ सर्व ही एकसे सर्वस्वरूप तौ होय नाही कोईमै किछू विशेष होय कोईमैं किछू होय। अतिशयसहित सनिवेश होय सो सातिशय कर्ताकू जनावै है, जैसैं प्रासादादिक, जो प्रासाद सुन्दर बणै तब जानिये चतुर कारीगरनै बणाया है। बहुरि कोईका तौ कर्त्ता दृष्ट है—जानिये है फलाणानैं बनाया है अर कोईका कर्त्ता अदृष्ट है जाण्या न पडै है तौ इनि दोऊ रीतितैं तौ बुद्धिवानका किया अर बुद्धिवान न किया स्वयमेव है ऐसा सिद्ध होय नाही। मणि मोती आदिका कर्त्ता कौननै देख्या ये स्वयमेव भये ठहरै है, ऐसैं सनिवेशविशेष हेतु सिद्ध है। इस ही कथनकरि अचेतन उपादानपणा आदि हेतु भी दृढ किया। ऐसैं बुद्धिवान हेतुक तनु आदि है ऐसा भलै प्रकार कह्या हुवा बणै है। इस ही हेतुतैं सर्वज्ञपणा सिद्ध होय है। ऐसैं नैयायिकने अपना मत दृढ किया।

ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यहु कहना अनुमानरूप मुद्रा करनेंकू धनकरि रहित दरिद्रीके वचन है जातैं कार्यत्व आदि हेतु

कहे तिनिकै असम्यक् हेतुपणाकरि तिनि हेतुनिकरि उपज्या ज्ञानकै मिथ्यारूपपणा है, सो ही कहिये है,—यह कार्यत्वनामा हेतु कह्या सो याका कहा स्वरूप हैं, स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप कार्यत्व है, कि अभूत्वा भावित्व है, कि अक्रियादर्शीकै कृतबुद्धि उत्पादकपणा है, कि कारणके व्यापारकै अनुविधायीपणा है[१] इनि सिवाय गतिका अभाव है, ऐसैं चार पक्ष पूछिये हैं। तहां आदिका पक्ष कहैगा तौ योगीश्वरनिके समस्त कर्मका नाशनामा जो कार्य सो भी कार्यत्वपक्षमैं ही है तातिपै कार्यत्वनामा हेतुकी अप्रवृत्ति है यातैं हेतु भागासिद्ध होयगा। जो हेतु पक्षके कोई देशमैं न व्यापै सो भागासिद्ध कहिये। सो इस कर्मका नाशविषैं स्वकारणसमवाय भी नाहीं अर सत्तासमवाय भी नाहीं। वैस्तुकी सत्तासूं एकता होय सो तौ सत्तासमवाय कहिये, बहुरि वस्तुके कारणसूं एकता होय सो स्वकारणसमवाय कहिये। सो कर्मका नाश प्रध्वंसनामा अभावस्वरूप है सो यामै सत्ता भी नाहीं अर समवाय भी नाहीं जातैं सत्ता तौ द्रव्य, गुण, क्रियाके आधार मानिये है, बहुरि समवाय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, इनि पाच पदार्थमै वर्त्तनेवाला मानिये है यह नैयायिक-वैशेषिकका मत है। तहां पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, दिशा आत्मा, काल, मन, ये नव तो द्रव्य मानैं हैं। बहुरि बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, संस्कार, धर्म, अधर्म, रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व,

---

१–सत्तासूं वस्तुकै एकता होय सो तौ सत्तासमवायस्वरूप कार्य वस्तु है बहुरि वस्तुके कारणसूं सत्ताकै एकता होय सो स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप कार्य है ऐसें दोऊमें ही कहिये, वस्तुमें वा वस्तुके कारणमें सत्तासमवाय मान्या यातैं सत्तासमवायलक्षण कार्यका स्वरूप मान है।

द्रवत्व, स्नेह, शब्द, ए चौईस गुण मानैं है। बहुरि प्रसारण, आकु-चन, उत्क्षेपण, गमन, आगमन, ये पाच कर्म मानैं हैं। पर सामान्य, अपर सामान्य ये दोय प्रकार सामान्य मानै है। विशेष अनेक हैं सो इनिमैं अभाव नाही। अभावनामा सातवा पदार्थ न्यारा है। बहुरि कहै जो अभावका परित्याग करि इहा भाव ही विवादाध्यासितकरि पक्ष किया है तातैं तुमनै दोप बताया सो इहा नाही प्रवेश करै है? ताकू कहिये---जो अभावकू कार्यका पक्षमै न लीजिये तौ मुक्तिके अर्थी जे मुनि तिनिकै ईश्वरका आराधना अनर्थक ठहरैगा जातै तिस कर्मनाशके कार्यविषैं ईश्वरका आराधना किछू करनेंवाला नाही। बहुरि यह सत्ता-समवाय कार्यका स्वरूप मानना विचार किये सैंकडा प्रकार खल्या जाय है तातै कार्यत्व हेतु स्वरूपासिद्ध है, जातैं सो सत्तासमवाय पदार्थ उत्पत्ति भये होय है कि उपजते सतेकै होय है? जो कहैगा उत्पत्ति भये होय है तौ तहा भी पूछिये जो छतेनिकै होय कि अछतेनिकै? जो कहैगा अणछतेनिकै होय है तौ गदहाके सींग आदिकै भी सत्ता-समवायका प्रसग आवैगा। बहुरि कहैगा जो छते पदार्थनिकै होय है तौ तहा पूछिये जो सत्तासमवायतैं होय है कि आपहीतै होय है? तहा प्रथम सत्तासमवायतै कहैगा तौ अनवस्थाका प्रसग आवैगा जातै पहले पूछया था जो छत्ते पदार्थकै होय है कि अणछतेनिकै सो ही विकल्प फेरि पूछिये तब अनवस्था चली जाय। बहुरि कहैगा पदार्थ-निकै आपहीतैं सत्तासमवाय है तौ जुदा सत्तासमवायका मानना अ-नर्थक है। बहुरि दूजा कहै जो पदार्थ उपजते सतेनिकै सत्तासमवाय है जातै पदार्थनिकी निष्पत्ति अर सबध इनि दोऊनिकै एक कालपणा-का अगीकार है तौ पूछिये जो यह सत्तासबध है सो उत्पादतैं भिन्न है कि अभिन्न है? जो कहैगा भिन्न है तौ उत्पत्तिके अभावतैं अवि-

शेष भया तौ उत्पत्तिकै अर अभावकै भेद कैसैं भया। बहुरि कहैगा उत्पत्तिकरि सहित वस्तुकै सत्व है तातैं उत्पत्ति भी तैसा नाम पावै है तो ऐसा कहना भी मूर्खपणाकरि ही है जातैं इहां उत्पत्तिका--सत्वका विवाद है तहां वस्तुका सत्व कहना कछू न वणैगा। बहुरि यामैं इतरेतराश्रयदोष आवैगा, वस्तुविषैं उत्पत्तिका सत्व होतैं तिस ही काल भया सत्तासंबंधका निश्चय होय अर तिसका निश्चय होय तब ही तिस वस्तुके सत्वकरि उत्पत्तिका सत्वका निश्चय होय ऐसैं इतरेतराश्रय होय है। बहुरि इस दोषके दूर करनेकी इच्छाकरि उत्पत्तिकै अर सत्तासंबंधकै एकता मानिये तौ सत्तासंबंध ही कार्यत्व भया तातैं बुद्धिमानहेतुपणा तनु आदिकै होतैं आकाश आदिकरि हेतु अनैकान्तिक भया जातैं आकाश आदिविषैं सत्तासंबंध तौ है अर कार्यपणा नाही। नित्यवस्तुकै कार्यपणा होय नाही तातैं बुद्धिमानहेतुकपणा भी नाही। ऐसैं सत्तासमवाय तौ कार्यत्व नाही तैसैं ही स्वकारणसंबंध भी कार्यत्व नाहीं, जो चर्चा सत्तासंबंधमैं है सो ही इहां भी लगावणीं। बहुरि कहै जो स्वकारणसमवाय अर सत्तासमवाय दोऊ संबंध कार्यत्व है तौ सो भी युक्त नाही है, तिनि संबंधनिकै भी कदाचित् काल होतैं तौ समवायकै अनित्यताका प्रसंग आवै जैसैं घट आदिककै अनित्यता है तैसैं, बहुरि सदाकाल कहै तौ सर्वकाल तिस कार्यपणाका उपलभ करिये प्राप्ति नाका प्रसंग आवै। बहुरि इहां कहै जो वस्तुनिकै उत्पादक कारणनिकी निकटता न होय तब समवाय न होय यातैं सर्वकाल उपलभका प्रसंग न आवै तो तहां पूछिये है--वस्तुकी उत्पत्तिकै अर्थि तो कारणनिका व्यापार है अर उत्पाद स्वकारणसत्तासमवायस्वरूप है सो यह सर्वकाल है ही, ऐसैं तो कारणका ग्रहण अनर्थक ही है। बहुरि कहै जो वस्तुकै कारणका ग्रहण उत्पत्तिकै अर्थि तौ

नाही अभिव्यक्तिकै अर्थ है, सो यह भी कहना वार्तामात्र ही है--वस्तुके उत्पादकी अपेक्षाकरि अभिव्यक्ति कहना बणै नाही, वस्तुकी अपेक्षा अभिव्यक्ति कहिये तौ तानिर्वै कारणके आवनें पहले भी कार्य-वस्तुका सद्भावका प्रसग आवै है । बहुरि उत्पादकै अभिव्यक्ति भी असभवरूप है जातैं स्वकारणसत्तासबध है लक्षण जाका ऐसा जो उत्पाद ताकै वस्तुके कारणके व्यापार पहले सद्भाव होतै वस्तुका सद्भावका प्रसंग आवै है जातैं वस्तुके सत्त्वका सो ही लक्षण इहा है । सो पहले सत्-रूप होय ताकै ही कोई कारणकरि आच्छादित होय ताकी अभि-व्यजककरि अभिव्यक्ति होय, जैसै घट आदि वस्तु अधकारकरि आ-च्छादित होय तब दीपक आदि अभिव्यजककरि ताकी व्यक्ति होय तैसैं इहा भी जानना । तातैं अभिव्यक्ति अर्थ कारणका ग्रहण करना युक्त नाही । तातैं स्वकारणसत्तासबध तौ कार्यत्व नाही है ।

बहुरि अभूत्वा भावित्वनामा दूसरा पक्ष है सो भी कार्यत्व नाही है ताकै भी विचारका सहवापणा नाही है, परीक्षा किये अयुक्त ही है जातैं अभूत्वा भावित्वपणा है सो पहले न होय करि आगामी होय ताकू कहिये है । सो भिन्नकालविषै जो दोय क्रिया ताका आधारभूत जो कर्त्ता ताकै सिद्धि होतैं सिद्धि होय है जातैं अतीतकालवाची जो 'क्त्वा' प्रत्यय तदन्तपद-करि विशेषित जो वाक्यका अर्थपणा तिसरूप है, जैसैं 'भुक्त्वा व्रजति' इत्यादि वाक्यार्थ है । कोई पुरुष भोजन करि चलै है, तहा 'भुक्त्वा' ऐसा तौ अतीतकाल भया 'पीछै चलै है' सो यह भावीकाल है सो इहा दोऊ कालविर्षै क्रिया दोयका आधार पुरुष है सो इहा कार्यत्वविषै 'भवन अभवन' कहिये होना न होना रूप जो दोय क्रिया ताका आधारभूत एक कर्त्ताका अनुभव नाही है जातैं अभवनका आधारकै अविद्यमानपणाकरि अर भवनका आधारकै विद्यमानपणाकरि भाव

अभावका एक आश्रयकै विरोध है, भावार्थ—कार्य है सो भावस्वरूप ही है अभावस्वरूप नाही है। अर जो अविरोध मानिये तौ तिनि दोऊनिकै पर्यायमात्रकरि ही भेद आवै वस्तुभेद नाही आवै। अथवा कोई प्रकार अभूत्वा भावित्व है सो कार्यत्वका स्वरूप होहु तौऊ तनु आदिक सर्वनिर्पै नाही माननेतैं हेतु भागासिद्ध होय है जातैं हमारै पृथिवी पर्वत समुद्र उद्यान आदि पहली न होय करि होते नाही मानिये है जातैं हमारै जैनीनिकै पृथिवी आदिका सदाकाल अवस्थान मानै हैं। वहुरि कहै जो पृथिवी आदिकै अवयवसहितपणाकरि आदिसहितपणा साधिये है सो ऐसा कहना भी विना सीखेकरि कह्या है, जातैं इहा दोय पक्ष पूछिये, अवयवनिविर्पै अवयवीकी प्रवृत्तितैं है कि अवयवनिकरि आरभिये है यातैं है? इनि दोऊ ही पक्षनिविर्पै अवयवसहितपणाकी अनुपपत्ति है। जो प्रथम पक्ष लीजिये तौ अवयवसामान्यकरि अनेकात है जातैं अवयवसामान्य है सो अवयवनिविर्पै वर्त्तै है अर कार्य नाही है। वहुरि दूसरी पक्ष जो अवयवनिकरि अवयवी आरभिये है तौ साध्यतैं अविशिष्ट है जातै आदिसहितपणा साधिये है सो ही अवयवनिकरि आरभिये है ऐसा हेतु कह्या यामैं साध्यतै विशेष कहा भया। वहुरि कहै—जो यह सनिवेश है आकाररूप रचनाविशेष है सो ही सावयवपणा है सो ही घट आदिकी ज्यों पृथिवी आदिविर्पै पाइए है यातै अभूत्वा भावित्व ही कहिये है सो ऐसै कहना भी सुन्दर नाही, सनिवेशके भी विचारका असहपणा है—परीक्षा किये वणे नाही है। इहा दोय पक्ष पूछिये, यह सनिवेश है सो अवयवनिका सबध है कि रचनाका विशेष है? जो कहैगा अवयवनिका सबध है तौ आकाश आदिकरि अनेकात होगा जातैं आकाशकै समस्त मूर्तीक द्रव्यका सयोग है कारण जाकू ऐसा प्रदेश-

निका नानापणाका सद्भाव है। इहा कहै—जो आकाशकै विषै तौ प्रदेश उपचरित है तौ समस्त मूर्तीक द्रव्यनिका सबधकै भी उपचरितपणा आया तब आकाशकै सर्वगतपणा भी उपचरित ठहरया, तब श्रोत्रकै अर्थक्रियाकारीपणा न ठहरैगा श्रोत्र इन्द्रिय आकाशतैं जुडै तब शब्द आकाशका गुण है सो ग्रहण होय है ऐसैं नैयायिक मानै है सो सबध उपचरित ठहरै तब श्रोत्रकै अर्थक्रियाकारीपणा—शब्दका ग्रहण करना है सो न ठहरैगा जातैं आकाश उपचरित प्रदेशरूप मान्या है। बहुरि कहै जो धर्म अधर्मके सस्कारतैं श्रोत्रतै अर्थक्रिया होय है, ताकू कहिये—जो उपचरित तौ अभावरूप है सो ताके तिनि धर्मादिकरि उपकारका अयोग है जैसैं गदहाके सींगकै कछू काहूकरि उपकार न होय तैसै है। तातै अवयवनिका सबधस्वरूप जो सनिवेश कह्या सो तौ किछू भी नाही। बहुरि दूसरी पक्ष रचनाविशेष है सो मानिये तौ हमारै जैनिनकै पृथ्वी आदि रचनाविशेषकू सावयवरूप कार्यस्वरूप नाही मानिये है तातैं यह हेतु भागासिद्ध होय है सो यह दूषण अवस्थित होय है ऐसैं अभूत्वा भावित्व है सो विचारमैं नाही बणै है।

बहुरि तीसरा पक्ष अक्रियादर्शीकै कृतबुद्धिका उत्पादकपणा है, याका अर्थ यह—जो कार्यके उपजनेंकी क्रिया तौ न देखी तौऊ ताविषै ऐसी बुद्धि उपजै जो यह काहूने किया है सो यह कार्यपणा मानिये तौ दोय पक्ष पूछिये है, सो ऐसी बुद्धि उपजै जो पहले काहूनै सकेत किया होय जो ऐसा तौ किया ही होय है ताकै उपजै है कि विना ही सकेत उपजै है? जो कहैगा सकेत करनेंवालेकै उपजै है तौ आकाश आदिकै भी बुद्धिमानकरि कियापणा ठहरैगा। तहा भी कछू खोदिकरि माटी काढै तब खाना (टा) होय जाय आकाश प्रगट होय तहा ऐसी बुद्धि उपजै है जो यह आकाश काहूनै

किया है जातैं पूर्वे खोदता देख्या था तथा काहूके वचनतैं निश्चय किया था तहा ऐसा सकेत भया था जो खोदेतैं आकाश नीकसै हैं तातै इहा कृतबुद्धि उपजै है। इहा कहै—जो यह बुद्धि तौ मिथ्या है तौ तेरी भी बुद्धि अन्यविषैं किये उपजै है सो मिथ्या क्यों न होय। बाधकका सद्भाव अर प्रतिप्रमाण विरोधका अन्यविषै समानपणा है, जो आकाशविषै कृतबुद्धिमैं बाधक बतावैगा सो ही तन्वादिकमै आवैगा, बहुरि कर्त्ताका ग्रहण दोऊ ही जायगा प्रत्यक्ष नाही है। इहा प्रमाणकी समानताका प्रयोग ऐसा—पृथिवी आदिक हैं ते बुद्धिमान हेतुक नाही हैं जातैं हम आदिकके नाही ग्रहण करनें योग्य याका परिमाण अर आकार है, जैसा आकाश आदिकका परिमाण आदि नाही ग्रहणमैं आवै है तैसैं यहु भी है ऐसा प्रमाण पृथिवी आदिका कर्त्ताका निषेधका समान है। तातै कृतसमय कहिये जानै सकेत किया ताकै तौ पृथिवी आदिकविषैं कृतबुद्धिका उपजावनहारापणा नाही है। बहुरि अकृतसमय कहिये नाही किया है सकेत जानैं ताकै भी कृतबुद्धिका उपजावनहारा नाही है जातैं यह असिद्ध है बिना सकेत किये कृतबुद्धि उपजै नाही जो उपजै तौ विप्रतिपत्ति नाही होय सबहीकै उपजै। कोई कहै—जो अग्नि शीतल है तौ जाकै अग्निका सकेत नाही सो ऐसै जानै जो शीतल ही होगी यामे सदेह न उपजै तैसैं पृथिवी आदि कार्य काहूके किये बतावै तौ किये ही मानै न किये बतावै तौ विना किये ही मानैं।

बहुरि चौथा पक्ष कारणव्यापारानुविधायिपणा है, याका अर्थ यह—जो जैसा कारणका व्यापार होय तिसकै अनुसार तैसा ही कार्य होय। सो इहा दोय पक्ष पूछिये, तहा जो कारणमात्र ही की अपेक्षा कहै तो यह विरुद्ध होय जातैं कार्य तौ अबुद्धिमानके किये भी होय

है सो विपक्षकू साध्या तत्र कारणविशेष जो ईश्वर ताकी सिद्धि भई तातैं विरुद्ध भया। बहुरि कारणविशेषकी अपेक्षा कहै तौ इतरेतराश्रयनामा दूषण आवै, कारणविशेष जो बुद्धिमान ताकी सिद्धि होतैं तौ तिसकी अपेक्षाकरि कारणव्यापारानुविधायित्वस्वरूप कार्यत्व सिद्ध होय अर तिसतै ताके विशेषकी सिद्धि होय ऐसैं इतरेतराश्रय भया।

बहुरि इहा सन्निवेशविशिष्टपणा अर अचेतन-उपादानपणा ये दोऊ भी हेतु है ते कहे जे दोष तिनकरि दुष्ट हैं—निर्दोष नाही, तातैं न्यारे नाही विचारे हैं। सन्निवेशविशिष्ट तौ सुख आदिविषै नाही वर्त्तै तातैं भागासिद्ध है, सुख आदि कार्य तौ है अर रचनाविशेषरूप नाही है। बहुरि अचेतनोपादानपणा ज्ञानस्वरूप कार्यविषै नाही तातैं भागासिद्ध है, ज्ञान कार्यरूप तौ है अर अचेतनोपादानरूप नाही ऐसैं भागासिद्धनामा दूषण तहा भी सुलभ है। बहुरि ये हेतु विरुद्ध हैं जातैं दृष्टातके अनुग्रह कहिये घट आदि दृष्टातका बल ताकरि शरीररहित सर्वज्ञपूर्वक साधन किया है अर घटका कर्त्ता कुभकार है सो शरीरसहित असर्वज्ञ है तातैं हेतु विरुद्ध होय है। बहुरि कहै—जो ऐसै तौ धूमतैं अग्निका अनुमान कीजिये तामै भी यह दोष आवैगा सो दोष नाही आवै है जातै तहा तृणकी अग्नि तथा पान आदिकी अग्नि सर्व ही अग्निमात्रविषैं व्याप्त जो धूम सो देखिये है तैसै इनि हेतुनिमै नाही देखिये है जो सर्वज्ञ तथा असर्वज्ञ जो कर्त्ताका विशेष ताका आधार जो कर्त्तापणा सामान्य तिसकरि कार्यत्वनामा हेतुकी व्याप्ति है ऐसै नाही देखिये है अर सर्वज्ञ जो कर्त्ता ताकी इस अनुमान पहलै असिद्धि है, इस ही अनुमानकरि कर्त्ता साधिये है। बहुरि यह हेतु व्यभिचारी है बुद्धिमान कारण विना भी बिजली आदि कार्य प्रकट होय है। बहुरि सूता आदि पुरुषकी अवस्थाविषै बुद्धिपूर्वक विना भी कार्य

होते देखिये है। बहुरि कहै जो शिव तिनि कार्यनिविषै भी अवश्य कारण है तौ ऐसा कहना अतिमुग्धका विलास है जातैं तहां शिवका व्यापारका असंभव है जातैं शिव शरीररहित है अर ज्ञानमात्र ही करि कार्यकारीपणा बणै नाहीं, बहुरि इच्छा अर प्रयत्न ये दोऊ शरीरविना संभवै नाहीं, ताका असंभव आप्तपरीक्षा आदि ग्रंथनिविषै पुरातन बडे आचार्यनिकरि विस्तारकरि कह्या है तातैं इहां नाहीं कहिये है। बहुरि जो महेश्वरकै क्लेश आदिका रहितपणा अर निरतिशयपणा अर ऐश्वर्य आदि सहितपणा कह्या सो सर्व ही आकाशके कमलकी सुगंध ताका वर्णन सारिखा है जातैं जाका आधार सिद्ध होय नाहीं तातैं हमारै आदरनें योग्य नाहीं। तातै महेश्वरकै सर्वज्ञपणा कहै सो नाहीं।

बहुरि ब्रह्मकै सर्वज्ञपणा कहै सो भी नाहीं है जातैं ताका सद्भावका कहनेंवाला जनावनेवाला प्रमाणका अभाव है। तहां प्रथम तौ प्रत्यक्ष-प्रमाण ताका जनावनेंवाला नाहीं है, जो प्रत्यक्ष ब्रह्म दीखै तौ विप्रतिपत्ति नाहीं होय, सन्देह काहेकूं होय। बहुरि अनुमान भी ताका सिद्धि करनें-वाला नाहीं है जातैं ब्रह्मतैं अविनाभावी जो लिंग ताका अभाव है लिंग विना अनुमान कैसैं होय।

इहां ब्रह्मवादी कहै है—प्रत्यक्षप्रमाण ब्रह्मका ग्राहक है ही जातै नेत्र उघाडिकरि देखें लगता ही निर्विकल्प अभेदरूप सत्तामात्रकी विधि दीखै है ताका विषयपणाकरि प्रत्यक्षकी उत्पत्ति है, सर्व वस्तु एक सत्तारूप भासै है, बहुरि जो सत्ता है सो ही परमब्रह्मका स्वरूप है, ताका श्लोकका अर्थ—प्रथम ही आलोचना कहिये दर्शन-

१ तथा चोक्तम्—

> अस्ति ह्यालोचनाज्ञानं प्रथमं निर्विकल्पकम्।
> बालमूकादिविज्ञानसदृशं शुद्धवस्तुजम्॥ १॥

मात्र ज्ञान है सो निर्विकल्पक है–भेदरहित है जैसा बालक तथा मूक कहिये गूगा बहरा आदिकै ज्ञान होय है तैसा होय है सो यह ही शुद्ध वस्तुतै उपज्या है। भावार्थ—शुद्धसत्तामात्र अभेद ब्रह्मका स्वरूप है। बहुरि कोई कहे—विधिकी ज्यों परस्पर जुदायगीरूप निषेध भी प्रत्यक्ष-करि प्रतीतिमें आवै है तातै विधिनिषेधरूप द्वैतकी सिद्धि होय है सो ऐसैं नाही है जातै प्रत्यक्षका विषय निषेध नाही है, सो ही हमारे कही है, ताका श्लोकका अर्थ—पंडित पुरुष हैं ते प्रत्यक्षप्रमाणकू विधान करनेंवाला कहै है निषेध करनेंवाला न कहै हैं तातैं एकत्व जो अद्वैत ताके कहनेवाला आगम है सो तिस प्रत्यक्षकरि न बाधिये है। बहुरि अनुमानतैं भी ब्रह्मका सद्भाव पाइये है, ताका प्रयोग,—ग्राम बाग आदि पदार्थ है ते प्रतिभासमात्रमै सर्व प्रवेशकरि रहे हैं जातैं प्रतिभा-समानपणा सबकै पाइये है जो प्रतिभासै है सो सर्व प्रतिभासकै मध्य आय गया जैसै प्रतिभासका स्वरूप, ऐसैं ही सर्व विवादमैं आये पदार्थ प्रतिभासै हैं, ऐसें च्यार प्रयोगरूप अनुमानतैं ब्रह्म सिद्ध होय है। बहुरि तिसके आगममै भी वचन बहुत पाइये हैं 'जो हूवा अर जो होयगा बहुरि यह वर्त्तमान है सो सर्व एक पुरुष है, ऐसा वचन है। बहुरि श्लोक है, ताका अर्थ,—'इद सर्वं' कहिये यह जो प्रत्यक्ष सर्व दीखै है *सो निश्चयतैं ब्रह्म है इस जगतमै नानारूप किछू वस्तु नाही है अर*

---

१ तथा चोक्तम्—

> आहुर्विधातृ प्रत्यक्ष न निषेधृ विपश्चित.।
> नैकत्वे वागमस्तेन प्रत्यक्षेण प्रबाध्यते ॥ १ ॥

२–सर्व वै खल्विद ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन।
आराम तस्य पश्यन्ति नत(तत्) पश्यति कश्चन॥१॥

लोक है सो तिस ब्रह्मके आराम कहिये विवर्त्तरूप पर्यायनिकू देखै है तिसकू कोई न देखै है ऐसा वेदका वचन सुनिये है। इहां कोई पूछै —परमब्रह्मके ही परमार्थ सत्त्व होतैं घट आदिका भेद भासै है सो कैसै है? सो ऐसा तर्क इहां नाही करना जातैं सर्व ही घट आदि वस्तु हैं ते तिसके विवर्त्तपणाकरि भासैं हैं जैसे दर्पणके विषै प्रतिबिंब भासैं है तैसैं है। एक ही वस्तुके अपरमार्थरूप अनेक प्रतिबिंब भासै सो विवर्त्त कहिये। बहुरि सर्व ही भेद हैं तिनिकै ब्रह्मका विवर्त्तपणा असिद्ध नाही जातैं प्रमाणकरि सिद्ध होय है, ताका प्रयोग—विवादमैं आया जो विश्व लोक सो एक कारणपूर्वक है जातैं एकरूपतैं जुडि रह्या है, जैसैं घडा हाडी ढाकणा डीवा आदिक हैं ते माटीस्वरूप हैं तातैं अन्वयरूप हे सो ये माटीनामा कारणपूर्वक ही हैं तैसैं सत्‌रूप करि जुडे सर्व वस्तु हैं। तैसै ही आगम भी ताका साधक है, ताका श्लोकका अर्थ—जैसै माकडी है सो जालाके ततूनिका एक कारण है अथवा जैसैं जलका चंद्रकांतमणि कारण है अथवा जैसैं कूपलनिका वडवृक्ष कारण है तैसैं सर्व जीवनिका एक ब्रह्म कारण है, ऐसै ब्रह्मवादीनै अपना मत दृढ किया।

अब ताकू आचार्य कहे है—हे ब्रह्मवादी! यह तेरा कहना जैसैं मदिराका रसकू पानकरि गदगद वचन कहै तैसा है अथवा माचणा कोदू खायकरि गहला होय मूर्ख विलास करै—यथा कथंचित् कहै तैसा है जातैं यह विचारमैं आवै नाही—परीक्षामैं न आय सकै है। जातैं जो तै प्रत्यक्षकै सत्ताविषयपणा कह्या तहां दोय पक्ष पूछिये है,—निर्विशेषसत्ताविषयपणा कह्या कि विशेषसहित

१-ऊर्णनाभ इवांशूनां चन्द्रकांत इवाम्भसाम्।
प्ररोहाणामिव प्लक्ष स हेतु सर्वजन्मिनाम्॥ १॥

सत्ताका जनावनहारा कह्या ? तहा प्रथम पक्ष तौ न बणै है जातैं सत्ताकै सामान्यरूपपणा है तातै विशेषकी अपेक्षारहितपणाकरि सत्ताका प्रतिभास होय नाही जैसैं गोत्वसामान्य है सो कावरा धोला आदि विशेपरहित प्रतिभासता नाही, जातै ऐसा कह्या है जो विशेपरहित सामान्य है सो सुसाके सींगसमान अवस्तु है, बहुरि सामान्यरूपपणा सत्ताका सत् सत् ऐसा अन्वयरूपबुद्धिका विपयपणाकरि प्रसिद्ध ही है। बहुरि दूसरा पक्ष कहैगा तौ परमपुरुपकी सिद्धि न होयगी जातै परस्पर न्यारे न्यारे है आकार जिनके ऐसे विशेपनिका प्रत्यक्षतै प्रतिभास होय हैं। बहुरि अनुमानका साधन कह्या जो प्रतिभासमानपणा सो भी समीचीन नाही जातै विचारमै बनता नाही। तहा दोय पक्ष पूछै है--यहु प्रतिभासमानपणा स्वतै होय है कि परतै होय है ? जो कहैगा स्वतै होय है तौ नाही बणेगा जातै हेतु असिद्ध है जातै पदार्थनिका स्वयमेव प्रकाशन है तौ नेत्र मीचिये अथवा प्रकाश नाहीं होय तहा भी प्रति भासना होहु सो नाही होय है तातै असिद्ध है। बहुरि कहैगा परतैं होय है तौ विरुद्ध है परतै प्रतिभासना पर विना न बणै, बहुरि प्रतिभासमात्र भी नाही सिद्ध होय है जातै तिस प्रतिभासकै ताके विशेपनितै अविनाभावीपणा है, बहुरि प्रतिभासकै विशेप मानिये तौ द्वैतका प्रसग आया। बहुरि किछू विशेप कहै है--अनुमानका उपायभूत जे धर्मी हेतु दृष्टात ये प्रतिभासै है कि नाहीं ? जो कहैगा प्रतिभासै है तौ प्रतिभासमाही प्रवेश भये प्रतिभासै हैं कि तातै बाह्य न्यारे प्रतिभासै हैं ? जो कहैगा प्रतिभासमाही प्रतिभासै है तौ साध्यकै माही ही आय पडे तिनितै अनुमान कैसै होय, बहुरि प्रतिभासकै बाह्य प्रतिभासै है तौ हेतुकै तिनिहीकरि व्यभिचार भया। बहुरि जो कहै--प्रतिभासैं नाही है तौ धर्मी आदिकी व्यवस्थाका अभाव है तब तिनि विना

अनुमान कैसे होयगा। बहुरि ब्रह्मवादी कहै हैं—जो अनादि अविद्याके उदयतै यह सर्व असबद्ध है? तहा आचार्य कहै हैं—यह कहना भी महा-अज्ञानका विलास है जातै अविद्याविषै भी पहिले कहे जे दोप तिनिका प्रसग है। बहुरि कहै—जो अविद्या सर्वविकल्पनितै रहित है तातै दोप नाही आवै है सो यह कहना भी अतिमुग्धका वचन है जातै अविद्याका कोई ही रूपकरि प्रतिभासका अभाव होतै तिसका स्वरूप ही अवधारण मैं आवै नाही। बहुरि और भी इहा विस्तार करि विचार है सो देवागमस्तोत्रका अलकार जो अष्टसहस्री ताविषै है तातै इहा विस्तार न कीजिये है। बहुरि समस्त भेदनिकै निवर्त्तपणा कह्या, तहा एकरूपकरि अन्वयपणा हेतु है सो अन्वय करनेंवाला अर अन्वीयमान कहिये जाका अन्वय करिये सो वस्तु इनि दोऊनिकरि अविनाभावीपणाकरि पुरुषाद्वैतकू निषेधै है यातैं अपना इष्ट जो अद्वैतब्रह्म ताका विघातकारीपणातै विरुद्ध है। बहुरि अन्वितपणा है सो एक हेतुक जे घट आदिकनिविषै अर अनेक हेतुक जे स्तभ कुभ कमल आदिविषै दोऊनिमैं पाइये है तातैं अनैकान्तिक हैं। बहुरि पूछिये—जो यह अद्वैत ब्रह्म है सो जगतनामा कार्य कौन अर्थि करै है, तहा च्यार पक्ष है,—एक तौ अन्यका प्रेरया करै, दूसरै कृपाके वशतै करै, तीसरा क्रीडाके वशतैं करै, चौथे स्वभावहीतै करै। तहा जो कहै—अन्यका प्रेरया करै है तौ स्वाधीनपणाकी हानि भई अर द्वैतका प्रसग भया। बहुरि कृपाके वशतैं करना कहै तौ कृपाविषै दुखिनिका तौ न करनेंका प्रसग आवै जगतमैं दुखी है ही अर तिसकैं कृपाका करणा तौ परके उपकार करनेंतै बणे, बहुरि सृष्टि रचे पहली प्राणी है नाही तिनिकी कृपाकै अर्थि नवीन सृष्टि रचै तौ कृपाके अर्थि रचना युक्त होय, बहुरि कृपाविषै तत्पर होय ताकै प्रलयका विधान युक्त होय नाही,

बहुरि प्रलय तौ प्राणीनिकै अदृष्ट जो पाप ताके वशतैं होय है तौ ऐसै तौ स्वाधीनपणाकी हानि होय है, कृपाविषै तत्पर होय ताकै पीड़ाका करना अर अदृष्ट-पाप ताकी अपेक्षाका अयोग है। बहुरि क्रीडाके वशतै करना कहै तौ क्रीडा अर्थि प्रवृति करनेमैं प्रभुपणा नाही जैसै बालक क्रीड़ा करनेंकू उपाय गीन्दडी आदि बनावै तैसै ठहरै यामैं कहा बडाई, बहुरि क्रीडाका उपाय बनाया जो जगत अर याकरि साध्य जो सुख ताकी एक काल उत्पत्ति भई चाहिये, जातैं समर्थ कारणके होतैं कार्यका अवश्य होना होय, जो समर्थ कारण न होय तौ अनुक्रमतै भी तिसतैं कार्य न होय, जैसै दीपक है सो काजलका पाडना तेल शोषणा बातीका बालना प्रकाश करना एककाल करै है यह सामर्थ्य है, अर ऐसै न होय तौ अनुक्रमकरि भी ये कार्य न होय। बहुरि कहै—ब्रह्म स्वभावहीतैं जगतकू रचै है जैसैं अग्नि स्वभावहीतै बालै है पवन स्वभावहीतै चलै है ता यह कहना भी अज्ञानका वचन है, पहले कहे जे दोप ते मिटे नाही, सर्व दोप आवैं हैं, सो ही दिखावै है ताका प्रयोग—समस्त अनुक्रमतै उपजता जो निवर्त्तका समूह सो एककाल उपजै जातैं जिस सहकारी कारणकी अपेक्षा कीजिये सो एककाल उपजै जातैं जिस सहकारी कारणकी अपेक्षा कीजिये सो भी ब्रह्महीकरि साधनें योग्य है ताका एककाल सभव है। भावार्थ—सर्व ही ब्रह्मके कार्य मानिये हैं, तहा ब्रह्म तौ समर्थकारण है ही बहुरि सहकारी चाहे तौ सो भी तिसहीका किया होय तब सर्वजगत एककाल उपज्या चाहिये, बहुरि अग्नि पवनका उदाहरण दिया ताकै भी विषमपणा है, कोई कालविषैं स्वहेतु जो काष्टादिक ताकरि उपज्या अग्निकै दहन करनेंकी शक्ति स्वरूपपणाकी प्राप्ति मर्याद रूप है जिस देशकालमै भया तेता ही है, अर ब्रह्मविषैं तौ नित्यपणा सर्वव्यापकपणा

अर सर्वसामर्थ्यस्वरूप एकस्वभावरूप कारणकरि उपजावापणा है सो देशकालका न्यारा न्यारा नियमरूप कार्यनिविषै बणै नाही। सो ऐसै ब्रह्मकी असिद्धि होतै वेदनिमैं ताकी सुप्त अवस्थाका कहना अर ताकी जागृत अवस्थाका कहना अर तिस परमपुरुषनामा महाभूत ताका निश्वास वेद है ऐसा कहना आकाशके कमलकी सुगंधका वर्णन सारिखा है, सो अग्राह्य पदार्थ है विषय जाका तिस स्वरूप होनेतै आदरनें योग्य नाही है, असत्यार्थकूं कौन आदरै। बहुरि जो ब्रह्मके साधनेविषै आगम प्रमाण कह्या " सर्वं वै खल्विदं ब्रह्म " इत्यादि "बहुरि ऊर्णनाभ" इत्यादि सो सर्व ही कहे विधानकरि अद्वैतका विरोधी है यातै अवकाश नाही पावै है। बहुरि आगमकूं अपौरुषेय कहै है सो बणै नाही याका विस्तार आगैं कहसी तातै पुरुषोत्तम परमब्रह्म कहे सो भी परीक्षामैं नाही आवै है।

ऐसैं मुख्यप्रत्यक्षका वर्णन किया, तहां सर्वज्ञकी सिद्धि यथार्थ करी, अन्यवादीकी बाधाका परिहार किया।

इहां टीकाकारकृत श्लोक है,—

प्रत्यक्षेतरभेदभिन्नममलं मानं द्विधैवोदितं
देवैर्दीप्तगुणैर्विचार्य विधिवत्संख्याततः संग्रहात् ।
मानानामिति तद्विगम्यमिहितं श्रीरत्ननंद्याह्वयै-
स्तद्व्याख्यानमदो विशुद्धधिषणैर्बोद्धव्यमव्याहतम् ॥१॥

याका अर्थ—' देवै ' कहिये श्रीअकलंकदेव आचार्य जैसे विधि जिनागममैं है तैसे विचारिकरि अर प्रत्यक्ष अर परोक्ष भेदकरि भिन्न निर्दोषप्रमाण दोय प्रकार ही कह्या, कैसैं है आचार्य ? दीप्त कहिये देदीप्यमान है सम्यग्दर्शन आदि गुण जिनिमैं बहुरि प्रमाणनिकी

सख्याकी पक्तिका सग्रह कहिये सक्षेपतै तिनि प्रमाणनिका उपदेश श्रीमाणिक्यनदिनाम आचार्य भी ऐसै ही करया, बहुरि तिनिका व्याख्यान यहु मै अनन्तवीर्य आचार्यनै किया है सो विशुद्धबुद्धीनिके माननें योग्य है कैसा है व्याख्यान ? अव्याहत कहिये बाधारहित है।

बहुरि श्लोक—

मुख्यसंव्यवहाराभ्यां प्रत्यक्षमुपदर्शितम् ।
देवोक्तमुपजीवद्भिः सूरिभिर्ज्ञापितं मया ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्ष प्रमाण मुख्य-सव्यहारके भेदकरि दोय प्रकार अकलकदेवजीनैं कह्या सो ही माणिक्यनदिजीनैं दिखाया सो ही मैं अनतवीर्यनैं जनाया है ॥ १२ ॥

सवैया तेईसा ।

श्री अकलंक मुनीश भजो परतक्ष परोक्ष प्रमाण जु दोउ।
ता मधि हू परतक्ष कह्यो व्यवहार यथारथ भेद है सोउ ॥
माणिकनंदि लयो अनुसार कह्यो तसु आगम जानहु कोउ।
वृत्ति रची जु अनंत सुवीरजि देशकथामय मैं सब जोउ ॥

ऐसैं परीक्षामुखनाम प्रकरणकी लघुवृत्तिकी वचनिकाविषै
द्वितीय समुद्देश समाप्त भया।

तृतीय-समुद्देश ।

(३)

आगैं अब प्रत्यक्ष परोक्षभेदकरि प्रमाण दोय प्रकार कह्या तानिमैं प्रथमभेद जो प्रत्यक्ष ताका व्याख्यानकरि अर परोक्ष प्रमाणकूं कहै हैं,—

परोक्षमितरत् ॥ १ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्षतैं इतरत् कहिये अन्य विलक्षण सो परोक्ष है। इहां कह्या जो प्रत्यक्ष ताका प्रतिपक्षीकूं इतर शब्द कहै है तातैं तिस प्रत्यक्षतैं इतरत् ऐसा पाइये सो परोक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्षका स्वरूप विशद कह्या था इहां अविशद ग्रहण करना ॥१॥

आगैं याके सामग्री अर स्वरूपभेद कहते सते सूत्र कहैं हैं,—

प्रत्यक्षादिनिमित्तं स्मृतिप्रत्यभिज्ञानतर्कानुमानागम-भेदम् ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रत्यक्ष आदि प्रमाण हैं निमित्त जाकूं ऐसा परोक्ष प्रमाण है ताके पाच भेद हैं, स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान आगम ऐसैं। तहां प्रत्यक्ष अर आदिशब्दकरि परोक्ष ग्रहण करना ये दोऊ निमित्त हैं—उत्पत्तिकूं कारण हैं सो तौ यथावसर निरूपण करियेगा। बहुरि प्रत्यक्ष आदि हैं निमित्त जाकूं ऐसा समास करना। स्मृति आदि-निषैं द्वन्द्वसमास करना ॥ २ ॥

आगैं अनुक्रममैं आया जो पहलैं स्मृति ताहि दिखावते सते सूत्र कहै हैं,—

संस्कारोद्बोधनिबन्धना तदित्याकारा स्मृतिः ॥३॥

याका अर्थ—संस्कारका जो उद्बोध कहिये प्रगट होना सो है निबंधन कहिये कारण जाकू, बहुरि तत् कहिये पूर्वे अनुभवमें आया था ताका 'सो है' ऐसा यादि आवना ऐसा जाका आकार है ऐसी स्मृति है। इहां 'भवति' ऐसी क्रिया सूत्रमैं वाक्यशेषतैं लेनीं ॥ ३ ॥

आगै याका उदाहरण कहै है,—

स देवदत्तो यथा ॥४॥

याका अर्थ—जैसै पहले काहू पुरुषकू देख्या था सो वर्त्तमानमैं मनविषै यादि आया जो 'सो फलाणा पुरुष' ऐसा स्मृति प्रमाण है ॥ ४ ॥

आगै प्रत्यभिज्ञानप्रमाण कहनेंका अवसर है सो कहै हैं,—

दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानं तदेवेदं तत्सदृशं तद्विलक्षणं तत्प्रतियोगीत्यादि ॥ ५ ॥

याका अर्थ—वर्त्तमानका दर्शन—पूर्वे देख्या ताका स्मरण ये दोन्यों हैं कारण जाकू ऐसा जोडरूप ज्ञान ताकू प्रत्यभिज्ञान कहिये। सो च्यार प्रकार है—वर्त्तमानमैं काहू वस्तुकू देखिकरि अर ताकू पूर्वें देख्या था ताकू यादिकरि ऐसा जान्या जो 'यह सो ही है' ऐसा तौ एकत्वप्रत्यभिज्ञान है। बहुरि वर्त्तमानमैं देख्या तिस सारिखा पूर्वे देख्या था ताकू जान्या जो 'यह तिस सारिखा है' सो सादृश्य प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि वर्त्तमानमैं काहूकू देखिकरि तिसतैं विलक्षण पूर्व देख्या था ताकू यादिकरि तिसतैं विलक्षण जान्या जो 'यह तिसतै विलक्षण है' सो तद्विलक्षण प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पूर्वे देख्या था तिसका वर्त्तमानमैं प्रतियोगी कहिये जिसतैं अवश्य जोड मिली जाय ऐसा अन्यपदार्थकू देखि

जान्या जो 'यह तिसका प्रतियोगी है' सो तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञान है। आदिशब्दतें और भी पूर्वापरका जोडरूप ज्ञान होय सो जानना। इहा दर्शन-स्मरणकारणपणातें सादृश्यादिक जाका विषय होय सो भी प्रत्यभिज्ञान ही कह्या है। बहुरि जिनिके मतमैं सादृश्यविषयक उपमान-नामा जुदा प्रमाण कह्या है तिनिके मतमैं वैलक्षण्यादिक जाका विषय ऐसा ज्ञान भी अन्य प्रमाण ठहरैगा, सो ही कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ,—प्रसिद्ध पदार्थके समान धर्मपणातें साध्यका साधना सो उप-मानप्रमाण मानिये तौ तिसके असमानविलक्षणधर्मतें साध्य साधना सो प्रमाण कहा कहिये, किछू कह्या चाहिये। बहुरि जहा सज्ञा जो नामरूप पदार्थ ताका प्रतिपादन जो सज्ञा पहले सुनी थी तातैं जोड़रूप प्रतिपादन करिये सो प्रमाण न्यारा कहना, ऐसै उपमानक न्यारा प्रमाण मानें दोष आवै है। बहुरि यह यातैं अल्प है, यह यातैं बहुत है, यह यातैं दूर है, यह यातैं निकट है, यह यातैं ऊँचा है, यह यातैं नीचा है, बहुरि इनके निषेध यह यातै अल्प नाही है इत्यादि, ऐसैं प्रत्यक्ष देख्या पदार्थनिविषैं परस्पर अपेक्षातै अन्यभावका निश्चय होय है सो ये अन्य प्रमाण ठहरै तब अपने इष्ट जो प्रमाणकी सख्या ताका विघटन होय है। तातैं उपमान प्रमाण न्यारा मानना युक्त नाही ॥५॥

आगैं इनि प्रत्यभिज्ञानका भेदनिका अनुक्रमकरि उदाहरण दिखा-वता सता सूत्र कहै हैं,—

१–तथा चोक्तम्—

उपमान प्रसिद्धार्थसाधर्म्यात्साध्यसाधनम्।
तद्वैधर्म्यात्प्रमाण किं स्यात्सज्ञिप्रतिपादनम् ॥ १ ॥
इदमल्प महद्दूरमासन्न प्राशु नेति वा।
व्यपेक्षात. समक्षेऽर्थे विकल्प साधनान्तरम् ॥ २ ॥

यथा स एवायं देवदत्तः, गोसदृशो गवयः, गोविलक्षणो महिषः, इदमस्माद्दूरं, वृक्षोऽयमित्यादि ॥६॥

याका अर्थ—जैसैं काहू पुरुषकू देखिकरि कहै 'यह पहले देख्या था सो ही पुरुष है' यह तौ एकत्वप्रत्यभिज्ञानका उदाहरण भया। बहुरि काहूनैं वनविषै गवयनाम तिर्यंच प्राणी देखिकरि जानीं 'जो गऊ पहले देख्या था तिस सारिखा यह गवय है' यह सादृश्यप्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि भैंसाकू देखिकरि यह जान्या 'जो पहले गऊ देख्या था तातैं विलक्षण यह भैंसा है' यह तद्विलक्षण प्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि काहू वस्तुकूं निकट देखिकरि अन्य काहूकू ऐसैं जान्या 'जो यह यातैं दूर है' यह तत्प्रतियोगी प्रत्यभिज्ञानका उदाहरण है। बहुरि काहू वृक्षकू देखिकरि वृक्षसामान्यकी सज्ञाकू यादि करि जानैं 'जो यह वृक्ष है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि आदिशब्दकरि अन्यभी उदाहरण है–जैसै पहले सुन्या था तथा देख्या था जो जलका अर दूधका भिन्न करनैंवाला हस होय है, बहुरि कहू जल दूधकू भिन्न करता देखि जान्या जो 'यह हस है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहली सुन्या था जो छह पादका भ्रमर होय है, बहुरि छह पाद देखिकरि पहले सुण्या ताकू यादिकरि जाण्या जो 'यह भ्रमर है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुण्या था जो सात पान जाकै एकलगमै होय सो

१–पयोऽम्बुभेदी हस. स्यात षट्पादैर्भ्रमर स्मृतः।
सप्तपर्णस्तु तत्वज्ञैर्विज्ञेयो विषमच्छद ॥ १ ॥
पंचवर्ण भवेद्रत्नं मेचकाख्य पृथुस्तनी।
युवतिश्चैकशृगोऽपि गण्डक. परिकीर्त्तित ॥ २ ॥
शरभोऽप्यष्टभि. पादै. सिंहश्चारुसटान्वित. ॥ ३ ॥

विपमच्छद वृक्ष होय तब सात पत्र देख पहले सुण्या ताकूं यादकरि जान्या जो यह 'विपमच्छद है' भीमसेनी कर्पूरकी उपजावनेवाली जो वेलि ताकूं भी विपमच्छद कहै है, यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले सुण्या था जो पचवर्णका मेचकनामा रत्न होय है तब कहू पचवर्णका देखकरि पहले सुण्या ताकूं यादिकरि जानै 'यह मेचकनाम रत्न है, यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुनी थी जो जाकै कुच बडे भारे विस्तारसहित होय सो स्त्री होय है पीछैं भारे स्तन देखि पहले सुनींकूं यादकरि जानैं जो 'यह स्त्री है' यह भी प्रत्यभिज्ञान भया। बहुरि पहले सुन्या था जो जाकै एक सींग खग होय सो गैंडा होय है पीछैं एक सींग देखि पहलेकूं यादकरि जाण्या जो 'यह गैंडा है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले सुन्या था जो जाकै आठ पग होय सो शरभ होय है पीछै आठ पग देखि पहले सुनेकूं यादिकरि जानीं जो 'यह शरभ है' शरभ ऐसा नाम अष्टापदका है यह भी प्रत्यभिज्ञान है। बहुरि पहले जान्या था जो जाकै सुन्दर मस्तकपरि सटा कहिये केशनिकी लटी बहुत होय सो सिंह होय है पीछै सटाकूं देखिकरि पहले जाण्याकूं यादकरि जानै 'यह सिंह है' यह भी प्रत्यभिज्ञान है। ऐसें इनिकूं आदि देकरि ये उदाहरण हैं। इनिके नामके शब्द सुनि बहुरि तैसा ही हस आदिकूं देखिकरि पहले सुनेंकूं यादिकरि तैसै ही प्रतीति करै तब तिनिका सकलनरूप जोड़का ज्ञान भया सो प्रत्यभिज्ञान कथा है जातैं इनिमें देखना अर याद करना ये दोऊ कारण सर्वमें समान हैं। बहुरि अन्यमतीनिकै ये न्यारे प्रमाण ठहरैं हैं जातैं उपमानप्रमाणविषै इनिका अन्तर्भाव नाही होय है तब प्रमाणकी सख्या बिगडै है॥६॥

आगै ऊह कहिये तर्क प्रमाणके कहनेका अवसर पाया है ताकूं कहैं हैं,—

उपलंभानुपलंभानिमित्तं व्याप्तिज्ञानमूह इदमस्मिन् सत्येव भवत्यसति न भवत्येवेति च ॥ ७ ॥

याका अर्थ—उपलभ तौ प्राप्ति अनुपलभ अप्राप्ति ये दोऊ है निमित्त जाकू ऐसा व्याप्तिका ज्ञान सो ऊह कहिये तर्कप्रमाण है। तहा यह याकै होतै सतै ही होय ऐसा तौ अन्वय, बहुरि यह न होय तौ नहीं होय ऐसा व्यतिरेक, ऐसैं दोऊनितै व्याप्तिज्ञान है। इहा उपलभ तौ प्रमाणमात्रका ग्रहण करना। जो प्रत्यक्षहीकू उपलभ शब्दकरि ग्रहण कीजिये तो अनुमानके विषय जे साधन तिनिविषै व्याप्तिका ज्ञान न होय। इहा कोई कहै—व्याप्ति तौ सर्वोपसहारवती है सर्व क्षेत्र-कालका सग्रहकरि प्रतीति कीजिये है सो अतीन्द्रिय ही साध्य होय अर ताका साधन भी अतीन्द्रिय होय तौ तिस साध्यकरि साध-नकै व्याप्ति कैसैं जानी जाय? ताका समाधान—जो ऐसें नाहीं है, जैसे प्रत्यक्षके विषय साध्य-साधन होय तिनिविषैं व्याप्ति जानिये है तैसै हीं अनुमानके विषय साध्य-साधनकैविषै भी व्याप्ति जाननेका अविरोध है। जातै व्याप्तिका ज्ञान जो तर्क ताकै परोक्षपणा मानिये है ॥ ७ ॥

इहा याका उदाहरण कहैं है,—

यथाऽग्नावेव धूमस्तदभावे न भवत्येवेति च ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जैसे अग्निके होतैं ही धूम होय अग्निके अभाव होतै धूम नाही ही होय ऐसें। इहा अतीन्द्रिय साध्यसाधनका उदाहरण ऐसा—जो जैसैं सूर्यकै गमनशक्तिसहितपणा साध्य करै अर गतिमानप-णाकू हेतु करै सो ये दोऊ ही अतीन्द्रिय है—सूर्यकी गमनशक्ति दीखै नाही अर चलता भी दीखै नाही सो यह आगमगम्य है। बहुरि

याका समर्थन यह—जो जब दूरि देश जाय तब जानिये चाले है, ऐसैं अनुमान दृढ होय है। ऐसै ही अन्यत्र जानना ॥ ८ ॥

आगैं अनुमान अनुक्रममैं आया ताका लक्षण कहै है,—

साधनात् साध्यविज्ञानमनुमानम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—साधन कहिये हेतु तातै साध्य कहिये साधने योग्य जो वस्तु ताका विज्ञान होय सो अनुमान प्रमाण हैं ॥ ९ ॥

आगैं साधनका लक्षण कहै है,—

साध्याविनाभावित्वेन निश्चितो हेतुः ॥ १० ॥

याका अर्थ—साध्यतै अविनाभावीपणाकरि जो निश्चय किया होय सो हेतु कहिये। इहा बौद्धमती कहै है—जो हेतुका लक्षण तीनरूपपणा ही है ताके होतैं ही हेतुकै असिद्ध आदि दोपका परिहार बणैं है, सो ही कहिये है,—प्रथम तो हेतु पक्षका धर्म होय तब असिद्धपणा दोपका परिहार होय तातै ताके अर्थि हेतुकू पक्षधर्मरूप कहिये। बहुरि सपक्षनिपैं जाका सत्व होय सो विरुद्धपणाका निराकरणकै अर्थि है। बहुरि विपक्षनिपैं जाका असत्व होय सो अनेकान्तिककै निपेधकै अर्थि है, ऐसै तीनरूप हेतु कहै, सो ही कहिये है—श्लोकका अर्थ,—दिग्नागनामा बौद्धमतका आचार्य हेतुकै तीन रूपनिविर्षैं निर्णय वर्णन किया है जातैं ये तीन रूप असिद्ध विरुद्ध व्यभिचारी जे हेतु सदूपण तिनिके प्रतिपक्षी हैं। ताका समाधान आचार्य करै है,—जो यह कहना अयुक्त है जातैं अविनाभावका नियमका निश्चय होतै तीनू दोपनिका परिहार बणै है, अविनाभाव है सो साध्यविना न बणना है। इस अ-

१—हेतोस्त्रिष्वेपि रूपेषु निर्णयस्तेन वर्णित ।
असिद्धविपरीतार्थव्यभिचारिविपक्षत ॥ १ ॥

जानना। पक्षधर्मपणा बहुरि सपक्षसत्वपणा सो तौ अन्वयरूप अर विपक्षतै व्यावृत्तिपणा सो व्यतिरेकरूप, अर अबाधितविषयपणा, असत्प्रतिपक्षपणा ऐसैं पाच लक्षण हैं। तिनिकै भी अविनाभावहीका विस्तारपणा है। पचरूपपणा अविनाभावहीका विशेष है। जो बाधितविषय है सो जाका विषय साध्य ही बाधासहित होय ताकै अविनाभावका अयोग है जाकै प्रतिपक्षीसहितपणा होय ताकी ज्यों ऐसैं जानना। बहुरि साध्याभास जाका विषय ताकै असम्यक् हेतुपणा है—समीचीनहेतुपणा नाही जातै जैसा पक्ष कह्या तैसा ताका विषयका अभाव है। तिस ही दोषकरि हेतु दोषसहित है। यातैं यह निश्चय भया जो साध्यतैं अविनाभावीपणाकरि निश्चित होय सो ही हेतु है॥ १०॥

आगै अविनाभावका भेद दिखावते सते सूत्र कहैं हैं,—

सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ॥ ११ ॥

याका अर्थ—साध्य साधनकै लार एककाल होनेंका नियम सो तौ सहभावनियम कहिये, बहुरि जहा कालभेदकरि साध्य साधन अनुक्रमतैं होय सो क्रमभावनियम है। ऐसै अविनाभाव नियम दोय प्रकार है॥११॥

आगै सहभावनियमका विषय दिखावतें सतें सूत्र कहै है,—

सहचारिणोर्व्याप्यव्यापकयोश्च सहभावः ॥१२॥

याका अर्थ—सहचारीनिकै जैसैं रूप रसकै एक वस्तुविषै युगपत् रहनेंका नियम है। बहुरि व्याप्यव्यापकपणाकै जैसैं वृक्षपणाकै अर शीसूपणाकै व्याप्यव्यापकभाव नियम है। ऐसैं सूत्रविषै सप्तमीविभक्ति करि विषय दिखाया है सो सहभावनियम जानना॥ १२॥

आगै क्रमभावनियमका विषय दिखावते सते सूत्र कहैं है,—

पूर्वोत्तरचारिणोः कार्यकारणयोश्च क्रमभावः ॥१३॥

याका अर्थ—पूर्वोत्तरचारी कहिये पहली पीछै होय ते कृतिका नक्षत्रका उदय अर रोहिणीका उदय पूर्वोत्तरचारी है तिनिकै क्रमभाव नियम है। बहुरि कार्यकारणकै जैसें धूमकै अर अग्निकै कार्यकारणभाव है तिनिकै क्रमभाव नियम है॥ १३ ॥

आगैं इस प्रकारका अविनाभावका ग्रहण कैसे प्रमाणकरि होय है सहा कहै है प्रत्यक्ष प्रमाणकरि तौ ग्रहण नाही जातै प्रत्यक्षका विषय तौ निकटवर्ती वस्तु है। बहुरि अनुमानकरि भी ग्रहण नाही जातैं प्रकृत अनुमानकरि ग्रहण मानिये तौ इतरेतराश्रय दूपण आवै अर अन्य अनुमानकरि मानिये तौ अनवस्था दूपण आवै। बहुरि आगम आदिका भी यह अविनाभाव विषय नाही जातै तिनिका न्यारा न्यारा विषय है सो प्रसिद्ध है। तातैं अविनाभावकी काहू प्रमाणकरि प्रतिपत्ति नाही, ऐसी आशंका होतै ताका ग्राहक प्रमाणका सूत्र कहैं हैं,—

तर्कात्तन्निर्णयः ॥ १४ ॥

याका अर्थ—पूर्वे कह्या है लक्षण जाका ऐसा जो तर्क प्रमाण ताका द्वितीयनाम ऊह है तातैं तिस अविनाभावका निर्णय है—यह अविनाभाव ताका विषय है ॥१४॥

आगैं अब साध्यका लक्षण कहै हैं,—

इष्टमबाधितमसिद्धं साध्यम् ॥ १५ ॥

याका अर्थ—जो साधनें योग्य होय सो साध्य कहिये, तिस साध्यके तीन विशेषण हैं,—साधनेंवालेकै इष्ट होय जाकू साधनेका अभिप्राय होय ऐसा, बहुरि जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाध्या न जाय ऐसा, बहुरि जो पहले सिद्ध न किया होय ऐसा सो साध्य है।

इहा अन्यवादी दूषण कहै है—जो इष्टकू साध्य कहे आसन शयन भोजन यान मैथुन इत्यादिक भी इष्ट है ते साध्य ठहरै है ? ताकू आचार्य कहै है—ऐसी कहनेवाले अतिमूर्ख हैं जाते विना अवसर कहनेवालाकै अतिप्रलापीपणा है, इहा तौ साधनका अधिकार किया है जो साधनका विषय होय ताकी अपेक्षा इहा इष्ट कह्या है ॥१५॥

आगै आपनैं कह्या जो साध्यका लक्षण ताके विशेषणनिकू सफल करते सते प्रथम ही असिद्ध विशेषणकू दृढ करनेकू सूत्र कहै हैं,—

सन्दिग्धविपर्यस्ताव्युत्पन्नानां साध्यत्वं यथा स्यादित्यसिद्धपदम् ॥ १६ ॥

याका अर्थ—सन्दिग्ध विपर्यस्त अव्युत्पन्न इनिकै साध्यपणा जैसैं होय इस हेतुतैं साध्यका असिद्धपदरूप विशेषण है। तहा काहू क्षेत्रनै अधकार आदिके निमित्ततैं खडा पदार्थ देखि विचारै जो यह स्थाणु है कि पुरुष है ? ताका निश्चय न होय ज्ञान दोऊ तरफ स्पर्शता रहै ऐसैं सशयकरि व्याप्त जो वस्तु सो तो सदिग्ध है। बहुरि सत्यार्थतैं विपरीत वस्तुका निश्चय करनेंवाला जो विपर्यय ज्ञान ताका विषयभूत जो वस्तु जैसै सीपविषै रूपेका ज्ञान तहा रूपा आदि विपर्यस्त वस्तु है। बहुरि नाम जाति सख्या आदि विशेषनिका ज्ञान विना जो अनिर्णीत विषयरूप वस्तु निश्चय विना ग्रहण करना जाका होय सो वस्तु अव्युत्पन्न है यह अनध्यवसायज्ञानका विषय जानना। इनि तीननिकै साध्यपणा कहनेंकै अर्थि असिद्धपदका ग्रहण है, ऐसा अर्थ जानना॥१६॥

[illegible] अब इष्ट अर अबाधित इनि दोऊ विशेषणनिका सफलपणा दिखा[illegible] सते सूत्र कहै हैं,—

अनिष्टाध्यक्षादिबाधितयोः साध्यत्वं मा भूदितीष्टाबाधितवचनम् ॥ १७ ॥

याका अर्थ—अनिष्टकै अर प्रत्यक्षादि प्रमाणकरि बाधितकै साध्यपणा न होय इस हेतुतै इष्ट अर अबाधित ऐसा वचन है। अनिष्ट तौ जैसै मीमांसककै शब्दकै अनित्यपणा है जातै मीमांसक शब्दकू नित्य मानें है सो अनित्य साधै तौ अनिष्ट होय। बहुरि शब्दकै अश्रावणपणा कहिये श्रोत्रके सुननेमैं न आवना साधै तौ प्रत्यक्षप्रमाणकरि बाधित होय आदिशब्दकरि अनुमान-आगम लोक स्ववचनकरि बाधित होनें। इनिका उदाहरण अकिंचित्कर हेत्वाभासका निरूपण करसी तिसके अवसरमैं ग्रंथकार आप विस्तारकरि कहसी यातैं इहां न कहिये है ॥१७॥

इहां साध्यका असिद्धविशेषण तौ प्रतिवादी जो पीछैं उत्तर कहै ताहीकी अपेक्षाकरि है जातैं पहलैं पक्ष स्थापै ऐसा जो वादी ताकै प्रसिद्ध ही है, बहुरि इष्टपद है सो वादीकी अपेक्षा ही है ऐसा विशेष दिखावनेंकू सूत्र कहैं है,—

न चासिद्धवदिष्टं प्रतिवादिनः ॥ १८ ॥

याका अर्थ—जैसै प्रतिवादीकी अपेक्षा असिद्धकू साध्य कहिये है तैसैं ताके इष्ट साध्य नाही है। इहां ऐसा प्रयोजन है-जो साध्यके सर्व ही विशेषण सर्वकी अपेक्षा नाही है कोई कोईकी अपेक्षा है कोई कोईकी अपेक्षा है। बहुरि असिद्धवत् ऐसा व्यतिरेककू मुख्यकरि उदाहरण दिया है। जैसैं असिद्ध प्रतिवादीकी अपेक्षा है तैसैं इष्ट ताकी अपेक्षा नाही है ऐसा अर्थ है ॥ १८ ॥

आगैं यह काहेतैं कह्या ऐसैं पूछैं सूत्र कहैं हैं,—

प्रत्यायनाय हीच्छा वक्तुरेव ॥ १९ ॥

याका अर्थ—परकू प्रतीति उपजावनेंकू इच्छा वक्ता ही की है तातैं इष्ट वादीहीकी अपेक्षा है। जो इच्छाका विषय ताकू इष्ट कहिये ताकी परकू प्रतीति कहनेंवाला ही उपजावै तातैं ताहीकी इच्छा कही॥१९॥

आगैं पूछै है कि यह साध्य धर्म है कि इस साध्य धर्मकरि विशिष्ट धर्मी है ? ऐसैं प्रश्न होतैं तिसका भेद दिखावते संते सूत्र कहैं हैं,—

साध्यं धर्मः क्वचित्तद्विशिष्ठो वा धर्मी ॥ २० ॥

याका अर्थ—धर्म है सो साध्य है, बहुरि कोई जायगा तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी है सो साध्य है। जाकै आधार साध्य वस्तु होय सो धर्मी कहिये तिसकी अपेक्षा साध्यकू धर्म कहिये। इहा ऐसा अर्थ है—जो व्याप्तिकालकी अपेक्षाकरि तौ साध्यनामा धर्म ही साध्य है, बहुरि कोई जायगा प्रयोगकालकी अपेक्षा तिस साध्यधर्मकरि विशिष्ट धर्मी साध्य है जातैं सूत्रके वाक्य हैं, ते उपस्कारसहित होय हैं, सूत्रमैं पद ऊपरतैं लाइये ताकू उपस्कार कहिये सो इहा अपेक्षाका पद उपरतैं आया है। इहा भावार्थ ऐसा—जो धर्मीकै साध्यपणा तौ प्रयोग कालहीविषैं कोई ठिकानै है। जहा अनुमानकै प्रतिज्ञा हेतु आदि अवयव वचनकरि कहिये ताकू प्रयोग कहिये। अर जहा व्याप्ति जनाइये तहा साध्य धर्महीतैं जोडिये है साधनकै साध्य धर्महीतैं है॥ २०॥

आगैं साध्यधर्मकरि विशिष्ट जो धर्मी तिसका नामान्तर कहिये अन्य नाम कहै हैं,—

पक्ष इति यावत् ॥ २१ ॥

याका अर्थ—जाकै आधार साध्य होय सो धर्मी कहिये ताहीका दूसरा नाम पक्ष भी है। इहा प्रश्न—जो धर्मधर्मीका समुदाय सो पक्ष है ऐसा पक्षका स्वरूप पुरातन आचार्य अकलक देव आदिकरि कह्या है सो इहा

धर्मीहिकूं पक्ष कह्या सो सिद्धान्तका विरोध कैसै न भया? ताका समाधान आचार्य करै है—जो ऐसैं नाही है जातैं साध्य जो धर्म ताके आधारपणाकरि विशेषितरूप किया जो धर्मी ताकूं पक्षवचनकरि कहतैं भी दोषका अवकाश नाही है। रचनाका विचित्रपणामात्रकरि तात्पर्यका निराकरण नाही होय है तातैं सिद्धान्तका अविरोध है॥२१॥

इहां बौधमती कहै है धर्मीकूं पक्ष कह्या सो तौ होहु परतु धर्मी है सो विकल्पबुद्धिकैविषैं वर्त्तमान ही है अर वस्तुस्वरूप नाही है जातैं " अनुमान अनुमेयका व्यवहार सर्व ही बुद्धिकरि कल्पिये है, बुद्धिकरि कल्पे जे धर्म धर्मी तिस न्यायकरि बाह्य ताका सत्व है कि नाही है ऐसी अपेक्षा नाही करै है" ऐसा हमारै कह्या है सो ताके निराकरणके अर्थि आचार्य सूत्र कहैं हैं,—

प्रसिद्धो धर्मी ॥ २२ ॥

याका अर्थ—धर्मी है सो प्रसिद्ध है कल्पित ही नाही है इहां यह अर्थ है—जो बाह्य अर अन्तरग पदार्थका नाही है आलबनभाव जाकै ऐसी विकल्पबुद्धि है सो ही धर्मीकूं स्थापै है सो ऐसैं नाही है। जो धर्मी अवस्तुस्वरूप होय तौ तिसकै व्यापार जो साध्यसाधन ताकै भी वस्तुस्वरूपणा न वर्णै जातैं अनुमानकी बुद्धिकै परपराकरि भी वस्तुकी व्यवस्थाका कारणपणाका अयोग होय। तातैं विकल्पकरि अथवा अन्यप्रमाणकरि स्थापन किया जो पर्वत आदिक सो अनुमानका विषयस्वरूप होता संता धर्मीपणाकूं पावै है। ऐसा निश्चय भया जो धर्मी प्रसिद्ध है बहुरि तिसकी प्रसिद्धि है सो कोई विषैं तौ विकल्पतैं, कोई विषैं प्रमाणतैं है, कोई विषैं प्रमाण अर विकल्प दोऊनितैं है, ऐसैं एकांतकरि विकल्पविषैं ही ल्यायाकै अथवा प्रमाण प्रसिद्धहीकै धर्मीपणा नाही॥२२॥

आगै मीमासक कहै है—जो धर्मीकी विकल्पतै प्रतिपत्ति होतै तुमारे साध्य कहा है ऐसी आशका होतैं सूत्र कहै है,—

विकल्पसिद्धे तस्मिन् सत्तेतरे साध्ये ॥ २३ ॥

याका अर्थ—तिस धर्मीकू विकल्पसिद्ध होतैं सत्ता अर इतर कहिये असत्ता दोऊ साध्य है। इहा सुनिर्णीत कहिये भलै प्रकार निश्चय किया जो असभवद्बाधक प्रमाण ताका बलकरि तौ सत्ता साध्य है। बहुरि योग्य जो अनुपलब्धि ताका बलकरि असत्ता साध्य है। ऐसैं सत्ता असत्ता साध्य है ऐसा वाक्यशेष लेना ॥ २३ ॥

इहा उदाहरण कहै है,—

अस्ति सर्वज्ञो नास्ति खरविषाणम् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—सर्वज्ञ है, इहा तो विकल्पसिद्ध जो सर्वज्ञ धर्मी ताविषैं सत्ता साध्य है। बहुरि खरविषाण नाही है, इहा गदहाकै सींग विकल्पसिद्ध धर्मी है ताविषै असत्ता साध्य है। या सूत्रका अर्थ सुगम है सो टीकाकार टीका न लिखी है।

इहा मीमासक कहै है–जो असिद्ध है सत्ता जाकी ऐसा जो धर्मी ताविषैं सद्भाव अर अभाव अरु भावाभाव इनि तीनूही धर्मनिकै असिद्ध विरुद्ध अनैकान्तिकपणा है तातै अनुमानके विषयपणाका अयोग है तातैं सत्ता अर असत्ताकै साध्यपणा कैसैं बणै। सो ही कह्या है श्लोकका अर्थ,—जो सत्ता साधिये है सो तहा हेतु भावका धर्म है तौ असिद्ध है, अर अभावका धर्म है तौ विरुद्ध है, दोऊका धर्म है तौ व्यभिचारी है सो ऐसी सत्ता कैसैं साधिये[1] ताका समाधान आचार्य करैं

१ असिद्धो भावधर्मश्चेद् व्यभिचायुभयाश्रित ।
विरुद्धो धर्मो भावस्य सा सत्ता साध्यते कथ ॥ १ ॥

हैं,—जो यह कहना अयुक्त है जातैं मानसप्रत्यक्षविर्षै भावरूप ही धर्मीका प्रतिपणा है । बहुरि कहै—तिस धर्मीकी सिद्धि मानसप्रत्यक्षमैं होतैं ताका सत्त्वभी आय गया तातै अनुमान व्यर्थ है, सो ऐसै नाही है—तिसका सत्त्व अगीकार भया तौ ऊपर वादी धीटपणातैं—प्रतिपक्षपणातै अगीकार न करै तब तिसकू सिद्ध करनेकू अनुमानका सफलपणा है। बहुरि कहै—जो मानसप्रत्यक्षमैं आकाशका फूलकाभी सद्भावकी सभावनातैं अतिप्रसग आवै ? सो ऐसैं भी नाही है, जातैं आकाशके फूलका ज्ञानकै बाधक प्रतीतिकरि निराकरण भई है सत्ता जाकी ऐसा असत्स्वरूप वस्तु विषयपणाकरि ताकै मानसप्रत्यक्षाभासपणा है । बहुरि इहा कहै—जो ऐसैं होतैं घोडाकै सींग इत्यादिककै धर्मीपणा कैसै बणैगा ? तौ ऐसा तर्क न करना जातै धर्मीका प्रयोगकालविर्षै बाधक प्रत्ययका उदय नाही है तातैं धर्मीका सत्त्वकी सभावना है। बहुरि सर्वज्ञादिक धर्मीविर्षै साधकप्रमाणका अभावपणाकरि सत्त्व प्रति सशय बतावै तौ सशय नाहीं है, सुनिश्चितासभवद्बाधकप्रमाणपणाकरि जैसै सुख आदिकै विर्षै सत्त्वका निश्चय है तैसैं सत्त्वका निश्चय है, तहा सशयका अयोग है । सुनिश्चितासभवद्बाधकप्रमाण जाकू कहिये जहा भलै प्रकार निश्चय किया असभवता बाधक प्रमाण होय, भावार्थ—बाधकप्रमाण निश्चयतैं न होय ॥ २४ ॥

आगैं प्रमाणसिद्ध अर उभयसिद्ध जो धर्मी तिनिविर्षै साध्य कहा है ऐसी आशका होतैं सूत्र कहैं हैं,—

प्रमाणोभयसिद्धे तु साध्यधर्मविशिष्टता ॥ २५ ॥

याका अर्थ—प्रमाणसिद्ध अर प्रमाणविकल्पसिद्ध इनि दोऊ धर्मी विर्षै साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता जो धर्मीपणा सो ही साध्य है ।

इहा पहले सूत्रमै 'साध्ये' ऐसा द्विवचन है तौऊ अर्थके वशतैं इहां एकवचन ही सबध करना, साध्यधर्मविशिष्टता साध्या ऐसै । बहुरि प्रमाण अर उभय कहिये प्रमाण विकल्प दोऊ ऐसैं दोय भातिकरि सिद्ध जो धर्मी ताविषैं साध्य जो धर्म ताकरि विशिष्टता साध्य है। दोऊ प्रकारके धर्मीविषै जो साध्यका पूर्वस्वरूप कह्या सो ही धर्म ताकरि सहितपणा साध्य है । जहा जैसा साध्य होय तैसाहीकरि युक्त धर्मी साध्य है । इहा यह अर्थ है—जो प्रमाणकरि प्राप्त भया भी वस्तु विशिष्टधर्मके आधारपणाकरि विवादमै आवै सो साध्यपणाकूं नाही उलघै, साध्य होय ही । ऐसें ही प्रमाण विकल्प विषै भी जोडि लेना ॥ २५ ॥

आगै प्रमाणसिद्ध अरु उभयसिद्ध दोऊ धर्मी अनुक्रमकरि दिखावते सते सूत्र कहै हैं,—

अग्निमानयं प्रदेशः, परिणामी शब्द इति यथा ॥२६॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निसहित है यह तौ प्रत्यक्षप्रमाणसिद्ध धर्मी है, बहुरि शब्द है सो परिणामी है इहा शब्द धर्मी है सो उभय-सिद्ध है जो शब्द श्रवणमै आया सो तौ श्रवणप्रत्यक्ष प्रत्यक्षप्रमाणसिद्ध है अर अन्यदेशकालवर्त्ती शब्द विकल्पसिद्ध है । इहा अग्नि जहा साधिये है सो प्रदेश प्रत्यक्षप्रमाणकरि सिद्ध है, बहुरि शब्द है सो उभय-सिद्ध है जातैं अल्पज्ञानवाले पुरुषनिकरि अनिश्चित दिशा–देश–कालविषैं व्याप्त जे सर्व शब्द ते निश्चय करनेंकू समर्थ नाही हूजिये है तौऊ तिस प्रति अनुमानका निरर्थकपणा है, अनुमान तौ अल्पज्ञ ही करै है ॥२६॥

आगै प्रयोगकालकी अपेक्षा साध्यका नियम दिखावता सता सूत्र कहै हैं,—

व्याप्तौ तु साध्यं धर्म एव ॥ २७॥

याका अर्थ—व्याप्तिविषै साध्य है सो धर्म ही है । याका अर्थ सुगम है यातैं टीका नाही। इहा अर्थ जिस धर्मीविषै जो साध्य साधिये ताकू तिस धर्मीका धर्म कहिये । ऐसा साध्य जो धर्म सो ही साधने योग्य है। व्याप्ति साध्यसाधनहीकै होय है ॥ २७॥

आगैं धर्मीकै भी साध्यपणा होतै कहा दोप है, ऐसैं पूछें सूत्र कहै हैं,—

अन्यथा तद्घटनात् ॥ २८ ॥

याका अर्थ—जो धर्मीकू साध्य करिये तौ धर्मीकै अर साधनकै व्याप्ति बणै नाही। इहा अन्यथा शब्द है सो पहले व्याप्तिविषैं साध्यधर्म कह्या तिसतैं विपर्यय अर्थमैं है, तातैं ऐसैं कहना जो धर्मीकै साध्यपणा होतैं व्याप्ति बणैं नाही । यह सूत्र पूर्वसूत्रका हेतुरूप है । धूमके दर्शनतै सर्व जायगा पर्वत अग्निमान है ऐसी व्याप्ति नाही करी जाय है जातैं यामैं प्रमाणतैं विरोध आवै है ॥ २८ ॥

आगैं बौद्धमती कहै है–जो अनुमानविषैं पक्षका प्रयोगका असभव है तातै ' प्रसिद्धो धर्मी ' इत्यादि वचन अयुक्त है जातैं तिस धर्मीकै सामर्थ्यलब्धपणा सामर्थ्यतै जाणिये है, बहुरि जाणें पीछैं भी ताका वचन कहना सो पुनरुक्तताका प्रसग आवै है, जातै ऐसा कह्या जो अर्थतैं आय प्राप्त हूवा तौऊ ताका फेरि वचन कहना सो पुनरुक्त है, ऐसैं सौगतनैं पक्ष करी ताका निराकरणकू आचार्य सूत्र कहैं हैं,—

साध्यधर्माधारसन्देहापानोदाय गम्यमानस्यापि पक्षस्य वचनम् ॥ २९ ॥

याका अर्थ—पक्ष है सो साध्य जो धर्म ताका आधार है तातैं साध्यकू साधिये तब ऐसा सन्देह पडै जो कौंन जायगा इस साध्यकू

पक्षप्रयोगका अवश्य भाव होते निश्चयतैं कौन पक्ष नाहीं करै है, अवश्य करै ही है। कहा करता सता? हेतुका समर्थन करता सता–हेतुकू कह करि ही समर्थ है विना कहे नाहीं समर्थ है। इहा समर्थनका स्वरूप ऐसा–जो हेतुका असिद्धपणा आदि दोपका परिहारकरि अपनें साध्यकू अर साधनकू सामर्थ्यरूप प्ररूपणा करनेंकू समर्थ वचन होय सो ही समर्थन है। सो हेतुके प्रयोगकै पीछैं बौद्धमतीकरि अगीकार किया है तातैं सूत्रमैं उक्त्वा' ऐसा वचन है ॥ ३१ ॥

अत्र इहा साख्यमती कहै है—जो पक्षका प्रयोग तौ होहु परन्तु पक्ष, हेतु, दृष्टात, भेदकरि अनुमानके तीन ही अवयव हैं। वहुरि मीमासक कहै है—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, भेदकरि च्यार अवयवस्वरूप अनुमान है। वहुरि यौग कहिये नैयायिक कहै है—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, भेदतैं पाच अवयवस्वरूप अनुमान है। तिनिकै मतकू निराकरण करते सते अपनें मतविषैं सिद्ध जो अनुमानके अवयव दोय तिनिहीकू दिखावते सते सूत्र कहैं हैं,—

एतद्द्वयमेवानुमानाङ्गं नोदाहरणम् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—अनुमानके अवयव पक्ष अर हेतु ये दोय ही है अर उदाहरण नाही है। ये पक्ष अर हेतु तिनिका द्वय कहिये द्विक सो ही अनुमानके अग हैं अधिक नाही है। इहा एवकारकरि उदाहरण आदिका निपेध सिद्ध होतैं भी परमतके निराकरणकै आर्थि फेरि उदाहरण नाहीं है ऐसा वचन कह्या है ॥ ३२ ॥

आगैं सो उदाहरण कहा साध्यकी प्रतिपत्तिकै अर्थि है कि हेतुकै अविनाभावके नियमकै अर्थि है कि व्याप्तिके स्मरणकै अर्थि है? ऐसैं तीन विकल्पकरि तिनिकू दूपणरूप करते सते सूत्र कहैं हैं,—

न हि तत्साध्यप्रतिपत्त्यङ्गं तत्र यथोक्तहेतोरेव व्यापारात् ॥ ३३ ॥

याका अर्थ—यह उदाहरण है सो साध्यकी जो प्रतिपत्ति ताका अग नाही है जातै साध्यविषैं तौ जैसा हेतु कह्या तिसहीका व्यापार है। इहा तत् कहिये उदाहरण सो साध्यकी प्रतिपत्ति कहिये साध्यका ज्ञान ताका अग–कारण नाही है ऐसा सबध करना जातै तिस साध्यकी प्रतिपत्तिविषै यथोक्त जो साध्यतैं अविनाभावीपणाकरि निश्चय किया हेतु तिसहीका व्यापार है ॥ ३३ ॥

आगै दूसरे विकल्पकूं शोधता सता सूत्र कहैं हैं,—

तदविनाभावनिश्चयार्थं वा विपक्षे बाधकप्रमाणबलादेव तत्सिद्धेः ॥ ३४ ॥

याका अर्थ—'तत्' ऐसी अनुवृत्ति लेनीं, बहुरि 'न' ऐसा निषेध की भी अनुवृत्ति लेनीं, ताकरि यह अर्थ भया—जो उदाहरण तिस साध्यकरि हेतुका अविनाभाव निश्चय करनेंकै अर्थि नाही है जातैं विपक्षविषैं बाधक प्रमाणके बलतैं ही अविनाभावनिश्चयकी सिद्धि होय है ॥ ३४ ॥

बहुरि किछू विशेष कहैं है,—जो उदाहरण तौ व्यक्तिरूप है, सामान्यके बहुत विशेष होय तिनिमै एक विशेषकू व्यक्ति कहिये, सो व्याप्तिकू समस्तपणेकरि कैसै गमक होय, तिस व्यक्तिविषै व्याप्तिकै अर्थि अन्य उदाहरण हेरना पडै है ताकै भी व्यक्तिरूपपणाकरि सामान्यरूप जो व्याप्ति ताका निश्चय करनेका असमर्थपणा है यातैं और

१ मुद्रित सस्कृत प्रतिमें 'बाधकप्रमाणबलादेव' इसके स्थानमें 'बाधकादेव' इतना ही पाठ है।

और उदाहरणकी अपेक्षा होतैं अनवस्था दूपण होय है, सो ही सूत्रमैं कहैं हैं,—

व्यक्तिरूपं च निदर्शनं सामान्येन तु व्याप्तिस्तत्रापि तद्विप्रतिपत्तावनवस्थानं स्याद् दृष्टान्तान्तरापेक्षणात् ॥ ३५ ॥

याका अर्थ—निदर्शन कहिये उदाहरण सो तौ व्यक्तिरूप है जिस साध्यसाधनकै जोडिये तहा ही लागै, वहुरि व्याप्ति है सो सामान्य करि हैं सर्व साध्यसाधनमै व्यापै है, सो एक उदाहरणतैं व्याप्तिका निश्चय नाही होय तहा दूसरी जायगा उदाहरणकै विर्षैं भी तिस व्याप्तितैं साध्यसाधन जोडिये तव अन्य दृष्टात चाहिये ऐसैं अन्य दृष्टातकी अपेक्षा करनेतैं अनवस्था होय है ॥ ३५ ॥

आगै तीसरा विकल्पविषै दूपण कहै है,—

नापि व्याप्तिस्मरणार्थं तथाविधहेतुप्रयोगादेव तत्स्मृतेः ॥ ३६ ॥

याका अर्थ—यह उदाहरण व्याप्तिकै स्मरण कहिये यादि करनेकै अर्थि नाही है जातैं अविनाभावस्वरूपहेतुकै प्रयोग करनेंहीतै तिस व्याप्तिका स्मरण होय है। ग्रह्या है साध्यतै सबध जानै ऐसा पुरुपकै हेतु दिखावनेंहीकरि व्याप्तिकी सिद्धि होय है। जानै सबध न ग्रह्या होय ताकै सौ दृष्टातकरि भी स्मरण न होय जातै स्मरण तौ पहली अनुभव होय ताहीका होय है, ऐसा भावार्थ है ॥ ३६ ॥

आगै ऐसैं सो इस उदाहरणके प्रयोगकै साध्य पदार्थ प्रति उपयोगीपणा नाही है उलटा सशयका कारणपणा ही है ऐसै दिखावै है,—

तत्परमभिधीयमानं साध्यधर्मिणि साध्यसाधने संदेहयति ॥ ३७ ॥

याका अर्थ—सो उदाहरण पर कहिये केवल कह्या हुआ साध्यके धर्मीविषैं साध्य अर साधनकूं संदेहसहित करै है। जातैं दृष्टान्तका धर्मीविषैं साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताकूं दिखावतै भी साध्यके धर्मीविषैं तिस साध्यका अर साधनका निर्णयका करनेका अशक्यपणा है ऐसा वाक्यशेष है। भावार्थ—उदाहरण कह्या हुवा साध्य साधनकूं संदेहरूप करै है ॥ ३७ ॥

आगैं इस ही अर्थकूं व्यतिरेककूं प्रधानकरि दृढ करते सते कहै हैं,—

कुतोऽन्यथोपनयनिगमने ॥ ३८ ॥

याका अर्थ—जो उदाहरण कहैं संदेह न उपजता तौ उपनय अर निगमन इनि दोऊनिका प्रयोग काहेकूं करते। जातैं यह जान्या जो उदाहरणके प्रयोगतैं संशय होय है ॥ ३८ ॥

आगै नैयायिक कहै है—जो उपनय निगमन इनि दोऊनिकै भी अनुमानका अंगपणा है, जो इनिका प्रयोग न कीजिये तौ निर्दोष साध्यकी सिद्धिका अयोग है तिसके निषेधकै अर्थि सूत्र कहैं हैं,—

न च ते तदङ्गे, साध्यधर्मिणि हेतुसाध्ययोर्वचनादेवासंशयात् ॥ ३९ ॥

याका अर्थ—ते उपनय निगमन भी तिस अनुमानके अंग ही नाहीं हैं जातैं साध्यके धर्मीविषैं हेतु अर साध्यके वचनतैं संशयका निराकरण है। उपनय निगमनका स्वरूप आगैं कहसी। अर इहां एवकारकरि ऐसा जानना जो दृष्टान्त आदिके प्रयोग विना ही प्रतिज्ञा हेतुतैं ही साध्यकी सिद्धि होय है—संशय मिटि जाय है, ऐसा भावार्थ है ॥ ३१ ॥

आगैं विशेष कहै हैं—जो दृष्टान्तादिक कहकरि भी हेतुका समर्थन अवश्य कहना जातैं विना समर्थ्या हेतुकै अहेतुकपणा है यातैं सो समर्थन ही श्रेष्ठ है, जो हेतुस्वरूप है अथवा अनुमानका समर्थन भी होहु जातैं साध्यकी सिद्धिविषै ताहीका उपयोग है उदाहरण आदिक अनुमानके अवयव नाहीं है, इस ही अर्थरूप कहैं हैं,—

समर्थनं वा वरं हेतुरूपमनुमानावयवो वाऽस्तु साध्ये तदुपयोगात् ॥ ४० ॥

याका अर्थ—हेतुका समर्थन है सो ही श्रेष्ठ है सो हेतुरूपही है, अर यह समर्थन अनुमानका अवयव भी होहु जातै साध्यविषैं तिसका उपयोग है–साध्य यातै दृढ होय है। इहा सूत्रमैं पहला 'वा' शब्द है सो नियमकै अर्थि है। बहुरि दूसरा 'वा' शब्द है सो न्यारा पक्षके सूचनेंकू है। अब शेष या सूत्रका अर्थ सुगम है ॥ ४० ॥

आगैं पूछै हैं कि दृष्टात आदिक विना मन्दबुद्धीनिका समझावनेंका असमर्थपणा है तातै पक्षहेतुके प्रयोगमात्रहीकरि तिनिकै साध्यकी प्रतिपत्ति कैसै होय, ऐसैं पूछे सूत्र कहैं हैं,—

बालव्युत्पत्त्यर्थं तत्त्रयोपगमे शास्त्र एवासौ न वादेऽनुपयोगात् ॥ ४१ ॥

याका अर्थ—बाल कहिये अल्पज्ञानी तिनिकै ज्ञान होनेकै अर्थि उदाहरण उपनय निगमन ये तीन अवयव तिनिका अगीकार होतैं भी शास्त्रहीविषै तिनका मानना है, अर वादविषैं नाही जातैं वादविषै इनिका उपयोग नाही प्रयोजन नाही—जातैं वादके कालविषैं शिष्य समझावनें नाही, व्युत्पन्ननिहीका वादकैविषैं अधिकार है–जे न्यायविषैं प्रवीण हैं तिनिहीका वादविषैं अधिकारीपना है ॥ ४१ ॥

आगैं बाल जे अल्पज्ञानी तिनिके समझावनेंकै अर्थि उदाहरण आदि तीन प्रयोग शास्त्रविर्षे अगीकार किया, तिनि तीननिका स्वरूप दिखावैं है,—

दृष्टान्तो द्वेधाऽन्वयव्यतिरेकभेदात् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—जा विषैं साध्य साधन ये दोय अत कहिये धर्म अन्वयकू मुख्यकरि तथा व्यतिरेककू मुख्यकरि प्रत्यक्ष दृष्ट होय सो दृष्टान्त है । याका अर्थ ऐसा—जो दृष्ट कहिये प्रत्यक्ष देखे हैं अन्त कहिये साध्यसाधनलक्षण धर्म जहा ऐसा दृष्टान्तशब्दका अर्थि है । सो दोय प्रकार है—अन्वयदृष्टान्त, व्यतिरेकदृष्टान्त ॥ ४२ ॥

तहा प्रथम अन्वयदृष्टान्तकू दिखावते सन्ते सूत्र कहैं हैं,—

साध्यव्याप्तं साधनं यत्र प्रदर्श्यते सोऽन्वयदृष्टान्तः ॥ ४३ ॥

याका अर्थ—जा विषैं साध्यकरि व्याप्त जो साधन सो नियमरूप दिखाइए सो अन्वय दृष्टात है । इहा व्याप्तिपूर्वकपणाकरि दिखावै ऐसा अभिप्राय है । जैसैं जहा जहा धूमसहितपणा है तहा अग्निसहितपणा, जैसैं रसोईका स्थान, ऐसैं अन्वयदृष्टात जानना ॥ ४३ ॥

आगैं दूसरा भेद दिखावै है,—

साध्याभावे साधनाभावो यत्र कथ्यते स व्यतिरेकदृष्टान्तः ॥ ४४ ॥

याका अर्थ—जाके न होतैं जो न होय सो व्यतिरेक कहिये, सो यहा प्रधान होय सो व्यतिरेक दृष्टात है । जसैं जहा अग्नि नाहीं तहा नियमकरि धूम नाहीं, जैसै जलका निवास । ऐसैं व्यतिरेकदृष्टान्त जानना ॥ ४४ ॥

आगै अनुक्रममैं आया जो उपनय ताका स्वरूप निरूपण करै है,–

हेतोरुपसंहार उपनयः ॥ ४५ ॥

याका अर्थ—इहा 'पक्षे' ऐसा अध्याहार लेना, ताकरि यह अर्थ है,—जो पक्ष विषै हेतुका सक्षेप करिये सो उपनय है। धूमवान्पणा हेतुतैं अग्निमानपणा काहू जायगा साधै ताका दृष्टान्त कहकरि अर हेतुकूं पक्षका विशेषण करै, जैसैं कहै–जो यह धूमवान है ऐसा कहना उपनय है। याकी निरुक्ति ऐसै है–'उपनीयते' कहिये फेरि उचारिये हेतु जा करि सो उपनय है, ऐसा जानना ॥ ४५ ॥

आगैं निगमनका स्वरूप दिखावै है;—

प्रतिज्ञायास्त निगमनम् ॥ ४६ ॥

याका अर्थ—जहा प्रतिज्ञाका उपसहार करिये सो निगमन है। इहा उपसहारकी अनुवृत्ति लेनी। प्रतिज्ञाकू साध्य जो धर्म ताकरि निशिष्टपणाकरि दिखावना। जैसै पहले प्रतिज्ञा कहै जो यह पर्वत अग्निमान है पीछै हेतु दृष्टान्त उपनय कहकरि फेरि फेरि प्रतिज्ञाकू सकोचकरि नियम करै जो तातै अग्निमान ही है, ऐसैं प्रतिज्ञाका सक्षेप करना सो निगमन है ॥ ४६ ॥

आगैं अन्यवादी तर्क करै जो शास्त्रविषै दृष्टान्त आदि कहनें ही ऐसा नियम तौ मान्या नाही तब आचार्य इहा तिनि तीननिकू कैसैं दिखाये ? ताका समाधान—जो इहा एसा तर्क न करना जातैं आप आचार्य इनि तीनूनिकू अगीकार न किये है तौऊ जिनमतके अनुसारी आचार्यनिनैं शिष्यके वशकरि प्रयोगकी पारपाटीतैं मानैं है सो प्रयोगकी परिपाटी तिनिका स्वरूप जिनिनैं न जान्या होय तिनकरि करी जाय नाही इस हेतुतै तिनिका स्वरूप भी शास्त्रविषैं कहना ही

योग्य है। ऐसैं सो अनुमान मतभेदकरि दोय अवयव, तीन अवयव, च्यार अवयव, पाच अवयवस्वरूप मानिये है सो अनुमान दोय प्रकार ही है ऐसैं दिखावते सते सूत्र कहैं है,—

तदनुमानं द्वेधा ॥ ४७ ॥

याका अर्थ—सो अनुमान दोय प्रकार है ॥ ४७ ॥

आगैं सो दोय प्रकारपणाकूं कहैं हैं,—

स्वार्थपरार्थभेदात् ॥ ४८ ॥

याका अर्थ—स्वार्थानुमान परार्थानुमान ऐसै भेदकरि दोय प्रकार है। अपनीं अर परकी जो अनुमानविषै अन्यथा मानि ताका दूर होना याका फल है तातैं दोय ही प्रकार है ऐसा अभिप्राय जानना॥४८॥

आगैं स्वार्थानुमानके भेदकूं कहैं हैं,—

स्वार्थमुक्तलक्षणम् ॥ ४९ ॥

याका अर्थ—"साधनात्साध्यविज्ञानमनुमान" ऐसा पूर्वैं अनुमानका लक्षण कह्या था सो ही स्वार्थानुमान जानना ॥ ४९ ॥

आगैं दूसरा अनुमानका भेदकूं दिखावते सते सूत्र कहैं हैं,—

परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ॥ ५० ॥

याका अर्थ—तिस स्वार्थानुमानका जो अर्थ साध्यसाधन है लक्षण जाका तिसकूं जो अपना विषय करै प्रगट करै ऐसा जाका स्वभाव होय सो तदर्थपरामर्शी कहिये ऐसा जो वचन तिसतैं उपज्या होय ज्ञान सो परार्थानुमान है। इहां नैयायिक कहै है—पचावयवरूप वचनात्मक परार्थानुमान प्रसिद्ध है सो इहां स्वार्थानुमानका अर्थका प्रतिपादक वचनकरि उपज्या ज्ञानकूं परार्थानुमानपणा कहता जो आचार्य सो तिस वचनकूं कैसैं ग्रहण न किया? ताका समाधान करै है—जो

पूर्वै प्रवर्तै, साध्यतैं पीछै दीखै, साध्यकै साथि ही रहै, ऐसै छह भेद हैं । इहां सूत्रविषैं समास ऐसै करना—पूर्व, उत्तर, सह, इनि तीन शब्दनिका द्वन्द्वसमासकरि, पीछैं चर शब्द करना सो द्वद्वतै चरशब्द प्रत्येककै लगावणा, तत्र पूर्वचर, उत्तरचर, सहचर ऐसा होय । पीछैं व्याप्य आदिकरि द्वद्व करना तातैं पूर्वोक्त अर्थ भया ॥ ५४ ॥

इहां सौगत कहिये बौद्धमती सो कहै है—विधिका साधन दोय प्रकार ही है, स्वभाव अर कार्य ऐसै । बहुरि कारणकै तौ कार्यतैं अविनाभावका अभाव है तातै साध्यका लिंग नाही जातै कारण हैं ते कार्यसहित अवश्य होय नाही ऐसा वचन है । बहुरि इहां कहौगे जो—जा कारणका सामर्थ्य काहूतैं रुकै नाही ऐसा कारण है सो कार्य प्रतिगमक होय है सो ऐसा कहना न बनैगा जातै सामर्थ्य तौ इन्द्रियगोचर नाही जो कारणमैं नियमान भी है तौ ताका निश्चय होय सकै नाही ? ताका समाधान आचार्य करैं है—ऐसा कहना विना विचारे है, ऐसैं दिखावनेकू सूत्र कहै हैं,—

रसादेकसामग्र्यनुमानेन रूपानुमानमिच्छाद्भिरिष्टमेव किंचित्कारणं हेतुर्यत्र सामर्थ्याप्रतिबंधकारणान्तरावैकल्ये ॥ ५५ ॥

याका अर्थ—आस्वादमैं आया जो रस तातैं तिसके उपजावनहारी फल आदि सामग्री ताका अनुमान कीजिये है । पीछै तिस अनुमानतै रूपका अनुमान होय है ऐसै मानता जो बौद्धमती ताकरि तानैं किछू कारणकू हेतु मान्या ही ? जिस कारणविषैं सामर्थ्यका रोकनेवाला न होय तथा सहकारी अन्यकारणका विकलपणा न होय, समस्त सहकारी आय मिलै तिस कारणकै कार्य जो साध्य ता प्रतिगमकपणा होय है, जातै पहला रूपका क्षण है सो अपना सजातीय जो

पिछलारूपका क्षणस्वरूप कार्य ताहि करता संता ही रूपतैं विजातीय जो रस तिसस्वरूप कार्यकू करै है, ऐसैं रसतैं रूपका अनुमानकू इष्ट करता मानता जो बौद्धमती सो किस ही कारणकू हेतु इष्ट करै ही है—मानैं ही है, जातै पहला रूपका क्षण है तातैं अपना सजातीय रूपका दूसरा क्षणकै व्यभिचार नाही है, उत्तर क्षणनामा कार्यकू उपजावै ही है। जो ऐसैं न मानैं तौ रसकै ही काल रूपकी प्राप्तिका अयोग ठहरै। बहुरि अंत्यक्षणनैं प्राप्त भया जो कारण तथा अनुकूलमात्रहीकूं नांही लिंग मानिये है। जाकरि मणिमंत्र आदिकरि जाकी सामर्थ्य रुकनेतैं तथा अन्य सहकारी कारणका सकलपणा न होनेतै कार्य नाहीं उपजावै तब कारणनामा हेतुकै व्यभिचारीपणा आवै। अर दूसरे क्षण कार्य प्रत्यक्ष देखिकरि कारण मानि तिस कारणतैं अनुमान करिये तब अनुमानकै अनर्थकपणा आवै। हमनैं तौ कार्यतैं अविनाभावीपणाकरि निश्चय किया ऐसा जो छत्र आदि कारण ताकू छाया आदिका लिंगपणाकरि अंगीकार किया है। जहां जाकी सामर्थ्य तौ काहूकरि रुकै नाही अर सहकारी अन्यकारणका सकलपणा होय कोई सहकारी घटता न होय ऐसा निश्चयतैं कारणकू हेतु मान्या है सो तिस ही कारणकै लिंगपणा है, अन्य जामैं व्यभिचार दीखै सो कारण हेतु नाहीं है तातैं बौद्ध कहै सो दोष नाहीं है।

इहां भावार्थ यह—जो बौद्धमती कारणकू तौ हेतु कहै नाहीं अर मानैं ऐसैं जो काहूनै अंधारेमैं विजोरा आदि फलका रस चाख्या तब ताका अनुमान भया जो यह रस विजोरा आदिका है। पीछैं तिस विजोरा आदि कारणतैं ताकै रूपका अनुमान किया सो ऐसे अनुमानमैं तौ कारण हेतु आया ही, अर यामैं व्यभिचार भी नाहीं। जातै सर्व तत्त्वकू क्षणिक मानि ऐसैं कहै है—पहला क्षण तौ कारण है अर उत्त-

रक्षण ताका कार्य है सो पहलै रूपकै क्षण पिछला रूपक्षणकू उपजाया तैसैं ही पहलै रसकै क्षण पिछले रसक्षणकू उपजाया ऐसैं दोऊ समानकाल कारण अर कार्य भये। तहा कारणतैं कार्यका अनुमान निर्व्यभिचार होय है। ऐसा नाही—जो प्रथमक्षण दूजे क्षणका अनुकूलमात्र ही कारण है जातैं इहा तिसकी सामर्थ्यका रोकनैवाला कोई नाही अर सहकारीकी घटती नाही, अथवा अन्त्यक्षणमात्र नाही जातैं कार्य न उपजै। अर अब कार्य अवश्य उपजै तब व्यभिचार काहेका ऐसै जामैं व्यभिचार नाही सो कारण हेतु अवश्य मानना योग्य है॥५५॥

आगैं अब पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुका स्वभाव, कार्य, कारणनामा, हेतुनिविषै अन्तर्भाव नाही, तातै न्यारे ही भेद हैं, ऐसैं दिखावै हैं,—

न च पूर्वोत्तरचारिणोस्तादात्म्यं तदुत्पत्तिर्वा कालव्यवधाने तदनुपलब्धेः ॥ ५६ ॥

याका अर्थ—पूर्वचर अर उत्तरचर हेतुकै तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नाही है जातैं इनिकै कालका व्यवधान है—कालका बीचिमैं अतर है, सो जहा कालव्यवधान होय तहा तादात्म्य अर तदुत्पत्तिकी अप्राप्ति है। तादात्म्य तौ स्वभाव अर स्वभाववान्‌कै कहिये अर तदुत्पत्ति कार्य कारणकै कहिये। भावार्थ—साध्यसाधनकै तादात्म्यसबध होतैं स्वभाव हेतुविषैं अतर्भाव होय, अर तदुत्पत्तिसंबध होतैं कार्य अथवा कारणविषैं अन्तर्भाव होय। सो पूर्वचर उत्तरचर हेतुकै अतर है तातैं दोऊ ही सबध नाही, तातै स्वभाव कार्य कारणमैं इनिका अन्तर्भाव न होय, जो सहभावी होय तिनिकै ही तादात्म्य सबध होय, अर अनतर होय तिनिकै ही हेतु कहिये कारण अर फल कहिये कार्य ऐसा भाव होय, कालके अन्तरमैं ते दोऊ ही भाव नाही ॥ ५६ ॥

इहा तर्क करै है जो—कालका व्यवधान कहिये अतर होतैं भी कार्यकारणभाव देखिये है जैसैं जागताकी दशाका ज्ञानकै अर सोयकरि फेरि जागताकी दशाका ज्ञानकै कार्यकारणभाव है, तथा मरणकै अर पहले आवते अरिष्टकै कार्यकारणभाव है, ऐसा तर्कका परिहारकै अर्थि सूत्र कहै है,—

भाव्यतीतयोर्मरणजाग्रद्बोधयोरपि नारिष्टोद्बोधौ प्रति हेतुत्वम् ॥ ५७ ॥

याका अर्थ—आगामी होगा ऐसा तौ मरण अर पहले जागै था ताका अतीतज्ञान इनि दोऊनिकै मरणकै पहलै आया जो अरिष्ट अर सूता पीछै जाग्याकी अवस्थाका ज्ञान इनिकै कारणकार्यभाव नाही है। अरिष्ट तौ आवै अर मरण होय तथा नाही भी होय अर सूता जागै तव पूर्वली बात यादि आवै तथा नाही यादि आवै ॥ ५७ ॥

याहीका समर्थन करै है,—

तद्व्यापाराश्रितं हि तद्भावभावित्वम् ॥ ५८ ॥

याका अर्थ—इहा 'हि' शब्द हेतु अर्थमैं है तातैं यह अर्थ है जातैं तिस कारणकै सद्भाव होतैं कार्यका होना है सो कार्यमैं है सो कारणके व्यापारकै आश्रय है, तातैं जो पूर्वं कहे जाग्रत्दशा अर प्रवोधदशाका ज्ञान अर मरण अर अरिष्ट इनिकै तौ कारणकै अर कार्यकै कालका अतर है तहा कारणकै व्यापारका आश्रय काहेका? तातैं कार्यकारणभाव नाही है। इहा यह अर्थ—जो अन्वय व्यतिरेककरि निश्चयरूप सर्वत्र कार्य-कारणभाव है सो ये दोऊ कार्य प्रति कारणके व्यापारकी अपेक्षा लिये ही होय है जैसैं कुभकारकै कलश प्रति होय है । जो कुभकार होय तौ कलश होय न होय तौ न होय तैसैं है। सो जे अतिव्यव-

हित कालके अतरसहित होय तिनिविषैं कारणका व्यापारका आश्रितपणा कहा ? भावार्थ---ऐसा तर्क किया--जो कोई पुरुष रात्रिकू जागतैं कार्य विचारि सूता पीछै प्रभात जाग्या तब जो विचाऱ्या था सो यादि आया तहा पहली अवस्थाका ज्ञान पीछली अवस्थाका ज्ञानकू कारण भया। बहुरि मरणकै पहले अरिष्ट आवै है तिनिकू मरण कारण है। ऐसैं कालके अंतर होतैं भी कार्यकारणभाव होय है। ताका समाधान आचार्य किया---जो ऐसैं नाही जातैं कार्य है सो कारणके व्यापारकै आश्रय है सो जिनिकै कालका अतर है तिनिकै कारणका व्यापारका आश्रय कहातैं होय। कार्य---कारणकै तौ अन्वयव्यतिरेकपणा है। जो कारण होय तौ कार्य होय ही होय, कारण न होय तौ कार्य न होय। सो जहा कालका अन्तर होय तहा कारणके व्यापारका आश्रय कार्यकै संभवै नाही, विना व्यापार कार्य होय नाही, ऐसा जानना ॥ ५८ ॥

आगैं सहचर हेतुकं भी स्वभाव कार्य कारण हेतुनिविषै अतर्भाव नाही है, ऐसा दिखावै है,---

सहचारिणोरपि परस्परपरिहारेणावस्थानात्सहोत्पादाच्च ॥ ५९ ॥

याका अर्थ---जे सहचारी एककाल लारा रहैं है तिनिकै भी तादात्म्य अर तदुत्पत्ति नाही होय है जातै परस्पर स्वरूपभेदकरि परिहार पाइए है अर एक काल दोऊका उत्पाद है। तातैं व्याप्यव्यापकभाव अर कार्यकारणभाव नाही है तातै न्यारा ही हेतुपणा है। इहा यहु अभिप्राय है---परस्पर परिहारकरि जिनिका ग्रहण होय है तिनिकै तादात्म्य नाही तातैं तौ स्वभावहेतुविषैं अन्तर्भाव नाही। अर जिनिकी साथ उत्पत्ति है तिनिका कार्यविषैं तथा कारणविषै अन्तर्भाव नाही जातैं एककाल वर्तैं जिनिकै कार्यकारणभाव नाही है, जैसै गऊकै वावा दा-

हिणा सींग है तिनिकी साथ उत्पत्ति है परस्पर कार्यकारणभाव नाही तैसैं जानना । बहुरि एककाल उपजैं तिनिकै कार्यकारणभाव मानिये तौ कार्यकारणके प्रति नियमका अभावका प्रसग आवै । इहा एक वस्तुविषै दोय भाव तिष्ठैं तौऊ तिनिकै स्वरूपभेदतै तादात्म्य न (?) कहिये, जैसैं रूप—रसमै स्वरूप भेद है अर एकवस्तुमैं दोऊ है ही । बहुरि जिनिकै साथ उत्पाद नाही ऐसे धूम अग्नि आदि तिनिकै कार्यकारणभाव है ही । तातैं सहचर न्यारा ही हेतु है ॥ ५९ ॥

आगैं अब कहे हेतुनिके उदाहरण कहैं हैं । तहा पहले क्रममैं आया जो व्याप्यनामा हेतु ताहि उदाहरणरूप करते सते कहे जे अन्वय व्यतिरेक तिनिकू प्रधानकरि शिष्यके आशयके वशतैं कहे जे अनुमानके प्रतिज्ञादिक पाच अवयव तिनिकू दिखावै है,—

परिणामी शब्दः कृतकत्वात्, य एवं स एवं दृष्टो यथा घटः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामीति, यस्तु न परिणामी स न कृतको दृष्टो यथा वंध्यास्तनंधयः, कृतकश्चायं, तस्मात्परिणामी ॥ ६० ॥

याका अर्थ—शब्द है सो परिणामी है यह तौ प्रतिज्ञा है, जातैं कृतक है यह हेतु है, जो कृतक है सो परिणामी देखिये है जैसैं घट है यहु अन्वयव्याप्तिपूर्वक उदाहरण है, बहुरि यहु शब्द कृतक है यहु उपनय है, तातैं परिणामी है यहु निगमन है । ऐसैं तौ अन्वयव्याप्तिकरि पच अवयव दिखाये, बहुरि जो परिणामी नाही है सो कृतक नाही देखिये है जैसैं वाझका पुत्र यहु व्यतिरेकव्याप्तिपूर्वक उदाहरण है । अर यहु शब्द कृतक है तातै परिणामी है । ये व्यतिरेकव्याप्तिकरि दिखाये ते पाचू ही समझनें । इहा अपनी उत्पत्तिविषै जो परकै व्यापारकी अपेक्षा करै ऐसा भाव होय सो कृतक कहिये । सो ऐसा कृतक

पणा कूटस्थ जो सदाकाल एक अवस्थारूप रहै ऐसा नित्यपक्षविषैं नाही वर्णै है। बहुरि क्षणिक जो समय समय अन्य अन्य ही होय ताविषैं भी नाही बर्णै है, तातैं परिणामीपणा होतैं ही बणै है ऐसैं आगैं कहसी। इहा परिणामीकी निरुक्ति ऐसी जो पूर्व आकारका तौ परिहार उत्तर आकारकी प्राप्ति अर दोऊमै स्थिति ऐसा जाका लक्षण सो परिणाम, सो जाकै होय सो परिणामी कहिये। बहुरि कृतकका ऐसा स्वरूप कहनेंतैं कार्यपणाका कोई स्वरूप कहै जो स्वकारणसत्ता-समवायकू कार्यत्व कहिये, तथा अभूत्वाभावित्वकू कार्यत्व कहिये, तथा 'अक्रियादर्शिनोऽपि कृतबुद्ध्युत्पादकत्व' ऐसा कहै, तथा 'कारणव्यापारानुविधायित्व' ऐसा कहै, ते सर्व निराकरण किये। कृतकका ऐसा ही अर्थ सर्वत्र जानना। ऐसैं कृतकपणा हेतु है सो शब्दकै परिणामीपणाकू साधै है, सो परिणामीपणातैं व्याप्य है तातैं व्याप्यनामा हेतु भया ॥६०॥

आगैं कार्यहेतुकू कहैं हैं,—

अस्त्यत्र देहिनि बुद्धिर्व्याहारादेः ॥ ६१ ॥

याका अर्थ—या प्राणीविषैं बुद्धि है जातैं याकै वचनादिककी प्रवृत्ति है। इहा आदि शब्दतै व्यापार आकारविशेष आदि लेनें। वचनादिकी चतुरता आदि बुद्धि विना होय नाही। ऐसैं बुद्धिका कार्य वचनादिक हैं ते बुद्धिनामा कारण जो साध्य ताकू साधैं हैं तातै कार्य-नामा हेतु भया ॥ ६१ ॥

आगै कारणहेतुकू कहैं हैं,—

अस्त्यत्र छाया छत्रात् ॥ ६२ ॥

याका अर्थ—इहा छाया है जातैं छत्र देखिये है। काहू जायगा छत्र देख्या तब जाणीं जो याकै नीचै छाया भी है, जहा छत्र है तहा

छाया भी होय ही। ऐसैं छत्रनामा कारणहेतु छायानामा साध्यकू साधै है तातैं कारणहेतु भया ॥ ६२ ॥

आगैं पूर्वचर हेतुकू कहैं हैं,—

उदेष्यति शकटं कृत्तिकोदयात् ॥ ६३ ॥

याका अर्थ—रोहिणी नक्षत्र उगिसी जातैं कृत्तिका नक्षत्रका उदय देखिये है। इहा 'मुहूर्त्तान्ते' ऐसा सम्बध करना जातैं ऐसा नियम है जो कृत्तिकाका उदय भये पीछै एक मुहूर्त्तमैं रोहिणीका उदय होय है। सो पहले कृत्तिकाका उदय देख्या तब जानीं रोहिणी एक मुहूर्त्तमैं अवश्य उगिसी, ऐसा पूर्वचर हेतु कृत्तिकाका उदय भया ॥६३॥

आगैं उत्तरचर लिंगकू कहै हैं,—

उदगाद्भरणिः प्राक्तत एव ॥ ६४ ॥

याका अर्थ—भरणी नक्षत्रका उदय पहले भया जातैं कृत्तिकाका उदय देखिये है। इहा मुहूर्त्ततैं पहलैं ऐसा सबध करना। काहूनैं कृत्तिका नक्षत्रका उदय देखिकरि जान्या जो यातैं मुहूर्त्त पहले भरणीका उदयका नियम है सो वह भी उदय पहले भया है। यह भरणीके उदय पीछै उदय है तातैं उत्तरचर हेतु कहिये ॥ ६४ ॥

आगै सहचर लिंगकू कहै है,—

अस्त्यत्र मातुलिंगे रूपं रसात् ॥ ६५ ॥

याका अर्थ—इस मातुलिंग कहिये बिजोराकेविर्षै रूप है जातैं रस है। काहूनै अधारेमैं मातुलिंगका रसका स्वाद लिया तब जान्या यह मातुलिंग है तामैं रूप भी है। इहा रस हेतु है सो रूपतैं सहचर है। ऐसैं अविरुद्धोपलब्धि हेतुके छह भेद कहे ॥ ६५ ॥

आगै विरुद्धोपलब्धिकू कहैं हैं,—

विरुद्धतदुपलब्धिः प्रतिषेधे तथा ॥ ६६ ॥

याका अर्थ—साध्यतै विरुद्ध जे पदार्थ तिनिसबंधी जे व्याप्य कार्य कारण पूर्वचर उत्तरचर सहचर तिनिकी उपलब्धि है सो प्रतिषेध साध्यविषैं तथा कहिये पूर्वोक्त प्रकार ही छह भेद रूप है ॥ ६६ ॥

आगै तहा साध्यविरुद्धव्याप्य उपलब्धिकू कहैं है,—

नास्त्यत्र शीतस्पर्श औष्ण्यात् ॥ ६७ ॥

याका अर्थ—इस जायगा शीतस्पर्श नांही है जातैं उष्णपणा है, इहा शीतस्पर्श साध्य है सो प्रतिषेधरूप है तातैं विरूद्ध अग्नि है तिसतैं व्याप्यस्वरूप उष्णपणा है सो शीतस्पर्शतैं विरुद्ध व्याप्योपलब्धिहेतु है ॥ ६७ ॥

आगैं विरुद्ध कार्यका उपलभ कहै हैं,—

नास्त्यत्र शीतस्पर्शो धूमात् ॥ ६८ ॥

याका अर्थ—इहा शीतस्पर्श नाही है जातै धूम है। इहा भी प्रतिषेधरूप साध्य शीतस्पर्श तातै विरुद्ध अग्नि है ताका कार्य धूम है सो हेतु है शीतस्पर्शका प्रतिषेधकू साधै है सो साध्यविरुद्धकार्योपलब्धि हेतु भया ॥ ६८ ॥

आगैं विरुद्ध कारणकी उपलब्धि कहैं है,—

नास्मिन् शरीरिणि सुखमस्ति हृदयशल्यात् ॥६९॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषै सुख नांही है जातैं याके हृदयमैं शल्य है। इहा सुखका विरोधी जो दुःख ताका कारण जो हृदयशल्य सो हेतु है सो सुखके प्रतिषेधकू साधै है। सो प्रतिषेध साध्यविषैं विरुद्ध कारणोपलब्धि हेतु भया ॥ ६९ ॥

आगैं विरुद्ध पूर्वचर हेतुकू कहैं हैं,—

नोदेष्यति मुहूर्तान्ते शकटं रेवत्युदयात् ॥ ७० ॥

याका अर्थ—इस मुहूर्त्तके अन्तमैं रोहिणी नाही उगैगा जातें रेवतीका उदय है। इहा रोहिणीके उदयतैं विरुद्ध जो अश्विनीका उदय ताकै पूर्वचर रेवतीका उदय हेतु है सो रोहिणीके उदयका प्रतिषेधकू साधै है, सो विरुद्धपूर्वचर हेतु भया ॥ ७० ॥

आगैं विरुद्ध उत्तरचर लिंगकू कहैं हैं,—

नोदगाद्भरणिर्मुहूर्तात्पूर्वं पुष्योदयात् ॥ ७१ ॥

याका अर्थ—भरणी नाही उगी है मुहूर्त्ततै पहली, जातैं पुष्यका उदय है। इहा भरणीके उदयतैं विरुद्ध पुनर्वसुका उदय है ताकै उत्तरचर पुष्यका उदय हेतु है सो भरणीका उदयका प्रतिषेधकू साधै है, सो विरुद्ध उत्तरचर हेतु भया ॥ ७१ ॥

आगैं विरुद्ध सहचर हेतुकू कहैं है,—

नास्त्यत्र भित्तौ परभागाभावोऽर्वाग्भागदर्शनात् ॥ ७२ ॥

याका अर्थ—या भींतिविषैं परले भागका अभाव नाही है जातैं वैला एक भाग देखिये है। इहा परले भागका अभावकै विरुद्ध जो तिस परले भागका सद्भाव ताकै सहचर जो वैलाभाग ताका दर्शन सो विरुद्ध सहचर हेतु है। ऐसैं विरुद्धोपलब्धि हेतुके छह भेद कहे ॥७२॥

आगैं साध्यतैं अविरुद्ध जो अनुपलब्धि कहिये अप्राप्ति ताके भेद कहैं हैं,—

अविरुद्धानुपलब्धिः प्रतिषेधे सप्तधा स्वभावव्यापककार्यकारणपूर्वोत्तरसहचरानुपलंभभेदात् ॥ ७३ ॥

याका अर्थ—साध्यतै अविरुद्धकी अनुपलब्धि सो प्रतिषेधविषैं सात प्रकार है,—स्वभाव, व्यापक, कार्य, कारण, पूर्वचर, उत्तरचर,

याका अर्थ—इस बराबर ताखडीकैविषै डाडी एक वोर ऊची नाही है जातै दूसरी वोर नींची डाडीकी अनुपलब्धि है। एक वोर नीचापणा एक वोर ऊचापणा सहचर है तिनिमै एकका निषेध साध्य एकका निषेध हेतु भया, सो सहचरानुपलब्धि हेतु है ॥८०॥

आगै विरुद्ध कार्य आदिककी अनुपलब्धि विधि विषै संभवै है ताके भेद तीन ही हैं, तिनिकू दिखावनेकू कहै है,—

विरुद्धानुपलब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् ॥ ८१ ॥

याका अर्थ—साध्यतै विरुद्धकी अनुपलब्धि सो विधिसाध्यविषै तीन प्रकार है, विरुद्धकार्यानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कार्यका अभाव, बहुरि विरुद्धकारणानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कारणका अभाव, बहुरि विरुद्धस्वभावानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका स्वभावका अभाव, इनि भेदनितैं ॥ ८१ ॥

आगैं तिनिमैं विरुद्धकार्यानुपलब्धिकू कहैं हैं,—

यथास्मिन् प्राणिनि व्याधिविशेषोऽस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः ॥ ८२ ॥

याका अर्थ,—इस प्राणीविषै रोगका विशेष है जातैं नीरोग चेष्टा कि याविषै अनुपलब्धि है। इहा व्याधिविशेषका सद्भाव साध्य है तिसतै विरोधी व्याधिविशेषका अभाव है ताका कार्य नीरोग चेष्टा ताकी अनुपलब्धि हेतु है, सो विरुद्ध कार्यकी अनुपलब्धिनामा हेतु भया॥८२॥

आगै विरुद्धकारणकी अनुपलब्धिकू कहै है,—

अस्त्यत्र देहिनि दुःखमिष्टसंयोगाभावात् ॥८३॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषैं दु ख है जातै इष्ट सयोगका याकै अभाव है। इहा दु खके विरोधी सुख ताका कारण इष्टसयोग, ताकी

अनुपलब्धि हेतु है सो दुःखके सद्भावकूं इष्टसयोगका अभाव साधै है, तातैं विरुद्धकारणानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८३ ॥

आगैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धिकूं कहै हैं,—

अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्वरूपानुपलब्धेः ॥८४॥

याका अर्थ—वस्तु है सो अनेकान्तस्वरूप है जातैं एकातस्वरूपकी अनुपलब्धि है। इहां अनेकान्तात्मकका विरोधी नित्य आदि एकान्त है सो लेना बहुरि तिसका ज्ञान नाहीं लेना जातैं एकान्तका ज्ञानकै तौ मिथ्याज्ञानरूपपणाकरि उपलभका सभव है। एकान्तका स्वरूप अवस्तुभूत है ताकी अनुपलब्धि हेतु है सो वस्तुकूं अनेकान्तस्वरूप साधै है, तातैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८४ ॥

आगैं पूछै है कि व्यापकविरुद्ध कार्यादिकका बहुरि परपराकरि अविरोधी कार्यादि लिंगनिका बहुलताकरि उपलभका सभव है सो ते भी आचार्य उदाहरणरूप किये नाहीं? ऐसी आशका होतैं सूत्र कहैं हैं,—

परम्परया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् ॥८५॥

याका अर्थ—परपराकरि जे साधन कहिये हेतु सभवते होंहि ते इनि कार्य आदि हेतुनिविषै ही अन्तर्भाव करनें ॥ ८५ ॥

आगैं तिस ही हेतुके उपलक्षणकै अर्थि दोय उदाहरण दिखावैं है,—

अभूदत्र चक्रे शिवकः स्थासात् ॥ ८६ ॥

याका अर्थ—इस चाकविषैं शिवक पहले हुवा है जातैं स्थास देखिये है। इहां ऐसा भावार्थ-जो कुमार चाकपरि माटीका पिंड धरि वासण बणावै है तब पिंडके आकार अनुक्रमतै करे है, तिनकी सज्ञा

याका अर्थ—इस बराबर ताखडीकैविषैं डाडी एक वोर ऊची नाही है जातै दूसरी वोर नींची डाडीकी अनुपलब्धि है। एक वोर नीचापणा एक वोर ऊचापणा सहचर है तिनिमैं एकका निषेध साध्य एकका निषेध हेतु भया, सो सहचरानुपलब्धि हेतु है ॥८०॥

आगैं विरुद्ध कार्य आदिककी अनुपलब्धि विधि विषैं सभवै है ताके भेद तीन ही हैं, तिनिकूं दिखावनेकूं कहैं है,—

विरुद्धानुपलब्धिर्विधौ त्रेधा विरुद्धकार्यकारणस्वभावानुपलब्धिभेदात् ॥ ८१ ॥

याका अर्थ—साध्यतै विरुद्धकी अनुपलब्धि सो विधिसाध्यनिषैं तीन प्रकार है, विरुद्धकार्यानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका कार्यका अभाव, बहुरि विरुद्धकारणानुपलब्धि कहिये साध्यतै विरुद्ध पदार्थका कारणका अभाव, बहुरि विरुद्धस्वभावानुपलब्धि कहिये साध्यतैं विरुद्ध पदार्थका स्वभावका अभाव, इनि भेदनितैं ॥ ८१ ॥

आगैं तिनिमैं विरुद्धकार्यानुपलब्धिकूं कहैं हैं,—

यथास्मिन् प्राणिनि व्याधिविशेषोऽस्ति निरामयचेष्टानुपलब्धेः ॥ ८२ ॥

याका अर्थ,—इस प्राणीविषैं रोगका विशेष है जातैं नीरोग चेष्टा कि याविषैं अनुपलब्धि है। इहा व्याधिविशेषका सद्भाव साध्य है तिसतै विरोधी व्याधिविशेषका अभाव है ताका कार्य नीरोग चेष्टा ताकी अनुपलब्धि हेतु है, सो विरुद्ध कार्यकी अनुपलब्धिनामा हेतु भया ॥८२॥

आगै विरुद्धकारणकी अनुपलब्धिकू कहैं है,—

अस्त्यत्र देहिनि दुःखमिष्टसंयोगाभावात् ॥८३॥

याका अर्थ—इस प्राणीविषैं दु ख है जातैं इष्ट सयोगका याकै अभाव है। इहा दु खके विरोधी सुख ताका कारण इष्टसयोग ताकी

अनुपलब्धि हेतु है सो दुःखके सद्भावकूं इष्टसयोगका अभाव साधे है, तातैं विरुद्धकारणानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८३ ॥

आगैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धिकूं कहैं हैं,—

अनेकान्तात्मकं वस्त्वेकान्तस्वरूपानुपलब्धेः ॥८४॥

याका अर्थ—वस्तु है सो अनेकान्तस्वरूप है जातैं एकातस्वरूपकी अनुपलब्धि है । इहा अनेकान्तात्मकका विरोधी नित्य आदि एकान्त है सो लेना बहुरि तिसका ज्ञान नाही लेना जातैं एकान्तका ज्ञानकै तौं मिथ्याज्ञानरूपपणाकरि उपलभका सभव है । एकान्तका स्वरूप अवस्तुभूत है ताकी अनुपलब्धि हेतु है सो वस्तुकूं अनेकान्तस्वरूप साधै है, तातैं विरुद्धस्वभावानुपलब्धि हेतु भया ॥ ८४ ॥

आगैं पूछै है कि व्यापकविरुद्ध कार्यादिकका बहुरि परपराकरि अविरोधी कार्यादि लिंगनिका बहुलताकरि उपलभका सभव है सो ते भी आचार्य उदाहरणरूप किये नाही ? ऐसी आशका होतै सूत्र कहै हैं,—

परम्परया संभवत्साधनमत्रैवान्तर्भावनीयम् ॥८५॥

याका अर्थ—परपराकरि जे साधन कहिये हेतु सभवते होंहि ते इनि कार्य आदि हेतुनिविषैं ही अन्तर्भाव करनें ॥ ८५ ॥

आगैं तिस ही हेतुके उपलक्षणकै अर्थि दोय उदाहरण दिखावैं है,—

अभूदत्र चक्रे शिवकः स्थासात् ॥ ८६ ॥

याका अर्थ—इस चाकविषैं शिवक पहले हुवा है जातैं स्थास देखिये है । इहा ऐसा भावार्थ-जो कुमार चाकपरि माटीका पिंड धरि वासण बणावै है तत्र पिंडके आकार अनुक्रमतै करे है, तिनकी संज्ञा

ऐसी—शिवक, छत्रक, स्थास, कोश, कुसूल इत्यादि, सो इहा काहूनै स्थास देख्या तब जान्या जो इहा पहले शिवक भया था ॥ ८६ ॥

सो इस हेतुकी सज्ञातौ कही अर अन्तर्भाव कौनमैं भया ऐसी आशका होतैं कहे हैं;

कार्यकार्यमविरुद्धकार्योपलब्धौ ॥ ८७ ॥

याका अर्थ—यह कार्यका कार्य है सो अविरुद्ध कार्योपलब्धिविषैं अतर्भाव करना। इहा सूत्रविषैं 'अन्तर्भावनीय' ऐसा उपरले सूत्रतै सबध करना । पहले शिवककार्य छत्रक भया ताका कार्य स्थास भया सो याकू अविरुद्धकार्यकी उपलब्धिविषैं अन्तर्भूत करना ॥ ८७ ॥

आगैं दृष्टान्तद्वारकरि दूसरा उदाहरण कहैं हैं,—

नास्त्यत्र गुहायां मृगक्रीडनं मृगारिसंशब्दनात्, कारणविरुद्धकार्यं विरुद्धकार्योपलब्धौ यथा ॥ ८८ ॥

याका अर्थ—इस पर्वतकी गुफाविषैं मृगका क्रीडन नाहीं है जातैं नाहर बोलै है । इहा कारणविरुद्ध कार्य है सो विरुद्धकार्यकी उपलब्धि-विषै अन्तर्भूत करना । यह सूत्र पहले सूत्रका दृष्टातरूप है, जैसैं इहा अन्तर्भाव तैसैं पहले सूत्रमैं जानना जातैं मृगक्रीडाका कारण मृग है ताका विरोधी मृगारि कहिये नाहर है तिसका कार्य सशब्दन कहिये बोलना है सो मृगकी क्रीडाके अभावकू साधै है, तातैं हेतु है। जैसै विरुद्धकार्यकी उपलब्धिविषैं अन्तर्भूत होय है तैसैं पहले कह्या सो तिसमैं अन्तर्भूत जानना ॥ ८८ ॥

आगैं बाल कहिये अल्पज्ञ ताकै ज्ञान करनेकै आर्थि पाच अवयव-निका प्रयोग है ऐसैं कह्याया सो जो व्युत्पन्न होय ज्ञानवान होय न्याय-

शास्त्रविषै प्रवीण होय, तिस प्रति प्रयोगका नियम कैसै है, ऐसी आशंका होतैं सूत्र कहैं हैं,—

व्युत्पन्नप्रयोगस्तु तथोपपत्त्याऽन्यथानुपपत्त्यैव वा ॥८९॥

याका अर्थ—न्यायशास्त्रकै विषै प्रवीण जो व्युत्पन्न ता प्रयोग कीजिये सो दोय ही प्रकार है—एक तौ तथोपपत्ति कहिये साध्य होतैं ही हेतुकी उपपत्ति है, दूसरा अन्यथोपपत्ति कहिये साध्यका अभाव होतैं हेतुकी अनुपपत्ति ही है, ऐसैं दोय प्रकार है, इनिमैं एकका प्रयोग करना। इहा व्युत्पन्न प्रयोगका समास ऐसा-जो 'व्युत्पन्नका प्रयोग'ऐसैं षष्ठी तत्पुरुष, तथा व्युत्पन्नकै अर्थि ऐसैं चतुर्थीतत्पुरुष ॥ ८९ ॥

आगैं तिसही अनुमानका रूप कहैं हैं,—

अग्निमानयं प्रदेशस्तथैव धूमवत्त्वोपपत्तेर्धूमवत्त्वान्यथानुपपत्तेर्वा ॥ ९० ॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निमान है जातैं तैसैं होतैं ही धूमवानपणाकी याभैं उपपत्ति है—धूमवानपणा बणैं है, अथवा धूमवानपणाकी अग्निमानपणा विना अनुपपत्ति है—धूमवानपणा नाही बणैं है, ऐसैं प्रयोग करना ॥ ९० ॥

आगैं पूछै है—जो साध्यसाधनतैं न्यारे ऐसे दृष्टान्त आदिककै व्याप्तिकी प्रतिपत्ति प्रति उपयोगीपणा है ये भी उपकारी है सो व्युत्पन्नकी अपेक्षा इनिका प्रयोग कैसैं नाही, ऐसैं पूछैं सूत्र कहैं है,—

हेतुप्रयोगो हि यथा व्याप्तिग्रहणं विवधीयते सा च तावन्मात्रेण व्युत्पन्नैरवधार्यते ॥ ९१ ॥

याका अर्थ—व्युत्पन्न पुरुष हेतुका प्रयोग करैं हैं ते जैसैं व्याप्ति ग्रहण होजाय तैसैं करैं हैं सो तिस व्याप्तिकूं व्युत्पन्न पुरुष तिस हेतुके

प्रयोग मात्रहीकरि अवधारण करै हैं—निश्चय करै हैं। इहा 'हि' शब्द है सो हेतु अर्थमें है तातै ऐसा अर्थ भया । जातैं तथा उपपत्ति अन्यथा अनुपपत्ति ऐसैं अन्वय व्यतिरेक रूप व्याप्तिका ग्रहणकू न उलघि करि हेतुका प्रयोग व्युत्पन्न करैं है, तातैं ताकरि ही व्युत्पन्न है ते व्याप्तिका निश्चय करि ले हैं, दृष्टान्तादिकका किछू प्रयोजन न रह्या। दृष्टान्तादिककै व्याप्तिकी प्रतिपत्ति प्रति अगपणा जैसैं नाही है तैसैं पहले कह आये, इहा फेरि काहेकू कहिये ॥ ९१ ॥

आगैं दृष्टान्त आदिका प्रयोग है सो साध्यकी सिद्धिकै अर्थि भी फलवान नाही है, ऐसैं कहै है,—

तावता च साध्यसिद्धिः ॥ ९२ ॥

याका अर्थ—तावता कहिये निपक्षविषैं जाका असभव निश्चित होय ऐसे हेतुके प्रयोगमात्र हीकरि साध्यकी सिद्धि है, दृष्टान्तादिकका प्रयोजन नाहीं ॥ ९२ ॥

आगैं इस ही कारणकरि पक्षका प्रयोग है सो भी सफल है ऐसैं दिखावते सते कहैं हैं,—

तेन पक्षस्तदाधारसूचनायोक्तः ॥ ९३ ॥

याका अर्थ—जा कारणकरि पूर्वोक्त विधानही करि व्याप्तिकी प्रतिपत्ति होय तिस कारणकरि तिसका आधारका सूचन कहिये साध्यतैं व्याप्त जो साधन ताके आधारके सूचनेंकै अर्थि पक्ष कह्या है । इस कहनेंकरि बौद्धमती कहै है ताका निराकरण किया, बौद्धमतीका श्लोकका[1]

ऐसैं परोक्ष प्रमाणके भेदनिविषैं अनुमानका निरूपण किया ।

१—ततो यदुक्त परेण,—

तद्भावहेतुभावौ हि दृष्टान्ते तदवेदिनः ।
व्याप्येते विदुषा वाच्यो हेतुरेव हि केवलः ॥ १ ॥

अर्थ—जे साध्यव्याप्त साधनकू नाही जानैं हैं तिनि प्रति पडितजन दृष्टान्तविषै साध्यसाधनभाव पक्ष हेतुभाव कहैं हैं अर पडितकू तौ एक हेतु ही कहनें योग्य है, ऐसें बौद्धमती कहै है । जो पडितनिकै तौ एक हेतु प्रयोग ही युक्त है, तिनिका निराकरण करि पक्षहेतु दोऊ प्रयोगनिका स्थापन किया है । जातै व्युत्पन्न प्रति जैसा कह्या तैसे हेतुका प्रयोग करै तौऊ पक्षके प्रयोग विना साधनकै नियमरूप आधारपणाका निश्चय न होय ॥ ९३ ॥

आगें अनुमानका स्वरूप प्रतिपादनकरि अब अनुक्रममैं आया जो आगम ताका स्वरूपकू निरूपण करनेंकू कहैं हैं,—

आप्तवाक्यादिनिबंधनमर्थज्ञानमागमः ॥९४॥

याका अर्थ,—आप्तका वाक्य आदि है कारण जाकू ऐसा अर्थका ज्ञान सो आगमप्रमाण है । तहा जो जिस उपदेशादि कार्यनिविषै अवञ्चक होय सो तहा आप्त है ऐसे आप्तके वचन, अर आदिशब्दकरि अगुली आदिकी समस्या लेनी, सो है कारण जाकू ऐसा अर्थ ज्ञानकू आगमप्रमाण कहिये । इहा इस सूत्रकी पदव्यवस्था ऐसी—जो 'अर्थज्ञान' ही कहिये तौ प्रत्यक्ष आदितै भी अर्थज्ञान होय है तिनिविषैं अतिव्याप्त होय, तातैं वाक्य निबधन कह्या । बहुरि ऐसै भी कहे हरेकके वाक्यनिबधननिविषै अतिव्याप्ति होय, तातैं आप्त कह्या, । बहुरि ऐसैं भी कहे आप्तका वाक्य काननिकरि सुण्या तब श्रावण प्रत्यक्ष मतिज्ञानरूप साव्यवहारिक प्रत्यक्ष भया तानिविषैं अतिव्याप्ति होय यातैं अर्थज्ञान ऐसा कह्या, ऐसैं आगमका लक्षण निर्दोष है । इहा अर्थका स्वरूप तात्पर्यरूप जानना ।

१—मुद्रित सस्कृत प्रतिमें 'वाक्यादि' इसके स्थानमें 'वचनादि' ऐसा पाठ है ।

बहुरि आप्तशब्दके ग्रहणतैं मीमासक आगमकू अपोरुपेय मानैं हैं ताका निराकरण है। बहुरि अर्थज्ञान पदकरि अन्यापोह कहिये अन्यके निषेधकू बौद्धमती शब्दका अर्थ मानैं हैं ताका निराकरण है, तातैं अन्यापोहज्ञान आगम प्रमाण नाहीं। तथा शब्दका केई ऐसा अर्थ मानै है–जैसैं काहूनैं कह्या जो 'घट ल्याव' तब ताकू सुणि ऐसा विचारै जो जल भरनेंकै अर्थि घट मंगावै है, यहु वाक्य ऐसैंसूचै है, ऐसा अभिप्राय कल्पि घट ल्यावै, सो ऐसा अभिप्रायकै अर्थपणाका निराकरण है, तातैं अभिप्राय सूचन आगमप्रमाण नाही।

अब मीमासकमतका विशेप जो भट्टमत तिसका पक्षी कहै है,—जो यह आगमका लक्षण असभवी है जातैं शब्दके नित्यपणा है तातैं आप्तका कह्यापणाका अयोग है। बहुरि शब्दकै नित्यपणा है जातै याके अवयव जे अक्षर तिनिकै व्यापकपणा है सर्वदेशमैं अक्षर व्याप रहे हैं, अर नित्य है तातैं शब्द भी नित्य ही है। बहुरि अक्षरनिका व्यापकपणा असिद्ध नाही है, एक जायगा उच्चारणरूप भया जो गौशब्दका गकारादिक अक्षर सो प्रत्यभिज्ञानकरि अन्य देशनिपै भी ताका ग्रहण होय है, जो एकदेशमैं सुन्या था गकारादिक सो ही अन्यदेशमैं सुन्या तब जान्या जो सो ही यह गकारादिक है। बहुरि ताका नित्यपणा तिस प्रत्यभिज्ञानकरि ही निश्चय भया जातैं कालान्तरकैविपै भी तिस ही गकारादिकका निश्चय होय है। बहुरि इस हेतुतैं भी नित्यपणा निश्चय कीजिये जो शब्दकै सकेतकी नित्यपणा विना अप्राप्ति है सो ही कहिये है,—एक शब्दका सकेत ग्रहण किया ऐसा शब्द अन्य ही श्रवणमैं आया मानिये तौ इस विना सकेत ग्रहण किये शब्दतै अर्थकी प्रतीतिरूप ज्ञान कैसै होय? जो इस शब्दका यह ही अर्थ है। अरु अर्थरूप प्रतीति लिये ज्ञान होयही है। सो इहा भी सकेतमै ऐसा जानिये है

कि पहले सुन्या था सो ही यह शब्द है, प्रत्यभिज्ञान इहा भी सुलभ है। इहा सकेतका उदाहरण ऐसा—जो गोशब्दका सकेत खुर ककुद लागूल सास्नादिक सहित अर्थ विर्षै है। बहुरि अक्षरनिकै अथवा शब्दकै नित्यपणा होतै सर्वपुरुषनिकरि सर्वकालमैं सुननेंका प्रसग आवै है, ऐसा भी न मानना—जातै शब्दकी अभिव्यक्ति कहिये श्रवणमैं आवै ऐसा प्रगट होना सदाकाल नाही सभवै है। बहुरि याका असभवका कारण यह—जो शब्दके अभिव्यजक कहिये प्रगट करनेंवाले पवन है तिनिकै अक्षर अक्षर प्रति न्यारा न्यारा पणा है तालुवा होठ आदि सबधी पवन न्यारे न्यारे हैं सो वक्ताके प्रेरें पवन चलैं तब अक्षर प्रगट होय। बहुरि ऐसा नाही जो ये पवन नाही वर्णै हैं जातैं प्रमाणतै पवन प्रसिद्ध है, सो ही कहिये है—जे वक्ताके मुखकै निकटदेशवर्त्ती पुरुष हैं ते तौ अपना स्पर्शनप्रत्यक्ष प्रमाणकरि शब्दके व्यजक पवननिकूं ग्रहण करैं ही हैं जानैं ही है, बहुरि वक्ताके दूरदेशवर्ती हैं ते मुखकै समीप तिष्ठते जे तूल कहिये रज फूफदा सूक्ष्म तिनिके चलनेंतैं अनुमानरूप जानैं है। बहुरि सुननेंवालाका कानके प्रदेशनिविषै शब्देक सुननें-की अन्यथा अनुपपत्तितैं अर्थापत्तिप्रमाणतैं भी निश्चय कीजिये है—जो पवन शब्दकू न प्रेरै तौ श्रोताका कान ताईं कैसें जाय। तातैं पवनतैं शब्दके अक्षरनिकी अभिव्यक्ती होय है तातैं सर्वकाल सर्वकरि नाही सुनिये है। बहुरि अभिव्यक्तिपक्षमैं सर्वकरि सर्वकाल सुनेंनका प्रसगरूप दोष बतावै तौ उत्पत्तिपक्षमैं भी ये दोप आवै हैं, भावार्थ—मीमासक शब्दकू नित्य मानैं है अर अभिव्यक्ति सदा नाही मानैं है। ताकी पक्षमैं अनित्यपक्षकारि उत्पत्ति माननेंवाला जो नैयायिक सो दोप बतावै तौ ताकू मीमासक कहै है—जो अनित्य पक्षमैं ये ही दोप बराबर आवै हैं। सो ही कहै है—यह शब्द है सो पवन अ

आकाशका सयोग सो तौ असमवायिकारण कहिये सहकारी कारण अर आकाश समवायिकारण इनितै दिशा देश आदिका अविभाग करि उपजता होय है सो सर्व हीकरि तौ सुननेंमै न आवै, नियमरूप न्यारे न्यारे दिशा देशमैं तिष्ठते पुरुषनिकरि सुनिये है। तैसैं ही नित्य-पक्षमैं अभिव्यज्यमान कहिये प्रकट होता सुनिये है, ऐसैं समान भया। बहुरि अभिव्यक्तिका सकरपणा भी नाही है जातैं यहभी दोऊ पक्षमैं समान है। सोही कहिये है·—जैसैं तालु आदिका सयोगतै जो वर्ण जिसतै उपजै है सो तिसहीतैं उपजै है अन्यका सयोगतैं अन्य नाही करिये है, तैसे ही अन्यध्वनिका अनुसारी तालु आदि हैं ते अन्यध्वनि-का आरभ नाही करै हैं। तातैं सकरपणाका दोष बतावै तौ यहभी समान ही आवैहै। तातै उत्पत्तिपक्ष अर अभिव्यक्तिपक्षविषैं समानपणा होतैं एक ही पक्षविषैं प्रश्नका अवसर नाही, ऐसैं मीमासक कहै है हमारा कहना सर्वेही निश्चित हैं। बहुरि किछू और कहै है,—जो अक्षरनिकै अर तिनिस्वरूप जो शब्द ताकै कूटस्थस्वरूप नित्यपणा भी मति होहु तौऊ वेदकै अनादिपरपराकरि चल्या आवनेंतैं नित्यपणा है, तातै आगमका पौरुषेय लक्षण किया ताकै अव्याप-कपणा दूषण आवै है। बहुरि यह प्रवाहकरि परपराकरि नि-त्यपणा है सो अप्रमाण स्वरूप नाही है, अबार भी याका कर्ता कोई दिखै नाही। बहुरि अतीत अनागत कालविषैं याका कर्ताका अनुमान करावनेंवाले लिंगका अभाव है। जे साध्य साधन अतीन्द्रिय हैं तिनि-का सबध सदाकाल अतीन्द्रिय है ताकू इन्द्रियनिकरि ग्रहण करनें-योग्यपणाका अभाव है, जातै ऐसैं कह्या है जो लिंग प्रत्यक्षकरि ग्रहण होय सो ही है तिसहीतै अनुमान होय है। ग्रहण किया है सबध जानैं ऐसे पुरुषकै एक देशके देखनेंतैं जो पदार्थ इन्द्रियनितै न मिलै ऐसा

परोक्ष ताका ज्ञान होय है सो अनुमान है। बहुरि वेदके कर्ताकी अर्थापत्ति प्रमाणतैं भी सिद्धि नाही होय है जातै जाके होतैं अवश्य अन्य पदार्थ आय पडै तिसतै अर्थापत्ति होय सो अनन्यथाभूत अर्थका अभाव है। बहुरि उपमान प्रमाणभी वेदका कर्त्ताका साधक नाही जातै उपमान उपमेय दोऊ ही प्रत्यक्ष नाही। यातैं केवल अभाव प्रमाण ही रह्या सो वेदका कर्त्ताका अभावहीकूं साधै हैं। बहुरि ऐसै नाही कहना—जो पुरुषका सद्भावका साधना जैसैं दु साध्य है तैसैं याका अभावका भी साधना दु साध्य है, यातैं संशयकी आपत्ति आवै जातैं तिसके कर्त्ताका अभावके साधकप्रमाण सुलभ हैं। अवार काल-विषै तौ तिसके अभावविषै प्रत्यक्ष प्रमाण साधक है। अतीत अनागत कालविषै अभावका साधक अनुमान प्रमाण है। इहा अनुमानके दोय प्रयोगके श्लोक हैं, तिनिका अर्थ—अतीत अनागत काल है ते वेदके कर्त्ताकरि रहित है जातै 'काल' ऐसा शब्दकरि कहनेंयोग्य अर्थ है जैसा अवार काल तैसे ही ते भी काल हैं ॥ १ ॥ बहुरि कोई पूछै वेदका पढना कैसे है? तौ ताकूं कहिये—जो वेदका पढना है सो सर्व ही वेदके पढनेंपूर्वक है पहले पढे हैं ते अन्यकूं पढावै हैं, ऐसैं ही परि-पाटी चली आवै है जातैं "वेदका अध्ययन" ऐसे पदकरि वाच्य कहिये कहनें योग्य अर्थ है जैसैं अवार कोई पढै है सो ऐसै ही पढनेकी परिपाटी है ॥ २ ॥ बहुरि तैसैं ही अन्य प्रयोग कहै है,—वेद है सो

(१) तथा च—

अतीतानागतौ कालौ वेदकारविवर्जितौ।
कालशब्दाभिधेयत्वादिदानीन्तनकालवत् ॥ १ ॥
वेदस्याध्ययनं सर्वं तदध्ययनपूर्वकम्।
वेदाध्ययनवाच्यत्वादधुनाध्ययनं तथा ॥ २ ॥

अपौरुषेय है जातै सप्रदायका अविच्छेद होतैं जाका कर्त्ताका स्मरण नाही, कथनी नाही, वेदके सप्रदायीकी परिपाटीमैं काहूनै कर्त्ता देख्या नाही, सुन्या नाही, कह्या नाही, जैसैं आकाशका कर्त्ता काहूनैं कह्या नाही तैसैं। बहुरि अर्थापत्ति प्रमाण है ताकरि वेदके कर्त्ताका अभाव निश्चय कीजिये है जातैं वेदकी प्रमाणता है लक्षण जाका ऐसा अनन्यथाभूत पदार्थका दर्शन कहिये सद्भाव देखिये है। जातै धर्म आदि अतींद्रिय पदार्थ है विषय जाका ऐसा जो वेद ताका अल्पज्ञ पुरुषनिकरि करनेंका असमर्थपणा है। अर अतींद्रिय पदार्थका देखनेवाला पुरुषका अभाव ही है तातैं वेदका प्रमाणपणा अपौरुषेयपणाहीकू सावै है। ऐसै मीमासकनैं अपना वेदकै अपौरुषेयपणाकू दृढ किया पौरुषेय आगमकू दूषण दिया।

अब आचार्य याका प्रत्युत्तरकी विधि करैं है—प्रथम तौ जो कह्या कि अक्षरनिकै व्यापीपणाविषैं अर नित्यपणा विषैं प्रत्यभिज्ञान प्रमाण है सो यह तौ असत्य है, तिसविषैं ज्ञान प्रमाण होय तौ एकवर्णका अनेक देशविषैं सत्त्व होतै खड खडरूप प्रतिपत्ति होय सो तौ नाही है। एकदेशमैं एकवर्ण अखड ग्रहण होय है। दूसरे देशमै दूसरा तिस सारिखा अखड न्यारा ग्रहण होय है, सो जो अक्षर सर्वदेशमैं व्यापक होय तौ एक ही देशमैं एकवर्णका समस्तपणाकरि ग्रहण कैसै वणै, नाही वणै। जो ऐसै होय एक ही देशमैं अक्षर समस्तपणा करि ग्रहण होय तौ व्यापक न ठहरै, ऐसे भी व्यापकपणा मानिये तौ घट आदिककै भी व्यापकपणाका प्रसग आवै। ऐसैं भी कह्या जाय जो घट सर्वगत है जातै नेत्र आदिके निकटतैं अनेक देशविषैं प्रतीतिमै आवै है। बहुरि जो कहै घटके उपजावनहारे माटीके पिंड अनेक देखिये हैं तातैं अनेकपणा ही है। तथा वड़ा घट छोटा घट

ऐसा देखिये है तौ यह तौ अक्षरनिविषै भी समान है, तहा भी वर्ण वर्ण प्रति न्यारे न्यारे तालुवा आदिक कारणके समूह तथा तीव्र मद आदि धर्म भेदका सभवका अविरोध है। वहुरि तालुवा आदिककै अक्षरनिका व्यजकपणा आगै इहा ही निषेध करसी, तातैं यह कथन इहा ही रहौ। बहुरि कहै है—जो अक्षरनिकै व्यापीपणा होतै भी सर्वक्षेत्रमैं सर्वस्वरूपकरि प्रवृत्तिसहित हैं, तातै तुम कहो सो दोष नाही। ताकू आचार्य कहै है,—ऐसैं होतै तौ सर्वथा एकपणाका विरोध आवै है जातै देशका भेदकरि एककाल सर्वस्वरूपकरि सर्वक्षेत्रमैं प्रतीतिमैं आवै ताकै एकपणा बणैं नाही, यामै प्रमाणविरोध है। ताका प्रयोग —गो शब्दका गकार आदि अक्षर हैं ते प्रत्येक अनेक ही है जातै एककाल भिन्न न्यारे न्यारे क्षेत्रनिविषै सर्वस्वरूपकरि जैसो उच्चारण है तैसो ही समस्तपणाकरि प्रत्येक ग्रहण होय है, जैसैं घट आदि न्यारे न्यारे देखिये है तैसै। बहुरि कहै कि सामान्य पदार्थ सर्व जायगा प्रतीतिमैं आवै है अर एक है ताकरि हेतुकै व्यभिचार आवैगा, तौ इहा सो व्यभिचार नाही है, सदृश परिणामस्वरूप सामान्यकै भी अनेकपणा है। बहुरि चन्द्रमा सूर्य आदिक एककाल अनेक क्षेत्रमै तिष्ठते पुरुष पर्वत आदि अनेक प्रदेशनिमैं तिष्ठयापणाकरि अनेक न्यारा न्यारा देखैं हैं अर चन्द्रमा सूर्य एक एक ही है तिनिकरि भी व्यभिचार नाही है जातै ते अतिदूरवर्त्ती है एकदेशमैं तिष्ठैं हैं तौऊ भ्रातिकै वशतै अनेक क्षेत्रमैं न्यारे न्यारे तिष्ठे दीखैं हैं। सो जो भ्रान्तिरहित सत्यार्थ होय तातैं भ्रातिसू दीखे तिनिकरि व्यभिचारकी कल्पना करना युक्त नाही। बहुरि जलके पात्रनिविषै चन्द्रमा सूर्य आदिका प्रतिबिंब न्यारा न्यारा दीखै अर चन्द्रमा सूर्य एक एक ही हैं, अर ते प्रतिबिंब भ्रान्तिरूप भी नाही तिनिकरि भी व्यभिचार नाही है जातै चद्रमा सूर्य आदिका

प्रकाशकी समीपताकी अपेक्षाकरि जल तैसैं ही चन्द्रमा सूर्य आदिके आकाररूप परिणमि जाय है यातैं न्यारा न्यारा प्रतिबिंब दीखैं हैं ते अनेक है, तातैं अनेक प्रदेशविषै एक काल समस्तस्वरूपकरि ग्रहणमैं आवै ऐसा एक विषयका असभाव्यमानपणातैं तिसविषै प्रवर्त्तमान जो प्रत्यभिज्ञान सो प्रमाण नाही यह निश्चय भया। तैसैं ही नित्यपणा भी प्रत्यभिज्ञानकरि नाही निश्चय होय है जातैं नित्यपणा है सो एक वस्तुकै अनेकक्षणमैं व्यापीपणा है, सो ऐसा नित्यपणा तौ वीचिमैं—अन्तरालविषै सत्ताका ग्रहण विना निश्चय न कह्या जाय। बहुरि प्रत्यभिज्ञानहीका बलकरि अन्तरालविषैं सत्ता न जानी जाय है—वीचिमैं सत्ताका सभव नाही सिद्ध होय है जातैं प्रत्यभिज्ञानके सादृश्यतैं भी सभवनेंका अविरोध है। बहुरि घट आदिविषैं भी ऐसा प्रसग नाही आवै है जातै ताकी उत्पत्तिविषैं अन्य अन्य माटीके पिडस्वरूप कारणका असभवपणाकरि अतरालविषैं सत्ताका साधनेंका समर्थपणा है, भावार्थ—पहले घटकू देख्या पीछैं तिसहीकू फेरि देख्या तब एकत्वप्रत्यभिज्ञान भया जो यहु घट सो ही है, तहा कहै याके अन्तरालमैं सत्ता कैसैं सधी? ताका समाधान किया है—जो अन्य अन्य माटीके पिडतै घट उपजै ताकी जुदी सत्ता होय, इहा अन्य माटीका पिडतैं उपजना नाही तातैं तिसहीकी सत्ता सधी। अर शब्दविषैं ऐसैं नाही—पहले शब्द सुन्या ताका कारण अन्य ही था फेरि सुन्या ताका कारण अन्य है। तातैं अपूर्व कारणनिका व्यापार सभवनेंतै अन्तरालविषैं सत्ताका सभव नाही है। बहुरि जो और कह्या—सकेतकी अन्यथा अप्राप्ति है जो शब्द नित्य न होय तौ पदार्थविषैं सकेत नाही वणैं। सो ऐसा कहना भी पुरुषका स्वरूप विना जाण्या कहै है जातै अनित्यविषै भी यहु जोडना वणैं है। सो ही कहै है—

ग्रह्या है सकेत जाका ऐसा जो दड ताका नाश होतै अव अगृहीतसकेतदड अन्य ही ग्रहणमें आवै है। ऐसैं होतै तिस अगृहीतसकेतदडतै दडी ऐसा कहना न होय, तैसैं ही ग्रहण करी है व्याप्ति जाकी ऐसे धूमका नाश होतैं अन्य धूमके देखनेतै विना व्याप्ति ग्रहण अग्निका ज्ञानका अभाव होय। सो दडीका व्यपदेश तथा धूमतैं अग्निका ज्ञान होय ही है, अर ते अनित्य है तातैं अनित्यविषै सकेत होय ही है। बहुरि इहा कहै—जो दडी इत्यादिविषैं तौ सदृशपणातैं यह प्रतीति होय है तातै हमारी पक्षमै दोष नाही, तौ इहा शब्दविषै भी सदृशपणातैं अर्थकी प्रतीति होतै कहा दोष है? शब्दकू नित्य मानि खोटा अभिप्राय क्यों करना, ऐसैं मानें अन्तरालविषै अदृष्ट सत्त्वकी भी कल्पना न होय। बहुरि जो और कह्या कि—शब्दके व्यजक पवनकै न्यारा न्यारापणा है तातैं एक काल सुनना न होय है, सो भी कहना विना सीखे कह्या है,—समान एक कर्णइन्द्रियकरि ग्रहणमें आवै, अर समान ही जाका उदात्त अनुदात्तादि धर्म, अर समान ही क्षेत्रविषै तिष्ठते विषय विषयी कहिये कर्ण इद्रिय अर शब्द, तिनिविषैं न्यारे न्यारे पवनकरि न्यारे न्यारे ग्रहणका अयोग है एक ही काल ग्रहण चाहिये। सो ही कहै है,—श्रोत्र इन्द्रिय है सो समान क्षेत्रविषैं तिष्ठता समान इन्द्रियकरि ग्रहणयोग्य समान ही जिनिका धर्म, ऐसे जे गकारादि शब्दनामा पदार्थ तिनिका ग्रहणकै अर्थि न्यारा न्यारा सस्कार करनेवाला पवनकरि सस्कार करने योग्य नाही होय है, एक ही पवन सस्कारकर्तै गकारादि पदार्थका ग्राहक होय है जातैं श्रोत्र है सो इन्द्रिय है, इन्द्रिय हैं ते ऐसे ही हैं, जैसैं नेत्र इन्द्रिय है सो अजनादिकका सस्कार एकही करि अपना सर्व विषयकू ग्रहण करै है, तिसविषैं न्यारे न्यारे अजनादिकके सस्कार

नाही चाहै है। बहुरि शब्द हैं ते भी न्यारे न्यारे सस्कारक जे पवन तिनिकरि सस्कार करने योग्य नाही हैं जातैं समान इन्द्रियकरि ग्रहण करने योग्य समान धर्म स्वरूप समान क्षेत्रमै तिष्ठे, ऐसे होतैं एककाल इद्रियकरि सवधरूप होय हैं जैसै घट आदि होय हैं। वहुरि कहै-जो उत्पत्तिपक्षमैं भी यह दोप समान है सो ऐसैं नाही है जातैं माटीके पिंड अर दीपक इनिके दृष्टान्तकरि कारक व्यजक पक्षमैं विशेपकी सिद्धि है। विद्यमान घटका माटीका पिंड तौ कारक है अर दीपक ताका व्यजक है, परन्तु ऐसैं विशेप है—जो एक घट करनेंकै अर्थि लिया एक माटीका पिंड सो तौ एक ही घटकू करै है अन्यकू नाही करै है, अर दीपक एक घटके प्रकाशनेकै अर्थि जोया सो तिस घटकू प्रकाशै अर अन्यकू भी प्रकाशै। तैसैं शब्दका व्यजक एक पवन सो एककाल प्रकाशै तव सर्व शब्दका श्रवण एककाल ही चाहिये सो नाही है। यह दूपण है सो अभिव्यक्तिपक्षमै आवै अर उत्पत्तिपक्षमैं तौ नाही आवै। तातै बहुत कहनेकरि पूरी पडो—शब्दकै उत्पत्ति पक्ष ही मानना योग्य है।

बहुरि और कह्या—जो प्रवाहके नित्यपणाकरि वेदकै अपौरुपेयपणा है, तहा दोय पक्ष पूछने? शब्दमात्रकै अनादि नित्यपणा है कि केई विशिष्टशब्दनिकैं अनादि नित्यपणा है? जो कहैगा शब्दमात्रकै है तौ जे शब्द लौकिक हैं ते ही वेदके हैं, तातैं यह कहना तौ अल्प ही भया जो वेद तौ अपौरुपेय है अर लौकिक शब्द अपौरुपेय नाही?, सर्व ही शास्त्रनिकै अपौरुपेयता आवैगी। बहुरि कहैगा—जो विशिष्ट अनुक्रमरूप चले आये हैं ते ही शब्द अनादि नित्यपणाकरि कहिये हैं, तौ इहा भी दोय पक्ष पूछनें—ते शब्द जिनिका अर्थ जाननेंमैं आया ऐसे हैं कि जिनिका

अर्थ जाननेंमैं न आया ऐसे हैं ? जो कहैगा—उत्तर पक्ष है अर्थ जाननेंमैं न आया ऐसे हैं तौ तिनिकै अज्ञानस्वरूप अप्रमाणताका प्रसग आवैगा। वहुरि कहैगा आद्यका पक्ष है जो अर्थ जाननेंमैं आया ऐसे हैं तौ पूछिये तिनिका व्याख्यान करनेंवाला अल्पज्ञ है कि सर्वज्ञ है ? जो कहैगा—अल्पज्ञ है तौ जिनि वेदवाक्यनिका सबध कठिन है जाननेंमैं न आवै तिनिका अर्थ अन्यथा भी होय जाय तब मिथ्यात्वस्वरूप अप्रमाणपणा होय। सो ही कही है, ताका श्लोकका अर्थ—मेरा यह अर्थ है अर यह नाही है ऐसा शब्द ही तौ आप कहै नाही, पुरुप ही शब्दका अर्थ कल्पै हैं अर पुरुप हैं ते रागादि दोपनिकरि दूपित हैं। इहा विशेप ऐसा जो अल्पज्ञका कह्या अर्थमैं निशेप नाही, तातैं काहूनै कह्या जो वेदका वचन है "अग्निहोत्र जुहुयात स्वर्गकाम" ताका अर्थ—ऐसा जो स्वर्गका इच्छुक पुरुप है सो अग्निहोत्रनैं होमै। तब काहूनैं कह्या—याका यह अर्थ नाही, याका अर्थ ऐसा है—जो अग्नि है ऐसा श्वानका नाम है ताका होत्र कहिये मास सो 'जुहुयात्' कहिये खाय जो स्वर्गका इच्छुक होय सो तथा अग्नि ऐसा नाम ही श्वानका है ताका होत्र कहिये मास सो खाय ऐसा भी अर्थ क्यों न होय। ये अर्थ अल्पज्ञके कहे कहिये तौ ऐसैं ही सर्व ही अर्थ अल्पज्ञके कहे हैं ते प्रमाण कैसै होहिं। अथवा यामैं सशय उपजै जो याका कैसा अर्थ है तब अप्रमाणपणा आवै। वहुरि दूसरा पक्ष जो—वेद सर्वज्ञकरि जान्या अर्थ रूप है सो ही अनादिपरपरातैं चल्या आवै है, तौ धर्म जे

१-तदुक्तम्—

अयमर्थो नायमर्थ इति शब्दा वदन्ति न।
कल्प्योऽयमर्थ पुरुपैस्ते च रागादिविप्लुताः ॥१॥

यज्ञादिक तिनिविषैं चोदना कहिये वेदवाक्यमैं प्रेरणा तिष्ठै है सो ही हमारै प्रमाण है, ऐसा कहना तौ बाध्या गया । बहुरि अतीन्द्रियार्थ प्रत्यक्ष करनेंविषै समर्थ जो पुरुष सर्वज्ञ ताका सद्भाव होतैं तिसकै वचनकै भी चोदनाकी ज्यों अर्थ निश्चय करावनेंवालापणाकरि प्रमाण-पणातैं यह वचन तौ वेदकै पुरुषका कियापणाका अभावकी सिद्धिका प्रतिबधक होय, भावार्थ—सर्वज्ञ ठहऱ्या तब अर्थका निश्चय ताका वचनसू होयहीगा अर वेदकू अपौरुषेय मानना वृथा होयगा । बहुरि कहै—जो वेदका वक्ताकै अल्पज्ञपणा होतैं भी यथार्थ व्याख्यानकी पर-पराकरि सप्रदायका सतानका विच्छेद नाही होनेंकरि वेद सत्यार्थ ही मानिये है ? ताकू कहिये ऐसैं नाही जातैं अल्पज्ञकै अतीन्द्रिय पदार्थनि-विषै नि·सन्देह व्याख्यानका अयोग है, जैसैं अधाकरि खैंच्या जो अधा ताकरि आनिष्ट देशकू छोडि वाछित देशका मार्गविषै प्राप्त करना बणैं नाही । बहुरि किछू विशेष कहै है—जो अनादितैं व्याख्यानकी पर-परातैं चल्या आया कहै तौऊ वेदका अर्थकू सबधकू ग्रहणकरि पाछैं भूलनेंतैं तथा वचनकी प्रवीणता बिना औरसू और अर्थ कहनेंतैं तथा खोटे अभिप्रायतैं व्याख्यानका अन्यथा करनेंतैं निर्बाध तत्वका प्रकाश-नका अयोगतैं अप्रमाणता ही होय । सो ही देखिये है,—अबारके पडित भी ज्योतिषशास्त्रादिकविषैं रहस्य यथार्थ जानते भी खोटे अभि-प्रायतैं अन्यथा व्याख्यान करैं हैं । बहुरि केई जानते भी वचनकी प्रवीणता विना नीकै कहै नाही जानैं ते अन्यथा उपदेश करै हैं । बहुरि केई वाच्यवाचकका सबध भूलिकरि अयथार्थ कहैं है । जो ऐसैं न होय तौ वेदके वाक्यार्थविषैं भावना विधि नियोगरूप अर्थका अन्य-थापणाकरि विवाद कैसै होय । भट्टके शिष्य तौ भावनाकू वाक्यार्थ मानैं हैं । वेदान्ती विधिकू वाक्यार्थ मानैं है । प्रभाकरवाला नियोगकू वा-

यथार्थ मानै है। बहुरि मनु याज्ञवल्क्य आदि ऋषिनिकै श्रुतिका अर्थकै अनुसार स्मृतिके निरूपणविषै अन्य अन्य प्रकारपणा कैसें होय। तातैं प्रवाहपरिपाटीनिविषैं भी वेदकैं अयथार्थपणा ही है। यातै यह ठहरी जो अतीतानागतकालविषै वेदका कर्त्ता नाही। काल शब्दवाच्यपणा हेतु-करि ऐसे कह्या सो भी अपनें मतका निर्मूल करनेंका हेतुपणाकरि विपरीत साधनतै यहु हेतु हेत्वाभास ही है। सो ही कहिये है, इहा श्लोक है, ताका अर्थ—

अतीत अनागत काल है ते वेदके ज्ञाताकरि रहित हैं जातैं काल शब्दका अर्थ है जे कालशब्दकरि कहिये ते ऐसे ही हैं जैसैं अबार का काल। बहुरि विशेष कहैं हैं कि कालशब्दका अर्थ अतीत अनागत कालका ग्रहण होतै होय सो तिनिका ग्रहण प्रत्यक्षतैं होय नाही जातैं ते अतीत अनागत काल इन्द्रियगोचर नाही। अर अनुमानतैं तिनिका ग्रहण होतैं भी साध्यकरि तिनिका सम्बन्ध निश्चय करनेंकू नाही समर्थ हूजिये है जातैं प्रत्यक्षतैं ग्रहण किया साधनकैही साध्यका सबंध मानिये है, सो है नाही। बहुरि मीमासक कालनामा द्रव्य भी नाही मानैं है। बहुरि कहै—जो अन्यवादी काल मानैं है तिनिकी ही मानि लेकरि तिनिकू कह्या है काल वेदकर्त्ताकरि रहित है, ऐसा मानो—इनिकै व्याप्यव्यापकभाव है, सो काल व्याप्यकू मानों हो तौ वेदकर्त्ताकरि रहितपणा व्यापककू भी मानों ऐसा प्रसगसाधनतै दोष नाही। ताकू कहिये—जो परकै तौ इहा साध्य साधन कहिये वेदके कर्त्ताकरि रहितपणाकै अर कालकै व्याप्यव्यापकपणाका अभाव है। अबार भी

(१) अतितानागतो कालो वेदार्थज्ञविवर्जितौ।
कालशब्दाभिधेयत्वादधुनातनकालवत्॥

देशान्तरविषैं वेदका कर्त्ता अष्टकदेव आदिका बौद्धमती आदिनिकैं अंगीकार है। बौद्धमती वेदका कर्त्ता अष्टकदेवकू मानैं है। वैशेषिकमती ब्रह्माकू मानैं है। जैनी कालासुरकू मानैं हैं। बहुरि जो आरंभी कह्या—वेदका अध्ययन वेदका अध्ययन पूर्वकही है इत्यादिक, सो भी विपक्ष ने पुरुषके किये शास्त्र तिनिका अध्ययन ताविषैं भी समान है। जैसैं भारतका अध्ययन है सो सर्वही गुरुके अध्ययनपूर्वक है जातैं तिसके अध्ययन पद करिही वाच्य अर्थ है जैसैं अवार अध्ययन कीजिये है ऐसैं समान जानना। बहुरि और कह्या—जो वदका कर्त्ताका सप्रदायमैं कथन नाहीं किसीकू यादि नाही जो फलाणें कर्त्ताका किया है ऐसा ही सप्रदाय चल्या आवै है ताका विच्छेद भी नाही हुवा। तहा कहिये—जो इस हेतुमैं जीर्णकूप आरामवन आदिकरि व्यभिचारके दूर करनेकू सप्रदायका न होना ऐसा विशेषण किया तौऊ विशेष्य जो कर्त्ता यादि नाही ऐसा है सो विचार किये याका ही अयोग है तातैं यह हेतु नाही। यामैं तीन पक्ष पूछिये—कर्त्ताका यादिपणा वादीकै नाही है कि प्रतिवादी कै नाही है कि सर्वही कैं नाही है? जो वादिकै नाही है तौ यामै दोय पक्ष पूछिये—कर्त्ताका स्मरणका अभाववादीकू कर्त्ता नाही दीख्या तातै है कि कर्त्ताके अभावहीतैं है, जो कहै कर्त्ता दीख्या नाही तातैं है तौ पिटकत्रय बौद्धका ग्रथ है, ज्ञानपिटक, वदनपिटक, चैत्यपिटक, तिनिकै भी अपौरुषेयपणा आया। बौद्धकै शिष्यनिभी तिनिका कर्त्ता देख्या

(२) भारताध्ययन सर्वं गुर्वध्ययनपूर्वकम्।
तदध्ययनवाच्यत्वादधुनाध्ययन यथा॥

इस श्लोकका अर्थ वचनिकामें लिखानो है परन्तु जैसे अन्यत्र "ताका श्लोकका अर्थ" ऐसा लिखकर वादमें लिखा है वैसे नहीं लिखा है।

नाही। अर कहै बौद्ध कर्त्ता मानैं है तातैं अपौरुषेयपणा नाही तौ इसही हेतुतें वेदविषै अपौरुषेयपणा मति होहु। बहुरि जो कहै कर्त्ता के अभावतैं है तौ जे कर्त्ताका अभाव कर्त्ताके अस्मरण तैं मानै तौ यामैं इतरेतराश्रय दूपण आवै है, कर्त्ताका अभाव तैं तौ तिसका अस्मरण सिद्ध होय अर तिसके अस्मरणतै तिसका अभाव सिद्ध होय। बहुरि कहै—कि प्रमाणपणाकी अन्यथा अप्राप्ति तैं तिसका अभाव सिद्ध होय है जो कर्त्ता होय तौ प्रमाणपणा न होय ऐसैं इतरेतराश्रय नाही आवै है। तौ ऐसै नाही है जातैं अप्रामाणका कारण जो पुरुपविशेष ताहीका प्रामाण्यकरि निराकरण है, पुरुषमात्रकातौ निराकरण है नाही। बहुरि कहै जो अतीन्द्रिय पदार्थके देखनें वालाका अभावतैं अन्य पुरुषविशेषकै प्रमाणपणाका कारणपणाकी अप्रासि है यातैं सर्वथा पुरुपका अभाव सिद्धही है। तौ ताकू कहिये—जो सर्वज्ञका अभाव काहे तैं है? जो कहै प्रमाणपणाकी अन्यथा अप्राप्ति तैं सर्वज्ञका अभाव है तो इतरेतराश्रयपणा है, बहुरि कहै कर्त्ताके अस्मरणतै है तौ चक्रकनामा दूपण है। वेदविषैं कर्त्ताके अस्मरणतैं तौ सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय, बहुरि सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय तब वेदकैं प्रमाणपणाकी अन्यथा अनुपपत्ति सिद्ध होय ओर जब प्रमाणापणाकी अन्यथा अनुपपत्ति सिद्ध होय तब कर्त्ताका अभाव सिद्ध होय तिसकू सिद्ध होतैं कर्त्ताका अस्मरण सिद्ध होय ताके सिद्ध होतें फेरि सर्वज्ञका अभाव सिद्ध होय, ऐसैं चक्रकका प्रसंग होय है। बहुरि कहै सर्वज्ञका अभाव अभावप्रमाणतैंसिद्ध होय है। तौ ताकू कहिये—जो सर्वज्ञका साधक अनुमान प्रमाणका प्रतिपादन पहले किया ही था तातैं अभाव-प्रमाणके उत्थानका अयोग है जातैं पाच प्रमाण भावरूप हैं तिनिका अभाव होय तब अभाव प्रमाणकी प्रवृत्ति होय, ऐसैं मीमांसकनै कह्या

है, ताका श्लोक है ताका अर्थ —"जिस वस्तुके स्वरूपविषैं पाच प्रमाण न उपजै तहा वस्तुका अभावका ज्ञान होनेंकै अर्थि अभावकै प्रमाणता है, ऐसै कह्या है"। तातै वादीकै तौ वेदका कर्त्ताका अस्मरण नाही वणै है। बहुरि दूजा पक्ष जो प्रतिवादीकैं है ऐसें कहे। तौ ताकै भी नाही वणैं है जातैं प्रतिवादी कर्त्ता वेदका स्मरण करैही है। बहुरि सर्वहीकैं कहै तौ भी नाही वणै है जातै वादीकै वेदका कर्त्ताका अस्मरण है तौऊ प्रतिवादीकै स्मरण है॥ बहुरि मीमासक कहै है— जो प्रतिवादी वेदविषै अष्टकदेवकू आदि देकरि बहुत कर्त्ता स्मरैं हैं, यातै स्मरणकै विवादतै प्रमाणता नाही है, तातैं सर्वकै कर्त्ताका अस्मरणही सिद्ध होय है। ताकू कहिये—जो कर्त्ताका विशेषविषैंही विवाद है कर्त्तासामान्यविषैंतौ विवाद है नाही यातै सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण असिद्ध है। बहुरि सर्व प्राणीनिके ज्ञानका निज्ञानकरि रहित जो अल्पज्ञ पुरुष सो सर्वकै कर्त्ताका अस्मरण कैसैं जानैं। तातैं वेदविषैं अपौरुषेयपणाका स्थापनेंका असमर्थपणा है। तातै आगमका लक्षण किया ताकैं अव्यापकपणा नाही है। बहुरि असभवीपणा दूषणभी नाही है पौरुषेयपणा साधनेंविषैं प्रमाण बहुत हैं, सोही कहै है, वृहत्पचनमस्कारनामा स्तोत्र पात्रकेसरीकृत है ताकी काव्यका अर्थ,— जातैं जन्ममरणसहित जे ऋषि तिनिके गोत्र आचरण आदि नाम

१—प्रमाणपञ्चक यत्र वस्तुरूपेण जायते।
वस्तुसत्तावबोधार्थं तत्राभावप्रमाणता॥ इति

२—सजन्ममरणर्षिगोत्रचरणादिनामश्रुते—
रनेकपदसहतिप्रतिनियमसन्दर्शनात्।
फलार्थिपुरुषप्रवृत्तिनिवृत्तिहेत्वात्मनां
श्रुतेश्च मनुसूत्रवत्पुरुषकर्तृकैव श्रुति॥ इति

वेदमैं कहे हैं, बहुरि अनेक पदनिका समूहरूप न्यारे न्यारे छंदरचना वेदमैं देखिये है, बहुरि फलके अर्थी जे पुरुष तिनिकी प्रवृत्ति निवृत्तिके कारण स्वरूप वेदमै कहे है ते सुनिये हैं "स्वर्गका वाछक अग्निष्टोम-करि पूजे" इत्यादिक तौ प्रवृत्तिके वाक्य, बहुरि "कादा न खाइये, दारू न पीजे गऊकू पगतैं स्पर्शना नाही," इत्यादि निवृत्तिके वचन वेदमैं है जैसैं मनु ऋषिके सूत्रमै हैं तैसं, तातै वेद है सो पुरुपका ही किया है। ऐसा भी वचन हमारे आचार्यनिका है। बहुरि अपौरुषेयपणा वेदकै होतैं भी प्रमाणता नाही वणैं है जातै प्रमाणपणाका कारण जे गुण तिनिका वेदविषै अभाव है। बहुरि मीमासक कहै है—जो गुण-निकरि किया ही तौ प्रमाणपणा नाही, दोपका अभावकरि भी प्रमाण-पणा है, सो दोपका आश्रय पुरुप है ताकै कर्त्तापणाका अभाव होतै भी वेदकै प्रमाणपणा निश्चय कीजिये है, गुणके सद्भावहीतै नाही है सो ही हमारे कही है, ताका श्लोकका अर्थ—शब्दकै विषै दोप उपजै है सो तौ वक्ताके आधीन है ऐसा निश्चय है, बहुरि कहू दोपका अभाव है सो गुणवान वक्तापणाकै आधीन है, जातैं वक्ताके गुणनि-करि दूर किये जे दोप ते फेरि शब्दमै आवै नाही, बहुरि यह पक्ष समीचीन है जो वक्ताका अभावकरि तिस वक्ताकै आश्रय जे दोप ते शब्दमैं न होंहि। ताका समाधान आचार्य करै हैं—जो यह कहना भी अयुक्त है जातैं हमारा अभिप्राय मीमासकनै जाण्या नाही, जातैं हमनैं तौ वक्ताके अभाव होतै वेदकै प्रमाणपणाका अभाव है ऐसैं कह्या

(१) शब्दे दोषोद्भवस्तावद्वक्त्राधीन इति स्थितम्।
तदभाव क्वचित्तावद्गुणवद्वक्तृकत्वत ॥ १ ॥
तद्गुणैरपकृष्टाना शब्दे सक्रात्यसभवात्।
यद्वा वक्तुरभावेन न स्युर्दोषा निराश्रया. ॥ २ ॥

नाही। हमनैं तौ ऐसै कह्या है—जो वेदके व्याख्यान करनेवालेनिकै अतीन्द्रिय पदार्थनिका देखना आदि गुणनिका अभाव होतैं दोषनिका अभाव नाही, तातै वेदविषैं भी दोषनिका सद्भाव आवै, तब प्रमाणपणाका निश्चय नाही, ऐसैं कहै है। तातैं अपौरुषेयपणा होतैं भी वेदकै प्रमाणपणाका निश्चयका अयोग है। तातै इस अपौरुषेयपणा रूप वेद करि हमारा आगमके लक्षणकें अव्यापीपणा अर असभवीपणा नाही है। यातै बहुत कहनेंकरि पूरी पडो ॥ ९४ ॥

आगै बौद्धमती कहै है जो शब्दकैं अर अर्थकैं संबंधका अभाव है तातै शब्द अन्यका निषेधमात्र कहनेवाला है, नाम जाति गुण क्रिया आदि स्वरूप शब्दका अर्थ नाही है तातैं शब्दकै आप्तप्रणीतपणा होतैं भी यातै सत्य अर्थका ज्ञान कैसैं होय? ऐसै तर्क होतैं सूत्र कहैं है,—

सहजयोग्यतासंकेतवशाद्धि शब्दादयो वस्तुप्रतिपत्तिहेतवः ॥ ९५ ॥

याका अर्थ—सहज कहिये स्वभावभूत योग्यता कहिये वस्तुस्वरूप विषै पुरुषका अभिप्रायका नियम "जैसै पृथु वृध्नोदर आकाररूप माटीका रूप है सो घट है" ऐसैं संकेतके वशतै 'हि' कहिये प्रकटपणैं ते पूर्वोक्त आप्तप्रणीत शब्द अर आदि शब्दतैं अगुली आदिकी समस्या हैं ते वस्तुकी प्रतिपत्ति कहिये ज्ञान ताकू कारण है ॥ ९५ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं,—

यथा मेर्वादयः सन्ति ॥ ९६ ॥

याका अर्थ—जैसैं मेरु आदिक है ते हैं। इहा बौधमती कहै है—जो जे ही शब्द तौ अर्थके होतै देखे ते ही शब्द अर्थके अभाव

र्ं भी देखिये हैं तौ अर्थके कहनहारे शब्द कैसै ? ताकू आचार्य
ह हैं—यह भी कहना अयुक्त है जातैं जे अर्थके कहनहारे शब्द
ही है तिनितैं अर्थके कहनहारे शब्द अन्य ही हैं, सो अन्यकै व्यभि-
र होतैं अन्यकै कहना युक्त नाही, जातैं यामैं अतिप्रसग दूपण आवै
। जो ऐसैं न मानिये तौ इन्द्रजालके घडेमैं धूम होतैं भी अग्नि नाही
र्ं व्यभिचार होतैं पर्वत आदिके विषैं धूम होय ताकै भी व्यभिचारका
ग ठहरे। वहुरि जो कहै—यत्नतैं परीक्षा किया कार्य कारणकू
घि वर्त्ते नाही, तौ ऐसैं इहा भी समान जानना, जो शब्द जिस
र्मैं होय तिसकू ही कहै है नीकैं परीक्षा किया शब्द है सो अर्थकू
ही व्यभिचरै है। ऐसै होतैं अन्यका निषेधकै शब्दार्थपणाकी कल्पना
सो प्रयासमात्र ही है। वहुरि अन्यापोह कहिये अन्यका निषेध
दका अर्थ नाही ठहेरे है जातैं प्रतीतिविरोध है प्रतीतिमैं ऐसैं आवता
ही। जातैं गौ आदि शब्दके सुननें तैं यह अन्य नाही ऐसा सामान्य
मान जो तुच्छाभाव सो तौ प्रतीतिमै आवै है नाही' तिस गऊ
दतैं सास्नादिमान पदार्थविषैं प्रतीति देखिये है, गऊतै अन्यकी बुद्धि
तैं होय ऐसा तहा अन्य शब्द ल्यावना। वहुरि कहै—एक ही
ऊ शब्दतैं दोय अर्थकी प्रतीतिका सभावन है तातैं अन्य शब्द ल्याव
तैं प्रयोजन नाही। ताकू कहिये—जो ऐसैं नाही, एक शब्दकैं दोय
ब्द अर्थके कहनेंका विरोध है असभव है। वहुरि विशेष कहै
—जो गऊ शब्दकै गऊतै अन्यकी व्यावृत्ति विषय होतैं पहलैं तौ
ऊ नाही ऐसी प्रतीति आवै है, सो ऐसै तौ वनै नाही लोककै तौ
हलै ही गऊ अर्थकी प्रतीति होय है यातै अन्यापोह शब्द का अर्थ
ही। वहुरि विशेष कहै है—जो अपोह कहिये निषेध सो सामान्य
तौ शब्दका अर्थपणाकी प्रतीतिमैं लिया हुवा पर्युदास प्रतिषेधरूप

है कि प्रसज्य प्रतिषेधरूप है ? ऐसैं दोय पक्ष पूछिये। जहा विधिकी प्रधानता होय निषेध गौण होय तहा पर्युदासप्रतिषेध होय। इहा जाका निषेध करना होय ताके शब्दकै पूर्वं नकार ल्यावै, जैसै काहूनै कह्या 'अब्राह्मणकू ल्याव' तहा जानिये ब्राह्मणका तौ निषेध है अर अन्य वैश्यादिककी विधि है तिनिकू बुलावे है। बहुरि जहा विधिकी तौ अप्रधानता होय अर निषेधकी प्रधानता होय तहा प्रसज्य प्रतिषेध होय इहा क्रियाकी साथ नकार ल्यावै जैसैं काहूनै कह्या--'ब्राह्मणकू न ल्याव' तहा जानिये नाही ल्यावनेंकू कहै है, इहा अत्यत निषेध जानना। सो इहा अन्यापोह शब्दार्थविषैं दोय पक्ष पूछि तहा कहै---पर्युदास प्रतिषेध है तौ गऊपणा ही नामान्तरकरि कह्या जातै अभावके अभावकै तौ अन्यभावका सद्भावपणा ही है, गऊ के अभावका अभाव कह्या तब गऊका ही अन्य नाम कह्या। बहुरि इहा पूछिये जो गऊ शब्दकै वाच्य अश्व आदिकी निवृत्ति है लक्षण जाका ऐसा अभाव कहा है। जो कहै अपना स्वलक्षण जो क्षणिक निरन्वय तिसस्वरूप है, तौ यह तौ बणैं नाही जातै स्वलक्षण तौ सकल विकल्प अर वचन इनिके गोचरतैं दूरवर्त्ती है। बहुरि कहै जो काबरापणा आदि व्यक्तिरूप है तौ यह भी नाही है, जातैं बौद्ध शब्दकू सामान्यका वाचक कहै है सो काबरापणा आदि विशेषरूप व्यक्ति तिनिकू कहें शब्दकै सामान्यका वाचक कहनेंका अभावका प्रसग आवै है। तातै समस्त जे गऊकी व्यक्ति तिनि विषैं अन्वयकी प्रतीतिका उपजावनहारा अर तहा न्यारा न्यारा समस्तपणाकरि व्यक्तिनिविषैं वर्त्तमान ऐसा सामान्य ही गोशब्दका अर्थ है, ताहीका अपोह ऐसा नाम करतै तौ नाममात्र ही भेद होय है अर्थभेद तौ नाही। तातैं आदिका पक्ष जो पर्युदासनिषेध सो तौ श्रेष्ठ नाही। बहुरि दूसरा पक्ष जो प्रसज्यप्रतिषेध सो भी श्रेष्ठ नाही है जातैं

ऊ आदि शब्दनिका प्रसज्यप्रतिषेध होय तब कोई बाह्य पदार्थ विषै
वृत्तिका प्रयोग होय, अर तुच्छाभाव मानिये तौ नैयायिकमतका
नेशका प्रसग आवै। बहुरि विशेष कहैं है—जो गऊ आदिक जे
सामान्य शब्द हैं, बहुरि जे शाबलेय कहिये काबरा आदिक विशेष
ब्द हैं तिनिकै बौद्धके अभिप्रायकरि पर्यायशब्दपणा आवै अर्थका
दका अभाव ठहरै जातैं एक अपोह ही सर्व शब्दानिका अर्थ ठहरै,
सैं वृक्षका दूसरा नाम पादप इत्यादि पर्याय शब्द हैं तिनिका अर्थ
गरा नाही तैसैं ठहरै। बहुरि तुच्छा भाव कहिये सर्वथा अभाव ताकै
षै भेद युक्त नाही है। ससृष्टत्व, एकत्व, नानात्व भेद है ते तौ वस्तु
ी निश्चै प्रतीतिमैं आवैं हैं। बहुरि अभावविषैं भेद मानिये तौ वस्तुप-
ाकी प्राप्ति आवै है जातैं वस्तुपणाका लक्षण भेद स्वरूप है। बहुरि
षेध करनें योग्य जे गऊ शब्दकैं अश्व आदिक ते ही भये सबधी
तिनिके भेदतैं अभावमैं भेद कहै तौ यह वर्णै नाही जातैं प्रमेय अभि-
य आदिक जे विधिरूप शब्द हैं तिनिकी प्रवृत्तिका अभावका प्रसग
ावै। जातैं प्रमेय आदि शब्दानिकैं 'व्यवच्छेद्य' कहिये निषेध करनें
ोग्य अप्रमेय आदि है सो ताके अतद्रूपकरि भी अप्रमेय आदिरूप-
णा होतैं तिस अप्रमेय आदितैं व्यवच्छेदका अयोग है, तातैं तहा
मेय अभिधेय इत्यादि शब्द वाच्य अपोहविषै सबधीके भेदतैं भेद
ैसैं होय। बहुरि विशेष कहै है—शाबलेय काबरा आदि शब्दनिविषै
अपोह कहिये निषेध सो एक ही नाही ठहरै है जातैं व्यक्ति व्यक्ति विषैं
यारा न्यारा ही ठहरै है। बहुरि कहै—जो काबरा आदि शब्द अपो-
का भेद नाही करै है तौ ताकू कहिये—अश्व आदि शब्दभी भेद
करनेंवाले मति होहु जाकै अपनें सामान्यमाही जे काबरा आदि गुण ते
द करनेंवाले नाही, ताकै अश्व आदि भेद करनेंवाले कहना तौ अति-

साहस है, जबरी है। वस्तुके भी सबधीके भेदतै भेद न पाइये तब अवस्तुके कैसैं होय ? सो ही कहिये है,—एक ही देवदत्त आदि नामा कोई पुरुष कडा कुडल आदि पहेरै तब तिनि सबधीनिकै भेदतैं अनेकपणा होय नाही। बहुरि विशेष कहे है —सबधीके भेदतै भेद भी कहू होहु परतु वस्तुभूत सामान्य मानें विना अन्यापोह है आश्रय जाका ऐसा सबधी है सो तुमारै होनें योग्य न होय है, सो ही कहिये है —जो कावरा आदि विषैं वस्तुभूत सारूप्य कहिये समानता ताका अभाव है तौ अश्व आदिका परिहार करि तहा ही तिनिका विशेपरूप यह गऊ है ऐसा नाम अर ज्ञान कैसै होय तातै सबधीका भेदकरि भेद चाहै है तौ सामान्य भी वस्तुभूत अगीकार करना योग्य है । बहुरि विशेष कहे है—जो अपोह शब्दार्थकी पक्ष विषै सकेत ही बणै नाहीं जातै तिस अपोह के ग्रहणका उपायका असभव है । तहा तिसका ग्रहण विषै प्रत्यक्ष प्रमाण समर्थ नाही जातैं प्रत्यक्षका तौ वस्तु विषय है, अन्यापोह तौ अवस्तु है। बहुरि अनुमान भी ताका ग्रहणका उपाय नाही जातैं अनुमान तौ स्वभाव तथा कार्य वस्तुका लिंग होय तिस करि उपजै है, अपोह है सो तौ निरुपाख्य कहिये निःस्वभाव है तातैं स्वभावलिंग नाही अर अर्थक्रियाकरि रहित है तातैं कार्यलिंग नाही ॥ बहुरि विशेष कहै है—गऊ शब्दकै अगऊका अपोह कहनहारापणा होतै गऊ ऐसा शब्दका कहा अर्थ होय ? जातैं विना जाण्याकै विधि निशेधविषै अधिकार नाही है। जो कहै अगऊ की निवृत्ति गऊ शब्दका अर्थ है तौ इतरेतराश्रयनामा दोप आवैगा, अगऊका व्यवच्छेद तौ अगऊका निश्चय भयें होय बहुरि सो अगऊ गऊकी निवृत्तिस्वरूप है, बहुरि गऊ है सो अगऊका व्यवच्छेदरूप है ऐसैं इतरेतराश्रय दोप है। बहुरि अगऊ इस पदमैं भी गऊ ऐसा उत्तरपद है ताका अर्थ भी ऐसैं

ही विचारना, गऊकी व्यावृत्तितैं अगऊका निश्चय होय अगऊकी व्यावृत्तितैं गऊका निश्चय होय। बहुरि कहै—जो अगऊ ऐसे इहा गोशब्दका अर्थ विधिरूप और ही है, तौ अपोहही शब्दार्थ है ऐसा कहना विगडैगा। तातैं कही जो युक्ति ताकरि विचाऱ्या हुवा अपोहका अयोग है॥ तातै अन्यापोह शब्दका अर्थ नाही है यह निश्चय भया जो सहज योग्यताके वशतैं शब्दादिक हैं ते वस्तुकी प्रतिपत्तिके कारणा है॥ ९६॥

इहा श्लोक —

स्मृतिरनुपहतेयं प्रत्यभिज्ञानवज्ञा
प्रमितिनिरतचिन्ता लैंगिकं सङ्गतार्थम्।
प्रवचनमनवद्यं निश्चितं देववाचा
रचितमुचितवाग्भिस्तथ्यमेतेन गीतम्॥

याका अर्थ —इस अधिकारविषैं निर्वाध तौ स्मृतिप्रमाण कह्या, बहुरि आदरनैंयोग्य प्रत्यभिज्ञान प्रमाण कह्या, बहुरि प्रमिति कहिये प्रमाणका फलरूप ज्ञान तिसविषैं लीन ऐसा चिंता कहिये तर्क प्रमाण कह्या, बहुरि यथार्थ है अर्थ जामैं ऐसा लैंगिक कहिये अनुमान प्रमाण कह्या, बहुरि निर्दोष प्रवचन कहिये आगम प्रमाण कह्या। ये पाच परोक्षप्रमाणके भेद अकलंकदेव आचार्यके वचनकरि निश्चय किया हुवा माणिक्यनंदिनै उचितवचन करि रच्या हुवा मैं अनन्तवीर्य आचार्य यहु यथार्थ गाया है॥ १॥

छप्पय

स्मृति वरनी निरदोष तथा प्रतिभिज्ञा सांची,
तर्क यथारथरूप बहुरि अनुमा शुभ वाची।

आगम बाधारहित, देव अकलंक विचारा,
ताके वच अनुसार नंदिमाणिकनैं धारा ॥
तेही अनंतवीरज गणी भाषे भेद परोक्षके ।
देशभाषभाषी पढो गुणी सुबुद्धी नर जिसे ॥१॥

ऐसैं परीक्षामुखप्रकरणकी लघुवृत्तिकी
वचनिकाविषै परोक्षका प्रपंच
तीसरा समुद्देश
समाप्त भया ॥

चतुर्थ-समुद्देश ।



(४)

आगै प्रमाणकी स्वरूप सख्या विप्रतिपत्तिका निराकरण करि अत्र प्रमाणका विषयकी विप्रतिपत्तिका निराकरणके अर्थि सूत्र कहै है,—

सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः ॥ १ ॥

याका अर्थ—सामान्य विशेष स्वरूप तिस प्रमाणका अर्थ है ताकू विषय कहिये । तहा 'तत्' शब्दकरि प्रमाण लेना ताकै ग्रहण करनें योग्य जो अर्थ सो विषय है ताका विशेषण सामान्य अर विशेष है आत्मा जाका, ऐसा है । सामान्य अर विशेषका स्वरूप आगै कहसी। इनि दोऊनिका ग्रहण तथा आत्मशब्दका ग्रहण है सो केवल सामान्यहीकै तथा केवल विशेषहीकै तथा केवल दोऊ स्वतत्रकै प्रमाणका विषयपणाका प्रतिषेधकै अर्थि है, न्यारे न्यारे ही केवल विषय नाही ।

तहा केई तौ सत्ता सामान्यहीकू प्रमाणका विषय मानैं हैं तिनिमें सत्तामात्र देह जो परम ब्रह्म ताकै तौ प्रमाणका विषयपणा का निराकरण पूर्व सर्वज्ञके विवादविषै कियाहीया । जातैं सत्ता मात्रकै केवल सामान्यपणा है सो प्रमाणका विषय नाही । बहुरि तिस शिवाय अन्य विचारिये है, तहा सांख्यमत वाले तौ प्रधानकू सामान्य कहै है सो प्रमाणका विषय मानै हैं, ताका वचनका श्लोक है, ताका अर्थ ऐसा —जो सत्व रज तम ये तीन जामैं पाइये, बहुरि अविवेकी कहिये महत्

---

१ त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि ।
व्यक्त तथा प्रधान तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ॥

आदितैं भेदरहित बाह्यविषयस्वरूप अभिन्न एक रूप ऐसा सामान्य, बहुरि अचेतन कहिये जड, बहुरि उत्पत्तिधर्मस्वरूप, बहुरि व्यक्त कहिये प्रकट दीखै, तैसैं तौ प्रधान है, बहुरि तिसतैं विपरीत कहिये उलटा विशेषणस्वरूप अर तैसा पुरुष है ऐसैं साख्य कहैं है। ताकू दोय पक्ष पूछिये—जो ऐसा प्रधान केवल महत् आदि कार्यके निपजावनें प्रवर्त्तै है सो काहूकू अपेक्षा लेकरि प्रवर्त्तै है कि विना अपेक्षा ही प्रवृत्ति है? जो कहै अपेक्षा लेकरि प्रवर्त्तै है तौ किसकी अपेक्षा ले है, सो निमित्त कहना जाकी अपेक्षा ले प्रवर्त्तै। तहा कहै–जो पुरुषका प्रयोजन ही याके प्रवर्त्तनेंमैं कारण है जातैं ऐसा कह्या है, पुरुषार्थ हेतु करि प्रधान प्रवर्त्तै है। तहा पुरुषार्थ दोय प्रकार है, एक तौ शब्द आदि विषयका ग्रहण करना, दूजा गुण तौ स्पर्श आदि अरु पुरुषतैं अन्य जो प्रधान तिनितैं पुरुषकै भेदका देखना, ये दोय पुरुषार्थ कहे है। ताकू आचार्य पूछै है—कि यह सत्य है तैसैं प्रवर्त्तता भी प्रधान है सो पुरुषकृत किछू उपकार लेकरि प्रवर्त्तै है कि नाहीं लेकरि प्रवर्त्तै है? जो कहैगा पुरुषकृत उपकार लेकरि प्रवर्त्तै है तौ तहा पूछै है—कि सो उपकार प्रधानतैं भिन्न है कि अभिन्न है? जो कहै—भिन्न है, तौ यह उपकार प्रधानका है ऐसा नाम काहेतैं भया? जो कहै—प्रधानकै अर उपकारकै सबध है, तौ समवायादिक सबध साख्य मानै ही नाही तब सबध काहेका? बहुरि तादात्म्य कहै तौ भेद कैसैं कहिये, तादात्म्य तौ भेदका विरोधी है। बहुरि दूजा पक्ष कहै—जो उपकार प्रधानतैं अभिन्न है तौ प्रधान ही तिस पुरुष करि किया ठहर्‍या। बहुरि कहै—जो प्रधान पुरुष है उपकारकी अपेक्षा विना ही प्रवर्त्तै है तौ मुक्तात्मा प्रति भी प्रधान प्रवर्त्तै, यामै विशेष नाही। या ही कथन करि निरपेक्षप्रवृत्ति पक्ष भी निराकरण किया, तहा भी हेतु कह्या सो ही जानना।

बहुरि विशेष कहैं हैं—जो प्रधान कोई प्रकारकरि सिद्ध होय तौ कही बात सारी बणैं सो प्रधानकी तौ सिद्धी ही होय नाही, काहू प्रमाण करि निश्चय किया जाय नाही। इहां साख्य कहै है—जो कार्य जगतमैं होय है तिनिकैं एक अन्वय देखिये है तातैं कोई एक कारण करि उपजवापणा मानना, बहुरि जे महत् अहकारादिक कार्य है तिनिके भेदनिका परिणाम देखिये है। तातै इनि दोऊ हेतुनितैं जैसै घट घटी सरावा आदिकै एक माटीका अन्वय अर भेदपरिणाम देखिये है ताका कारण एक मृत्तिका दीखै है तैसै महत् आदि कार्यनिकै एक अन्वय देखनैंतै बहुरि भेदनिका परिणाम देखनैंतै एकरूप कारण प्रधान मानिये है, ऐसैं प्रधानकी सिद्धि है। तहा आचार्य कहैं हैं—यह चर्चा तौ सुदर नाही जातैं सुख दु ख मोहरूपपणा करि घट आदिकै अन्वयका अभाव है, जडकै चेतनका अन्वय होय नाही सुखादिकका अन्वय तौ अन्तरग तत्व ही कै पाइये है तातैं सर्व ही कार्यनिकै तौ एक अन्वय बण्या नाही। इहा साख्य कहै—जो अन्तरङ्ग तत्वकै तौ सुख आदिका परिणाम नाही अर सुख दु खादिकरूप परिणामता जो प्रधान ताकै ससर्गतैं आत्माकै भी ते प्रतिभासै है। तहा आचार्य कहै है—यह भी बणैं नाही, जो प्रतिभासमान वस्तु नाही ताकै भी ससर्गकी कल्पना कीजिये तौ तत्वकी सख्याका नियमका निश्चय नाही होय, सो कही है, ताका श्लोकका अर्थ —

जो ससर्गतैं ही अविभाग कहिये अभेद मानिये जैसैं लोहके गोला-कै अर अग्निकैं है तैसैं तौ सर्व वस्तुकै भेद अभेदकी व्यवस्था कहिये नियम ताका उच्छेद होय जाय, ऐसै तत्वकी सख्याका नियम ठहरै

१ ससर्गादविभागश्चेदयोगोलकवह्निवत् ।
भेदाभेदव्यवस्थैवमुत्पन्ना सर्ववस्तुषु ॥ १ ॥ इति ।

नाहीं। बहुरि जो परिणामनामा हेतु कह्या सो एक स्वभावरूप माटीतै भये जे घट घटी सरावा आदि तिनिविषै भी है, बहुरि अनेक स्वभावरूप जे पट कुटी मुकुट शकट, आदि तिनि विषै भी पाइये है, यातै हेतु अनैकान्तिक है, तातैं प्रधान जो प्रकृति ताकी सिद्धि नाहीं है, सो ऐसैं प्रधानका ग्रहणके उपायका असभव है। अथवा सभवै तौऊ तिसतैं कार्यकी उत्पत्तिका अयोग है। सांख्यनैं जो कह्या ताकी दोय आर्या है, [१]तिनिका अर्थ —प्रकृतितैं तौ महान् होय है जो उत्पत्तितैं लगाय नाश ताई स्थायी रहै ऐसी बुद्धिकू महान् कहै है, बहुरि तिस महान्तैं अहकार होय है, बहुरि तिस अहकारतैं षोडश गण होय है (ते श्रोत्र त्वचा चक्षु जिह्वा घ्राण ये तौ पाच बुद्धि इन्द्रिय, अर पायु उपस्थ वचन पग हाथ ये पाच कर्म इन्द्रिय है, एक मन है, रूप रस गध शब्द स्पर्श ये पाच तन्मात्रा है ऐसैं सोलह भये) बहुरि तिस षोडशगणतैं पाच जे तन्मात्रा तिनितै पाच भूत उपजै है, ते कहिये हैं,—रूपतैं तौ अग्नि होय है, रस तै जल होय है गधतै भूमि होय है, शब्दतैं नभ होय है, स्पर्शतै पवन होय है, ऐसै सृष्टिका क्रम है। तहा मूल प्रकृति तौ विकृति रहित है (विकार रहित है) अर याका कोई कारण भी नाहीं, बहुरि महत् आदि हैं ते प्रकृतिकी सात विकृति हैं अर सोलह गण है सो विकार है, ऐसैं विकार हैं ते सात अर सोलह तेईस है। बहुरि पुरुष है सो विकृति भी नाहीं अर प्रकृति भी नाहीं। ऐसैं पचीस तत्व

---

१ यदुक्त परेण—प्रकृतेर्महान् ततोऽहकारस्तस्माद्गणश्च षोडशक ।
तस्मादपि षोडशकात्पचभ्य पच भूतानि ॥ १ ॥

वचनिकाकी प्रतिमें दो आर्याओंका उल्लेख है परन्तु मुद्रित सस्कृत प्रतिमें उपरिलिखित सिर्फ एक यही आर्या है, दूसरी नहीं है।

कहे। तिनिका वर्णन वध्याके पुत्रका सुरूपपणाका वर्णन सरीखा है याका विषय असत्यार्थ है, तातैं आदरनें योग्य नाही। प्रकृतितैं कार्यकी उत्पत्ति वर्णै नाही। आकाश तौ अमूर्त्तीक है अर पृथ्वी आदि मूर्त्तीक है तिनिकैं एक कारणतैं उपजनेंका अयोग है। जो ऐसैं न मानिये तौ अचेतन जो पचभूतका समूह तातैं चैतन्यकी सिद्धि होय, तब चार्वाकमतकी सिद्धिका प्रसग आवै। तब साख्यमतका वास भी न रहै। बहुरि सत् कार्यवाद साख्य करे है ताका प्रतिषेध "प्रमेयकमलमार्त्तंड" ग्रथविषै विस्तारकरि कह्या है, सो इहा नाही कहिये है, या ग्रथकै सक्षेपरूपणा है यातैं, ऐसैं जानना। ऐसै विचार किये सामान्यमात्रही प्रमाणका विषय वर्णै नाही इहा ताई साख्यमतीसू चरचा है।

आगैं साख्य आदि सामान्यहीकू तत्त्व कहैं है तैसै बौद्धमती कहैं है—जो विशेष ही तत्त्व है, वस्तुस्वरूप है, ये ही प्रमाणका विषय है जातै तिनिकै असमान आकारनिकरि सामान्य आकारनितैं समस्तपणा करि भिन्नस्वरूपपणा है, भावार्थ—विशेष हैं ते सामान्यतैं सर्वथा भिन्न ही हैं। नैयायिक सामान्यकू सर्वथा एक मानै है सो ऐसे एक सामान्यकै अनेक विशेषनि विषै व्याप्ति करि वर्त्तनके सभवका अभाव है। एक सामान्य अनेक विशेषनिमै कैसै व्यापै। तिस सामान्यकै एक व्यक्ति विषैं समस्तपणा करि तिष्ठना पावै तिस ही काल अन्य व्यक्ति विषैं पावनेंका अभावका प्रसग आवै है। बहुरि जो कहिये—तिस ही काल अन्यव्यक्ति विषैं भी पाइए है तौ सामान्य नाना ठहरै जातै एक ही काल भिन्नदेशपणाकरि तिष्ठते जे व्यक्ति तिनिविषैं समस्तपणाकरि जैसै व्यक्ति न्यारे न्यारे है तैसे सामान्य भी न्यारे न्यारे पावै। बहुरि जो ऐसैं होतै भी सामान्यकै नानापणा न होय तौ व्यक्ति भी न्यारे न्यारे मति होहु। तातैं जो बुद्धि करि अभेद मानिये है सो ही सामान्य

है वस्तुभूत नाही। सो हमारे कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ —जो पदार्थ एक जायगा देखिये सो अन्य जायगा कहू न देखिये है तातैं बुद्धि विषैं अभेदकल्पना सो ही सामान्य है, यातै भिन्न और कछू नाही है। बहुरि बौद्ध ही कहैं है·—ते विशेष परस्पर सबधरहित ही हैं जातैं तिनिकै सबध विचारया हुवाका अयोग है। जो एकदेशकरि विशेपनिकै सबध कहिये तौ एक परमाणुकै छहौंही दिशातैं छह परमाणुका एककाल सयोग होतैं परमाणुकै छह अशपणाकी प्राप्ति होय, सो परमाणुकै छह अश कहना सभवै नाही। बहुरि सर्वस्वरूपकरि सबध कहिये तौ पिंडकै अणुमात्रपणाका प्राप्ति आवै। बहुरि अवयवीका भी निषेध है। तातैं विशेपनिकै परस्पर सबध नाही वणै है। बहुरि अवयवीका निषेध ऐसैं है—जो वृत्तिविकल्प कहिये अवयवीकी अवयवनिविषैं वृत्तिका विचार ताकरि तथा अनुमानकरि बाधाही आवै है। सो ही कहिये है, बौद्ध नैयायिककू कहै है—अवयव हैं ते अवयवीविषै वर्त्तें है यह तौ तैं मानीही नाही है बहुरि अवयवी है सो अवयवनिविषैं वर्त्तें है ऐसै मानी है, सो इहा दोय पक्ष पूछिये है—जो एकदेशकरि वर्त्तें है कि सर्वस्वरूप करि वर्त्तें है? जो कहै एकदेशकरि वर्त्तें है तौ अवयवीकै अवयवनि सिवाय अन्य अवयवका प्रसग आवै, बहुरि तिनि विषै भी अन्य एकदेशकरि अवयवी वर्त्तें तब अनवस्था पावै। बहुरि कहै सर्व स्वरूपकरि अवयवी अवयवनि विषै वर्त्तें है,–तौ पूछिये–एक एक अवयव प्रति स्वभावभेदकरि वर्त्तें है कि एकरूपकरि वर्त्तें है? जो कहै–

---

(१) तदुक्तम्—

एकत्र दृष्टो भावो हि क्वचिन्नान्यत्र दृश्यते।
तस्मान्न भिन्नमस्त्यन्यत्सामान्यं बुद्ध्यभेदत॰ ॥१॥

स्वभावभेदकरि वर्त्तै है तौ अवयवी बहुत ठहरैं है। बहुरि कहै—एक-रूप करि वर्त्तै है, तौ अवयनिकै एकरूपपणा ठहरै है। अथवा स्वभा-वभेदकरि तथा एकरूपकरि ऐसैं पूछना मति होहु, ऐसै ही कहना—न्यारे न्यारे एक एक अवयवनि करि एक एक अवयवी समस्तपणाकरि वर्त्तै तौ अवयवी बहुत ठहरैं हैं। ऐसैं होतैं वृत्तिविकल्पतैं बाधा आवै है॥ अब अनुमानतै बाधा दिखावै हे—जो देखनैं योग्य होता सता भी ग्रहणमैं न आवै सो नाही ही है, जैसैं आकाशका कमल, तैसैं अवय-वनिविषै अवयवी ग्रहणमैं नाही आवै हैं॥ बहुरि जाका ग्रहण न होतैं जाकी बुद्धि का अभाव, सो तिसतें अन्य अर्थ नाही जैसैं वृक्षका ग्रहण नाही तहा वन नाही॥ पहले अनुमानतैं तौ अवयवनिविषैं अवयवी नाही ऐसा सिद्ध किया, इस अनुमानतैं भिन्न अर्थ नाही ऐसा कह्या॥ ऐसैं अवयवीका निषेध किया, सववका पूर्व निषेध किया ही था॥ इनि दोऊ हेतुनितै रूप आदिके परमाणु हैं ते निरंश है परस्पर स्पर्श-नेवाले नाही सर्वथा भिन्न भिन्न ही हैं, बहुरि ते एक क्षणमात्र स्थायी हैं नित्य नाही हैं जिनिका क्षण क्षणमै विनाश होय अन्य उपजै हैं जातैं विनाश प्रति अन्यकी अपेक्षा नाही है॥ याका प्रयोग ऐसा—जो जिस भाव प्रति अन्यकी अपेक्षा नाही करै है सो तिस स्वभाव विषैं नियमरूप है जैसैं स्वकार्य पट आदिकी उत्पत्तिविषैं अन्तमैं जो ततु आदि सामग्री है सो अन्य कारण नाही चाहै है सो तिस स्वभावविषैं नियत है॥ बहुरि इहा कोई आशका करै—जो घट आदिका नाश मुद्गरादिककरि होय है यह अन्यकी अपेक्षा है॥ तहा बौद्ध दोय पक्ष पूछै है—जो घट आदिका नाश मुद्गरादिक करै है सो नाश घटतैं भिन्न करै है कि अभिन्न करै है? जो भिन्न करै है तौ नाश घटतैं भिन्न रह्या तब घटकै स्थिति ही भई॥ इहा कहै—जो विनाशकै सबं-

धतै घटकू भी नष्ट भया ऐसै कहिये तौ सद्भावकै अर अभावकै सबध कहा है ? जो कहै—तादात्म्य है सो तौ नाही वर्णै जातै भाव अभावकैं तौ भेद है ॥ बहुरि कहै—जो तदुत्पत्ति कहिये कार्यकारणसबध है तौ सो भी नाही है जातै अभावकै कार्यका आधारपणा वर्णै नाही॥ बहुरि कहै—मुद्गर घटका नाश घटतै अभिन्न करै है तौ घट आदिही किया ठहरै' नाश अर घटमै भेद नाही, ऐसैं होतै घटतो पहले है ही, तिसनैं किया कहा ? ऐसैं घटतै अभिन्न नाश कहनेमै करणा वृथा होय है। ऐसै नाशकै अन्यकी अपेक्षारहितपणा सिद्ध भया। सो परमाणुनिकै विनाशरूप स्वभावका नियमपणा साधै ही है । बहुरि अनित्य विशेपरूप परमाणु तिनिकैं तिस स्वभावका नियमपणा सिद्ध होतै तिनितैं अन्य जे आत्मा आदिक विवादगोचर भये वस्तु तिनिकै सत्त्व नामा आदि हेतुकरि सावतैं इस दृष्टातकरि क्षणस्थितिस्वभावपणाकी सिद्धि होय ही है। सो ही कहिये है —जो सत् है सो सर्व एकक्षणस्थितिस्वभावरूप हैं जैसे घट है तैसै ही सत् रूप भये भाव हैं, ऐसैं तौ बहिर्व्याप्ति मुख करि अनुमान किया। अव अन्तर्व्याप्ति मुख करि अनुमान करै है—अथवा सत्व है सो ही विपक्ष जो नित्य ता विपै बाधक प्रमाणका बलकरि दृष्टान्त विना ही समस्त वस्तुकै क्षणिकपणाका अनुमान करावै है। सो ही कहिये है,—सत्त्व है सो अर्थक्रिया करि व्याप्त है, बहुरि अर्थक्रिया है सो क्रमयौगपद्यकरि व्याप्त है, बहुरि क्रम अर यौगपद्य ये दोऊ है ते नित्यतै निवृत्तिरूप होते अपनीं व्याप्य अर्थक्रियाकू लार ले निवृत्तिरूप होय है, भावार्थ—नित्यमैं अर्थक्रिया न बणै है, बहुरि सो अर्थक्रिया है सो अपना व्याप्य सत्त्वकू लार ले है नित्यमैं सत्त्व नाहीं रहै है, ऐसैं नित्यकै क्रम यौगपद्य करि अर्थक्रियाका विरोध है, तातैं अर्थक्रिया विना सत्त्वका असभव नाहीं, सो ही

विपक्ष जो नित्य ताविषैं वाधकप्रमाण है। बहुरि नित्यकैं अनुक्रम करि तथा युगपत् अर्थक्रिया नाही सभवै है, नित्य जो एकही स्वभाव करि पूर्व अपर काल विषै होते दोय कार्य करै तौ कार्यका भेद करनेंवाला नाही होय जातैं नित्यकै एक स्वभावपणा है। जो नित्यकै एक स्वभावपणा होतें भी कार्यकै नानापणा है तौ अनित्य विषैं कार्यके भेदतैं कारणका भेदकी कल्पना निष्फल ही होय है। तैसा एक ही कोई कारण कल्पनें योग्य होय है जाकरि एक स्वभावरूप एक ही करि समस्त चराचर वस्तु उपजै। वहुरि नैयायिक कहै—जो नित्य वस्तुकै स्वभावका नानापणा ही कार्यके भेदतैं मानिये है, तौ तहा पूछिये—जो ते स्वभाव तिस नित्य वस्तुकै सदा सभवते है तौ कार्यका सकरपणा आवैगा जीव अजीव नर नारक एक काल उपजते ठहरैंगे ? बहुरि ते स्वभाव सदा नाही सभवते हैं तौ तिनिकी अनुक्रमतैं उत्पति होनें विषैं कारण कहा है, सो कह्या चाहिये ? तिस नित्यतै ये हैं ऐसैं एक स्वभावतैं उत्पत्ति होतैं तिनि स्वभावनिकै भेदके असभवनेंतैं सो ही कार्यनिकै युगपत् प्राप्ति सभवै। वहुरि कहै—जो नित्य कारणकै सहकारी कारण क्रमतैं होय तिस अपेक्षा करि ताकै स्वभावनिका अनुक्रम करि सद्भाव है, तातै तुम कह्या जो दोष, सो नाही। ताकू कहिये—जो ऐसैं कहना भी नींकै मिलै नाही, जो नित्य है अर समर्थ है ताकै परकी अपेक्षाका अयोग है। बहुरि सहकारी कारणकरि सामर्थ्य करणा मानिये तौ नित्यताकी हानि आवै, सहकारिनैं नई सामर्थ्य उजाई तब नित्य कहा रह्या। बहुरि कहै—सहकारी कारण नित्यतैं सामर्थ्य भिन्न ही उपजावै है यातैं नित्यताकी हानि नाही, तौ नित्य तौ अकिंचित्कर रह्या, कछू करनेंवाला नाहीं, सहकारी करि उपजाई जो सामर्थ्य तिसहीकै कार्यकारणपणा ठहरया। वहुरि कहै नित्य अर

सामर्थ्यकै सवध है तातै नित्यकैं भी कार्यकारीपणा कहिये तौ तहा दोय पक्ष पूछैं हैं—सवव एक स्वभाव है कि अनेक स्वभाव है? जो कहैगा तिस सामर्थ्यकै सवव है सो एक स्वभाव है तौ एक स्वभाव सवध होतैं सामर्थ्यकै नानापणाका अभावतै कार्य निर्पै भेद न ठहरैगा। बहुरि कहैगा सवधकै अनेक स्वभावपणा है तथा अक्रमवानपणा है तौ ऐसैं होतै कार्यकी ज्यों तिस सामर्थ्यकै भी सकरपणा आवैगा, जड करनेंकी अर चेतनकरनेंकी सामर्थ्यकै सकरपणा आवैगा। ऐसैं सर्न आवर्त्तन होयगा तव चक्रक दोपका प्रसग आवैगा, तातैं नित्यकै अनुक्रमकरि कार्यका करणा नाहीं वणैं है। बहुरि युगपत् एक काल भी नाही वणै है —समस्त कार्यनिकी एककाल उत्पत्ति होतैं दूसरे क्षण कार्यका न करना आया तव अर्थक्रियाकारीपणा न रह्या तव अवस्तुपणाका प्रसग आवै है। ऐसै नित्यकै क्रमयौगपद्यका अभाव सिद्ध ही है। ऐसै बौद्धमती अपना मत दृढ किया, जो विशेप ही वस्तुस्वरूप हैं सामान्य वस्तु स्वरूप नाही, वहुरि ते विशेप परस्पर असंवद्ध ही हैं सवद्ध नाही, अवयवी नाही, वहुरि ते एक क्षणस्थायी ही है नित्य नाही।

ऐसै तीन पक्ष कही तिनि तीनोंहीका निराकरणकै अर्थि अत्र आचार्य कहै है,—ऐसी कहनेवाला वौद्ध भी युक्तवादी नाही जातैं सजतीय विजातीय न्यारे न्यारे अशरहित जे विशेप तिनिका ग्राहक प्रमाणका अभाव है। प्रत्यक्ष प्रमाणकैं तौ स्थूल स्थिर साधारण आकाररूप वस्तुका ग्राहकपणा है तातैं अशरहित वस्तुका ग्रहणका अयोग है, परस्पर सवधरूप नाही ऐसे परमाणु नेत्र आदिकरि नाही प्रतिभासैं हैं जो प्रत्यक्ष नेत्र आदिकरि दीखै तौ विवाद कैसे रहै। इहा वौद्ध कहै है—जो पहले तौ निरश क्षणरूप परमाणु ही दीखैं हैं पीछैं विकल्पकी वासना तौ अन्तरङ्ग रूप ताके चलतै अर वाह्य अन्तराल न दीखै तातैं

अविद्यमान भी स्थूल आदि आकार विकल्पवुद्धि विषै प्रतिभासै है, सो ऐसा विकल्प तिस निर्विकल्प प्रत्यक्षके आकार करि मिल्या हूवा अपना विकल्पव्यापारकू गौणकरि प्रत्यक्ष व्यापारकू मुख्यकरि प्रवर्तै है तातैं प्रत्यक्ष सारिखा दीखै है तहां आचार्य समाधान करैं हैं—जो यह कहना तौ बालक अज्ञानीका विलास है, जातैं निर्विकल्पज्ञानका ही अनुभवन नाही है, निर्विकल्प सविकल्पका भेद पहले ग्रहण होय तब अन्य आकारके मिलनेंकी अन्य आकारविषैं कल्पना युक्त होय है, जैसैं पहले स्फटिकमणि अर जपाकुसुम न्यारे न्यारे देखे होंय पीछैं स्फटिककैं डक लाग्या दीखै तब ऐसी कल्पना सभवै जो यह स्फटिक जपाकुसुमतैं रगित दीखै है, जो न देखे होय तौ ऐसी कल्पना न होय। या ही कथनकरि निर्विकल्प सविकल्पकै युगपत् वृत्तितै तथा क्रमवृत्तिमैं भी शीघ्र वृत्तितैं एकपणाका निश्चय होय है ऐसा कहना भी निराकरण किया। ताकै भी वीज लेणैंतैं प्रतीति आवै तिस समानपणा है। अथवा तिनि निर्विकल्प सविकल्पका एकपणाका निश्चय कौनसे ज्ञान करि करिये? प्रथम तौ विकल्प ज्ञानकरि तौ निश्चय नाही होय जातैं विकल्पज्ञान निर्विकल्पकी वातका जाननेवाला नाही। वहुरि अनुभव ज्ञानकरि निश्चय नाही होय जातैं अनुभव विकल्पकै अगोचर है। वहुरि निर्विकल्प सविकल्प जाका विषय नाही ऐसा ज्ञान भी तिनिका एकत्वका निश्चय विषैं समर्थ नाही, यामैं अतिप्रसग दूषण है अन्यका विषय अन्यकरि ग्रहण होतै अतिप्रसग है। तातैं प्रत्यक्षवुद्धिविषैं तौ भिन्न असत्वरूप परमाणु प्रतिभासैं नाही। वहुरि अनुमानवुद्धिविषैं भी नाही प्रतिभासैं हैं जातैं तिससै अविनाभूत जो स्वभावलिंग अर कार्यलिंग ताका अभाव है। अर स्थूल स्थिर साधारणका अनुपलभतैं विशेष ही तत्व है ऐसैं कहै तौ अनुपलभ लिंग है सो असिद्ध ही है

जातै अन्वयरूप आकारका अर स्थूल आकारका प्रत्यक्ष देखनेंमें आवना कह्या ही है। बहुरि बौद्धनें कह्या जो परमाणुकै एक देशकरि अर सर्व स्वरूपकरि सबध नाही वर्णें है, सो याका परिहार यह ही—जो ऐसैं हम भी सबध नाही मानै है, हम तौ ऐसैं माने है—जो रूखा चीकनाकै समान जातीयकै तथा विजातीयकै दोय अधिक गुण होय तौ कथचित् स्कधकै आकार परिणामै ताकै सबध मानै हैं। बहुरि बौद्धनें जो अवयवीका अवयवनिविषै वृत्तिविकल्प आदि दूषण कह्या, तहा अवयवीकी वृत्ति ही जो न वणै तौ अवयवी वर्त्तै ही नाही है ऐसैं कहना था, एक देश आदि विकल्प न कहना था जातै एक देश आदि विकल्पकै तौ अन्य विकल्प विशेपतैं अविनाभावीपणा है। सो ही कहिये है—अवयवी अवयवनिविषैं एक देशकरि नाही वर्त्तै है, सर्वस्वरूपकरि भी नाही वर्त्तै है ऐसैं कहतै ऐसा आया—जो अन्य प्रकारकरि वर्त्तै है, अर ऐसैं न मानिये तौ, नाही वर्त्तै है—ऐसैं ही कहना। ऐसै विशेपका निपेधकै अवशेपका अगीकाररूपपणा है। तातै कथचित् तादात्म्यारूपकरि अवयवीकी अवयवनिविषै वृत्ति है ऐसा निश्चय कीजिये है, जहा जे कहे दोप तिनिका अवकाश नाही है। बहुरि विरोध आदि दोपका निपेध आगै करसी यातै इहा विस्तार नाही किया है। बहुरि जो वस्तुकै एकक्षणस्थायिपणा विषैं हेतु कह्या—जो जिस भाव प्रति इत्यादि, सो भी अहेतु है जातैं हेतु असिद्ध आदि दोपकरि दूपित है। तहा प्रथम तौ नाशविषै अन्यकी अपेक्षातैं रहितपणा हेतु कह्या सो असिद्ध है जातै घटादिकका अभावकै मुद्गर आदिके व्यापारका अन्वय व्यतिरेकका अनुसारीपणातै तिसके अभाव प्रति कारणपणा है, मुद्गराकी दिये घट फूटै न दे तौ न फूटै। इहा आशका करै—जो मुद्गराकी देनां कपालकी उत्पत्तिकू कारण है, अभाव तौ

निरपेक्ष ही है ? ताकूं कहैं है—जो कपाल आदि पर्यायांतरका सद्भाव है सो ही घट आदिका अभाव है। बहुरि तुच्छाभाव कहिये सर्वथा अभाव, सो समस्तप्रमाणके अगोचर है ताकी बात ही न करनी। बहुरि विशेष कहै है—अभाव है सो जो स्वाधीन होय तो अन्यकी अपेक्षारहितपणा विशेषणयुक्त होय, सो बौद्धमतविषैं सो अभाव स्वाधीन मान्या नाहीं यातैं हेतुका प्रयोगकाही अवतार नाहीं। बहुरि यह अन्यानपेक्षपणा हेतु है सो अनैकान्तिक है जातैं शालिके बीजकै कोदूका अकुरका उपजना प्रति अन्यकी अपेक्षारहितपणा है तौऊ तिस कोदूके अकुराके उपजनेके स्वभाव प्रति नियमरूपपणा नाहीं है। बहुरि बौद्ध कहै—जो हेतुका विशेषण ऐसा किये दोष नाहीं, जो विनाश स्वभाव होतैं अन्यानपेक्ष है तो तहां कहिये पदार्थके सर्वथा विनाशस्वभावपणा ही असिद्ध है। पर्यायरूपकरि ही पदार्थनिकै उत्पाद विनाश मानिये है द्रव्यरूपकरि उत्पाद विनाश नाहीं है, जातैं ऐसा वचन है ताका श्लोकका अर्थ —

जो पदार्थ उपजै है अर निनशै है सो पर्यायनयका विषय है, बहुरि द्रव्यनयकरि आलिंगित वस्तु नित्य है न उपजै है न विनशै है। अन्वय कहिये पहिले पिछलेके जोड तिसरहित जो विनाश सो निरन्वयविनाश तिसकूं होतैं पहले क्षणतै उत्तर क्षणकी उत्पत्ति नाहीं बणै है, जैसैं मूसा मोरकी कुहुक नाहीं होय तैसैं। ऐसैं पदार्थनिका सर्वथा विनाशस्वभावपणा युक्त नाहीं जातै कथंचित् द्रव्यरूपकरि पूर्वरूप जानैं न

(१) आर्या—समुदेति विलयमृच्छति भावो नियमेन पर्ययनयस्य।
नोदेति नो विनश्यति भावनया लिंगितो नित्यम् ॥१॥
इति वचनात्।

छोड्या ऐसा भी वस्तुस्वरूपका सभव है। बहुरि द्रव्यके रूपका ग्रहण होनेंका असमर्थपणातै द्रव्यका अभाव नाही है। तिस द्रव्यके ग्रहणका उपाय जो प्रत्यभिज्ञानप्रमाण ताका बहुलपणै पावना है, तिस प्रमाणकै पहले प्रमाणपणा कह्याही है। बहुरि उत्तरकार्यकी उत्पत्तिकी अन्यथानुपपत्तितैं भी द्रव्यकी सिद्धि होय है, द्रव्य न होय तौ उत्तरकार्यकी उत्पत्ति न होय। बहुरि जो क्षणिक साधनेंविषै सत्त्वनाम अन्य हेतु कह्या सो भी विपक्ष जो नित्य ताविषै सत्त्व नाही तैसै क्षणिकमैं भी नाही है, तातैं सत्व हेतुतै भी क्षणिक साध्यकी सिद्धि नाही होय है। सो ही कहिये है—सत्त्व है सो अर्थक्रियातै व्याप्त है, बहुरि अर्थक्रिया है सो क्रम-यौगपद्यकरि व्याप्त है, ते क्रम यौगपद्य दोऊ क्षणिकतै निवृत्तिरूप हुये सते अपनैं व्याप्य जो अर्थक्रिया निवृत्तिरूप होती अपनें व्यापनें योग्य जो सत्त्व ताहि लेकरि निवृत्तिरूप होय है, ऐसै नित्यकी ज्यों क्षणिककैं भी गधाके सींगवत् सत्त्व नाही है। ऐसैं क्षणिकविषै सत्त्वकी व्यवस्था नाही है। बहुरि क्षणिक वस्तुकै क्रम यौगपद्यकरि अर्थक्रियाका विरोध है सो असिद्ध नाही है जातैं ताकै देशकरि किया अर कालकरि किया जो क्रम ताका असभव है। जो अवस्थित एक होय ताहीकै अनेक देश अर कालकी कला तिनिविषै व्यापीपणा होय सो देशक्रम अर कालक्रम कहिये है। सो क्षणिकनिषै ऐसा देशक्रम अर कालक्रम नाही है जातै बौद्धमतमैं ऐसैं कह्या भी है, ताका श्लोकका अर्थ—जो वस्तु जिस क्षेत्रमै है सो तहा ही है बहुरि जिस कालमै है सो जहा ही है यातैं पदार्थनिकै देशकाल विषै व्याप्ति नाही है, ऐसैं आप कह्या है।

---

(१) यो यत्रैव स तत्रैव यो यदैव तदैव सः।
न देशकालयोर्व्याप्तिर्भावानामिह विद्यते॥

बहुरि पूर्व उत्तर क्षणनिकै एक सतानकी अपेक्षा करि भी क्रम नाही सभवै है जातैं जो सतानकू वस्तुभूत मानैं तौ तिसकै भी क्षणिकपणा ठहरै तब तिसकी अपेक्षा क्रम नाहीं बणै है। अर अक्षणिकपणा होतैं भी वस्तुभूतपणा मानै तो वस्तुभूतपणा करि तिस मतानही करि सत्त्व आदि हेतुकै अनैकान्तिकपणा आवै। बहुरि सन्तानकू अवस्तुभूत मानैं तौ भी तिसकी अपेक्षा क्रमयुक्त नाही होय। बहुरि युगपत्पणा करि भी क्षणिक विषैं अर्थक्रिया नाही सभवै है। इहा दोय पक्ष—जो युगपत् एक स्वभाव करि नानाकार्य करणा मानिये तौ तिसके कार्यकै एकपणा ठहरै, बहुरि जो नानास्वभाव कल्पिये तौ ते स्वभाव तिसक्षण करि व्यापे चाहिये। सो जो एक स्वभाव करि ते क्षणिक तिनि स्वभावनिमैं व्यापै तौ तिनि स्वभावनिकै एकरूप ठहरै, बहुरि जो नानास्वभाव करि व्यापैं तौ अनवस्था दूपण आवै जातैं फेरि एक स्वभाव अनेक स्वभावका प्रश्न चल्या जाय। बहुरि बौद्ध कहै है जो एक पूर्व क्षणकै एक उत्तर क्षणविषै उपादानभाव है सो ही अन्य जे रूपतैं रसादिक तिनिविषै तिसक्षणकैं सहकारी भाव है यह ही स्वभाव भेद है, तौ ताकू आचार्य कहैं है—नित्य एकरूप वस्तुकैं भी क्रमकरि नानाकार्य करनेवालेकै स्वभावका भेद अर कार्यका सकरपणा मति होहु, ऐसा दूपण तैं कह्या था सो मति होहु। इहा बौद्ध कहै—जो अक्रमतै क्रमवान् वस्तुकी उत्पत्ति नाही तातै नित्यकै ऐसैं नाही, तौ ताकू कहिये—तैसैं ही क्रमरहित जो क्षणिक सो एक है अनश है ऐसे कारणतैं युगपत् अनेक कारणनिकरि साधनें योग्य जे अनेक कार्य तिनिका विरोध है, तातैं ताकै भी कार्यकारीपणा नाही है। बहुरि विशेप कहैं है, बौद्धकू पूछे है—तेरे पक्ष विषै कार्यकारीपणा सत्कै मानैं है कि असत्कै मानैं है। जो सत्कैं कार्यका कर्त्तापणा मानैं है

तौ सकलकालकी कला विषैं व्यापीजे क्षण तिनिकैं एकक्षणवर्त्तीपणाका प्रसग आवैगा। बहुरि जो दूसरा पक्ष असत्कैं कार्यकारीपणा मानैंगा तौ गधाके सींग आदिकैं भी कार्यकारीपणा ठहरैगा जातैं गधाका सींग भी असत्‌रूप है, यामै विशेप नाहीं। बहुरि सत्त्वका लक्षण अर्थ-क्रियाकारीपणा है सो असत्के कार्यकारीपणा मानैं ताकै व्यभिचार आवैगा। तातै विशेप एकात है सो कल्याणकारी श्रेष्ठ नाहीं। ऐसैं विशेप एकान्त माननेंवाला जो वौद्धमत ताकी पक्षका निराकरण किया, यातै विशेप एकान्त वस्तुस्वरूप नाही तातै प्रमाणका विषय नाही है। इहा ताई बौद्धमतीसू चर्चा है।

आगैं नैयायिकसू चर्चा करै हैं,—अब कहैं है—जो सामान्य विशेप दोऊ परस्पर अपेक्षारहित हैं ऐसैं नैयायिकमती मानैं है सो तिनिका मत भी युक्तिकरि युक्त नाही है, सो कहै हैं जातैं तिनिकै परस्पर भेद होतै दोऊमैं एकका भी स्थापन करनेंका असमर्थपणा है। सो ही कहिये है,—विशेप कहिये व्यक्तितैं तौ प्रथम द्रव्य गुण कर्म पदार्थ हैं। बहुरि सामान्य पर अपर भेदतै दोय प्रकार है। तहा परसामान्य तौ सत्तास्वरूप है तिसतै विशेपनिकै भेद होतैं विशेपनिकै असत्ताकी प्राप्ति आई, तैसै ही प्रयोग है—द्रव्य गुण कर्म है ते असत् रूप हैं—जातै सत्तातै अत्यत भिन्न है जैसै प्राक् अभावादिक अभाव है तैसै। इहा सत्तातै अत्यत भिन्नपणा हेतु है ताकै सामान्य विशेप समवाय पदार्थनितै व्यभिचार नाहीं है जातै तिनि विषैं स्वरूप सत्त्वकू अभिन्न नैयायिक मानैं हैं। बहुरि नैयायिक कहै है—जोद्रव्यादि पदार्थनिकै प्रमाणकरि सिद्धपणा है तौ धर्मीका ग्राहक प्रमाण ताकरि तुमनैं हेतु कह्या सो वाधित है, जिस प्रमाणकरि द्रव्य आदिक निश्चय कीजिये है तिसही प्रमाणकरि तिनिका सत्त्व निश्चय

कीजिये है। इहा तुम कहोगे—द्रव्य आदिक प्रमाण सिद्ध नाही है तौ तुमारे हेतुकै आश्रयकी असिद्धि आवैगी, ताका उत्तर आचार्य कहै हैं—जो यह कहना अयुक्त है जातैं इहा हमनैं प्रसगसाधन किया है। परका इष्ट लेकरि परकै अनिष्ट बतावना सो प्रसगसाधन है, सो इहा प्राक् अभावादिविषै सत्त्वतैं भेद है सो असत्त्वतै व्याप्त पाइये है सो व्याप्य है, तातै तिस भेदका द्रव्यादिविषैं अगीकार है सो व्यापक जो असत्त्व ताका अगीकारतैं अविनाभावी है, ऐसैं इहा प्रसगसाधन है। तातैं नैयायिकनै कह्या प्रमाणबाधित आदि दोष, सो नाही आवै है, पदार्थनिकू नैयायिक जैसैं भेदाभेद मानै था तिसहीकी अपेक्षा लेकरि प्रसगसाधन किया है। इसही कथनकरि द्रव्य आदिककै भी द्रव्यपणातै भेद होतै अद्रव्यादिपणा विचरया जानना। बहुरि आचार्य नैयायिककू पूछै है—कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय इनि छह पदार्थनिकै परस्पर भेद होतैं न्यारे न्यारे अपनें स्वरूपकी व्यवस्था कैसैं है? जो कहैगा—द्रव्यका द्रव्य ऐसा नाम द्रव्यत्वका सबधत हैं तौ द्रव्यत्वके सबध पहले द्रव्यका स्वरूप कहा है, सो कह्या चाहिये जाकरि सहित द्रव्यत्वका सबध होय? जो कहै—द्रव्य ही स्वरूप है तौ तिसका द्रव्य ऐसा नाम तौ द्रव्यत्वका सबधरूप कारणतैं होय है तातै द्रव्य ऐसा स्वरूपका अयोग है। बहुरि कहै—जो निजरूप तौ सत्त्व है तौ ताका भी सत्त्व ऐसा नाम सत्ताके सबधतै करनेंतै द्रव्यका निजरूप नाही बनैगा। ऐसैं ही गुण आदिविषै भी कहि लेना। ऐसै होतैं केवल सामान्य विशेष समवाय इनि तीन हीकै स्वरूप सत्त्व करि तसा नाम बनै है, तातै तिनि तीन ही पदार्थनिकी व्यवस्था ठहरै है। बहुरि इहा नैयायिक कहै है—नैयायिक वैशेषिकका अभिप्राय एक ही है तातै नैयायिक ही नाम लिख्या है, इहा सामान्य नाम यौगमत जानना, अर द्रव्यादिक सप्त ही पदार्थ वैशेषिक कहै है। अब यह कहै है—

स्याद्वादी जैनी जीव आदि पदार्थनिकै सामान्यविशेषस्वरूपपणा मानैं हैं सो तिनि सामान्य विशेषका वस्तुतैं भेद अभेद हैं ते विरोध आदि आठ दोषके आवनेंतैं एक वस्तुविषै नाहीं सभवैं है, सो ही कहैं हैं— भेद अभेद दोऊ विधि प्रतिषेधस्वरूप हैं ते एक जो अभिन्न वस्तु ताविषैं सभवैं नाहीं, जैसें शीत उष्ण स्पर्श दोऊ एकविषैं नाहीं सभवै तैसैं, ऐसैं तौ विरोध दूषण आया। बहुरि भेदका आधार अन्य अभेदका आधार अन्य, ऐसैं वैयधिकरण्य दूषण आया। बहुरि जिस स्वरूपकू मुख्यकरि भेद वर्त्तै है अर जिसकू मुख्य करि अभेद वर्त्तै है ते दोऊ स्वरूप भिन्न है तथा अभिन्न हैं, बहुरि तहा भी भेदाभेदके कल्पनेतैं अनवस्था दूषण है। बहुरि जिस रूपकरि भेद है तिस ही रूपकरि भेद भी अभेद भी है ऐसैं सकर दूषण है, बहुरि जिसकरि भेद है तिसकरि अभेद है जिसकरि अभेद है तिसकरि भेद है, ऐसैं व्यतिकर दूषण है। बहुरि भेदाभेद स्वरूपपणा होतै वस्तुका असाधारण आकारकरि निश्चय करनेंकू असमर्थपणा है, तातै सशय दूषण है। तिस ही हेतुतैं अप्रतिपत्ति दूषण है। तिस ही हेतुतै अभाव दूषण है। ऐसै अनेकान्तात्मक वस्तु भी निश्चित नाही होय सकै हैं, ऐसै नैयायिक कहै हैं। तहा आचार्य कहैं हैं—ऐसैं कहनेवाले भी प्रतीतिस्वरूप कहनेवाले नाहीं जातै प्रतीतिगोचर वस्तु होय तामैं विरोधका असभव है। विरोध तौ जैसैं दीखै नाही तैसै कहै तामै है, तहा जो देखनेमें आवै तहा कहा विरोध? भेदाभेदतैं एक वस्तुमैं दोऊ प्रगट दीखै हैं। इहा जो शीत उष्णस्पर्शका दृष्टात कह्या सो धूपदहनका घट आदि एक अवयवीकै शीत उष्ण स्वभावकी प्राप्तितै विरोधका दृष्टान्त अयुक्त है, धूप दहनके घडेमैं शीत उष्ण दोऊ स्पर्श होय हैं। आदि शब्दकरि सध्याविषै प्रकाश तमका साथि अवस्थान होय है। एक वस्तुकै चल अचल रक्त अरक्त

आवरणसहित आवरणरहित इत्यादि विरुद्ध धर्मनिका युगपत् देखना है। तैसैं कहे जे भेदाभेद तिनिकै भी विरोध नाही है। इस ही कथनकरि वैयाधिकरण्य भी निराकरण किया, तिनि भेदाभेदकै एक आधारपणाकरि प्रतीतिमै समानाधिकरण है, इहा भी चल अचल आदि पहले दृष्टात कहे ते जाननें। बहुरि जो अनवस्था नामा दूपण कह्या सो भी स्याद्वादमतकू नाही जाननेवालेकरि बताया है, स्याद्वादीनिका यह मत है—सामान्य विशेष स्वरूप वस्तुविषैं सामान्य विशेष हैं ते ही भेद हैं जातै भेदशब्दकरि तिनिकू ही कहे है, बहुरि द्रव्यरूप करि अभेद है ऐसा कह्या है सो द्रव्यही अभेद है जातैं वस्तुकै एकानेक स्वरूपपणा है, अथवा भेदनयका प्रधानपणाकरि वस्तुके धर्मनिकै अनतपणा है तातैं अनवस्था नाही है। सो ही कहिये है—जो सामान्य है बहुरि जे विशेष है तिनिकैं अन्वयरूप आकारकरि अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा आकारकरि भेद है, बहुरि तिनिकै अर्थक्रियाके भेदतैं भेद है, बहुरि तिस अर्थक्रियाकै शक्तिभेदतैं भेद है, सो शक्ति भेद भी सहकारीके भेदतैं है, ऐसैं अनत धर्मनिका अगीकार करनेतैं अनवस्था काहेतैं होय [१] सो ही कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ —जो मूलनाशका करनहारा होय ताहि अनवस्था दूपण पडित कहै है, वस्तुकै अनतपणा होतैं अथवा विचारनेकू असमर्थता होय तहा अनवस्था दूपण नाही, जो अनवस्था होय तौ भी दूपण न कहिये। बहुरि जो सकर अर व्यतिकर ये दोऊ दूपण हैं ते भी मेचक ज्ञानके दृष्टान्तकरि बहुरि सामान्य विशेपके दृष्टान्त करि दूर किये। इहा सकर दूपणके निराकर-

---

(१) तथा चोक्तम् —मूलक्षतिकरीमाहुरनवस्था हि दूपणम्।
वास्त्वानन्त्येऽप्यशक्तौ च नानवस्था विचार्यते॥१॥

णकू दृष्टान्त मेचक ज्ञान अनेकवर्णाकार वस्तुके जाननेंकू कह्या है। बहुरि सामान्य विशेष ऐसै जो जो ही गऊपणा अपनीं व्यक्तिनिकी अपेक्षा सामान्य, सो ही महिष आदिकी अपेक्षा विशेष, ऐसें दृष्टान्तकरि व्यतिकर दूपण नाहीं। इहा कहै—जो मेचकज्ञान विषै तौ जैसा वस्तुमै अनेकवर्णाकार या तैसा प्रतिभासै है, तौ ताकू कहिये इहा हमारै भी जैसी वस्तु है ताका तैसाही प्रतिभास होइ, ताका पक्षपातका अभाव है। बहुरि जैसा वस्तु है ताका तैसा निर्णय भया तहा सशय नाही युक्त है, सशय तौ चलितज्ञानरूप है, अचल प्रतिभासनिवै सशय बनैं नाही। बहुरि जो वस्तु प्राप्त भया सिद्ध भया ताकै विषै अप्रतिपत्ति कहना यह तौ अतिधीठपणा है। बहुरि जाकी उपलब्धि होय तहा अनुपलभ भी नाही सिद्ध है तातै अभाव भी नाही। ऐसै इनि दूपणनितैं रहित प्रत्यक्ष अनुमान प्रमाणकरि अविरुद्ध अनेकातात्मक वस्तुका कहनेंवाला अनेकान्तमत है सो सिद्ध है। इस ही कथन करि अवयव अवयवीकै गुण गुणीकै कर्म कर्मवान्‌कै कथचित् भेद है कथचित् अभेद है सो कहे जानने। अब नैयायिक कहै है—जो समवायके वशतै भिन्न पदार्थ विषै भी अभेदकी प्रतीति है जाकै ब्रह्मतुल्य ज्ञान न उपज्या ताकै, भावार्थ—जाकै अतीन्द्रिय ज्ञान नाही ताकै भिन्न पदार्थ विषै भी समवायतै अभेदका ज्ञान है। ताकू आचार्य कहै है—जो ऐसै नाही जातै समवाय भी पदार्थतै भिन्न ही है ताके स्थापनेंकी असमर्थता है। सो ही कहिये है—इहा दोय पक्ष हैं, समवायकी वृत्ति है सो अपना समवायी पदार्थनिविषैं वृत्ति सहित है, कि वृत्तिरहित है? जो कहै वृत्तिसहित है तौ तहा भी दोय पक्ष करें हैं, जो यह वृत्ति आपही करि वृत्तिसहित है कि अन्यवृत्ति करि है? जो कहै—आपही करि है तौ यह पक्ष तौ नाही बणैं है, समवायविषै अन्य

समवायका अंगीकार नाहीं पांचही पदार्थकैं समवायीपणा है, ऐसा नैयायिकका वचन है। बहुरि अन्य वृत्तिकी कल्पना करै तौ सो वृत्ति अपने संबंधीनिविषैं वर्त्तै है कि नाहीं? ऐसैं कल्पना करैतैं अन्य वृत्तिकी परंपराकी प्राप्तितैं अनवस्था आवै। इहां कहै अपनें संबंधीनिविषैं अन्यवृत्तिकै अन्यवृत्तिका अंगीकार नाहीं तातैं अनवस्था नाहीं आवै, तौ ताकूं कहिये—समवायविषैं भी अन्यवृत्ति मति होहु। अब फेरि नैयायिक कहै है—जो समवाय है सो अपनें आश्रयविषैं वृत्तिरूप नाहीं मानिये है, तौ ताकूं कहिये—छह पदार्थनिकै आश्रितपणा है ऐसा ग्रंथका विरोध आवैगा, नैयायिकका सूत्र है—जो नित्य द्रव्य विना छह पदार्थ अन्यके आश्रय हैं सो ऐसा सूत्र विरोध्या जाय। बहुरि नैयायिक कहै है—जो समवायि पदार्थनिकै होतैं ही समवायकी प्रतीति है तातैं समवायकै आश्रितपणा कल्पिये है, तौ ताकूं कहिये—मूर्त्तद्रव्यनिकूं होतै ही दिगाद्रव्यका लिंग जो यहु यातैं पूर्व दिशाकरि है इत्यादिक ज्ञान ताकै बहुरि कालका लिंग जो पर अपर आदि प्रतीति ताका सद्भावतैं तिनि दोऊ द्रव्यनिकै भी तिनि मूर्त्त द्रव्यनिका आश्रितपणा ठहरैगा। तातैं सूत्रमैं कह्या जो नित्य द्रव्य विना अन्यकै आश्रितपणा है, ऐसा कहना अयुक्त भया। बहुरि विशेष कहै है—जो समवायकै अनाश्रितपणा होतैं संबंधरूपपणा ही न बणै है, तैसैं ही प्रयोग है—समवाय है सो संबंध नाहीं है जातैं याकै अनाश्रितपणा है जैसैं दिशा आदि द्रव्य अनाश्रित है तैसैं। इस प्रयोगविषैं समवाय जो धर्मी सो कथंचित् तादात्म्यरूप है अर अनेक है ताकूं हम मान्या है तातैं धर्मीका ग्राहक जो प्रमाण ताकरि बाधा नाहीं है। बहुरि आश्रयासिद्ध दूषण न कहना। बहुरि तिस समवायकै आश्रितपणा होतें भी यहु दूषणा कहिये है, समवाय

है सो एक नाही है जातैं सबंधस्वरूपपणा होतै याकै आश्रितपणा
जैसै संयोग संबंध है। इहां सत्ताकरि हेतुकै अनेकान्त होय है ता
हेतुका संबंधस्वरूपपणा होतैं ऐसा विशेषण किया है। अब नैयायि
फेरि कहै है—जो संयोग विषैं तौ दृढ संयोग शिथिल संयोग इत्या
नानापणाकी प्रतीति है तातै नानापणा है अर ऐसैं समवायविषैं
नाही जातै समवाय तौ तिसतै विपरीत है, ताकूं आचार्य कहैं है—
ऐसैं नाही जातैं समवायविषै भी उत्पत्तिमानपणा विनश्वरपणाकी प्रती
तिरूप नानापणा सुलभ है। बहुरि कहै—संबंधी पदार्थके भेदतैं सम
वायविषैं नानापणा है तौ संयोगविषैं भी तैसैं ही नानापणा समान है
एक ही विषै तौ प्रश्न युक्त नाहीं। तातै नैयायिककरि कल्पित समवाय
विचार कर अयोग्यपणा है, तातै तिस समवायके वशतै गुण गुण
आदि विषै अभेदकी प्रतीति नाही बणै है। बहुरि नैयायिक कहै है-
जो अवयव अवयवी आदिका भिन्न प्रतिभास है तातैं तिनिकै भेद
है। ताकूं आचार्य कहैं हैं—जो यहु नाही जातै भेदप्रतिभासकै अभे
दतैं विरोध नाही है, घटपट आदिकै भेद है तौऊ कथंचित् अभेद बणै
है। सर्वथा प्रतिभासकै भेदकी असिद्धि है जातैं यहु सत् है इत्या
अभेद प्रतिभासका भी सद्भाव है। तातैं कथंचित् भेदाभेदात्मक, द्रव्य
पर्यायात्मक, बहुरि सामान्यविशेषात्मक तत्व है, सो जलकी तीर देखनें
चालेकै पक्षी देखनेमैं आया तिस न्यायकरि नैयायिक अपना मत साधै
था ताकै स्याद्वादमतमैं कह्या तत्त्व भी देखनेमैं आया, यातैं बहुत कह
नेंकरि पूर्णता होहु ॥ १ ॥

आगैं अब अनेकान्तात्मक वस्तुके समर्थनकै अर्थिहीं दोय हेतु कहै
हैं,—

**अनुवृत्तव्यावृत्तप्रत्ययगोचरत्वात् पूर्वोत्तराकारपरि-
हारावाप्तिस्थितिलक्षणपरिणामेनार्थक्रियोपपत्तेश्च ॥२॥**

याका अर्थ—अनुवृत्त कहिये अन्वयरूप अर व्यावृत्त कहिये न्यारा न्यारा रूप इनिका जो प्रत्यय कहिये ज्ञानमैं प्रतीति ताकै गोचरपणातैं, बहुरि पूर्व परिणामका छोडना उत्तर परिणामका ग्रहण करना इनि दोऊनिकरि सहित स्थितिरूप सो है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थ क्रियाकी प्राप्ति है तातैं । तहा अनुवृत्त आकार तौ जैसै अनेक गऊ विषैं गऊ गऊ ऐसी प्रतीति, सो है। बहुरि व्यावृत आकार कहिये यह गऊ श्याम है यह कावरा है ऐसैं न्यारी न्यारी प्रतीति, सो है । तिनि दोऊ प्रतीतिनिकै गोचर कहिये विषय ताका भाव तातैं अनेकातात्मक वस्तु है । इस हेतुकरि तौ तिर्यक् सामान्य अर व्यतिरेकलक्षण विशेष इनि दोऊ स्वरूप वस्तु साध्या । बहुरि पूर्व आकारका त्याग उत्तर आकारकी प्राप्ति अर इनि दोऊनिकरि सहित स्थिति सोही है लक्षण जाका ऐसा जो परिणाम तिसकरि अर्थ क्रियाकी उपपत्ति है, तातै सामान्यविशेषात्मक वस्तु है । इस हेतुकरि ऊर्द्धता सामान्य अर पर्यायनामा विशेष इनि दोऊ रूप वस्तु समर्थ्या है ॥ २ ॥

आगैं पहले कह्या जो सामान्य ताका भेदकू कहैं हैं,—

सामान्यं द्वेधा तिर्यगूर्ध्वताभेदात् ॥ ३ ॥

याका अर्थ—सामान्य दोय प्रकार है, तिर्यक् सामान्य, ऊर्द्धता सामान्य ऐसैं भेदतैं ॥ ३ ॥

आगैं पहला भेद जो तिर्यक् सामान्य ताकू उदाहरणसहित कहै है —

सदृशपरिणामस्तिर्यक् खंडमुंडादिषु गोत्ववत् ॥४॥

याका अर्थ—सदृश कहिये सामान्य जो परिणाम सो तिर्यक् सामान्य है जैसैं अनेक खाडी मूडी गऊ हैं तिनिविषैं गऊपणा है। तहा

जो गऊपणा आदिकू सर्वथा नित्य एक रूप मानिये तौ क्रम यौगपद्य करि अर्थ क्रियाका विरोध आवै अर सर्व व्यक्तिनिविषैं न्यारा न्यारा समस्तपणैं वृत्तिका अयोग आवै। तातै अनेक है अर सदृशपरिणाम स्वरूप ही है, ऐसा तिर्यक् सामान्य कह्या ॥ ४ ॥

आगैं दूसरा भेद जो ऊर्ध्वता सामान्य ताकूं दृष्टान्तसहित दिखावै है,—

परापरविवर्त्तव्यापि द्रव्यमूर्ध्वता मृदिव स्थासादिषु ॥ ५ ॥

याका अर्थ—पर कहिये पूर्वकालभावी अपर कहिये उत्तरकालभावी विशेष पर्याय तिनिविषैं व्यापनेवाला जो द्रव्य सो उर्ध्वता सामान्य है जैसैं स्थास कोश कुसूल आदि मृत्तिकाकी अवस्था विषै मृत्तिका व्यापी है। इहा सामान्य शब्दकी अनुवृत्ति लेणीं। ताकरि यह अर्थ होय है जो यह उर्ध्वता सामान्य है सो कहा है ? द्रव्य है, सो ही परापरविवर्त्तव्यापी ऐसा विशेषणरूप कीजिये है, पूर्व अपरकालवर्ती तीन काल विषैं अन्वयरूप है ऐसा अर्थ है, जैसैं चित्रका ज्ञान एक है ता विषैं एक कालभावी जे अनेक अपनें विषैं आये चित्रके नील आदि आकार तिनिकी व्याप्ति है तैसैं एककै भी क्रमतैं होय, ऐसा परिणाम तिनिविषैं व्यापीपणा है। ऐसा अर्थ जानना ॥ ५ ॥

आगै विशेषकै भी दोय प्रकारपणा है, ऐसैं दिखावै है,—

विशेषश्च ॥ ६ ॥

याका अर्थ—विशेष है सो भी दोय प्रकार है। इहा द्वेधा शब्दका अधिकार करि सवध करना ॥ ६ ॥

सो ही कहै है,—

पर्यायव्यतिरेकभेदात् ॥ ७ ॥

याका अर्थ—सो विशेष दोय प्रकार है, पर्याय अर व्यतिरेक ऐसैं भेदतैं ॥ ७ ॥

आगैं पहला विशेषका भेदकूं कहैं हैं,—

एकस्मिन् द्रव्ये क्रमभाविनः परिणामाः पर्याया आत्मनि हर्षविषादादिवत् ॥ ८ ॥

याका अर्थ—एक द्रव्यविषै क्रमभावी परिणाम हैं ते पर्याय हैं जैसैं आत्माविषै हर्ष अर विषाद अनुक्रमतैं होय हैं ते पर्याय है । इहा आत्मद्रव्य अपनी देह प्रमाण मात्र ही है व्यापक नाही है, बहुरि वट-कणिका मात्र छोटासा नाही है, बहुरि कायकै आकार परिणये जे पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तावन्मात्र चार्वाकमती कहै है सो नाहीं है । तहा आत्माकूं यौगमती व्यापक कहैं है, तिनिका तौ अनुमानका प्रयोग ऐसा है—आत्मा व्यापक है जातैं द्रव्यपणाकूं होतैं अमूर्तिकपणा है जैसें आकाश व्यापक है। ताकूं पूछिये—जो अमूर्त्तपणा है सो जो रूपा-दिक स्वरूप मूर्त्तीकपणा है ताका प्रतिषेधरूप अमूर्त्तपणा है तौ मन-करि अनेकान्त है । यौगमती मनकूं द्रव्य मानैं हैं अर अमूर्त्तपणा ठह-राया है तौहू व्यापक नाही, यह व्यभिचार आया । बहुरि कहै—अ-सर्वगत द्रव्यका परिमाण मूर्त्तपणा है ताका निषेध अमूर्त्तपणा है तौ पर जे हम तिनि प्रति साध्य समान हेतु है, आत्माकै व्यापकपणा साध्य है तैसा ही व्यापकपणा हेतु भया । बहुरि अन्य अनुमान कहै— जो आत्मा व्यापक है जातैं अणुपरिमाण अधिकरणकका अभाव होतैं नित्य द्रव्य है, इहा नित्य है ऐसा ही हेतु कहै तौ परमाणुविषैं गुण भी नित्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहारकै अर्थि नित्य द्रव्य

कह्या। बहुरि द्रव्य ही कहते तौ घट भी द्रव्य है ताकरि व्यभिचार आवै ताके परिहारकै अर्थि नित्य विशेषण किया। बहुरि नित्य द्रव्य ही कहतै मनकरि अनेकान्त होय ताके परिहारकै अर्थि अणुपरिमाणानधिकरण कह्या, इहा भी आकाशका दृष्टान्त है। सो यह अनुमान भी समीचीन नाहीं है। जातैं अणुपरिमाणानधिकरणपणा हेतुका विशेषण है तहा निषेध पर्युदास है कि प्रसज्य है? जो कहैगा पर्युदास है तौ अणुपरिमाणका प्रतिषेध करिकैसा परिमाण है? महापरिमाण है कि अवान्तरपरिमाण है कि परिमाणमात्र है? जो कहै—महापरिमाण है तौ हेतु साध्य समान ही है जातैं व्यापकपणा साध्य है महापरिमाण हेतु कह्या सो समान भया। बहुरि कहै—अवान्तर परिमाण है तौ हेतु विरुद्ध है, अवान्तरपरिमाणाधिकरणपणा है सो अव्यापकपणाहीकू साधै है। बहुरि कहै—परिमाणमात्र है तौ तिसकू परिमाणसामान्य अगीकार करना, ऐसैं होतैं अणुपरिमाणका प्रतिषेधकरि परिमाणसामान्याधिकरणपणा आत्माकै है ऐसै कह्या ठहरै सो बणै नाही, यामैं विशेष अधिकरणरहितकी सिद्धिका प्रसग आवै है, जातैं आत्माकै विषैं परिमाणसामान्य व्यवस्थित नाही। तौ कहा है? परिमाणकी व्यक्तिनिविषैं ही व्यवस्थित है, सामान्य होय सो तौ अपनैं विशेषनिमैं ही रहै। बहुरि अवान्तरपरिमाण अर महापरिमाण इनि दोऊनिका आधारपणा करि आत्मा न पावै तब परिमाणमात्र अधिकरणपणा आत्मा विषै निश्चय किया जाय नाही। बहुरि आकाशका दृष्टान्त कहै—सो साधनरहित होय, आकाशकै तौ महापरिमाणाधिकरणपणाकरि परिमाणमात्राधिकरणपणाका अयोग है। बहुरि नित्यद्रव्यपणा है सो सर्वथा असिद्ध है, सर्वथा नित्यकै क्रम यौगपद्यकरि अर्थक्रियाका विरोध है। बहुरि कहैगा—दूसरी पक्ष प्रसज्य प्रतिषेध है, तौ प्रसज्य प्रतिषेध तौ तुच्छा-

भाव कहिये सर्वथा अभाव रूप है, ताका ग्रहणका उपायका असभव है, तातै ताके हेतुका विशेषणपणा ही नाही। बहुरि अगृहीतविशेषण हेतु है, सो कछू है नाही जातै ऐसा वचन है जो विशेष्यविषै बुद्धि है सो अगृहीतविशेषणस्वरूप नाही है, विशेषणकू ग्रहण किये विशेष्यकी बुद्धि होय है। बहुरि तुच्छाभावका ग्रहणका उपाय प्रत्यक्ष प्रमाण नाही है जातै प्रत्यक्षकै तुच्छाभावके सबधका अभाव है। प्रत्यक्ष तौ इन्द्रियकै अर पदार्थकै सन्निकर्षतै उपजै सो नैयायिकमतविषैं प्रसिद्ध है। अर विशेषण विशेष्यभाव सबधकी कल्पना करै तौ अगृहीतकै विशेषपणा नाही है, ऐसैं तो पूर्व कह्या, सो ही इहा दूषण है तातैं आत्मद्रव्य व्यापक नाही है॥ बहुरि वटकणिका मात्र भी नाहीं है, सुन्दर स्त्रीका कुच जघनस्पर्शनके कालविषै रोम रोममैं आल्हाद आकार सुखका अनुभव होय है जो ऐसै न होय तो सर्वांग विषै रोमाच आदि कार्यका उपजनेका अयोग होय।

बहुरि इहा कहै—जो अणमात्र आत्माकै भी शीघ्र वृत्तितै आलात चक्रकी ज्यों युगपतका प्रतिभास होय है तोहू क्रमकरि सर्वांग सुख होय है तौ इहा अयुक्त है जातै तिस सुखका कारण अन्त करणका अन्य अन्य सबधकी कल्पना होतै वीचिमैं व्यवधान कहिये अन्तरका प्रसग आवै है, सुखमै विच्छेद वीचि वीचिमैं हूवा चाहिये। अर मनका सवन्ध विना ही सुख मानिये तौ सुखके मानसप्रत्यक्षपणाका अयोग है। बहुरि पृथ्वी आदि भूतचतुष्टयस्वरूपपणा भी आत्माकै नाही है जातै पृथ्वी आदि तौ अचेतन है सो अचेतनतै चैतन्यकी उत्पत्तिका अयोग है। बहुरि पृथ्वी आदिके धारण प्रेरण द्रव उष्ण स्वभावरूपतैं चैतन्यकै अन्वयका अभाव है जातैं पृथिवीका धारण स्वभाव है पवनका प्रेरण स्वभाव है जलका द्रव स्वभाव है अग्निका उष्ण स्वभाव है, इनि स्वभावनितैं चैतन्यका देखना

जानना स्वभावके अन्वय नाही दीखै है। वहुरि तुरतके भये बालककैं स्तन आदिविषै अभिलापका प्रसग आवै है, अभिलाप तौ प्रत्यभिज्ञान होतैं होय है, प्रत्यभिज्ञान स्मरण होतै होय है स्मरण अनुभव होतै होय है, ऐसै पूर्व अनुभव होना सिद्ध होय है जातैं वीचिकी दशा विषै तैसैं ही व्याप्ति है। वहुरि मरण भये पीछे व्यन्तरकुलविषै आप उपजै ते आय कहैं जो मैं फलाणा हू सो व्यतर भयाहू ऐसैं कहते देखिये है। वहुरि केईकनिकैं पूर्व भवका स्मरण होय है। ऐसैं चेतनकै अनादिपणा सिद्ध होय है, सो ही कह्या है ताका श्लोक है ताका अर्थ—तिसही दिनका उपज्या वालककै तिसही दिन स्तनकै लागणेकी इच्छा होय है, वहुरि व्यन्तरका देखना, भवस्मरणका होना, पृथ्वी आदि भूत अचेतनतै अन्वय नाही, ऐसैं च्यार हेतुनितैं स्वभावहीकरि ज्ञाता द्रव्यस्वरूप नित्य सिद्ध होय है। वहुरि ऐसै न कहना—जो अपना देहप्रमाण आत्मा है, ऐसैं कहनेंमैं भी प्रमाणका अभाव है यातैं सर्वत्र सशय है जातैं देह प्रमाण साधनेंविषैं अनुमान प्रमाणका सद्भाव है। सो ही कहै है—देवदत्तनामा पुरुषका आत्मा तिसके देह विषै ही है, वहुरि तहा सर्वत्र ही विद्यमान है जातैं तिस देह विषै ही वहुरि तहा सर्वत्र ही अपना असाधारण गुणका आधारपणाकरि ग्रहण होय है। जो जहा ही वहुरि जहा सर्वत्र ही अपना असाधारण गुणका आधारपणाकरि पाइये सो तहा ही वहुरि तहा सर्वत्र ही विद्यमान होय, जैसैं देवदत्तके घर विषै ही वहुरि तहा सर्वत्र ही पाइये ऐसा अपना असाधा-

(१) तथा चोक्तम्—

तदहर्जस्तनेहातो रक्षोदृष्टेर्भवस्मृतेः।
भूतानन्वयनात्सिद्धः प्रकृतिज्ञः सनातनः॥ १॥

रण भासुर प्रकाशपणा आदि गुण जाकै ऐसा दीपक है तैसैं ही देव-दत्त पुरुषका देह विषै ही अर देह विषै सर्वत्र ही आत्मा है, आत्माके असाधारण गुण ज्ञान दर्शन सुख वीर्य हैं ते सर्वांगविषै तिस देह विषैं ही पाइय हैं। इहा देह विषैं ही आत्मा है ऐसा कहनें तैं तौ व्यापकका निषेध भया, अर देह विषै सर्वत्र है ऐसैं कहनें ते बटकणिका मात्रका निषेध भया। इहा श्लोक है ताका अर्थ—सुख है सो तौ आल्हादनके आकार है, विज्ञान है सो मेय कहिये जाननें योग्य वस्तुका जानना है, शक्ति है सो क्रिया करि अनुमानमैं आवै है जैसैं तरुण पुरुषके स्त्रीका समागमविषैं होय है, आनद अर जानना अरु सामर्थ्य ये तीनू तहा ताकै प्रकट देखिये है ऐसा वचन है। तातै आत्मा अपनी देहकै प्रमाण ही निश्चित भया ॥ ८ ॥

आगैं विशेषका दूसरा भेदकू कहै है,—

अर्थान्तरगतो विसदृशपरिणामो व्यतिरेको गोमहिषादिवत् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—अन्य अन्य पदार्थ विषैं पाइये ऐसा विसदृश परिणाम है सो व्यतिरेकनामा विशेष है, जैसैं गऊ भैंसि आदि न्यारे न्यारे विलक्षण परिणाम स्वरूप है तैसैं। जातै विसदृशपणा है सो प्रतियोगीके ग्रहण होतै ही होय है जैसैं गऊतै भैंसि विसदृश है। इहा गऊ प्रतियोगी है ताका ग्रहण है। बहुरि या विसदृशपणाकै परकी अपेक्षा स्वरूप होतै वस्तुपणा नाही है, अवस्तुविषैं तौ आपेक्षिकपणाका अयोग है जातैं अपेक्षाकै वस्तुनिष्ठपणा ही है अवस्तुविषै अपेक्षा नाही होय है ॥ ९ ॥

ऐसैं प्रमाणके विषयका निरूपण किया।

---

(१) सुखमाल्हादनाकारं विज्ञानं मेयबोधनम्।
शक्तिः क्रियानुमेया स्याद्यून कान्ता समागमे ॥

इहा श्लोकः—

स्यात्कारलांछितमबाध्यमनन्तधर्म-
सन्दोहवर्मितमशेषमपि प्रमेयम् ।
देवैः प्रमाणबलतो निरचायि तच्च
संक्षिप्तमेव मुनिभिर्विवृतं मयैतत् ॥ १ ॥

याका अर्थ—श्री अकलकदेव आचार्यनैं समस्त ही प्रमाणका विषय जो प्रमेय ताका निरूपण किया, कैसा है प्रमेय—स्यात्कार कहिये कथचित् प्रकार ताकरि चिह्नित है याहीतैं अवाध्य कहिये निर्बाध है, बहुरि कैसा है—अनत धर्मका जो समूह ताकरि सहित है, सो काहेतै कह्या है—प्रमाणके बलतें कह्या है तातै प्रमाणभूत है, सो ही मुनि जे माणिक्यनदि आचार्य तिनिनै सक्षेपकरि कह्या है, सो ही मैं अनतवीर्य आचार्य विवरणरूप किया है ॥ १ ॥

सवैया ।

अकलंक देव मुनि रची जो प्रमेयधुनि,
स्यादवाद चिह्नतै अशेष निरबाध है ।
मानको सहाय पाय लसे जे अनंत धर्म,
मंडित अखंड पंडिताकै हू अगाध है ॥
रत्ननंदि ताहि जानि संक्षेप किया बखान,
ताका बिसतारसूं अनंतवीर्य साध है ।
देशमयी कथा रूप किया बुद्धि सारू मैंभी
पढ़ौ सुनौ भव्यजीव मिथ्यामत बाध है ॥ १ ॥

ऐसें परीक्षामुख प्रमाणप्रकरणी लघुवृत्तिकी वचनिका विषै विषयका समुद्देशनामा चौथा अधिकार पूर्ण भया ॥ ४॥

अथ पंचम समुद्देश ।

[५]

आगैं प्रमाणके फलकी विप्रतिपत्तिका निराकारणकै अर्थि सूत्र कहैं है,—

अज्ञाननिवृत्तिर्हानोपादानोपेक्षाश्च फलम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—अज्ञानकी तौ निवृत्ति कहिये अभाव होना बहुरि हान कहिये त्याग अर उपादान कहिये ग्रहण अर उपेक्षा कहिये उदासीनता वीतरागता एते प्रमाणके फल है ॥ तहा फल दोय प्रकार है साक्षात् कहिये लगता ही, अर पारपर्य कहिये परपरा करि । तहा साक्षात् तौ अज्ञानका नाश होना फल है जातै वस्तुका यथार्थ ज्ञान होय तिस ही काल अज्ञानका नाश होय है, करणरूप ज्ञान सो तौ प्रमाण है अर क्रियारूप जानना सो फल है सो ही अज्ञानकी निवृत्ति है । बहुरि परपराकरि ग्रहण त्याग अर वीतरागता ये फल हैं जातै प्रमेय वस्तुका निश्चय भये पीछैं होय है । सो यह दोय प्रकारका ही फल प्रमाणतै भिन्न ही है ऐसै तो नैयायिक मानैं हैं । बहुरि प्रमाणतैं अभिन्न ही है ऐसैं बौद्धमती माने है ॥ १ ॥

तिनि दोऊनिका मत निराकरण करि अपना मत स्थापनेंकूं सूत्र कहैं है,—

प्रमाणादभिन्नं भिन्नं च ॥ २ ॥

याका अर्थ—प्रमाणतै प्रमाणका फल कथचित् अभिन्न है कथचित् भिन्न है ॥ २ ॥

आगैं कथचित् अभेदके समर्थनकै अर्थि हेतु कहैं हैं,—

यः प्रमिमीते स एव निवृत्ताज्ञानो जहात्यादत्ते उपेक्षते चेति प्रतीतेः ॥ ३ ॥

याका अर्थ—जो आत्मा प्रमेयकू प्रमाणकरि यथार्थ जानै है सो ही दूर भया है अज्ञान जाका ऐसा होय करि अनिष्टका त्याग करै है इष्टका ग्रहण करै है जो आपकै इष्ट अनिष्ट न जानैं तानिपैं मध्यस्थ होय है वीतराग होय है ऐसै प्रतीति है। इहा ऐसा अर्थ जानना—जिस ही आत्माकैं प्रमाणकै आकार परिणाम होय है तिसहीकै फलरूपपणाकरि परिणाम होय है, ऐसैं एक प्रमाताकी अपेक्षाकरि प्रमाण फलकै अभेद है। बहुरि प्रमाण करणरूपपरिणाम है फल क्रियारूप है, ऐसैं करणक्रिया परिणामके भेदतैं भेद है, ऐसैं भेदकै सामर्थ्यसिद्धपणा है तातैं भेदका समर्थन हेतु न्यारा न कह्या है ॥ ३ ॥

ऐसैं प्रमाणके फलका निरूपण किया।

इहा श्लोक—

पारम्पर्येण साक्षाच्च फलं द्वेधाऽभ्यधायि यत्।
देवैर्भिन्नमभिन्नं च प्रमाणात्तदिहोदितम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—श्रीअकलकदेव मुनिनैं प्रमाणका फल साक्षात् अर परपराकरि दोय प्रकार कह्या सो प्रमाणतै भिन्न अर अभिन्न कह्या है, सो ही या प्रकरणविपै माणिक्यनदिआचार्यनैं कह्या है ॥ १ ॥

कहिये जाकूं जानिये सो तौ ज्ञेय है, जैसैं घट है। तहा आचार्य कहैं है—यह कहना मिले नाही, इहा धर्मी जो ज्ञान ताकै अन्य ज्ञानकरि वेद्यपणा होतै साध्यकै मध्य आय पडनेंतैं धर्मीपणाका अयोग है जातैं धर्मी तौ प्रसिद्ध ही होय है। बहुरि धर्मी ज्ञानकै स्वसंविदितपणा कहिये तौ तिस ही करि हेतुकै अनेकान्तपणा है। बहुरि महेश्वरका ज्ञानकरि व्यभिचार आवै है जातैं महेश्वरका ज्ञान अस्वसंविदित कहै तौ सर्वज्ञपणा न ठहरै, स्वसंविदित कहै तौ स्वमतकी हानि होय है। बहुरि व्याप्तिज्ञानकरि भी अनेकान्त कहिये व्यभिचार आवै है। बहुरि अस्वसंविदित ज्ञानतैं अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है जातैं जो ज्ञापक कहिये जनावनेंवाला अप्रत्यक्ष होय सो जनावनेंयोग्यकूं जनावै नाही। जो ऐसैं होय ज्ञापक विना जाण्या भी जणावै तौ शब्द कानतैं सुण्या विना अर्थकूं जनावनेंवाला ठहरै, लिंग धूमादिक नेत्रकरि देख्या विना अग्नि आदिकूं जानवनेंवाला ठहरै। इहा कहै—जो लगताही अन्य ज्ञान है ताकरि ग्रहण करिये है, तौ ताकै भी विना ग्रहणकै परका जनावनेंवालापणा नाही तब ताके ग्रहणकूं तिसतैं अन्य ज्ञान कल्पनें योग्य ठहरै तहा भी तिसतै अन्य कल्पना ऐसैं अनवस्था आवै। तातैं अस्वसंविदित ज्ञान ऐसा नैयायिकका पक्ष श्रेष्ठ नाही।

इस ही कथनकरि मीमांसक कहै है—जो करण ज्ञानकै परोक्षपणाकरि स्वसंविदितपणा नाही है करणज्ञान परोक्ष ही है तातैं अस्वसंविदित ही है ताका भी निराकरण क्रिया जातैं ऐसे ज्ञानतैं भी अर्थका प्रत्यक्षपणाका अयोग है। इहा मीमांसक कहै है—जो करण ज्ञान है सो कर्मपणाकरि प्रतीतिमैं न आवै है तातैं याकै प्रत्यक्षपणा नाही है प्रत्यक्ष तौ कर्मज्ञान है, तौ ताकूं कहिये—ऐसैं कहैं फलज्ञानकै भी प्रत्यक्षपणा न ठहरैगा। बहुरि कहै—फलपणाकरि प्रतिभास-

अथ षष्ठ समुद्देश ।



(६)

आगै अब कह्या जो प्रमाणका स्वरूप आदि चतुष्टय तिनिका आभास कहिये कहे जैसैं नाही अर तिनि सारिखे दीखै तिनिकू कहै है—

ततोऽन्यत्तदाभासम् ॥ १ ॥

याका अर्थ—तत कहिये कह्या जो प्रमाणका स्वरूपादिक तातैं अन्यत् कहिये विपरीत सो तदाभास कहियं ताका आभास है । इहा कह्या जो प्रमाणका स्वरूप सख्या विषय फल ये च्यार भेद तिनितैं अन्यत् विपरीत सो तदाभास हैं ॥ १ ॥

आगैं क्रममैं प्राप्त भया जो स्वरूपाभास ताकू दिखावै है—

अस्वसंविदितगृहीतार्थदर्शनसंशयादयः प्रमाणाभासाः ॥ २ ॥

याका अर्थ—अस्वसंविदित कहिये आपकरि आपकू न जानै, गृहीतार्थ कहिये ग्रह्याकू ग्रहण करै, दर्शन कहिये सामान्याकारमात्रका ग्राही, संशय कहिये संदेहरूप, आदि शब्दतै विपर्यय अनध्यवसाय ये सर्व प्रमाणाभास है। इहा अस्वसंविदित गृहीतार्थ दर्शन संशयादि इनिका द्वन्द्वसमास करना । बहुरि आदि शब्दकरि विपर्यय अनध्यवसायका ग्रहण करना । तहा ज्ञान अस्वसंविदित है जातैं अन्य ज्ञानकरि प्रत्यक्ष होय है ऐसैं नैयायिक मती कहै है, ताका प्रयोग, सो ही कहै हैं—ज्ञान है सो आपतै न्यारा जो ज्ञान ताकरि जानने योग्य है जातैं वेद्य

कहिये जाकू जानिये सो तौ ज्ञेय है, जैसैं घट है। तहा आचार्य कहैं हैं—यह कहना मिलै नाही, इहा धर्मी जो ज्ञान ताकै अन्य ज्ञानकरि वेद्यपणा होतै साध्यकै मध्य आय पडनेंतैं धर्मीपणाका अयोग है जातैं धर्मी तौ प्रसिद्ध ही होय है। बहुरि धर्मी ज्ञानकै स्वसविदितपणा कहिये तौ तिस ही करि हेतुकै अनेकान्तपणा है। बहुरि महेश्वरका ज्ञानकरि व्यभिचार आवै है जातैं महेश्वरका ज्ञान अस्वसविदित कहै तौ सर्वज्ञपणा न ठहरै, स्वसविदित कहै तौ स्वमतकी हानि होय है। बहुरि व्याप्तिज्ञानकरि भी अनेकान्त कहिये व्यभिचार आवै है। बहुरि अस्वसविदित ज्ञानतैं अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है जातै जो ज्ञापक कहिये जनावनेंवाला अप्रत्यक्ष होय सो जनावनेंयोग्यकू जनावै नाही। जो ऐसैं होय ज्ञापक विना जाण्या भी जणावै तौ शब्द कानतैं सुण्या विना अर्थकू जनावनेंवाला ठहरै, लिंग धूमादिक नेत्रकरि देख्या विना अग्नि आदिकू जानवनेंवाला ठहरै। इहा कहै—जो लगताही अन्य ज्ञान है ताकरि ग्रहण करिये है, तौ ताकै भी विना ग्रह्याकै परका जनावनेंवालापणा नाही तब ताकै ग्रहणकू तिसतै अन्य ज्ञान कल्पनें योग्य ठहरै तहा भी तिसतैं अन्य कल्पना ऐसैं अनवस्था आवै। तातै अस्वसविदित ज्ञान ऐसा नैयायिकका पक्ष श्रेष्ठ नाही।

इस ही कथनकरि मीमासक कहै है—जो करण ज्ञानकै परोक्षपणाकरि स्वसविदितपणा नाही है करणज्ञान परोक्ष ही है तातैं अस्वसविदित ही है ताका भी निराकरण किया जातैं ऐसे ज्ञानतैं भी अर्थका प्रत्यक्षपणाका अयोग है। इहा मीमासक कहै है—जो करण ज्ञान है सो कर्मपणाकरि प्रतीतिमैं न आवै है तातै याकै प्रत्यक्षपणा नाही है प्रत्यक्ष तौ कर्मज्ञान है, तौ ताकू कहिये—ऐसैं कहैं फलज्ञानकै भी प्रत्यक्षपणा न ठहरैगा। बहुरि कहै—फलपणाकरि प्रतिभास-

नेतै प्रत्यक्षपणा है तौ करण ज्ञानकै भी करणपणाकरि प्रतिभासनेंतै प्रत्यक्षपणा होहु। तातै अर्थ जाननेंकी अन्यथा अप्राप्तितै जैसें करण ज्ञान कल्पिये है तैसें अर्थका प्रत्यक्षपणाकी अन्यथा अप्राप्तितै ज्ञानकै प्रत्यक्षपणा भी होहु। बहुरि कहै—जो नेत्र आदि करणकै अप्रत्यक्षपणा होतें भी रूपका प्रगटपणा होय है, तिसतें व्यभिचार आवै है। तहा कहिये—जो भिन्न है कर्त्ता जातें ऐसा करणक ही यहु व्यभिचार है, अभिन्नकर्तृककरण होतें सतै तौ कर्त्ताका प्रत्यक्षपणा होतें तिस कर्त्तातें अभिन्न जो करण ताकै कथंचित् प्रत्यक्षपणाकरि अप्रत्यक्ष एकान्तका विरोध है, जैसै प्रकाश स्वरूपकै अप्रत्यक्षपणा होते प्रदीपकै प्रत्यक्षपणा होतें विरोध है तैसें॥ बहुरि गृहीतग्राही जो धारावाही ज्ञान सो गृहीतार्थ प्रमाणाभास है। बहुरि बौद्धकरि मान्या जो निर्विकल्पस्वरूप प्रत्यक्ष प्रमाण सो दर्शन है, सो अपनें विषयका उपदर्शकपणा याकै नाही है तातैं अप्रमाण है। जातैं तिस विषयभूत पदार्थतैं उपज्या जो व्यवसाय कहिये निश्चय ताहीकै अपना विषयका उपदर्शकपणा है। बहुरि बौद्ध कहै है—जो व्यवसायकै प्रत्यक्षपणा नाही प्रत्यक्षकै आकार करि अनुरक्तपणा ही है तातैं प्रत्यक्षकै तौ प्रमाणपणा है अर व्यवसाय है सो तौ गृहीतग्राही है यातै अप्रमाण है। तहा आचार्य कहैं है—यह सुभाषित नाही, दर्शन है सो विकल्परहित है ताका उपलंभ नाही तातैं ताका सद्भावका अयोग है। बहुरि सद्भाव मानिये तौ जैसै नील आदिक विषै उपदर्शक है तैसै क्षणक्षयादिविषै भी ताका उपदर्शकपणा ठहरै है। बहुरि कहै—जो क्षणक्षयादि विषैं क्षणिकतैं विपरीत अक्षणिकका संशयादिरूप समारोप होय यातैं ताका उपदर्शक नाही, तौ ताकू कहिये—यह सिद्ध भई नील आदि विषै समारोप जो संशयादिक ताका विरोधी जो ग्रहण सो है लक्षण जाका ऐसा निश्चय होय है तिस

स्वरूप ही प्रमाण है अन्य तदाभास है। बहुरि संशयादि हैं ते प्रमाणाभास प्रसिद्ध ही हैं। तहां संशय है सो तौ दोय तरफका स्पर्शन करनेंवाला है जैसें खेतमैं रोप्या स्थाणुकौ देखि जाकै यह स्थाणु ही है ऐसा निश्चय नाही, सो विचारे यह स्थाणु है कि पुरुष है। ताका निश्चय नाही होनें तैं यहु प्रमाणाभास है। बहुरि अन्य विषैं अन्यका विकल्प निश्चय सो विपर्यय है, जैसैं सींपविषै रूपाका निश्चय। बहुरि विशेषका निश्चय नाही सो अनध्यवसाय है, जैसै चालताकै तृण लागै तब जानैं किछू है, विशेष निश्चय नाहीं॥ २॥

आगैं कहै है इनि अस्वसंविदित आदिकै प्रमाणभासपणा कैसैं है; ताका सूत्र—

स्वविषयोपदर्शकत्वाभावात्॥ ३॥

याका अर्थ—जातै ये अस्वसंविदित आदिक हैं तिनिकै अपना विषयका उपदर्शकत्व कहिये निश्चायकपणा ताका अभाव है तातैं ये प्रमाणाभास है॥ ३॥

पुरुषान्तरपूर्वार्थगच्छत्तृणस्पर्शस्थाणुपुरुषादि-ज्ञानवत्॥ ४॥

आगै इनि विषैं दृष्टांत अनुक्रमतैं कहैं है,—

याका अर्थ—अन्य पुरुषका ज्ञानकी ज्यों अस्वसंविदित ज्ञान अपना विषय विषै नाही प्रवर्तै है तातैं प्रमाण नाही, पूर्वं ग्रह्या है अर्थ जानैं ऐसा ज्ञानकी ज्यों गृहीतार्थ ज्ञान प्रमाण नाहीं, चालताकैं तृणस्पर्शज्ञानकी ज्यों दर्शन प्रमाण नाही है, स्थाणु पुरुष ज्ञानकी ज्यों संशय प्रमाण नाही है, आदि शब्दतै विपर्ययादिक तथा ऐसे और भी जाननें ते सारे प्रमाणभास है॥ ४॥

आगै जो सनिकर्षकूं प्रमाण कहै है तिस प्रति दृष्टान्त कहै हैं—

चक्षूरसयोर्द्रव्ये संयुक्तसमवायवच्च ॥ ५ ॥

याका अर्थ—नेत्रकै अर रसकै द्रव्यविषै सयुक्त समवाय स्वरूप सन्निकर्ष है सो जैसै प्रमाण नाही तैसै और भी सनिकर्ष प्रमाण नाही। इहा यहु अर्थ है—जैसैं नेत्र अर रसकैं द्रव्यविषैं सयुक्त समवाय है तौऊ प्रमाण नाही तथा चक्षु रूपकैं सयुक्त समवाय है सो भी प्रमाण नाही है तातै यह भी प्रमाणाभासही है, यहु अतिव्याप्ति कही सो उपलक्षणरूप है, ऐसै ही अन्य इन्द्रियकै सन्निकर्ष अप्रमाण जाननें। इहा नेत्रकरि रूपकै सयोग भया अर रूपकैं अर रसकैं एक द्रव्य विषैं समवाय है सो रसकरि भी समवाय भया सो सयुक्त समवायनामा सनिकर्ष तौ भया अरु नेत्रकै रसका ज्ञान न भया तातैं प्रमाण न भया तब अतिव्याप्ति दूपण भया। बहुरि अव्याप्ति दूपण है जातैं नेत्र इद्रिय विना अन्य इन्द्रियनिकै सनिकर्ष है अर नेत्र प्रमाण है तहा सनिकर्ष व्यापै नाही तातैं अव्याप्ति है। बहुरि सनिकर्षकूं प्रत्यक्ष प्रमाण कहै हैं तिनिकै नेत्रकै विषै सनिकर्षका अभाव है नेत्र पदार्थतै भिडै नाही तातैं नेत्रप्रत्यक्षमै सनिकर्षलक्षण सभवै नाही तब असभवी दूपण भी है। इहा नैयायिक कहै है—जो नेत्र प्राप्त अर्थका जाननेंवाला है जातैं वीचिमै अन्य पदार्थ आडा आवै तब जानै नाही है जैसे दीपककै भीति आदि आडी आय जाय तिस अर्थकूं प्रकाशै नाही तैसैं, भावार्थ—नेत्र भी पदार्थतै जुडिकर ही जाणै है तातैं सनिकर्षकी सिद्धि है। ताकूं आचार्य कहै है—यह भी साधना समीचीन नाहीं जातै नेत्रकै काच भोटल आदि आडा आय जाय तौऊ नेत्र ताकरि व्यवहित पदार्थकूं प्रकाशै है तातैं हेतु असिद्ध है। बहुरि वृक्षकी शाखा अर चन्द्रमाकूं एक काल नेत्र देखै है सो नाही ठहरै यह प्रसग आवै है। बहुरि

कहै—इहा क्रमसू देखे है तहा पुरुषकै युगपत् देखनेंका अभिमान है, सो ऐसें भी न कहना जातैं कालका अतर नाही दीखै है एकही काल है। बहुरि विशेष कहै है—जो क्रमका ज्ञान तौ प्राप्ति भयें ही नेत्रकै जाननेंका निश्चय भये होय है, क्रम प्राप्ति विषैं अन्य प्रमाण तौ नाही है। इहा कहै—जो नेत्र इन्द्रियकैं तैजसपणा है इस हेतुकरि प्राप्त अर्थका प्रकाशपणा है यह अन्य प्रमाण है, तौ ताकू कहिये—यह नाही है, तैजसपणाकी सिद्धि नाही होय है। इहा नैयायिक तैजसपणा साधनेंकू प्रयोग करै है—नेत्र है सो तैजस है जातैं रूपादिक गुण है तिनिमै सू रूपका ही यह प्रकाशक है जैसैं दीपक है। आचार्य कहै है—यह भी प्रयोग विना विचारया किया है जातैं इहा प्रदीपका दृष्टान्त कह्या सो तौ तैजस है अर मणि तथा अजन आदिक पार्थिव है पृथिवीतैं उपजै हैं तेऊ रूपकू प्रकाशैं हैं। बहुरि नेत्रकू तेजोद्रव्यके रूप प्रकाशनेतैं तैजस कहिये तौ पृथिवी आदिके रूपका प्रकाशक है, तातैं याकैं पृथिवी आदि करि रच्यापणाका प्रसग आवै है, भावार्थ—नेत्र भी पार्थिव ठहरै है। तातैं सनिकर्षकैं अव्यापकपणा है। तातैं प्रमाणपणा नाही। बहुरि करण ज्ञानकरि याकै व्यवधान है, सन्निकर्ष भये पीछैं इन्द्रिय ज्ञान पदार्थकू जाणैं है सन्निकर्षही जानैं नाही। ऐसैं करण ज्ञानकरि व्यवधान भया सन्निकर्षकरि ही तौ अर्थका सवेदन नाही भया तातैं सन्निकर्ष प्रमाणाभासही है ॥ ५ ॥

आगैं प्रमाण सामान्याभास कहि करि अब प्रमाणविशेषका आभास कहैं हैं, तहा प्रत्यक्षभास कहैं हैं,—

अवैशद्ये प्रत्यक्षं तदाभासं बौद्धस्याकस्माद्धूमदर्शनाद्वह्निविज्ञानवत् ॥ ६ ॥

याका अर्थ—अविशदपणा होतै प्रत्यक्ष मानैं सो प्रत्यक्षाभास है जैसै बौद्धमतीकै अकस्मात् निश्चय भये विनाही धूम देखनेतै अग्निका विज्ञान बौद्ध निर्विकल्प प्रत्यक्ष मानैं है जैसै धूमकी परीक्षा निश्चय विना अग्निका अनुमान करै। सो विना निश्चय तदाभास है तैसैं प्रत्यक्षाभासही है प्रमाण नाही ॥ ६ ॥

आगै परोक्षाभासकू कहै हैं,—

वैशद्येऽपि परोक्षं तदाभासं मीमांसकस्य करणज्ञानवत् ॥ ७ ॥

याका अर्थ—जहा वैशद्य होय तहा भी परोक्षमानैं सो परोक्षाभास है जैसै मीमासक करणज्ञान विशद है तौऊ ताकू परोक्ष मानैं है तैसै। यहु पहले विस्तारकरि कह्या ही है ॥ ७ ॥

आगै परोक्षके भेदाभासकू कहते सते क्रममैं आया जो स्मरणाभास ताकू कहैं हैं,—

अतस्मिँस्तदिति ज्ञानं स्मरणाभासं जिनदत्ते स देवदत्तो यथा ॥ ८ ॥

याका अर्थ—जो अनुभवविषै आया नाही ताका स्मरणा सो स्मरणाभास है जैसैं जिनदत्त पुरुषकू पूर्वैं देख्या था अर यादि देवदत्तकू किया 'जो सो देवदत्त' ऐसैं ॥ ८ ॥

आगैं प्रत्यभिज्ञानाभासकू कहैं हैं;—

सदृशे तदेवेदं तस्मिन्नेव तेन सदृशं यमलकवदित्यादि प्रत्यभिज्ञानाभासम् ॥ ९ ॥

याका अर्थ—सदृश विषैं तो सो ही यहु है अर तिस ही विषैं यहु तिस सारिखा है जैसै दोयका जुगल विषैं एक देखै इत्यादि प्रत्य-

भिज्ञानाभास है ॥ इहां प्रत्यभिज्ञान दोय प्रकारकाकू लेय प्रत्यभिज्ञानाभास भी दोय प्रकार कह्या, एकत्वनिबंधन, सादृश्यनिबंधन । तहां एकत्वविषै तौ सादृश्यका ज्ञान, अर सादृश्यविषै एकत्वका ज्ञान, सो प्रत्यभिज्ञानाभास है ॥ ९ ॥

आगैं तर्काभासकू कहै है,—

असंबद्धे तज्ज्ञानं तर्काभासं यावाँस्तत्पुत्रः सः श्याम इति यथा ॥ १० ॥

याका अर्थ—असंबद्ध कहिये अविनाभावरहित विषै अविनाभावका ज्ञान सो तर्काभास है, जैसै काहूकै अन्य कोई पुत्र श्याम देखि कहै—याके जे ते पुत्र हैं तथा होंयगे ते सर्व श्याम हैं, ऐसै व्याप्ति कहना तर्काभास है ॥ १० ॥

आगैं अनुमानभास कहैं हैं,—

इदमनुमानाभासम् ॥ ११ ॥

याका अर्थ—इद कहिये आगैं कहैं हैं सो अनुमानाभास है ॥११॥

आगैं तिस अनुमानाभासविषै तिसके अवयवाभास दिखावनैंकरि समुदायरूप अनुमानाभासकू दिखावनेकी इच्छाकरि पहले पहला अवयवाभास कहैं हैं,—

तत्रानिष्टादिः पक्षाभासः ॥ १२ ॥

---

(१) मुद्रित संस्कृत प्रतिमें "यावाँस्तत्पुत्र स श्याम इति यथा" यह पाठ सूत्रमें नहीं दिया है किन्तु टीकामें दिया है और परीक्षामुख सूत्र जो अलग पुस्तकरूपी आदिमें प्रकाशित है वहां सूत्रमेंही ऐसा पाठ दिया है। लेकिन-यह पाठ सूत्रमें ही होना चाहिये।

याका अर्थ—तिनि अवयवनिविषै अनिष्ट आदि शब्दकरि वाधित प्रसिद्ध ये पक्षाभास हैं। इष्ट अवाधित असिद्ध लक्षण साध्य पूर्वें कह्या था सो ही पक्ष कह्या था ॥ १२ ॥

आगैं तिनितै विपरीत तदाभास है, ऐसै कहैं हैं,—

अनिष्टो मीमांसकस्यानित्यः शब्दः ॥ १३ ॥

याका अर्थ—अनिष्ट पक्षाभास तौ मीमासककै शब्द अनित्य है। मीमासक शब्दकू नित्य मानैं है सो अनित्य कहै तौ ताकैं अनिष्ट है॥१३॥

आगै असिद्धतै विपरीत सिद्ध पक्षाभास कहैं है,—

सिद्धः श्रावणः शब्दः ॥ १४ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो श्रावण है, ऐसैं पक्ष कहै तौ सिद्ध पक्षाभास है जातै शब्द तौ सुननेमै आवै है सो श्रावण है ही फेरि साधै तौ सिद्ध पक्षाभास है ॥ १४ ॥

आगै अवाधिततैं विपरीत वाधित पक्षाभासकू कहते सते सो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि वाधित है ऐसैं दिखावते सते सूत्र कहैं है,—

बाधितः प्रत्यक्षानुमानागमलोकस्ववचनैः ॥ १५ ॥

याका अर्थ—वाधित पक्ष है सो प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, लोक, स्ववचन, इनि करि है तातै वाधित पक्षाभास पच प्रकार जानना ॥१५॥

आगैं इनिका अनुक्रमकरि उदाहरण कहै हैं —

तत्र प्रत्यक्षबाधितो यथा, अनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वाज्जलवत् ॥ १६ ॥

याका अर्थ—तिनि विषै प्रत्यक्ष वाधित—जैसैं अग्नि है सो अनुष्ण कहिये शीतल है जातैं याकै द्रव्यपणा है जैसैं जल शीतल है तैसैं।

इहा अग्नि है सो उष्ण स्पर्श स्वरूप है सो अनुष्ण कह्या तब स्पर्शन प्रत्यक्षकरि बाधित भया ॥ १६ ॥

आगैं अनुमानबाधित कहैं हैं—

अपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् घटवत् ॥ १७ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो अपरिणामी है जातैं याकै कृतकपणा है, कऱ्या होय है, जैसैं घट कऱ्या होय है । इहा अपरिणामी पक्ष है सो नित्य पक्ष है, सो शब्द कृतकपणा हेतुतैं परिणामी सधै है, इस अनुमानकरि नित्य पक्ष बाधित है ॥ १७ ॥

आगैं आगमबाधित कहैं हैं—

प्रेत्याऽसुखप्रदो धर्मः पुरुषाश्रितत्वादधर्मवत् ॥ १८॥

याका अर्थ—धर्म है सो परलोकविषैं दुःख देनेंवाला है जातैं यह पुरुषकै आश्रय है जसैं अधर्म पुरुषकै आश्रय है तातैं दुःख देनेवाला है । इहा पुरुषकै आश्रयपणातैं अधर्म धर्म अविशेषरूप है तौऊ आगमविषैं धर्मकै परलोकमैं सुखका कारणपणा कह्या है, तातैं पक्ष आगमबाधित है ॥ १८ ॥

आगैं लोकबाधित कहैं हैं,—

शुचि नरशिरःकपालं प्राण्यंगत्वाच्छंखशुक्तिवत् ॥१९॥

याका अर्थ—मनुष्यका मस्तकका कपाल कहिये खोपरी सो पवित्र है जातैं याकै प्राणीका अंगपणा है जैसैं शंख सीप पवित्र मानिये है तैसैं । इहा लोकविषैं मनुष्यकी खोपरी प्राणीका अंग है तौऊ अपवित्र मानिये है, शंख सीप प्राणीके अंग हैं तिनिकूं पवित्र मानै है तैसैं खोपरीकूं पवित्र कहना लोकबाधित है ॥ १९ ॥

आगैं स्ववचनबाधित कहैं हैं,—

माता मे वंध्या पुरुषसंयोगेऽप्यगर्भत्वात् प्रसिद्धवंध्यावत् ॥ २० ॥

याका अर्थ—मेरी माता वाझ है जातैं पुरुषका सयोग होतै भी ताकै गर्भवतीपणा नाही है जैसैं अन्य प्रसिद्ध वध्या है तैसैं । इहा मेरी माता कहनेंतै वध्या कहना अपना यचनहीतै वाधित भया, जो वध्या है तौ आप पुत्र कैसै भया ॥ २० ॥

आगै क्रममै आये जे हेत्वाभास तिनिकू कहे हैं,—

हेत्वाभासा असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिंचित्कराः ॥ २१ ॥

याका अर्थ—हेत्वाभास च्यारि है, असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक, अकिंचित्कर ऐसैं ॥ २१ ॥

आगै इनिका यथानुक्रमकरि उदाहरणसहित लक्षण कहैं हैं,—

असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः ॥ २२ ॥

याका अर्थ—असत् है सत्ता अर निश्चय जाका सो असिद्ध हेत्वाभास है ॥ सत्ता अर निश्चय जो है सो "सत्तानिश्चयौ" कहिये, नही है सत्ता अर निश्चय जाको सो असत्सत्तानिश्चय कहिये ॥ २२ ॥

आगैं पहला भेदकू कहे है,—

अविद्यमानसत्ताकः परिणामी शब्दः चाक्षुपत्वात् ॥ २३ ॥

याका अर्थ—नाहीं विद्यमान है सत्ता जाकी सो असत सत्ताक नामा असिद्ध हेत्वाभास है जातैं शब्द है सो परिणामी है जातै चाक्षुष है । इहा शब्द तौ श्रावण है अर चाक्षुप हेतु सू साधे सो शब्दविषैं चाक्षुपपणाकी सत्ता नाही ॥ २३ ॥

आगैं कहैं हैं कि इस हेतुकैं असिद्धपणा कैसै भया ?,—

स्वरूपेणैवासिद्धत्वात् ॥ २४ ॥

याका अर्थ—यह स्वरूपकरि ही असिद्ध है चाक्षुषपणा शब्दका स्वरूप नाही ॥ २४ ॥

आगैं असिद्धका दूसरा भेदकूं कहैं हैं,—

अविद्यमाननिश्चयो मुग्धबुद्धिं प्रत्यग्निरत्र धूमात् ॥२५॥

याका अर्थ—अविद्यमान है निश्चय जाका सो असत् निश्चय हेत्वाभास है जैसैं मुग्धबुद्धि जो भोलाजीव तिस प्रति कहैं इहा अग्नि है जातैं धूम है ॥ २५ ॥

आगैं याकैं असिद्धता कैसे ? ऐसै पूछे कहै हैं,—

तस्य वाष्पादिभावेन भूतसंघाते संदेहात् ॥ २६ ॥

याका अर्थ—तिस धूम नामा हेतुकैं वाफ आदिपणाकरि पृथिवी आदि भूतसघातविषै सदेहतैं असत् निश्चय है । मुग्धकै विद्यमान धूमविषै भी विना समस्या सदेह उपजै जो यह वाफ है कि धूम है ? ॥२६॥

आगैं अमुग्धबुद्धि प्रति और असिद्धका भेद कहैं हैं,—

सांख्यं प्रति परिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २७ ॥

याका अर्थ—साख्य मती प्रति कहै—जो शब्द परिणामी जातैं कृत कहै ॥ २७ ॥

याका असिद्धपणाविषैं कारण कहै हैं,—

तेनाज्ञातत्वात् ॥ २८ ॥

याका अर्थ—तिस साख्यकरि नाही, जानवापणातैं जातैं साख्यके मतमैं आविर्भाव तिरोभाव ही प्रसिद्ध है उत्पत्ति आदि प्रसिद्ध नाही

है । तातै शब्द कृतक है ऐसा साख्यमती नाही जाणैं है तातैं यावै भी असिद्धपणा है ॥ २८ ॥

आगै विरुद्ध हेत्वाभासकू दिखावता सता सूत्र कहै हैं,—

विपरीतनिश्चिताविनाभावो विरुद्धोऽपरिणामी शब्दः कृतकत्वात् ॥ २९ ॥

याका अर्थ—विपरीत कहिये विपक्ष विपै है अविनाभावका निश्चय जाका ऐसा विरुद्ध हेत्वाभास है जैसै अपरिणामी शब्द है, इहा कृतकपणा हेतु है सो अपरिणामका विरोधी जो परिणाम ताकरि व्याप्त है तातै विरुद्ध है ॥ २९ ॥

आगैं अनैकान्तिक हेत्वाभासकू कहै है,—

विपक्षेऽप्यविरुद्धवृत्तिरनैकान्तिकः ॥ ३० ॥

याका अर्थ—विपक्षविपै भी अविरुद्ध है वृत्ति जाकी सो अनैकान्तिक हेत्वाभास है । इहा 'अपि' शब्दतै ऐसैं जानिये जो केवल पक्ष सपक्षविपै ही याकी वृत्ति नाही है, विपक्षविपैं भी है । सो यह हेत्वाभास दोय प्रकार है, निश्चित विपक्षवृत्ति, शकितविपक्षवृत्ति ॥३०॥

तहा आदि भेदकू दिखावता सता सूत्र कहै है,—

निश्चितवृत्तिरनित्यः शब्दः प्रमेयत्वाद् घटवत् ॥ ३१ ॥

याका अर्थ—जातैं नित्य जो आकाश ताके विपैं भी याका निश्चय है, भावार्थ—इहा प्रमेयपणा हेतु है सो पक्ष जो शब्द ताविषै अनित्यपणा साध्य है ताविपैं भी है अर याका सपक्ष घट ताविपैं भी है अर विपक्ष जो नित्य आकाश ताविपैं भी निश्चयकरि पाइये है, तातै निश्चितविपक्षवृत्ति हेत्वाभास भया ॥ ३१ ॥

आगै याकी विपक्षकै विपैं निश्चितवृत्ति कैसैं है ऐसी आशका होता सूत्र कहै है,—

आकाशे नित्येऽप्यस्य निश्चयात् ॥ ३२ ॥

याका अर्थ—अस्य कहिये या हेतुको नित्य आकाश जो है ताकै विषै निश्चय है यातैं ॥ ३२ ॥

आगैं शकितविपक्षवृत्तिकूं उदाहरणरूप कहैं हैं,—

शंकितवृत्तिस्तु नास्ति सर्वज्ञो वक्तृत्वात् ॥ ३३ ॥

याका अर्थ—सर्वज्ञ नाही है जातै जाकै वक्तापणा है। इहां वक्तापणा हेतु शकितविपक्षवृत्ति अनैकान्तिक है ॥ ३३ ॥

आगैं याकै भी विपक्षविषैं शकितविपक्षवृत्ति कैसैं है? ऐसी आशका करि कहैं हैं,—

सर्वज्ञत्वेन वक्तृत्वाविरोधात् ॥ ३४ ॥

याका अर्थ—जातैं सर्वज्ञपणाकरि वक्तृपणाकैं अविरोध है। इहां अविरोध यहु—जो ज्ञानका उत्कर्ष होतें वचननिका अपकर्ष नाही देखिये है, वहुत ज्ञान होय तव वचन स्पष्ट नीसरै है यह निरूपण पहलैं किया है। तातैं वक्तापणा हेतु है सो विपक्ष जो सर्वज्ञका सद्भाव है तहां शकित है सदेहरूप है, वक्तापणा होतैं सर्वज्ञपणा होय भी है नाही भी होय है। तातैं शकितविपक्षवृत्ति अनैकान्तिक हेत्वाभास भया ३४

आगैं अकिंचित्कर हेत्वाभासका स्वरूप कहैं हैं,—

सिद्धे प्रत्यक्षादिबाधिते च साध्ये हेतुरकिंचित्करः ॥ ३५ ॥

याका अर्थ—जहां साध्य सिद्ध होय तथा प्रत्यक्ष आदि प्रमाणकरि बाधित होय तहां हेतु अकिंचित्कर है ॥ ३५ ॥

आगैं इनिकूं उदाहरणरूप कहै हैं,—

सिद्धः श्रावणः शब्दः शब्दत्वत् ॥ ३६ ॥

याका अर्थ—जैसै शब्द है सो श्रावण है श्रवण इन्द्रियका गोचर है यातै श्रावण कहिये है जातै याकै शब्दपणा है। इहा शब्दपणा हेतु है सो श्रावणपणा साध्य है सो तौ पहले ही सिद्ध है हेतु तौ किछू साध्या नाही तातैं अकिंचित्कर है ॥ ३६ ॥

आगै याकै अकिंचित्करपणा कैसे है सो कहिये है,—

किंचिदकरणात् ॥ ३७ ॥

याका अर्थ—इस हेतुनैं किछू किया नाही तातै अकिंचित्कर है सो हेत्वाभास है ॥ ३७ ॥

आगैं दूसरा भेद प्रत्यक्षादिवाधित जाका साध्य होय ताकू पहला भेदका दृष्टान्तरूप करनेंका द्वारही करि उदाहरणरूप करैं है,—

यथाऽनुष्णोऽग्निर्द्रव्यत्वादित्यादौ किंचित्कर्तुमशक्यत्वात् ॥ ३८ ॥

याका अर्थ—जैसें अग्नि है सो अनुष्ण है जातै याकै द्रव्यपणा है। इहा अग्नि उष्ण है, अर अनुष्ण कह्या सो साध्य स्पर्शनप्रत्यक्षकरि बाधित है तातैं इस द्रव्यपणा हेतुकै अकिंचित्करपणा है जातैं इहा किछू किया नाही, जैसें इहा किछू किया नाही तैसै ही पूर्व सूत्रमैं जानना ॥ ३८ ॥

बहुरि यह अकिंचित्करपणा दोप हेतुका लक्षणके विचारका अवसर विषै हीं अर वादकाल विषैं नाहीं है ऐसें प्रकट करते सते कहै है,—

लक्षण एवासौ दोपो व्युत्पन्नप्रयोगस्य पक्षदोषेणैव दुष्टत्वात् ॥ ३९ ॥

याका अर्थ—यहु अकिंचित्करपणा हेतुका दोप है सो लक्षण कहिये शास्त्रविपै हीं है, वाद विषैं व्युत्पन्नका प्रयोग है सो पक्षके

दोपहीकीर दूषित है हेतुका दोप प्रधान नाही । व्युत्पन्न ऐसा पक्षका प्रयोग ही न करै अर करै तौ तहा पक्षाभास कहना, जो सिद्ध साध्य कहै तौ सिद्ध पक्षाभास कहना, वाधित साध्य कहै तौ वाधित पक्षाभास कहना । अकिंचित्कर हेत्वाभासका कहना शास्त्रमैं ही प्रधान है, वादमैं नाही ॥ ३९ ॥

आगै दृष्टान्त है सो अन्वय व्यतिरेकके भेदतैं दोय प्रकार कह्या है तातैं आभास भी दोय प्रकार ही है, तहा अन्वयदृष्टान्ताभासकूं कहै है,—

दृष्टान्ताभासा अन्वयेऽसिद्धसाध्यसाधनोभयाः ॥४०॥

याका अर्थ—दृष्टान्ताभास है ते अन्वयविषैं तौ तीन है, असिद्ध साध्य, असिद्धसाधन, असिद्धसाध्यसाधन ऐसैं । अर इनिका अर्थ ऐसा—असिद्ध है साध्य जा विषैं सो असिद्ध साध्य अन्वयदृष्टान्ता भास कहिये, इत्यादि जानना ॥ ४० ॥

आगैं इनि तीननिके उदाहरण एक ही अनुमानके प्रयोग विषैं दिखावैं हैं,—

अपौरुषेयः शब्दोऽमूर्तत्वादिन्द्रियसुखपरमाणुघट-वत् ॥ ४१ ॥

याका अर्थ—शब्द है सो अपौरुषेय है पुरुषका किया नाही जातैं अमूर्त्तीक है, इहा तीन दृष्टात हैं ते आभास हैं, इन्द्रिय सुखकी ज्यों, परमाणु की ज्यों, घटकी ज्यों । तहा इन्द्रियसुखकी ज्यों, यह तौ असिद्धसाध्य है, इहा इन्द्रियसुख पौरुषेय दृष्टात है अर अपौरुषेयपणा साध्य है सो इन्द्रियसुखमैं असिद्ध है तातैं असिद्ध साध्य भया । परमाणुकी ज्यों, यह असिद्धसाधन है—इहा साधन अमूर्त्तीकपणा है, सो परमाणु तौ मूर्त्तीक

है, परमाणुदृष्टान्तमैं अमूर्त्तपणा साधन असिद्ध है तातैं असिद्धसाधन भया। बहुरि घटकी ज्यो, यह असिद्धसाध्यसाधन है, घट पौरुषेय भी है अर मूर्त्तीक भी है अर इहा साध्य अपौरुषेय है साधन अमूर्त्तीकपणा है तातैं दोऊ घटमैं असिद्ध भये ॥ ४१ ॥

आगैं कहैं हैं साध्यतै व्याप्त साधन दिखावना ऐसैं अन्वय दृष्टान्तका अवसरमैं कह्या था सो जहा इसतैं विपरीत उलटा कहै सो भी दृष्टान्ताभास है,—

विपरीतान्वयश्च यदपौरुषेयं तदमूर्त्तम् ॥ ४२ ॥

याका अर्थ—जहा अन्वय विपरीत कहै जैसैं जो अपौरुपेय है सो अमूर्त्तीक है। इहा जो अमूर्त्तीक है सो अपौरुषेय है ऐसैं अन्वय कहना था सो उलटा कह्या तातै यह भी दृष्टान्ताभास है ॥ ४२ ॥

आगैं याकै दृष्टान्ताभासता कैसै है सो कहै है,—

विद्युदादिनातिप्रसङ्गात् ॥ ४३ ॥

याका अर्थ—विद्युत् कहिये वीजली आदिकरि अतिप्रसगतैं दृष्टान्ताभास है जातैं उलटा अन्वय कहे वीजलीकै भी अमूर्त्तपणाकी प्राप्ति आवै है, वीजली अपौरुषेय तौ है परन्तु मूर्त्तीक है ॥ ४३ ॥

आगै व्यतिरेक उदाहरणाभासकू कहैं है,—

व्यतिरेके सिद्धतद्व्यतिरेकाः परमाण्विन्द्रियसुखाकाशवत् ॥ ४४ ॥

याका अर्थ—पहले प्रयोगमैं ही लगाइये है—शब्द है सो अपौरुषेय है जातैं याकै अमूर्त्तीकपणा है जो अपौरुषेय नाही सो अमूर्त्तीक नाही, जैसैं परमाणु है, इंद्रियसुख है, आकाश है। ये व्यतिरेक दृष्टान्ताभास हैं, इनिविषै साध्य साधन उभय तीनूनिका व्यतिरेक असिद्ध है। तहा

परमाणु तौ अपौरुषेय है ताते यह तौ असिद्धसाध्य व्यतिरेक भया जातैं इहा व्यतिरेक ऐसैं है जो अपौरुषेय न होय सो अमूर्त्तीक नाही जैसैं परमाणु, सो परमाणुकै अपौरुषेयपणा साध्यतैं व्यतिरेक न भया। वहुरि इन्द्रियसुख है सो असिद्धसाधन व्यतिरेक है जातैं यह अमूर्त्तीक है, सो अमूर्त्तीकपणा साधनतैं व्यतिरेक नाही भया। वहुरि आकाश है सो असिद्धसाध्यसाधन व्यतिरेक है जातै यह अमूर्त्तीक भी है अर अपौरुषेय भी है साध्य साधन दोऊतैं व्यतिरेक नाही भया। ऐसैं तीन व्यतिरेकदृष्टान्ताभास कहे ॥ ४४ ॥

आगैं साध्यका अभाव होतै साधनका अभाव है ऐसैं व्यतिरेक उदाहरणके अवसरमैं कह्या था ताविषै तिसतैं विपरीत कहै सो भी दृष्टान्ताभास है, यह दिखावैं हैं,—

विपरीतव्यतिरेकश्च यन्नामूर्त्तं तन्नापौरुषेयम् ॥४५॥

याका अर्थ—जो अमूर्त्तीक नाही सो अपौरुषेय नाही ऐसैं कहना सो विपरीतव्यतिरेक है। इहा जो अपौरुषेय नाही सो अमूर्त्तीक नाही ऐसैं कहनाथा सो उलटा कह्या तातैं विपरीतव्यतिरेक दृष्टान्ताभास ही है ॥ ऐसैं दृष्टान्ताभास कहे ॥ ४५ ॥

आगै वालव्युत्पत्तिकै अर्थि उदाहरण उपनय निगमन ये तीन अवयव कहे थे सो अव वाल अल्पज्ञानीकू तिनितै घाटि कहै तौ प्रयोगाभास कहिये, ऐसैं कहैं है,—

वालप्रयोगाभासः पंचावयवेषु कियद्धीनता ॥ ४६ ॥

याका अर्थ—अनुमानके पाच अवयव अल्पज्ञकू कहनें, तिनिमैं घाटि कहै सो वालप्रयोगाभास है ॥ ४६ ॥

आगैं याका उदाहरण कहैं हैं,—

अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्त्वाद्यदित्थं तदित्थं यथा महानसः ॥ ४७ ॥

याका अर्थ—यह प्रदेश अग्निसहित है जातैं याकै धूम सहितपणां है, जो ऐसै होय (धूमसहित होय) सो अग्निसहित होय जैसै महानस कहिये रसोई घर। इहा तीन ही अवयव कहे तातैं बालप्रयोगाभास है ॥ ४७ ॥

आगैं च्यार अवयवका प्रयोग होतैं प्रयोगाभास कहैं हैं,—

धूमवाँश्चायम् ॥ ४८ ॥

याका अर्थ—धूमवान् यह है। इहा तीन अवयव तौ पहले सूत्रके लेणे अर एक यह कहे ऐसैं च्यार अवयव कहै सो भी बालप्रयोगाभास है ॥ ४८ ॥

आगै अवयवनिकू विपर्ययकरि क्रमहीन कहै तौऊ प्रयोगाभास कहिये, ऐसैं कहैं है,—

तस्मादग्निमान् धूमवाँश्चायम् ॥ ४९ ॥

याका अर्थ—तातै अग्निमान् है बहुरि यह धूमवान् है। इहा निगमनकू पहलैं कह्या उपनयकू पीछै कह्या तातैं क्रमभग भया, तातैं प्रयोगभास है ॥ ४९ ॥

आगै यह प्रयोगाभास कैसैं ? ताका हेतु कहैं है,—

स्पष्टतया प्रकृतप्रतिपत्तेरयोगात् ॥ ५० ॥

याका अर्थ—जातैं क्रमहीन अनुमानका अयोग कर तहा स्पष्टपणाकरि प्रकृत अर्थकी प्रतिपत्तिका अयोग है। शिष्यकैं स्पष्ट ज्ञान होय नाही तातैं प्रयोगाभास है ॥ ५० ॥

आगैं अब आगमाभासकू कहैं हैं,—

रागद्वेषमोहाक्रान्तपुरुषवचनाज्जातमागमाभासम् ५१

याका अर्थ—रागद्वेष मोहकरि सहित जो पुरुष ताका वचनकरि जो ज्ञान होय सो आगमाभास है ॥ ५१ ॥

आगैं याका उदाहरण कहै हैं,—

यथा नद्यास्तीरे मोदकराशयः संति धावध्वं माणवकाः ॥ ५२ ॥

याका अर्थ—जैसैं, नदीकै तीर लाडूनिकी राशि है सो हे वालक हो ! दौडो ल्यो । इहा कोई पुरुषकू वालकनिकरि व्याकुल करि राख्या था तब तिनिकू अपना लार छुडावनेंकू वहकावनेंके वाक्य कहता भया कि—नदीकै तीर लाडूनिके ढेर हैं सो हे वालक हो ! तुम तहा जाय ल्यो, ऐसैं कहि तिनिकू नदीकै तीर चलाये । ऐसैं अपणा प्रयोजन साधनेकू कछू कहै सो आप्तका वचन नाही तातैं आगमाभास है ॥ ५२ ॥

आगैं इस उदाहरणमात्रकरि संतुष्ट न होते अन्य उदाहरण कहैं हैं,—

अंगुल्यग्रे हस्तियूथशतमास्ते इति च ॥ ५३ ॥

याका अर्थ—बहुरि यह उदाहरण जानना—जो अगुलीका अग्रभागविषैं हस्तीनिका समूहका सैकडा तिष्ठै है । इहा सांख्यमती अपने आगमकी वासनामैं लीन है चित्त जाका सो प्रत्यक्ष अनुमानकरि विरुद्ध सर्वही सर्व जायगा विद्यमान है (सर्वं सर्वत्र विद्यते) ऐसैं मानता सता ऐसे वचन कहै है तातैं यह अनाप्तके वचनपणातैं आगमाभास है ॥ ५३ ॥

आगैं इनि दोऊ वचननिकैं आगमाभासपणा कैसैं है ताका हेतु कहैं है,—

विसंवादात् ॥ ५४ ॥

याका अर्थ—जातै ऐसे वचनके अर्थनिपै विसवाद है। तातै अविसवादरूप जो प्रमाणका लक्षण ताके अभावतै ऐसे वचन आगमाभास हैं ॥ ५४ ॥

आगै सख्याभासकू कहै है,—

प्रत्यक्षमेवैकं प्रमाणमित्यादि संख्याभासम् ॥ ५५ ॥

याका अर्थ—जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण है इत्यादि कहै सो सख्याभास है। प्रमाण प्रत्यक्ष परोक्षके भेदकरि दोय कहे तहा तिसतै विपरीतपणाकरि कहै—एक प्रत्यक्ष प्रमाण ही है तथा प्रत्यक्ष अरु अनुमान ऐसै दोय हैं इत्यादि नियम करै सो सख्याभास है ॥ ५५ ॥

आगै प्रत्यक्ष ही एक प्रमाण है ऐसै कहना कैसे सख्याभास है ऐसैं पूछे सूत्र कहै है,—

लौकायतिकस्य प्रत्यक्षतः परलोकादिनिषेधस्य परबुद्ध्यादेश्चासिद्धेरतद्विषयत्वात् ॥ ५६ ॥

याका अर्थ—एक प्रत्यक्ष ही प्रमाण माननेंवाला जो लोकायतिक कहिये चार्वाकमती ताकै परलोक आदिका निषेधकी अर परकी बुद्धि आदिकी अनुमान आदि प्रमाण विना प्रत्यक्षहीतै असिद्धि है जातै ये परलोक आदिका निषेध परबुद्धि आदि प्रत्यक्षका विषय नाही ॥ याका विस्तार पहले सख्याका निरूपणविषै कीया ही है सो इहा नाहीं कहिये है ॥ ५६ ॥

आगै और वादीनिकी प्रमाणकी सख्याका नियम भी बिगडै है ऐसैं चार्वाकमतके दृष्टान्तके द्वारकरि तिनिके मतनिपै भी सख्याभास है, ऐसैं दिखावैं है,—

सौगतसांख्ययौगप्राभाकरजैमिनीयाना प्रत्यक्षानुमानागमोपमानार्थापत्त्यभावैरेकैकाधिकैर्व्याप्तिवत् ५७

याका अर्थ--जैसैं वौद्ध, साख्य, नैयायिक, प्राभाकर, जैमिनीय कहिये मीमासक इनिमैं, वौद्धकैं प्रत्यक्ष अनुमानतैं दोय, *साख्यकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम ये तीन, योगकै प्रत्यक्ष अनुमान* आगम उपमान ये च्यार, प्राभाकरकैं प्रत्यक्ष अनुमान आगम उपमान अर्थापत्ति ये पाच, वहुरि जैमिनीयकैं अभावसहित ये ही छह, ऐसा सख्याका नियम है सो इनिका व्याप्ति विषय नाही यातै व्याप्तिका ग्रहण करनेवाला तर्क प्रमाण वधै तब सख्या विगडै तैसैं चार्वाककी भी सख्या परकी वुद्धि आदि प्रत्यक्ष विषय नाही ताकू ग्रहण करनहारा अनुमान आदि वधै तब ताकी सख्या विगडै है। भावार्थ—जैसे सौगतादिक प्रत्यक्ष अनुमान आदि एक एक वधता प्रमाणकरि व्याप्तिकू तर्क विना ग्रहण न करि सकै है तैसैं चार्वाक भी प्रत्यक्ष करि परवुद्धि आदिकू ग्रहण न करि सकै, ऐसा अर्थ है ॥ ५७ ॥

आगैं चार्वाक आदि कहै—जो परवुद्ध्यादिकी प्रतिपत्ति प्रत्यक्षकरि मति होहु अन्यतै होसी, ऐसी आशकाकरि कहै है,—

अनुमानादेस्तद्विषयत्वे प्रमाणान्तरत्वम् ॥ ५८ ॥

याका अर्थ—अनुमान आदिकरि परवुद्धिका ग्रहण मानिये है तो *अन्य प्रमाणपणा आया। इहा तत् शब्द करि परवुद्ध्यादिकपणा है यातैं* अनुमानादिककै परवुद्ध्यादिक विषयपणा होतै प्रत्यक्ष एक प्रमाण है ऐसा वादकी हानि होय है ॥ ५८ ॥

आगैं इहा उदाहरण कहैं है,—

तर्कस्येव व्याप्तिगोचरत्वे प्रमाणान्तरत्व, अप्रमाणस्याव्यवस्थापकत्वात् ॥ ५९ ॥

याका अर्थ—जैसै तर्ककैं व्याप्तिविपयपणा होतैं अन्य प्रमाणपणा है बौद्धादिककैं अन्य प्रमाण आवै है तैसैं ही परबुद्ध्यादि अनुमानका विपय मानिये तब अन्य प्रमाणपणा आवै है, अर जो कहै तर्क अप्रमाण है तौ अप्रमाणकैं व्याप्तिका व्यवस्थापकपणा नाही है । इहा ऐसा विशेप—जो एक प्रत्यक्ष ही प्रमाणका वादी चार्वाक है ताकरि वहुरि प्रत्यक्ष आदिमें एक एक अधिक प्रमाणका वादी बौद्धादिक है तिनिकरि स्वसवेदन प्रत्यक्ष इन्द्रियप्रत्यक्ष ऐसैं तौ प्रत्यक्षके भेद अर प्रत्यक्ष अनुमान आदि भेदप्रतिभासका भेदकरि ही प्रमाणका भेद वक्तव्य है अन्य किछू गति नाही है । सो प्रतिभासका भेद चार्वाक प्रति तौ प्रत्यक्ष अनुमानविपै है अर बौद्धादिककैं व्याप्तिज्ञान जो तर्क अर प्रत्यक्षादिप्रमाण इनिविपैं है, तातै सर्वहीकी प्रमाणसख्या विगडै है ॥ ५९॥

सो ही दिखावै हैं,—

प्रतिभासभेदस्य च भेदकत्वात् ॥ ६० ॥

याका अर्थ—जातै प्रतिभास भेदकै ही प्रमाणका भेदकपणा है तातै सर्वकी सख्या विगडै है। चार्वाकके तौ अनुमान विगाडै है जातैं प्रत्यक्षतै अनुमानका प्रतिभास जुदा है। अर बौद्धादिककै तर्क विगाडै है जातैं प्रत्यक्ष अनुमानादिकतै तर्कका प्रतिभास जुदा है ॥ ६०॥

आगैं अब विपयाभासकू दिखावनेंकू कहैं हैं,—

विषयाभासः सामान्यं विशेषो द्वयं वा स्वतंत्रम्॥६१

याका अर्थ—प्रमाणका विपय सामान्यही एक कहै अथवा विशेपही एक कहै अथवा दोउही स्वाधीन कहै तौ विपयाभास है ॥६१॥

आगै पूछै है कि इनिकै विपयाभासपणा कैसैं है तहा कहै हैं,—

तथाऽप्रतिभासनात्कार्याकरणाच ॥ ६२ ॥

याका अर्थ—जातैं जैसैं सामान्यमात्र विशेषमात्र दोऊ मात्र कह्या तैसैं प्रतिभासै नाही है बहुरि यह कार्य कारणहारा नाही है ॥ ६२ ॥

आगैं इहा आचार्य अन्यवादीकू पूछै हैं—जो सामान्य आदि एकान्तस्वरूप कार्यकू करै सो आप समर्थ होय करै है कि असमर्थ होय करै है ? तहा समर्थ पक्षमै दूपण कहैं हैं,—

समर्थस्य करणे सर्वदोत्पत्तिरनपेक्षत्वात् ॥ ६३ ॥

याका अर्थ—जो कहै सामान्य आदि समर्थ होय कार्य करै है तौ कार्यकी सर्वकाल उत्पत्ति चाहिये जातैं अन्यकी अपेक्षारहितपणा है ६३

बहुरि कहै सहकारीकी सापेक्षतै कार्य करै है यातै सर्वकाल उत्पत्ति नाहीं है तौ तहा कहैं हैं,—

परापेक्षणे परिणामित्वमन्यथा तदभावात् ॥ ६४ ॥

याका अर्थ—जो परकी अपेक्षा करै तौ ताकैं परिणामीपणा आवै पहलै न किया सहकारी आया तब किया तब सामर्थ्य नवीन आया तातैं परिणामी भया अर जो ऐसैं न मानिये तौ कार्य होनेंका अभाव है । भावार्थ—सहकारिरहित अवस्थाविपै तौ कार्य न करै अर सहकारीका सबध भये कार्य करै तब पहला आकार छोड्या उत्तर आकार ग्रह्या दोऊमैं आप स्थित रह्या, ऐसे परिणामकी प्राप्ति होतैं परिणामीपणा आया, बहुरि ऐसैं न मानिये तौ जैसैं पहले अभाव अवस्थाविपैं कार्य करनेंका अभाव है तैसैं ही उत्तर अवस्थाविपैं अभाव है ॥६४॥

आगैं दूसरा पक्षमै दोप कहैं हैं,—

स्वयमसमर्थस्याकारकत्वात्पूर्ववत् ॥६५॥

याका अर्थ—आप असमर्थ होय तौ कार्य करनेंवाला नाही है जैसें पहले सहकारी विना कार्य करणहारा न था तैसैं अब भी नाही ॥६५॥

आगैं फलाभासकू प्रकाशता मता कहै हैं,—

फलाभासः प्रमाणादभिन्नं भिन्नमेव वा ॥६६॥

याका अर्थ—प्रमाणतै फल अभिन्न ही कहै अथवा भिन्न ही कहै सो फलाभास है ॥ ६६ ॥

आगै इनि दोऊ पक्षमैं फलाभासता कैसै ? ऐसी आशका होतै आद्य पक्ष जो प्रमाणतै फल अभिन्न ही है ऐसी ताकै फलाभासताविषैं हेतु कहैं है,—

अभेदे तद्व्यवहारानुपपत्तेः ॥ ६७ ॥

याका अर्थ—जो प्रमाणतें फल अभेद ही कहिये तौ प्रमाण फलका व्यवहार बणैं नाही, कै तो प्रमाण ही ठहरै कै फल ही ठहरै जातै दूसरा पदार्थ ही नाही ॥ ६७ ॥

आगै कहै—सवृत्ति कहिये उपचार है नाम जाका ऐसी जो व्यावृत्ति कहिये जुदायगी अवस्तुरूपताकरि प्रमाणफलकी कल्पना होइ, ऐसै कहें उत्तर कहैं हैं,—

व्यावृत्याऽपि न तत्कल्पना फलान्तराद्व्यावृत्याऽफलत्वप्रसंगात् ॥ ६८ ॥

याका अर्थ—जो व्यावृत्ति कहिये अवस्तुरूप जुदायगी ताकरि भी फलकी कल्पना नाही युक्त है जातै अन्यफलतैं व्यावृत्ति कहिये जुदायगी ताकरि अफलपणाका प्रसग आवै है। इहा यह अर्थ है—जैसै विजातीय फल जो अप्रमिति तिसतैं व्यावृत्ति कहिये जुदायगीकरि फलका व्यवहार है तैसैं अन्यप्रमितिरूप जो सजातीय फल तिसतै भी जुदायगी है, ऐसैं अफलपणा ही आया ॥ ६८ ॥

अब इहा ही अभेदपक्षविषैं दृष्टान्त कहैं हैं,—

प्रमाणान्तराद्व्यावृत्त्येवाप्रमाणत्वस्य ॥ ६९ ॥

याका अर्थ—जैसैं अन्य प्रमाण करि व्यावृत्ति कहिये जुदायगी करि अन्य प्रमाणकै अप्रमाणपणाका प्रसग आवै है तैसैं ही फलकै जानना । इहा भी पहले फलमै प्रक्रिया कही सो ही जोडि लेणीं । भावार्थ—जैसै प्रमाण ऐसै कहे अप्रमाणकी व्यावृत्ति है तौ अन्य प्रमाणतै व्यावृत्त प्रमाण है सो भी अप्रमाण ठहरै तब ऐसे कहे ताके मनभै प्रमाण न ठहरै तैसै ही विजातीय फलतैं व्यावृत्त फल प्रमिति है सो ही सजातीय फल जो अन्य प्रमिति तिसतैं भी व्यावृत्त है ऐसै अफल ही ठहरै ॥ ६९ ॥

आगै अभेद पक्षकू निराकरण करि आचार्य इस कथनकू सकोचै हैं,—

तस्माद्वास्तवो भेदः ॥ ७० ॥

याका अर्थ—तातैं भेद है सो वस्तुभूत है, प्रमाण फलकै एकान्त करि अभेद ही नाही है ॥ ७० ॥

आगैं भेद पक्षकू दूषता सताकहैं हैं,—

भेदे त्वात्मान्तरवत्तदनुपपत्तेः ॥ ७१ ॥

याका अर्थ—प्रमाणकैं अर फलकै सर्वथा भेद ही होतैं अन्य आत्माकी ज्यों यह याका फल है ऐसै कहना न बनै ॥ ७१ ॥

आगैं वादी कहै—जो जिस आत्मविषैं प्रमाण समवायरूप है तिस ही विषैं फल भी है ऐसैं समवाय सबध करि प्रमाण फलकी व्यवस्था है तातै अन्य आत्मा विषै ताका प्रसग नाही, सो ऐसैं कहना समीचीन नाही ऐसैं कहै हैं,—

---

(१) मुद्रित संस्कृतटीका प्रतिमें 'प्रमाणान्तरात्' इसके स्थानमें 'प्रमाणात्' इतनाही पाठ है (२) मुद्रित संस्कृतटीका प्रतिमें "तस्माद्वास्तवोऽभेद" ऐसा पाठ है ।

समवायेऽतिप्रसङ्ग ॥ ७२ ॥

याका अर्थ—समवाय संवध होतैं अतिप्रसग आवै है। भावार्थ–समवाय तौ नित्य है अर एक है व्यापक है सर्व आत्माकै समवाय तौ समान धर्म है तातें यह इसहीका समवाय है ऐसा प्रतिनियम नाही तातैं अतिप्रसग आवै है ॥ ७२ ॥

आगैं स्वपरपक्षका साधन दूषणकी व्यवस्था दिखावैं हैं,—

प्रमाणतदाभासौ दुष्टतयोद्भावितौ परिहृतापरिहृतदोषौ वादिनः साधनतदाभासौ प्रतिवादिनो दूषणभूषणे च ॥ ७३ ॥

याका अर्थ—वादीनैं प्रमाण अर प्रमाणाभास स्थापे तिनिकूं प्रतिवादी दूषणसहित किये अर फेरि वादी ताका दोषका परिहार किया तथा परिहार न किया तौ ते दोऊ वादीकै साधन अर साधनाभास हैं अर प्रतिवादीकै दूषण अर भूषण दोऊ हैं। इहा ऐसा अर्थ है—वादी प्रमाण स्थाप्या प्रतिवादी ताकूं दूषण दिया फेरि वादी तिस दोषका परिहार किया तौ सोही वादीकैं साधन है अर प्रतिवादीकै दूषण है। बहुरि जो वादी प्रमाणाभास कह्या अर प्रतिवादी ताकूं प्रमाणाभास दिखाया फेरि वादी ताकूं स्थाप्या नाही प्रतिवादीका वचनका परिहार न किया तौ तिस वादीकैं सो साधनाभास है अर प्रतिवादीकै सो ही भूषण है ॥ ७३ ॥

आगैं कह्या प्रकारकरि समस्त विप्रतिपत्तिका निराकरणद्वार करि पूर्वैं प्रमाणतत्व कहनेंकी प्रतिज्ञा करी थी ताकी परीक्षा करि अव नय-आदिका स्वरूप अन्य शास्त्रमैं प्रसिद्ध है सो तहातै विचारना, ऐसैं दिखावता सता सूत्र कहै है,—

संभवदन्यद्विचारणीयम् ॥ ७४ ॥

याका अर्थ—प्रमाणके स्वरूपतै अन्यत् कहिये और सभवता होय सो विचारना। सभवत् कहिये विद्यमान अन्यत् कहिये प्रमाणके रूपतैं और जो नयका स्वरूप सो अन्य शास्त्रनिविषै प्रसिद्ध है सो विचारना, इहा युक्तिकरि जानना। तहा मूल नय तो दोय हैं, द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक भेदतैं। तहा द्रव्यार्थिक तीन प्रकार हैं, नैगम, सग्रह, व्यवहार भेदतैं। बहुरि पर्यायार्थिक च्यार प्रकार है, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ, एवभूत भेदतैं। तहा परस्पर गौण प्रधानभूत जो भेदाभेद तिनिका है प्ररूपण जामैं सो तौ नैगम है "नैक गमो नैगम" ऐसी निरुक्तितैं, भावार्थ–यह नय एक ही धर्मविषै नाही वर्त्तै है, विधि निषेधरूप सर्वही धर्मनिमैं एककू मुख्यकरि अन्यकू गौणकरि सकल्पमैं ले वर्त्तै है। बहुरि सर्वथा भेदहीकू कहै सो नैगमाभास है। बहुरि प्रतिपक्षकी अपेक्षारहित सत्तामात्र सामान्यका ग्रहण करनहारा सो सग्रह है। सर्वथा सत्तामात्र कहै ऐसा ब्रह्मवाद सो सग्रहाभास है। बहुरि सग्रहकरि ग्रह्या ताका भेद करनहारा व्यवहार है। कल्पनामात्र कहै सो व्यवहाराभास है। शुद्धपर्यायग्राही प्रतिपक्षीकी अपेक्षा सहित होय सो ऋजुसूत्र है। क्षणिक एकान्त नय है सो ऋजुसूत्राभास है। बहुरि काल कारक लिंगनि आदिका भेदतैं शब्दकै कथचित् अर्थभेद कहै सो शब्दनय है। अर्थभेद विना शब्दनिहीकै नानापणाका एकान्त कहै सो शब्दाभास है। बहुरि पर्यायके भेदतैं अर्थकै नानापणा कहै सो समभिरूढ है। पर्यायका नानापणा विनाही इन्द्रादिक शब्दनिकै भेद कहै सो समभिरूढाभास है। बहुरि क्रियाके आश्रयकरि भेदका प्ररूपण करै 'याही प्रकार है' ऐसा नियम कहै सो एवभूत है। क्रियाकी अपेक्षारहित क्रियाके वाचक शब्दनिविषैं कल्पनारूप व्यवहार करै सो एवभूतनयाभास है।

ऐसैं नय तदाभासका लक्षण सक्षेपकरि कह्या। विस्तारकरि नयचक्र ग्रथतैं तथा तत्वार्थसूत्रकी टीकातैं जानना। अथवा 'सभवत्' कहिये विद्यमान सभवता अन्य वादका लक्षण अर पत्रका लक्षण अन्य शास्त्रमैं कह्या है सो इहा जानना, तैसै कह्या है—"समर्थवचन वादः" याका अर्थ—जहा वादी प्रतिवादीकै अथवा आचार्य शिष्यकैं पक्ष प्रतिपक्षका ग्रहणतैं समर्थ वचनकी प्रवृत्ति होय सो वाद कहिये, जो हेतु दृष्टान्त आदि करि निर्बाध वचन होय सो समर्थवचन कहिये। बहुरि पत्रका लक्षण कह्या है, ताका श्लोकका अर्थ—जो प्रसिद्ध जे पाच अनुमानके अवयव ते जामैं पाइये बहुरि अपना इष्ट अर्थका साधक होय बहुरि निर्दोष गूढ जे पद ते जामैं बाहुल्यपणैं होय ऐसा वाक्य होय सो निर्दोष पत्र कहिये ॥ ७४ ॥

आगै अब आचार्य प्रारभ किया ताका निर्वाह अर अपना उद्धतपणाका परिहार दिखावता सता कहै है,—

श्लोक—**परीक्षामुखमादर्शं हेयोपादेयतत्त्वयोः।**
संविदे मादृशो बालः परीक्षादक्षवद्व्यधाम् ॥

याका अर्थ—मैं मदबुद्धी परीक्षामुख नाम प्रकरण किया है, कैसा है यह—हेय उपादेय तत्वका दिखावनेंकू आरसा सारिखा है, कौनकी ज्यौं किया है—जैसै परीक्षाविषै चतुर होय करै तैसै किया है, बहुरि कौन अर्थि किया है—मो सारिखे मन्दबुद्धीनिकै ज्ञानकै अर्थि किया है। इहा बाल ऐसा पद कह्या तहा तौ उद्धतताका परिहारका वचन है। बहुरि शास्त्रका प्रारभ करि निर्वाह करनेंतै तत्वज्ञपणा निश्चय होय ही

(१) पत्रलक्षणम्—
प्रसिद्धावयवं वाक्यं स्वेष्टस्यार्थस्य साधकम्।
साधुगूढपदप्रायं पत्रमाहुरनाकुलम् ॥ १ ॥

है। बहुरि आरसाकी उपमा है सो जैसैं आपका अलकार आदिकरि मंडित सुन्दरपणा अथवा निरूपपणा अरसामैं दीखै तैसैं यामैं हेय उपादेय तत्व साधन दूषण द्वार करि दीखै हैं। बहुरि परीक्षादक्षकी ज्यों कह्या सो जैसैं परीक्षावान् अपना प्रारभ्या शास्त्रकूं निर्वाहै तैसै मैं भी निर्वाह किया है। ऐसा अर्थ है ॥

आगैं टीकाकारकृत श्लोक है —

अकलंकशशाङ्कैर्यत्प्रकटीकृतमखिलमाननिभनिकरम्।
तत्संक्षिप्तं सूरिभिरुरुमतिभिर्व्यक्तमेतेन ॥ १ ॥

याका अर्थ—जो अकलक आचार्य रूप चद्रमाकरि प्रमाण अर प्रमाणभासका समूह समस्त प्रगट किया सो माणिकनादि आचार्यनै सक्षेपकरि कह्या, कैसे है आचार्य—बडी है बुद्धि जिनकी, बहुरि सो ही मैं अनतवीर्य आचार्य व्यक्त (प्रगट) किया है ॥ १ ॥

ऐसैं परीक्षामुखनाम प्रमाणप्रकरणकी लघुवृत्ति
की वचनिकाविषै प्रमाणआदिका
आभासका समुद्देशनामा छठा
परिच्छेद समाप्त
भया ॥

आगै टीकाकार इस टीकाकी उत्पत्तिके समाचार कहै है,—

श्लोक—**श्रीमान् वैजेयनामाऽभूदग्रणीर्गुणशालिनाम्।**
बदरीपालवंशालिव्योमद्युमणिरूर्जितः ॥१॥

याका अर्थ—श्रीमान् कहिये लक्ष्मीवान् वैजेयनामा गुणनिकरि शोभायमाननिविषैं मुख्य होता भया, कैसा है—बदरीपालका वशकी जो आलि कहिये पक्ति परिपाटी सोही भया आकाश तानिषैं सूर्यसमान महान् होता भया ॥ १ ॥

बहुरि श्लोक —

तदीयपत्नी भुवि विश्रुताऽऽसीत्
नाणांबनामा गुणशीलधीर्या।
यां रेवतीति प्रथिताम्बिकेति
प्रभावतीति प्रवदन्ति सन्तः ॥ २ ॥

याका अर्थ—तिस वैजेयकी स्त्री पृथिवीविषै प्रसिद्ध नाणाब ऐसा है नाम जाका ऐसी होती भई, सो कैसी है—गुणनि करि शोभायमान बुद्धि अर लक्ष्मी जाकैं पाइये, बहुरि जाकू रेवती ऐसा भी नाम प्रगट कहैं है तथा अम्बिका ऐसा भी नाम कहैं है तथा सत्पुरुष प्रभावती ऐसा भी नाम कहैं हैं ॥ २ ॥

बहुरि श्लोक,—

तस्यामभूद्विश्वजनीनवृत्ति-
र्दानाम्बुवाहो भुवि हीरपाख्यः ।
स्वगोत्रविस्तारनभोंऽशुमाली
सम्यक्त्वरत्नाभरणार्चिताङ्गः ॥३॥

याका अर्थ—तिस वैजेयकी नाणावनामा स्त्रीविषै हीरपनामा पुत्र होता भया, समस्त लोककू हितकारी है वृत्ति जाकी, बहुरि दान देनेकू पृथ्वीविषैं मेघसारिखा है बहुरि अपना गोत्रका विस्तार सो ही भया आकाश ताविषै सूर्यसमान है, बहुरि सम्यक्त्वरूप रत्नका आभरणकरि शोभित है अंग जाका ऐसा होता भया ॥ ३ ॥

बहुरि श्लोक,—

तस्योपरोधवशतो विशदोरुकीर्त्ते-
र्माणिक्यनंदिकृतशास्त्रमगाधबोधम् ।

(१) मुद्रित संस्कृत टीका प्रतिमें 'गुणशीलसीमा' ऐसा पाठ है।

स्पष्टीकृतं कतिपयैर्वचनैरुदारै-
र्बालप्रबोधकरमेतदनन्तवीर्यैः ॥ ४ ॥

याका अर्थ—तिस हीरपके आग्रहके वशतै मैं सत्य आचार्य अनतवीर्य माणिक्यनंदिकृत अगाधबोधरूप जो शास्त्र ताहि केई निस्तार रूप वचननि करि यह स्पष्ट किया है, कैसा किया है-बाल, जे मदबुद्धी तिनिकै प्रकृष्ट ज्ञानका करन हारा है, बहुरि हीरप कैसा है— निर्मल है बडी कीर्त्ति जाकी ॥ ४ ॥

ऐसें परीक्षामुख प्रकरणकी लघुवृत्ति प्रमेय-
रत्नमाला है दूसरा नाम जाका
सो समाप्त भई ॥

छप्पय।

कह्यो प्रमाण स्वरूप, बहुरि संख्याविधि नीकी,
फुनि तसु विषय विचार, सार फल विधि हू लीकी।
तदाभास विस्तार कियो, परमत निषेध कर
सुनि भनि लखै यथा स्वरूप, निज परमत जिम वर ॥
मुनिराज बड़ो उपकार यह, कियो परीक्षामुखकथन।
तसु देश वचनिका शुभ बनी, सुगम पढन सुनना मथन[1]॥

आगैं या वचनिका होनेंके समाचार लिखिये है,—

(दोहा)

ग्रंथ परीक्षामुखतनीं, बनी वचनिका येह।
समाचार ताके कहूं, सुनो भव्य जुतनेह ॥ १ ॥

(चौपई)

देश ढुढाहर जयपुर जहा, सुवस वसैं नहिं दुःखी तहां।
नृप जगतेश नीतिवलवान, ताकै बड़े बड़े परधान ॥ २ ॥

१ मनन

प्रजा सुखी तिनिकै परताप, काहूकै न वृथा संताप ।
अपनें अपनें मत सब चलैं, जैनधर्महू अधिको भलै ॥ ३ ॥
तामैं तेरहपथ सुपंथ, शैली बडी गुनी गुनग्रंथ ।
तामैं मैं जयचन्द्र सुनाम, वैश्य छाबडा कहै सुगाम ॥ ४ ॥
मैं तौ आतम द्रव्य विशुद्ध, जाति नाम कुल सबै विरुद्ध ।
तौऊ कर्मतणे संयोग, है विभाव परिणतिको भोग ॥ ५ ॥
अशुभ मंदतै शुभ अनुराग, धर्मबुद्धि जागी धनि भाग ।
तब विचार यह भयो सुसार, जैन ग्रंथ पढि करि निरधारि ॥६॥
पढ़ते सुनते भयो सुबोध, न्याय ग्रंथको भी कछु शोध ।
स्याद्वाद जिनमतमैं न्याय, ताकी रीति लखी कछु पाय ॥ ७ ॥
तबै विचारी इस कलिकाल, जैनन्याय बुध विरले भाल ।
प्रकरण देश वचनिकारूप, लघु सो होय करूं जु अनूप ॥ ८ ॥
तब यह लख्यौ न्यायको द्वार, कियो वचनिकारूप उदार ।
भव्य पढ़ौ मन लाय अशेष, न्याय देशमें करो प्रवेश ॥ ९ ॥
निज परमतको जानो भेद, मिटै विपर्यय बुधिको भेद ।
स्वपरतत्त्वकौ जानि विचार, तजो विभाव रहो अविकार॥१०॥
रत्नत्रय मारग लगि ताम, पहुचो मुक्तिपुरी सुखधाम ।
यह उपदेश जिनश्वरदेव, भाष्यो ग्रहो करो तिनि सेव ॥११॥
पंडितजनसूं यह अरदासि, करूं परोक्ष मान मद नासि ।
हीनाधिक जो यामें होय, मूल ग्रंथ लखि सोधो सोय ॥१२॥

(दोहा)

बालबुद्धि लखि संतजन, हसैं न कोप कराय ।
इहे रीति पंडित गहै, धर्मबुद्धि इम भाय ॥ १३ ॥

(छप्पय)

नमूं पंचगुरुचरन सदा मंगलके दाता,
वंदूं जिनवरवानि सुनै पावै सुख साता।
वीतरागता धर्म नमूं जो कर्मनाशकर,
चैत्यधाम अरु चैत्य नमूं सम्यक्प्रकाशपर ॥
ए नव वंदन योग्य है जिनमारगमैं नित्य ही,
मैं ग्रंथ अतमंगल निमित करी वंदना सत्य ही १४

(दोहा)

अष्टादश शत साठि त्रय, विक्रम संवत माहिं।
सुकल असाढ सुचौथि बुध, पूरण करी सुचाहि ॥ १५ ॥
लिखी यहै जयचंदनै, मोथी सुत नदलाल ।
बुध लखि भूल जु शुद्धकरि, वाचौ सिखवौ बाल ॥ १६ ॥

इति श्रीपरीक्षामुख जैनन्यायप्रकरणकी
लघुवृत्ति प्रमेयरत्नमालाकी
श्री जयचंदजीछाबडाकृत
देशभाषामय वचनिका
सम्पूर्ण।

